श्री कृष्ण यूनिवर्सल (विश्व) पंचांग

"चित्रापक्ष" निरयण, सायन व सूर्यकेन्द्रीय

सं. 1997 ई.

कम्प्यूटर द्वारा गणित किया गया दैनिक भूकेन्द्रीय चन्द्र व ग्रह स्पष्ट विकलाओं तक। इस बार भी दिल्ली का भूपृष्ठीय दैनिक चन्द्रमा भी विकलाओं तक दिया गया है, जा

सारे विश्व में और कहीं नहीं हैं। साथ में शर, क्रान्ति, तिथि नक्षत्र, योग, करण, व्रत-त्यौहार आदि भी। विशेष विवरण के लिए कृपया पिछला आवरण पृष्ठ देखें।

©

गणित कर्त्ता एवं प्रकाशक
अवतार कृष्ण कौल

श्रीकृष्ण पब्लिशिंग हाउस
24, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली-110092 (भारत)

मूल्य: हिन्दी संस्करण: 40 रुपए/8 डालर; अंग्रेज़ी संस्करण: 50 रुपए/ 10 डालर

IST Sunrise and Sunset for certain important places in India

भा. स्टै. टा. सूर्योदय तथा सूर्यास्त (भारत के कुछ प्रमुख स्थानों का)

	Date तिथि		Calcutta कलकत्ता		Banaras बनारसी		Madras मद्रास		Nagpur नागपुर		Delhi दिल्ली		Bombay बम्बई	
National राष्ट्रीय	English अंग्रेजी		Rise उदय h m	Set अस्त h m	Rise उदय h m	Set अस्त h m	Rise उदय h m	Set अस्त h m	Rise उदय h m	Set अस्त h m	Rise उदय h m	Set अस्त h m	Rise उदय h m	Set अस्त h m
			घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
Pausa	11	Jan. 1	6 18	17 1	6 45	17 17	6 33	17 52	6 52	17 41	7 15	17 34	7 13	18 11
पौष	16	जनवरी 6	20	5	47	21	35	55	54	45	16	37	15	14
	21	11	20	8	47	24	36	17 58	55	48	17	41	16	17
	26	16	21	12	47	28	37	18 0	55	51	17	45	16	20
Magha	1	21	20	15	47	32	37	3	55	54	16	49	16	23
माघ	6	26	19	18	45	35	37	5	54	17 57	14	53	16	26
	11	31	18	22	43	39	37	8	53	18 1	12	17 57	15	30
	16	Feb. 5	6 16	17 25	6 41	17 43	6 36	18 10	6 51	18 4	7 9	18 1	7 13	18 32
	21	फरवरी 10	13	28	38	46	35	12	49	7	6	5	11	35
	26	15	10	31	35	50	33	13	46	10	7 2	9	9	37
Phalguna	1	20	7	34	31	53	31	15	43	12	6 57	13	6	39
फाल्गुन	6	25	6 3	36	27	56	29	16	39	15	53	16	7 3	41
	11	Mar. 2(1)	5 59	17 39	6 22	17 58	6 26	18 16	6 36	18 17	6 48	18 20	6 59	18 43
	16	मार्च 7(6)	55	41	18	18 1	23	17	31	18	42	23	56	45
	21	12(11)	50	43	13	3	20	18	27	20	37	26	52	46
	26	17(16)	46	45	8	6	17	18	23	22	31	28	48	47
Caitra	1	22(21)	41	47	6 2	8	14	19	18	24	25	31	43	49
चैत्र	6	27(26)	36	48	5 57	10	10	19	13	25	19	34	39	50
	11	Apr. 1	5 31	17 50	5 52	18 12	6 7	18 19	6 9	18 27	6 14	18 37	6 35	18 51
	16	अप्रेल 6	27	52	47	15	4	20	4	28	8	39	31	52
	21	11	22	54	41	17	6 0	20	6 0	30	6 2	42	27	53
	26	16	18	55	37	19	5 57	20	5 56	31	5 57	45	23	55
Vaisakha	1	21	13	57	32	21	55	21	52	33	52	48	19	56
वैशाख	6	26	10	17 59	28	24	52	22	48	35	47	51	16	57
	11	May 1	5 6	18 1	5 24	18 26	5 50	18 23	5 45	18 37	5 43	18 54	6 13	18 59
	16	मई 6	3	4	20	29	48	24	42	39	39	18 57	10	19 1
	21	11	5 0	6	17	31	46	25	39	41	35	19 0	8	2
	26	16	4 58	8	14	34	45	26	37	43	32	3	6	4
	31	21	56	10	12	37	44	27	35	45	30	6	4	6
Jyaistha	5	26	54	13	10	39	43	29	34	47	28	8	3	8
ज्येष्ठ	10	31	53	15	9	41	43	30	33	49	26	11	2	10
	15	June 5	4 53	18 17	5 9	18 44	5 43	18 32	5 33	18 51	5 25	19 13	6 2	19 12
	20	जून 10	53	19	9	46	43	33	33	53	25	16	2	13
	25	15	53	20	9	48	44	35	33	55	25	18	3	15
	30	20	54	22	10	49	45	36	34	56	26	19	4	16
Asadha	4	25	55	23	11	50	46	38	35	57	27	20	5	17
आषाढ़	9	30	56	23	12	51	47	38	37	58	29	21	6	18
	14	July 5	4 58	18 24	5 14	18 51	5 49	18 38	5 38	18 58	5 31	19 21	6 8	19 18
	19	जोलाई 10	5 0	23	16	50	50	38	40	58	33	20	9	18
	24	15	2	23	18	49	51	38	42	57	35	19	11	18
	29	20	4	21	21	48	53	38	44	56	38	17	13	17
Sravana	3	25	6	20	23	46	54	37	46	54	40	15	15	16
श्रावण	8	30	8	17	25	43	55	36	48	52	43	12	16	14
	13	Aug. 4	5 10	18 15	5 28	18 40	5 56	18 34	5 50	18 50	5 46	19 8	6 18	19 12
	18	अगस्त 9	12	12	30	37	57	32	51	47	49	4	20	9
	23	14	14	8	32	33	58	30	53	44	51	19 0	21	6
	28	19	16	4	34	29	58	27	55	40	54	18 56	22	19 3
Bhadra	2	24	18	18 0	37	24	59	24	56	36	57	51	24	18 59
भाद्र	7	29	19	17 56	39	19	59	21	58	32	5 59	45	25	55
	12	Sept. 3	5 21	17 51	5 41	18 14	5 59	18 17	5 59	18 27	6 2	18 40	6 25	18 51
	17	सितम्बर 8	22	46	42	9	59	15	6 0	23	4	34	26	47
	22	13	24	41	44	18 4	59	11	1	18	6	28	27	43
	27	18	25	36	46	17 58	59	7	3	13	9	22	28	38
Asvina	1	23	27	31	48	53	5 59	4	4	9	11	16	29	34
आश्विन	6	28	28	27	50	48	6 0	18 0	5	18 4	14	10	30	29
	11	Oct. 3	5 30	17 22	5 52	17 42	6 0	17 57	6 7	17 59	6 16	18 4	6 31	18 25
	16	अक्टूबर 8	32	17	54	37	0	54	8	55	19	17 59	32	21
	21	13	33	12	57	34	0	50	10	50	22	53	33	17
	26	18	35	8	5 59	27	1	48	11	46	25	48	35	13
Kartika	1	23	38	4	6 2	23	2	45	14	43	28	43	37	10
कार्तिक	6	28	40	17 1	5	19	3	43	16	39	31	39	38	7
	11	Nov. 2	5 43	16 58	6 8	17 16	6 4	17 41	6 18	17 36	6 33	17 35	6 40	18 4
	16	नवम्बर 7	46	55	11	12	6	40	21	34	39	31	43	2
	21	12	49	53	14	10	8	38	24	32	42	28	45	18 0
	26	17	52	51	18	8	10	38	27	31	46	26	48	17 59
Agraha.	1	22	55	50	21	7	12	38	30	30	50	24	51	59
अगहन (अगा)	6	27	5 59	50	25	6	15	38	33	29	54	23	54	59
	11	Dec. 2	6 2	16 50	6 29	17. 6	6 17	17 39	6 36	17 30	6 58	17 23	6 57	17 59
	16	दिसम्बर 7	5	50	32	6	20	40	39	30	7 2	23	7 0	18 0
	21	12	8	52	35	7	23	42	43	32	5	24	3	1
	26	17	11	53	39	9	26	44	46	34	9	25	6	3
Pausa	1	22	14	56	41	11	28	46	48	36	11	27	9	5
पौष	6	27	6 16	16 37	6 43	17 14	6 30	17 48	6 50	17 37	7 14	17 28	7 12	18 8

श्री कृष्ण यूनिवर्सल (विश्व) पंचांग

"चित्रापक्ष" निरयण, सायन व सूर्यकेन्द्रीय

सं. 1997 ई.

कम्प्यूटर द्वारा गणित किया गया दैनिक भूकेन्द्रीय चन्द्र व ग्रह स्पष्ट विकलाओं तक। स बार भी दिल्ली का भूपृष्ठीय दैनिक चन्द्रमा भी विकलाओं तक दिया गया है, जा

ारे विश्व में और कहीं नहीं हैं। साथ में शर, क्रान्ति, तिथि नक्षत्र, योग, करण, ात-त्यौहार आदि भी। विशेष विवरण के लिए कृपया पिछला आवरण पृष्ठ देखें।

©

गणित कर्त्ता एवं प्रकाशक
अवतार कृष्ण कौल
श्रीकृष्ण पब्लिशिंग हाउस
24, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली-110092 (भारत)
मूल्य: हिन्दी संस्करण: 40 रुपए/8 डालर; अंग्रेज़ी संस्करण: 50 रुपए/ 10 डालर

प्राक्कथन

श्रीकृष्ण सदा की भान्ति इस बार भी कृपालु रहे हैं कि १९९६ का संस्करण काफी देर से छपने के बावजूद भी सारे का सारा बिक गया। यह भी उन्हीं की असीम कृपा है कि इस वर्ष का यह पंचांग अन्य वर्षों की अपेक्षा शीघ्र प्रकाशित हो पाया।

आजकल भारतवर्ष में प्रायः आधुनिक व सिद्धान्त खगोलिकी का एक ही प्रयोजन माना जाता है, और वह है फलित ज्योतिष, भले ही ऐसी धारणा गलत क्यों न हो। फलित ज्योतिष की किसी प्रणाली को भी उतना ही महत्वपूर्ण व सफल माना जा सकता है जितनी अधिक सही भविष्यवाणियां उस प्रणाली के अनुयायी कर पाते हों। इस कसौटी पर खरा उतरने के लिए किसी ऐसे व्यक्ति का चयन करना होगा जो अपने साथियों व "शिष्यों" आदि के समाज में अच्छी प्रतिष्ठा व विश्वसनीयता रखता हो क्योंकि आप किसी नौसिखिये की असफलता दिखलाकर किसी प्रणाली को गलत सिद्ध नहीं कर सकते हैं।

केन्द्र में एक नयी सरकार का गठन हो चुका है अतः यह तर्कसंगत ही है कि इससे पहले वाली सरकार के विषय में की गई भविष्यवाणियों का "पौस्टमार्टम" (postmortem) किया जाए। वह सरकार पूरे पांच वर्ष टिकी रही। हम यहां किसी नौसिखिये द्वारा की गई भविष्यवाणियों का विश्लेषण नहीं करेंगे अपितु केवल "दिग्गजों" की भविष्यवाणियों का, वह भी किसी ऐसी भविष्यवाणी का नहीं जो एक-आध बार की गई हो अपितु स्पष्ट शब्दों में बार-बार दोहराई गई हो। यहां भी हम केवल लिखित प्रमाणों को ही आधार मानेंगे और वह भी किसी भूली-बिसरी पत्रिका के नहीं अपितु "५५ वर्ष पूर्व स्थापित की गई" ऐसी पत्रिका जिसके बारे में कहा जाता है कि उसको "अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है" अर्थात् बंगलौर से प्रकाशित होने वाला "ऐस्ट्रोलॉजिकल मैगज़ीन"। संक्षेप में आप यह कह सकते है कि "परीक्षार्थी" व "सामग्री" दोनों के ही "प्रमाणपत्र" असंदिग्ध हैं।

१) श्रीगणेश में ही १९९१ के चुनावों के विषय में जून १९९१ के "ऐस्ट्रोलॉजिकल मैगज़ीन" के सम्पादकीय में पृष्ठ ५३१ पर कहा गया था,"क) किसी एक पार्टी को बहुमत नहीं मिलेगा" तथा ख) "कांग्रेस आई व जनता दल की एक मिली जुली सरकार बनेगी"। जैसा कि सभी जानते ही हैं कांग्रेस आई की ही सरकार बनी और उस समय जनता दल के साथ उसकी "छठी-आठवीं" थी!

इस प्रकार से भविष्यवाणियों का "श्रीगणेश" ही गलत हुआ!.....पहली असफल भविष्यवाणी

२) नरसिंह राव सरकार ने २१ जून १९९१ को शपथ ग्रहण की और इस के बाद पहली "भविष्यवाणी" अक्टूबर १९९१ के उसी पत्रिका के सम्पादकीय में पृष्ठ ८२७ पर इस प्रकार थी, "संक्षेप में यह कह सकते हैं कि नरसिंह राव को स्वास्थ्य के कारण से कुर्सी छोड़नी पड़ेगी। इसके शीघ्र बाद चुनाव होने वाले नहीं हैं। राष्ट्रपति कुछ दलों को आमंत्रित कर सकते हैं कि वह मिलकर एक राष्ट्रीय या मिली जुली सरकार बनालें ताकि चुनाव न कराने पड़ें"।

स्पष्ट ही है कि १९९१ में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ.....दूसरी असफल भविष्यवाणी

३) इसी पत्रिका के १९९२ के वार्षिक अंक के सम्पादकीय में यह कहा गया था कि "नरसिंह राव सरकार गिर जाएगी और उसके बदले एक मिली जुली सरकार बनाई जाएगी"।

१९९२ में भी ऐसा कुछ नहीं हुआ व नरसिंह राव सरकार बनी रही!....तीसरी असफल भविष्यवाणी

४) इसी पत्रिका के १९९३ के वार्षिक अंक के सम्पादकीय में पृष्ठ ६ और ११७ पर कहा गया था, "किसी प्रकार की राष्ट्रीय या मिली-जुली सरकार बनाई जा सकती है।...भारतवर्ष अवश्य ही किसी राजनीतिक संकट से गुज़रेगा जिससे वर्तमान सरकार के अस्तित्व को खतरा होगा और आम चुनावों के लिए रास्ता साफ होजाएगा।"

सर्वविदित ही है कि १९९३ में भी ऐसा कुछ नहीं हुआ.....चौथी असफल भविष्यवाणी

५) १९९३ जनवरी से दिसम्बर तक प्रतीक्षा करने के बाद भी मध्यावधि चुनाव नहीं हुए। देवताओं को भी शर्मिन्दा करने वाली सलसलाहट के साथ इसी पत्रिका के "धैर्यवान" सम्पादक १९९४ के वार्षिक अंक के अपने सम्पादकीय में पृष्ठ ६ पर लिखते हैं, "राजनीतिक हालात मध्यावधि चुनावों को निकटवर्ती बनाएंगे"। मानो अपने "चाहने वालों" व "पाठकों" के मन से किसी प्रकार की दुविधा को दूर करते हुए आगे इन की इसी अंक के पृष्ठ ७ पर भविष्यवाणी थी, "आगामी वर्ष भारत के लिए कुछ अप्रत्याशित घटनाशील होगा। लोकसभा भंग और एक नई सरकार के गठन की पूरी सम्भावनाएं हैं"।

१९९४ के लिए इनकी यह "भविष्यवाणी" भी मृगतृष्णा ही सिद्ध हुई।...पांचवीं असफल भविष्यवाणी

६) कहावत है कि "बहादुर लोग लड़ाई के मैदान से कभी पीछे नहीं हटते हैं"। इसी उक्ति के अनुसार यह सम्पादक महोदय यद्यपि पांच बार करारी मात खा चुके थे फिर भी छठी बार अपनी "विश्वविख्यात" पत्रिका के १९९५ के वार्षिक अंक के सम्पादकीय में पृष्ठ १६१ पर इनका कथन था,"सारे के सारे देश में मध्यावधि चुनाव हिंसा से व्याप्त होंगे। किसी भी पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिलेगा।"

१९९५ में भी मध्यावधि चुनाव नहीं हुए।.....छठी असफल भविष्यवाणी

७) यह भी कहावत है कि "जबतक सांस तबतक आस" अतः अपनी पत्रिका के अक्टूबर १९९५ के अपने सम्पादकीय के पृष्ठ ७९६ पर इनकी "भविष्यवाणी" थी कि "सरकार के मुखिया के रूप में प्रधान मंत्री को अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। ऐसी ग्रहस्थिति प्रायः नेतृत्व में परिवर्तन दर्शाती है"।.....*सातवीं असफल भविष्यवाणी*

अब तो यह एक ऐतिहासिक तथ्य बन चुका है कि नरसिंह राव सरकार ने अपने पांच वर्ष पूरे किए; कोई मध्यावधि चुनाव नहीं हुए और न ही नेतृत्व में कोई परिवर्तन हुआ भले ही इससे "ज्योतिष

के कर्णधारों" व "दिग्गजों" की पोल खुल गई हो।

अपनी भविष्यवाणी के इस प्रकार असफल रहने पर, वह भी एक-आध बार नहीं अपितु पांच वर्षों तक लगातार सात बार, और वह भी किसी "बेचारे तुच्छ प्राणी" के विषय में नहीं अपितु राष्ट्र के भविष्य के विषय में, कोई भी व्यक्ति जो वास्तव में ही वैज्ञानिक प्रवृत्ति का होगा अपनी इन असफलताओं के कारणों का विश्लेषण करता। जब इस प्रकार की ज्वलंत असफलताओं को टाला जाए और उसके विपरीत छोटी से छोटी भविष्यवाणियों के सफल होने पर अपने गाल बजाए जाएं, तो स्पष्ट ही है कि या तो वह प्रणाली ही गलत है या फिर उन "दिग्गज विद्वानों" को ही उस प्रणाली का पूरा ज्ञान नहीं है। अब यदि "विद्वान" ही किसी प्रणाली को साठ वर्षों तक "सीखते रहने के पश्चात् भी" विशेषतः जबकि उन्होंने वह पद्धति अपने गुरुजनों से परम्परा में प्राप्त की हो, ठीक से नहीं समझ पाए हैं तो कोई और व्यक्ति उसको सही ढ़ंग से समझ पाएगा, यह असम्भव ही है। इसमें विशेषकर नए विद्यार्थी तो कदापि सफल नहीं हो सकते हैं क्योंकि आजकल उनकी "भर्ती" इन "ज्योतिष के विद्यालयों" में तो पशुओं की भान्ति धडल्ले से की जा रही है----भले ही यह "दिग्गज" उन शिक्षार्थियों को "ज्योतिष सम्राट" की उपाधियां दे दें क्योंकि जब वह उपाधियां देने वाले प्राचार्यों के भी प्राचार्य उस प्रणाली में सफल नहीं हो सके तो अन्य कैसे होंगे। अतः इससे एकमात्र यही निष्कर्ष निकलता है कि वह प्रणाली ही जिसको कि यह "विद्वान" सिखा रहे हैं मूलतः त्रुटिपूर्ण और गलत है।

इसी परिपेक्ष में इन पंक्तियों के लेखक ने भी पिछले कई वर्षों से अपने पंचांग व "एक्सप्रैस स्टार टैलर" पत्रिका में लगातार भविष्यवाणियां की हैं और उनमें से अधिकतर सही सिद्ध होती रही हैं यहां तक कि उन्हीं सही भविष्यवाणियों के लिए इस लेखक को ३ सितम्बर १९९५ को काञ्ची कामकोटि के जगद्गुरु श्री जयेन्द्र सरस्वती द्वारा "नास्त्रदामस पुरस्कार" दिया गया। यह पुरस्कार इसी "ऐक्सप्रैस स्टार टैलर" नामक ज्योतिष पत्रिका द्वारा प्रारम्भ किया गया है और इसके लिए हम पुनः इस पत्रिका के प्रवन्ध-सम्पादक डा. गौरहरि सिंघानिया व उस पत्रिका की सम्पादिका श्रीमती कविता सिंघानिया तथा अन्य सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

यदि हमारी एक-आध भविष्यवाणी कभी कभार असफल सिद्ध हो भी गई तो हमने अपने पिछले वर्ष के पंचांग में उनका पूर्णतया विश्लेषण करके "मानव स्वभाववश" हुई त्रुटि को स्वीकार भी किया और ज्योतिष के परिपेक्ष में उसको समझाया भी।

इन पंक्तियों के लेखक ने भी अपने पिछले वर्ष के पंचांग के अंग्रेज़ी संस्करण के पृष्ठ १३२ से १३६ पर निम्नलिखित भविष्यवाणियां की थीं:-

१) "किसी भी पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिलेगा"।

२) "एक ऐसी मिली जुली सरकार बनेगी जिस के घटक एक दूसरे से बिल्कुल मेल नहीं खाएंगे और उस सरकार में हर व्यक्ति हर अन्य व्यक्ति के नीचे से ज़मीन सरकाने का प्रयत्न करेगा"

३) "श्री नरसिंह राव पुनः प्रधान मंत्री नहीं बनेंगे।...ऐसे प्रोग्रेशन्स से यही संकेत मिलता है कि वह जितना पचा सकते हैं उससे कहीं अधिक खाने की कौशिश कर रहे हैं।"

४) "श्रीमती सोनिया गांधी निकट भविष्य में राजनीति के क्षेत्र में नहीं आएंगी।"

५) "सर्वश्री अर्जुन सिंह, शरदपवार, लालकृष्ण अडवाणी व मुरली मनोहर जोशी में से किसी के भी प्रधानमंत्री बनने की सम्भावनी नहीं है।"

६) श्रीअटल बिहारी वाजपेयी प्रधान मंत्री बन सकते हैं यद्यपि उनकी पीठ में छुरा घोंपा जा सकता है (जनता मुक्ति मोर्चा के शैलेन्द्र महतो अपने बयान से मुकर गए!)

यह सब की सब भविष्यवाणियां निर्विवाद रूप से सही सिद्ध हुई।

जब आप ऐस्ट्रोलॉजिकल मैगज़ीन के "विद्वान संपादकों" की लगातार पांच वर्षों तक सात बार की गई भविष्यवाणी के असफल रहने की तुलना एक ही बार में इस लेखक की छः की छः भविष्यवाणियों की सफलता के साथ करेंगे तो निश्चय ही आप अपने क्षीर-नीर विवेक द्वारा असली और नकली का अन्तर समझ पाएंगे। हम यह पहले ही कई बार स्पष्ट कर आए हैं कि हम किसी "सहजज्ञान" या "अन्तर्ज्ञान" का दावा नहीं करते हैं और यदि वह हमारे पास होता भी तो हम उसका प्रयोग "चुनाव परिणामों" जैसे तुच्छ विषयों के लिए कभी नहीं करते क्योंकि ऐसा करना तो हीरों के बदले कोयला मांगने के समान होता। हम केवल शुद्ध खगोलिकी के गणित और फलित ज्योतिष अनुसार विश्लेषण को ही आधार बनाते हैं। न ही हम अपने लिए कोई तीव्र-बुद्धि होने का ही दावा करते हैं। अतः यह स्पष्ट ही है कि मैं अपने मुंह मियां मिट्ठू नहीं बन रहा हूं। मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि मेरी भविष्यवाणियों की सफलता इस बात पर आधारित है कि वह सायन राशिचक्र तथा दिनवर्ष पद्धति से की गई थीं। इन प्रणालियों की सफलता का भी यह रहस्य है कि केवल वह ही वेदों पर आधारित हैं न कि वह पद्धतियां जिनकी सफलता "शून्य" रही हो, भले ही उनके अनुयायी यथार्थ को झुठलाने के लिए कुछ भी कहते रहें।

इसी बात को इस पंचांग में तर्कसंगत युक्तियों से हर प्रकार के सन्देहों से परे निर्विवाद रूप में सिद्ध किया गया है।

दिनवर्ष पद्धति (Secondary Progressions) की इस प्रणाली को पृष्ठ ८३ पर अपनी मातृभूमि के उदाहरण द्वारा संक्षेप मे समझाया गया है।

रुद्रपुर (नैनीताल) के हमारे मित्र, श्री भोलादत्त महतोलिया, ज्योतिष शास्त्री, ने "श्रीविष्णु महापुराण" के कुछ श्लोकों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है जो हमसे पिछले वर्ष रह गये थे।

इनका परिशीलन करने से तो यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होजाता है कि इस महापुराण में एकमात्र सायन राशिचक्र का ही वर्णन है। तथाकथित "बृहत्पाराशरी" के लेखक महर्षि पाराशर द्वारा रचित यह एकमात्र पुराण है। इससे इस धारणा की ही पुष्टि हो जाती है कि यदि इस ग्रन्थ में कोई राशिचक्र होगा तो वह सायन ही होगा, निरयण नहीं। इसी प्रकार महतोलियाजी ने हमें "श्रीमद्भागवत" के कुछ श्लोकों का भी स्मरण कराया है जिनमें केवल सायन राशिचक्र का ही वर्णन है। क्योंकि भगवान कृष्ण के जन्मसमय आदि का निर्धारण इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर किया गया है अतः यह भी स्वतः सिद्ध हो जाता है कि जब कोई "विद्वान" यह कहता है कि उन दिव्य विभूतियों के अवतार किसी निरयण राशिचक्र में हुए थे तो उस "विद्वान" को मालूम ही नहीं है कि वह क्या अनर्गल बातें कर रहा है! ऐसे "विद्वान" जब इन्हीं दिव्य विभूतियों की निरयण जन्मपत्रियों द्वारा "सही फलित" बताने लगते हैं तो वह वास्तव में उन शास्त्रों की ही अवहेलना कर रहे हैं जिनके आधार पर उन्होंने उनका जन्मसमय आदि निश्चित किया है!

इन बातों का भी इस पंचांग में पूरी तरह से प्रतिपादन किया गया है।

श्रीमहतोलिया ने---जो स्वयं भी "श्री देवभूमि पंचांगम्" नाम से एक निरयण पंचांग के सम्पादक-प्रकाशक हैं----आधुनिक "विद्वानों" की मनः स्थिति का सुन्दर चित्रण इन शब्दों में किया है, "मैं आप से पूरी तरह सहमत हू कि हमारे सिद्धान्त ग्रन्थों तथा धर्मशास्त्रों में केवल सायन राशिचक्र का ही वर्णन है, निरयण का कही कोई नाम भी नहीं है। अब प्रश्न यह उठता है कि यह सब जानते हुए भी मैं फिर एक निरयण पंचांग ही क्यों प्रकाशित कर रहा हूं। उत्तर यही है कि 'विषकृमिवत् जीवामि'। इस दोगले नेताओं के देश में मुझे भी दोगलेपन से ही चलना पड़ रहा है।" कितना अच्छा होता कि श्रीमहतोलिया की भान्ति "दोगलेपन" को स्वीकार करने की शक्ति सब विद्वानों में होती और वह निरयण राशिचक्र को वैदिक राशिचक्र सिद्ध करने के प्रयास से असम्भव को सम्भव बनाने की मूर्खता न करते!

मुझे स्वयं भी इसी "दोगलेपन" का शिकार होना पड़ रहा है क्योंकि यदि मैं केवल सायन राशिचक्र व भूपृष्ठीय चन्द्रमा के आधार पर संक्रान्तियां व तिथि, नक्षत्र, योग आदि देना प्रारम्भ करूं तो जनसाधारण भ्रमित होजाएगा। इसलिए मुझे न चाहते हुए भी यह सब निरयण व भूकेन्द्रीय राशिचक्र के ही आधार से देने पड़ रहे हैं। इसके लिए मैंने राष्ट्रीय पंचांग में प्रयुक्त होने वाला अयनांश ही अपनाया है और क्योंकि उसका और कोई नाम उचित नहीं लगता है अतः मैंने उस अयनांश का नाम "सरकारी अयनांश" रखा है। तथापि मैंने हर संक्रान्ति के साथ-साथ यह भी स्पष्ट किया है कि कौन सी संक्रान्ति वास्तव में वेदों के अनुसार है और क्यों ताकि जनसाधारण वास्तविकता को शनैः शनैः आत्मसात् करले। इसी प्रकार भूकेन्द्रीय निरयण चन्द्रमा के साथ ही दिल्ली के लिए भूपृष्ठीय चन्द्रमा तथा तदनुसार शर और क्रान्ति भी दिए हैं। क्योंकि भूपृष्ठीय व भूकेन्द्रीय शर क्रान्ति आदि में काफी अन्तर है और क्योंकि वैधृति-व्यतीपात क्रान्ति साम्य के आधार पर ही ज्ञात होता है, अतः इस वर्ष से हमने वह चमत्कृतियां देना बन्द कर दिया है। इसी प्रकार क्योंकि विष्टि करण का ही दूसरा नाम भद्रा है और यह करण भी भूकेन्द्रीय ग्रहगणित के आधार पर होने से भारतवर्ष के लिए गलत हैं, अतः "भद्रा" भी इस वर्ष नहीं दी है।

भूपृष्ठीय चन्द्रमा की गति बहुत ही असमान है इसलिए २४ घंटों या १२ घंटों के अन्तराल से किसी क्षण विशेष के लिए इसका सही सही साधन करना असम्भव है। अतः हम अगले वर्ष कुछ सुगम सूत्र छापेंगे ताकि पाठक स्वयं ही किसी भी आगामी या भूत काल का भूपृष्ठीय चन्द्रमा निकाल सकें।

इस वर्ष ग्रहस्पष्ट के हर पृष्ठ में ३१ दिनों का ग्रहस्पष्ट है अतः ३१ फरवरी को ३ मार्च समझें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रियों व भूपृष्ठीय चन्द्रस्पष्ट आदि के लिए कृपया पृष्ठ ५ देखें।

क्योंकि निरयण लग्न वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध हैं अतः हम न वह लग्नसारिणी दे रहे हैं और न ही ऐसे वेद-विरुद्ध निरयण ग्रहगणित पर आधारित मूहूर्त आदि। हमने भारतवर्ष के कुछ प्रमुख स्थानों का सायन लग्न जानने की सुगम रीति पृष्ठ ८६ पर दी है। आशा है कि अगले वर्ष हम सायन लग्न सारिणी दे देंगे।

अभी तक पाठकों को यह बात स्पष्ट हो गई होगी कि यदि लोकमान्य बालगंगाधर तिलक व स्व. मदनमोहन मालवीय आजकल जीवित होते तो वह भी इस पंचांग में दिए गए लेखों को पढ़कर सायन राशिचक्र व दिनवर्ष पद्धति ही अपनाते। इसके विपरीत आजकल ज्योतिर्जगत में कुछ ऐसे स्वार्थी तत्त्व भी हैं जो इस लेख में प्रकाशित तथ्यों का प्रचार-प्रसार करने के बदले उनको "टोकरी के नीचे" छिपा कर रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। अतः प्रत्येक पाठक को दूसरों द्वारा पहल करने की प्रतीक्षा करने के बदले अपने-अपने स्तर पर स्वयं ही एक अभियान छेड़ना होगा क्योंकि वास्तव में इन तथ्यों को उजागर करने की पहल हो ही चुकी है! इस सत्य का प्रचार-प्रसार करने का सर्वोत्तम उपाय यह है कि आप अपने मित्रों व सहपाठियों आदि को यह पंचांग खरीदने के लिए बाध्य करें और वह इसमें दिए गए तथ्यों पर यथाशक्ति मनन करें ताकि उन्हें "वैदिक ज्योतिष" के नाम पर कोई भी ठग न सके।

हमें आशा है कि आप यह पंचांग वास्तव में ही त्रुटि रहित पाएंगे क्योंकि इसके सारे आंकड़े कम्प्यूटर द्वारा प्रतिपादित हैं तथा "प्रूफ रीडिंग" भी बहुत ही श्रमपूर्वक की गई है।

आप से निवेदन है कि आप अपने विचार, चाहे वह कितने ही तीखे क्यों न हों, अवश्य भेजें।

हम प्रयत्न करेंगे कि १९९८ का पंचांग १९९७ के जून/जुलाई में ही प्रकाशित करें किन्तु केवल श्रीकृष्ण ही इस की "गारण्टी" दे सकते हैं!

१८ सितम्बर, १९९६

अवतार कृष्ण कौल

ॐ तत् सत् ब्रह्मार्पणमस्तु

TROPICAL HELIO/GEOCENTRIC OSCULATING ORBITAL ELEMENTS AS ON 1.1.1997,0-0 ET

१-१-१९९७ को प्रातः ५ घं २६ मि भा. स्टै. टाईम अनुसार सूर्यकेन्द्रीय/भूकेन्द्रीय सायन वृत्तीय सूत्र

Planet	ग्रह	Mean longi.			daily motion			Incli. orbit			Ascending Node			Perihelion			Mean di.in	Ecce ntri.	Sidereal period day	Synodic period days	SS.mean longitu.	+/- modern ele	
		D	M	S	D	M	S	D	M	S	D	M	S	D	M	S	lac ml	केन्द्र-			सूर्यसिद्धान्त दृक् अन्तर		
		मध्यम भोग			दैनिक गति			कक्षझुकाव			पातभोग			नीचभोग			सूर्यदूरी	च्युति	नाक्षत्रकाल	सयुतिक-	मध्यमभोग	D	H	S
		अं	क	वि	अं	क	वि	अं	क	वि	अं	क	वि	अं	क	वि	लक्षमील		दिन	ाल दिन	अं	क	वि	अं	क	वि
Sun	रवि	280	41	25	0	59	8										930	0.000	365.26		256	34	50	-24	5	33
" pe	भूउपभू	282	53	20	0	0	.17														77	11	25	-25	34	32
Moon	चन्द्र	183	34	27	13	10	35	24	52	8							2.39	0.054	27.32	29.53	159	38	52	-23	54	37
" Pe	चन्द्रनी.	321	18	39	0	6	41														123	13	14	-18	4	59
Rahu	राहु	183	32	19	0	3	11														163	6	58	-19	55	41
Mercu.	बुध	89	3	8	4	5	32	7	0	18	48	17	44	77	24	43	360	0.206	87.969	115.88	71	34	58	-17	26	52
Venus	शुक्र	226	48	19	1	36	8	3	23	41	76	39	15	131	41	24	672	0.007	224.701	583.92	321	17	26	-15	30	19
Earth	पृथिवी	100	41	17	0	59	8	0	0	0	-	-	-	102	51	17	930	0.017	365.26	- - -						
Mars	मंगल	141	19	34	0	31	27	1	50	59	49	32	10	336	2	19	1416	0.093	686.98	779.94	115	48	33	-25	29	53
Jupite	बृहस्पति	303	19	12	0	4	59	1	18	17	100	26	42	15	42	8	4836	0.048	4332.59	398.88	284	4	38	-19	13	50
Saturn	शनि	13	11	13	0	2	1	2	29	8	113	36	8	89	25	18	8882	0.052	10759.2	378.09	343	27	48	-29	43	8
Uranu.	यूरेनस	300	22	35	0	0	43	0	46	24	74	5	13	176	22	59	17865	0.045	30688.5	369.66						
Neptu.	नेप्चून	298	21	24	0	0	23	1	46	9	131	45	16	3	32	55	27989	0.008	60181.3	367.49						
Pluto	प्लूटो	234	46	32	0	0	15	17	7	9	110	21	4	224	46	45	36735	0.254	90737.2	366.73						

पंचांग दिवसों में १९९७ के मुख्य वर्षों के मान दि घ मि से		मध्यम सौर दिनों में भिन्न मासों के मान दिन घटा मि से	
सायन; संपात से संपात तक:	३६५-०५-४८-४५.२	सयुति; अमान्त से अमान्त तक:	२६-१२-४४-०२.६
नाक्षत्र; योगतारा से योगतारा तक:	३६५-०६-०६-०६.८	सायन; सम्पात से सम्पात तक:	२७-०७-४३-०४.७
परिवर्ष; भूमिनीच से भूमिनीच तक:	३६५-०६-१३-५२.५	नाक्षत्र; योगतारा से योगतारा तक:	२७-०७-४३-११.६
ग्रहणवर्ष पात से पात तक:	३४६-१४-५२-५४.४	परिमास; नीचभोग से नीचभोग तक:	२७-१३-१८-३३.१
मध्यम नाक्षत्र दिवस मान	०-२३-५६-०४.०६	मध्यम सौर दिवस मान	०-२४-०३-५६.५

१)इस पृष्ठ में दिए गए लगभग सारे आकड़े निदेशक, खगोल विज्ञान केन्द्र, कलकत्ता से प्राप्त हुए हैं जिसके लिए हम उनके आभारी हैं। यह सारा पंचांग इन्हीं आधुनिकतम आकड़ों से बनाया गया है। २) १-१-१९९७ को पचांग समय विश्व समय से लगभग ६३ सेकण्ड धन है। ३) सूर्य, चन्द्रमा, राहु तथा भूउपभू के आकड़े भूकेन्द्रीय हैं और शेष सब ग्रहों के सूर्यकेन्द्रीय। ४) इन आंकड़ों के साथ राशियों के नाम इसलिए नहीं दिए गए हैं क्योंकि विश्वभर की वेधशालाएं यह सब आकड़े ० से लेकर ३६० तक के अंशों व कलाओं आदि में ही देती हैं जिनको फलितज्योतिषी राशियों आदि में परिवर्तित करते हैं। भारत के तथाकथित "वैदिक ज्योतिषियों" ने तो इन विदेशी वेधशालाओं के आकड़ों का भी "अयनांश मुण्डन सरकार" करके वेदों की आज्ञा के विपरीत इनको भी निरयण बना दिया है। ५) ग्रहों के नाक्षत्रकाल दिनों व संयुतिकाल दिनों का मान सायन दिवसों के अनुसार है। ६)"सूर्य सिद्धान्त" के मध्यम भोग इस समय उपलब्ध ग्रन्थों के आधार पर बिना किसी "सरकार" के दिए गए हैं। इस ग्रन्थ में तो वास्तव में यह मध्यम भोग सायन दिए गए हैं परन्तु यदि कुछ वेद-विरोधी "निरयण वैदिक ज्योतिषी" यह मानते हैं कि यह भोगांश निरयण हैं तो उन भोगांशों में से फिर उनको २२अं २५क १५वि और घटाने पड़ेंगे क्योंकि उस ग्रन्थ के अनुसार १-१-१९९७ को यही अयनांश है जो कि उन भोगांशों में कम करना होगा, उनमें जोड़ना नहीं। आधुनिक खगोलिकी के सायन भोगांशों में से सरकारी अयनांश घटाकर उन्हें निरयण बनाकर उनकी तुलना "सूर्य सिद्धान्त" के भोगांशों के साथ करना न तो युक्तिसंगत है, न तर्कसंगत न वैज्ञानिक और न शास्त्र सम्मत ही क्योंकि उस ग्रन्थ में तो यह कहीं भी नहीं कहा गया है कि इसमें दिए गए भोगांशों को सायन बनाने के लिए उनमें सरकारी अयनांश जोड़ना है।जब आधुनिक खगोलिकी के भोगांशों और "सूर्य सिद्धान्त" के गलत भोगांशों के अन्तर को येन-केन-प्रकारेण खपाया जाता है तो इस मिलावट को यह "स्वयम्भू वैदिक ज्योतिषी" "बीज सरकार" का सुन्दर नाम देते हैं जबकि वास्तव में इस शब्द की व्युत्पत्ति भी कुछ घृणित ही है!

७) शेष अन्य अपयोगी आकड़े जैसे कलि वजुलियन अहर्गण, सरकारी अयनांश परिवर्तन आदि पचांग में ही दिए गए हैं। विशेष सूचना: पीछे बहुत सारे पाठक अपनी जन्मपत्री बनवाने के लिए लिखते रहे हैं। हम उनको कोई सन्तोषजनक उत्तर इसलिए नहीं दे पारहे थे कि हम स्वयं ही दुविधा में थे कि वास्तविक वैदिक ज्योतिष के सन्दर्भ में कौन से प्रकार की जन्मपत्री अधिक उपयोगी रहेगी। काफी विचार-विमर्श के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि एक ऐसी जन्मपत्री बनाईजाए जो सब प्रकार से सम्पूर्ण हो अर्थात् जिसमें विकलान्त भूकेन्द्रीय सायन ग्रह स्पष्ट व शर, क्रान्ति के इलावा सूर्यकेन्द्रीय ग्रहस्पष्ट भी हो और मध्यम व स्पष्ट राहु भी। सायन ग्रहस्पष्ट के साथ प्लैनिसिडियन भाव स्पष्ट और दृष्टि सकलन अर्थात् "आस्पेक्टेरियन" व किसी एक वर्ष का "प्रोग्रेशन" अर्थात् उस वर्ष विशेष की ग्रहस्थिति व उन ग्रहों के द्वारा पारस्परिक व जन्मकालीन ग्रहों के साथ बनाए जाने वाले कोण दिए जाएंगे।क्योंकि लग्न व दशमभाव के "प्रोग्रेशन"के विषय में लोग प्रायः भ्रमित हो जाते हैं अतः वह चालीस-पचास वर्षों तक का अलग से दिया जाएगा। इस भारतवर्ष में क्योंकि निरयण जन्मपत्रियों का उन्माद अभी कुछ कम नहीं है (यद्यपि वह पद्धति सब प्रकार से गलत, निरर्थक व शास्त्र विरुद्ध है) हम वह सम्पूर्ण पत्री भी साथ ही देदेंगे जिसमें ग्रहों के निरयण भोगांशों,भाव स्पष्ट व तिथि-नक्षत्र के अतिरिक्त सप्तवर्गी कुण्डलियां,अष्टकवर्ग व भूकेन्द्रीय चन्द्रमा के अनुसार विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा व प्रत्यन्तर्दशा भी होगी। जैसा आप स्वयं ही इस पंचांग के परिशीलन से देखेंगे, विंशोत्तरी दशा-भुक्ति के लिए केवल भूपृष्ठीय चन्द्रम ही उपयुक्त हो सकता है--यदि कदाचित् इस दशापद्धति में कोई तथ्य है भी, जो वैसे असम्भव ही है---अतः यह चन्द्र- स्पष्ट भी दिया जाएगा और उसके अनुसार विंशोत्तरी महादशा व अन्तर्दशा भी। यह सब केवल अंग्रेज़ी भाषा में ही होगा और निरयण जन्म व सप्तवर्ग आदि की कुण्डलियां दक्षिण भारतीय पद्धति में होंगी। इतनी सारी (३० पृष्ठों की) सामग्री होने पर भी इस "खिचडी जन्मपत्री" के लिए केवल २५०) एम. ओ./ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम देय होंगे। यदि किसी पाठक को केवल सायन ग्रहस्पष्ट व "प्रोग्रेशन" आदि चाहिए तो वह १५०) की राशि अग्रिम भेज के मगवाले। केवल जन्मकालीन भूपृष्ठीय चन्द्रमा के लिए २०)की राशि अग्रिम भेजें।क्योंकि निरयण पद्धति वेद-विरुद्ध है अतः हमसे केवल निरयण पत्रिका मांग कर हमें शर्मिन्दा न करें! पचांग गणित के लिए अलग से सम्पर्क करें।

वैदिक ज्योतिष सायन है, निरयण नहीं

"विज्ञान का मुख्य आकर्षण है कि वह कभी यह मानकर नहीं चलता कि उसने सब प्रश्नों का उत्तर पा लिया है। हम जितना आगे बढ़ते हैं हमारे सामने उतने ही नये प्रश्न उपस्थित हो जाते हैं"

जैसा कि इस पंचांग के प्राक्कथन में कहा गया है, पिछले वर्ष के "वैदिक ज्योतिष तथा अयनांश" लेख के सन्दर्भ मे इतने पत्र आगए कि उनसे प्रोत्साहित होकर तथा इस बात के और प्रमाण मिलने पर कि केवल सायन राशि-चक्र ही वास्तविक वैदिक खगोलिकी अतः फलित ज्योतिष का आधार है, पहले तो हमारा विचार था कि इस लेख का नाम "वैदिक ज्योतिष अथवा छल" रख लें परन्तु इस विचार से कि बहुत सारे नए पाठक जिन्होंने हमारा पिछला पंचांग नहीं देखा है उस शीर्षक का अभिप्राय समझ नहीं पाएंगे अतः इस वर्ष इस लेख का शीर्षक "वैदिक ज्योतिष सायन है, निरयण नहीं" रख लिया है। हमें पिछले पंचांग में दिए गए बहुत सारे तथ्यों को यहां दोहराना होगा ताकि उनसे एक ओर तो नए पाठक लाभान्वित हों तो दूसरी ओर पुराने पाठक भी उन पुराने तथ्यों को नए तथ्यों के प्रकाश में और अच्छी प्रकार से समझ लें। आइए अब प्रस्तुत विषय की ओर चलते हैं।

विज्ञान का यह मुख्य आकर्षण कि "हमारे सामने नये प्रश्न उपस्थित हो जाते हैं" जितना विज्ञान पर लागू होता है उतना ही ज्योतिष शास्त्र सहित सारे ही शास्त्रों तथा उनकी भिन्न-भिन्न व्याख्याओं पर भी। अलग-अलग विधियों द्वारा इन प्रश्नों का समाधान ढूंढ़ने को ही प्राचीन काल में शास्त्रार्थ कहा जाता था। अन्यथा कोई कारण नहीं है कि गीताजी जैसे विश्वप्रसिद्ध तथा विश्वमान्य ग्रन्थ पर इतने भाष्य और अनुवाद लिखे जाते। प्रत्येक मत का अनुयायी अपने भाष्य या अनुवाद द्वारा दूसरे के मत का खण्डन करके अपने मत को स्थापित करना चाहता था जैसे भगवान शंकराचार्य ने अपने भाष्य से बौद्धों तथा कणादों आदि के सिद्धान्तों का खण्डन करके उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित "शुद्धाद्वैत" को स्थापित किया था। इसी प्रकार भगवान रामानुजाचार्य ने अन्य मतों का खण्डन करके अपने "विशिष्टाद्वैत" मत का प्रतिपादन करने का प्रयत्न किया था। भगवान कृष्णद्वैपायन वेदव्यास का विश्वविख्यात "ब्रह्मसूत्र" भी वास्तव में इसी प्रकार की एक कृति है जिसके द्वारा उन ने सभी मत-मतान्तरों को अपने अकाट्य तर्कों व प्रमाणों द्वारा खण्डन करके अपने अद्वैतवाद को सदा के लिए स्थापित किया है और भगवान शंकराचार्य का भाष्य तो उसपर सोने में सुहागे का काम करता रहा है।

हम भी पिछले कुछ वर्षों से इसी प्रकार की भावना से "अयनांश" जैसे विवादास्पद व जटिल प्रसंग पर "शास्त्रार्थ" करते आए हैं और जहां तक हो सका है हमने भी पूर्वाचार्यों विशेषकर भगवान श्री आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित "शास्त्रार्थ" की पद्धति का अवलम्बन किया है। यह पद्धति इस प्रकार है : पहले तो आप अपर-पक्ष, जिसको भगवान शंकराचार्य "पूर्वपक्ष" कहते हैं, के "सिद्धान्त" को ओज व प्रवाहपूर्ण भाषा में "स्थापित" करते हैं तत्पश्चात् उतनी ही या उससे भी अधिक प्रवाहपूर्ण ओर ओजस्वी भाषा में "सिद्धान्ती" पूर्वपक्ष के "प्रमाण पत्र" मागता है अर्थात् यह पूछता है कि क्या पूर्वपक्ष को उस विषय पर बोलने का अधिकार है या नहीं। फिर आगम अर्थात् वेदों, पुराणों व अन्य शास्त्रों के प्रमाणों द्वारा अपरपक्ष का खण्डन करके उसकी त्रुटियां व न्यूनताएं दिखा कर प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा अपने पक्ष का झण्डा गाड़ देते हैं। इसी कारण हमने अपने आगमप्रमाणों को देते हुए सन्दर्भ सहित संस्कृत के मूल श्लोक भी दिए हैं ताकि इस भाषा के विज्ञ पाठक स्वयं ही यह देखलें कि हमने कहीं किसी श्लोक के अर्थ का अनर्थ तो नहीं किया है क्योकि आजकल यह देखने में आया है कि कुछ "ज्योतिषी" हर "राशि" शब्द की व्युत्पति "बारह राशियों" के सन्दर्भ में तथा हर "नवम" शब्द का अर्थ "नवांश" लगाते हैं, मूल श्लोक वह प्रायः देते ही नहीं हैं और यदि देते भी है तो उनका कोई सन्दर्भ नहीं होता है कि वह कहां से लिए गए है। हो सकता है उन्होंने स्वयं ही उनका "निर्माण-निर्देशन" किया हो। इसी प्रकार हमने अपनी सारी मान्यताओं को ससन्दर्भ प्रमाण देते हुए केवल लिखित सामग्री के आधार पर ही स्थापित किया है।

स्पष्ट है कि न उन पूर्वाचार्यों को और न हमें ही "पूर्वपक्ष" के किसी भी अनुयायी को ठेस पहुँचाने का कोई विचार है। हमें इस बात का भी पूर्ण विश्वास है कि इस ऋषियों की भूमि भारत में जन्म लेने वाले ऐसे साधारण व्यक्ति भी बहुत कम हैं जो किसी भी बात को युक्तियों, आगम तथा प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा समझाए जाने पर अपने मन्तव्य को बदलने में किसी भी प्रकार की हिचकचाहट करेंगे। उच्च कोटि के विद्वानों से तो केवल निर्भीकता और निष्पक्षता की ही आशा की जासकती है क्योंकि स्वयं डा. बी.वी रमण का जुलाई १९६४ के ऐस्ट्रालोजिकल मैगज़ीन में कथन है कि "वराहमिहिर तथा ब्रह्मगुप्त जैसे विद्वानों ने भी प्राचीनतम सिद्धान्तग्रन्थों की शुद्धता पर विचार करते हुए उन पूर्वाचार्यों की त्रुटियों के विषय में बड़े ही तीखे शब्द प्रयुक्त किए थे"। इसी प्रकार स्वयं डा. रमण भी वैज्ञानिकों की "वैदिक ज्योतिष" को पाखंड या "अवैज्ञानिक" आदि मान्यताओं का जब भी खण्डन करते हैं तो वह भी उन वैज्ञानिकों के प्रति बड़े ही तीखे शब्दों का प्रयोग करते हैं। इसका कदापि यह अर्थ नहीं निकाला जा सकता है कि उन ब्रह्मगुप्त या वराहमिहिर का उन पूर्वाचार्यों से कोई निजी वैमनस्य था ----या फिर डा. रमण का उन वैज्ञानिकों से कोई निजी वैमनस्य है ---अपितु वह एक केवल शास्त्रार्थ ही है जिसके द्वारा

वह अपना दृष्टिकोण, मन्तव्य, स्पष्ट कर रहे हैं। आजकल के विद्वानों में भी यही बात स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है कि यदि उनके सामने कोई बात युक्ति पूर्वक ढ़ग से रखी जाती है तो वह अपनी पुरानी मान्यताओं को तिलांजलि देकर उस नए मन्तव्य को सहर्ष स्वीकार करके "अपौरुषेय" अर्थात् दिव्य माने जाने वाले *सूर्य सिद्धान्त* तक में बीज संस्कार अर्थात् कायाकल्प की आवश्यकता मानते हैं ताकि वह "दृक् तुल्य" अर्थात् वैज्ञानिक scientific बन जाए। अतः वैसे तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि किसी भी सज्जन को हमारे इस शास्त्रार्थ से कोई कष्ट पहुँचने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है तथापि यदि किसी भी व्यक्ति की अहम्मन्यता को ज़रा भी ठेस पहुंची हो तो हमें उसके लिए खेद है और उनसे प्रार्थना है कि वह इन विचारों पर मनन करें और निष्पक्ष भाव से सही "वैदिक अयनांश" अपनाएं।

इस संबन्ध में हम पहले अपने विषय में संक्षेप में कुछ credentials "प्रमाण-पत्र" प्रस्तुत करना आवश्यक समझते हैं क्योंकि शताब्दियों से चली आ रही विचारधारा को गलत सिद्ध करने के हमारे प्रयास पर कोई भी पाठक यह आक्षेप कर सकता है कि हमें इस विषय पर लिखने का क्या अधिकार है।

मेरा जन्म श्रीनगर, कश्मीर, में जिसका वास्तविक नाम कश्यप-मुर अर्थात् कश्यप ऋषि का घर था, "स्वामिन-कौशिक" गोत्र के एक ब्राहमण परिवार में हुआ है और मेरा लालन-पालन अधिकतर मेरे नानके में ही हुआ। मेरे स्वर्गीय नानाजी, श्रीनाथजी शास्त्री, ज्योतिष तथा संस्कृतभाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे और उनने १६वीं शताब्दि में ही वाराणसी से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की थी। अतः यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि ज्योतिर्विद्या और संस्कृत भाषा मेरे रक्त में मेरे पूर्वजों से ही संचरित हो रही है। प्रारम्भ में तो मुझे संस्कृत भाषा में बिल्कुल ही रुचि नहीं थी और कश्मीर की सरकारी भाषा उर्दू थी अतः स्कूल व कालेज में मेरे विषय फिज़िक्स, केमिस्ट्री, मैथैमेटिक्स, इंग्लिश अर्थात् भौतिकी, रासायनी, गणित और अंग्रेज़ी ही रहे। १६५३/५४ से ही फलित ज्योतिष में हमारी रुचि रही और समय बीतने के साथ-साथ ज्योतिष तथा धर्म-शास्त्र के ग्रन्थों को अच्छी प्रकार समझने के लिए दैव-योग से हिन्दी व संस्कृत की रुचि इतनी अधिक हुई कि १६६० ई. में हिन्दी में प्रभाकर करके १६६२ में संस्कृत में शास्त्री की परीक्षा में बैठ गए। उस समय ज्योतिष के अनेक ग्रन्थ तो हमें अपने नानाजी से ही प्राप्त हुए थे और कुछेक ग्रन्थ हम वाराणसी तथा बम्बई आदि से मंगवाते रहे। इस प्रकार भारतीय ज्योतिष का शायद ही कोई ऐसा ग्रन्थ है जिसका हमने मूल संस्कृत में अटूट श्रद्धा-विश्वास के साथ आद्योपान्त अध्ययन न किया हो। कश्मीर में पंचांग तब भी "ग्रहलाघव" आदि करण ग्रन्थों से ही बनते थे और अब भी उन्हीं से बनते हैं। तब भी वहां के पंचांगकर्ता सायन/निरयण तथा दृक्/आर्ष तर्क-वितर्कों से मुक्त थे और अब भी हैं क्योंकि तब उन्हें "बाहर की हवा भी नहीं लगती थी" और अब वह जानबूझ के वह हवा अपने को लगने नहीं देना चाहते हैं कि कहीं उनसे यह न पूछा जाए कि इतनी शताब्दियों से वह क्यों एक गलत प्रणाली पर आधारित पंचांग का प्रचार-प्रसार जनता में कर रहे थे। कहने के तात्पर्य यह कि ज्योतिष के मामले में हम भी ऐसे ही वातावरण में पले-बड़े हुए हैं जिसमें प्रायः अन्य भारतवासी। अस्तु।

१६६४ ई. में जम्मू आने के समय से लेकर हम बंगलोर से प्रकाशित होने वाले 'एस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन" के नियमित ग्राहक/पाठक बने रहे और हमें स्मरण नहीं कि तब से लेकर आजतक कभी हमने इस मासिक पत्रिका का कोई अंक नहीं पढ़ा हो। इस पत्रिका द्वारा "नाड़ी ग्रन्थों" तथा "संहिताओं" की प्रशंसा सुनकर तो हम भी "भृगुसंहिता" के तथाकथित "मूलग्रन्थ" रखने वाले "पंडितों" के पास होशियारपुर, जलन्धर, बरनाला आदि स्थानों पर उनसे अपना भविष्य सुन आए और जब भूतकाल के विषय में उनके सारे कथन सही निकले तो हम और भी दीवाने होगए इस "वैदिक ऋषियों की पद्धति के"! पर भविष्य के लिए उन "भृगु ज्योतिषियों" की "भविष्यवाणियां" भी उतनी ही सही निकलीं जितनी कि अन्य "वैदिक ज्योतिषियों" की होती हैं अर्थात नगण्य! डा. रमण की इस पत्रिका से तो हम इतने प्रभावित हुए कि हमने अन्य "अभारतीय पद्धतियों" को "अशास्त्रीय" तथा "मूर्खों का प्रलाप" सिद्ध करने के लिए सायन अर्थात् "पाश्चात्य" पद्धति का अध्ययन प्रारम्भ किया। हम तो "निरयण वैदिक ज्योतिष" से इतनी सम्मोहन अवस्था में पहुंच गए थे, hypnotise होगए थे कि उसको देश-विदेशों मे फैलाने की धुन में हमने १६८४ में अपने निरयण-सायन मिश्रित पंचांग के प्रकाशन के लिए कई विदेशी प्रकाशकों से भी बात की और कुछ इसके लिए तैयार भी होगए थे। पर जितना अधिक प्रयत्न हम सायन ज्योतिष को "मूर्खों की पद्धति" सिद्ध करने के लिए करते गए उतने ही हम भारतीय पद्धति की तुलना में इसके फलित के अत्यधिक सही-सही उतरने के चमत्कार से प्रभावित होते गए। फिर १६८४ से १६६१ तक तो हम इन दोनों पद्धतियों का समन्वय करने में तत्पर रहे पर सनातन अर्थात् वैदिक धर्म क्योंकि हमारी नस-नस में व्याप्त है तो हमें इस बात का अटल विश्वास था कि फलित-ज्योतिष हो या ज्योतिर्गणित या फिर कोई अन्य विज्ञान अथवा शास्त्र, तब तक कभी भी शुद्ध अर्थात् सही नहीं हो सकता है जबतक वह अपौरुषेय वेदों पर आधारित न हो! --- यह केवल हमारी मान्यता ही नहीं है अपितु एक ऐसा अकाट्य सत्य है जिसको हम कहीं भी किसी के सामने भी किसी भी अवस्था में न केवल शास्त्रार्थ द्वारा अपितु वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर सिद्ध कर सकते हैं। अतः हम यह छानबीन करने पर विवश हुए कि आखिर इस तथाकथित "पाश्चात्य" सायन पद्धति के सही होने का क्या रहस्य है और इसकी आधारशिला/आधारस्रोत कहाँ हैं और क्या हैं। इस "पाश्चात्य ज्योतिष" के संबन्ध में हमने जितनी भी छानबीन की और उस

छान-बीन से जो भी तथ्य सामने आए वही सब आपके समक्ष उपस्थित हैं। निर्णय आपके हाथ में है चाहे आप निष्णात् विद्वान हैं या नौसिखिया।

जैसा कि ऊपर की पंक्तियों से आपने समझ ही लिया होगा कुछ वर्ष पूर्व मैं भी "पूर्वपक्ष" का ही एक अनन्य भक्त था अर्थात् मैं भी "सायन फलित ज्योतिष" का एक विरोधी था क्योंकि मुझे बार-बार यह कहा गया था कि यह "पाश्चात्य पद्धति है" और मेरा भी आजकल के "वैदिक ज्योतिषियों" की भान्ति "निरयण फलित. ज्योतिष" में ही अटल विश्वास था। यह अवश्य है कि अयनांश की समस्या सदा मुझे भी उसी प्रकार झकझोरती रही जैसे कि प्रत्येक "वैदिक ज्योतिषी" को क्योंकि कभी "सरकारी अयनांश" से फलित सही बैठता तो कभी "रमण" से तो कभी "सिरिल फागन" से तो कभी किसी से भी नहीं। इस कारण जो भी तर्क और प्रमाण मैंने इस लेख में निरयण पद्धति के विरोध में दिए हैं यह सारे के सारे वही तर्क और प्रमाण हैं जिन से मुझे स्वयं झूझना पड़ा था परन्तु अन्ततः मुझे क्षीर-नीर विवेक के द्वारा इसका सही निर्णय निकालना पड़ा। अतः यह भी सम्भव है कि अबकी बार आपको इस लेख की शैली कुछ अधिक तीखी लगेगी पर वास्तविकता तो यह है कि पिछले कई वर्षों से हम इस "शास्त्रार्थ" को बड़े ही मधुर ढ़ंग से प्रस्तुत करते आए हैं लेकिन उस "मधुर शैली" के द्वारा हमारे कई एक मित्र उन तथ्यों को आत्मसात् किए बिना ही मानो उनको पढ़ते-पढ़ते ऊंघने लगे थे अतः इस बार इस लेख की शैली जानबूझ के ऐसी रखी गई है कि उन "निद्रालु मित्रों" को भी जागने के लिए बाध्य होना पड़े। भगवान कृष्णद्वैपायन वेदव्यास ने भी अपने "ब्रह्मसूत्र" में कहा है: "आवृतिरसकृदुपदेशात्" अर्थात् "एक ही उपदेश को कई बार भिन्न-भिन्न शैलियों से दोहराना पड़ता है क्योंकि एक ही बार में कोई भी उपदेश हृदयंगम् नहीं होता है"। अतः इस "अयनांश" के प्रसंग पर यह नवीन तथ्य आपके सामने प्रस्तुत हैं।

यह बात यहां पर पुनः स्पष्ट करना परमावश्यक है कि "सम्पात बिन्दु का खसकना" एक वैज्ञानिक तथ्य है जिसे नकारा नहीं जा सकता है और न हम उसे नकारने का कोई प्रयत्न ही कर रहे है अपितु यहां तो केवल इस बात का निर्णय करना है कि वैदिक ज्योतिष अर्थात् उत्तरायण/दक्षिणायन व ऋतुचक्र तथा फलित ज्योतिष के लिए अपनाया जाने वाला राशिचक्र आदि सायन हैं या निरयण।

तो आइए इस प्रसंग में एक बार पुनः डुबकी लगाएं।

सायन और निरयण में क्या अन्तर है? बहुधा लोग सायन और निरयण के विषय में अनभिज्ञ होते हैं कि इन दोनों प्रकार के राशि-चक्रों में आखिर क्या अन्तर है। कभी-कभी तो बड़े-बड़े विद्वान भी इस विषय में भ्रम में पड़ते हैं। अतः इस को समझाने का सर्वोत्तम तरीका यह है कि इसे उदाहरण द्वारा प्रस्तुत किया जाए। हम १९९६ के मकर संक्रान्ति और उत्तरायण लेते हैं। १) लाहिरी अयनांश वालों अर्थात् उस "पक्ष" के अनुसार जिनको यह कहा गया है कि फलित ज्योतिष की सभी चमत्कारिक भविष्यवाणियां लाहिरी द्वारा प्रचलित अयनांश से ही सही निकलती हैं और उनका दृढ़ विश्वास भी इसी बात में होगया है कि ऐसा ही होता है---उनने मकर संक्रान्ति तो मनाई १५ जनवरी १९९६ को परन्तु उनमें से कुछ "लाहिरी वालों" के अनुसार उत्तरायण १५ जनवरी १९९६ को ही था तो कुछ के अनुसार २१ दिसंबर १९९५ को। एक विदेशी निरयण भक्त के अनुसार, जो कि इसी अयनांश को सही मानते हैं---मकर संक्रान्ति तो थी १५ जनवरी १९९६ को परन्तु उत्तरायण था न १५ जनवरी १९९६ को और न २१ दिसंबर १९९५ को अपितु कुम्भ संक्रान्ति वाले दिन---१३ फरवरी १९९६ को और उनका मानना है कि भीष्म पितामह भी प्राण त्याग के लिए उसी कुम्भ संक्रान्ति वाले दक्षिणायन की प्रतीक्षा में तीरों की शय्या पर लेटे हुए प्रतीक्षा कर रहे थे। २) डा. रमण तथा उनके चेलों अर्थात् उस समुदाय के अनुसार जिनको पूर्ण विश्वास है कि केवल डा. रमण द्वारा प्रचलित अयनांश के आधार पर सारे फलित सही उतरते है------मकर संक्रान्ति तो थी १३ जनवरी १९९६ को पर उत्तरायण १३ जनवरी को भी हो सकता था, १५ जनवरी को भी या फिर २१ दिसंबर को भी। वैसे डा. रमण ने स्वयं भी यह सक्रान्ति १५ जनवरी को ही मनाई होगी क्योंकि उनके "ऐस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन" में यह उसी दिन दर्शाई गई है। ३) सिरिल फेगन के अयनांश अनुसार तो मकर संक्रान्ति १८ जनवरी १९९६ को थी परन्तु उत्तरायण २१ दिसंबर १९९५ को भी हो सकता था या फिर १६ जनवरी को भी। इसी प्रकार और भी अनेक अयनांश वाले हैं जैसे "खारेगट अयनांश वाले", "कृष्णमूर्ति अयनांश वाले", "छायार्क अयनांश वाले", इत्यादि। मूल नक्षत्र वादी एक "वैदिक ज्योतिषी" का तो यह मानना है कि स्वयं ब्रह्माजी भी मूल नक्षत्र में ही पैदा हुए थे अर्थात् सृष्टिकर्ता ब्रह्मा मूलनक्षत्र के रचयिता न हुए अपितु मूल नक्षत्र ही उनका रचयिता हुआ! निरयण मकर संक्रान्ति व उत्तरायण जैसे प्रमुख त्योहारों के लिए इतनी भिन्न तिथियों के विपरीत यह कहा जा सकता है कि सायन राशि-चक्र का प्रारम्भ बिन्दु क्रान्तिवृत्त पर जहाँ आज भी वसन्त सम्पात है और सहस्त्रों वर्ष पूर्व भी वही था वहीं लाहिरी मतावलम्बियों के अनुसार आजकल यह प्रारम्भ-बिन्दु २३अंश ४८ कला आगे है और भगवान कृष्ण के समय अर्थात् ५००० वर्ष पूर्व कोई ५५ अंश पीछे था। यही हाल अन्य अयनांश वालों का भी है।

अब भारतवर्ष जैसे स्वतंत्र देश में प्रत्येक व्यक्ति के लिए विचारों तथा भाषण की स्वच्छन्दता तो संविधान द्वारा निश्चित की गई है अतः जिसकी जो इच्छा हो अयनांश अपना सकता है परन्तु हास्यास्पद बात तो यह है कि यह सभी भिन्न-भिन्न अयनांशों वाले आजकल अपना सीधा सम्पर्क ब्रह्माजी के साथ जोड़

रहे है। एक अयनांश वाले का कहना तो यहाँ तक है कि उनका अयनांश ब्रह्माजी की उत्पत्ति से भी पहले "प्रकट" हुआ था। प्रत्येक अयनांश वाले का यह भी दावा है कि उसी का अयनांश वेदों पर आधारित है। यद्यपि उन्हें न तो इन अयनांशो का ही पूरा ज्ञान है और न इनके प्रारम्भ बिन्दु के विषय में कोई विशेष जानकारी, परन्तु उन्हें इस बात का पूरा विश्वास है कि उनका अयनांश वेदों द्वारा प्रतिपादित है---यद्यपि उन्हें वेदों के विषय में भी 'क ख ग' तक का ज्ञान नहीं है-----तब भी उनका यह भी कथन है कि उनका फलित ज्योतिष भी "वैदिक ज्योतिष" है। इसी बात का निर्णय हमने इस लेख में करना है।

वैदिक खगोलिकी, ऋतुचक्र और फलितज्योतिष "निरयण" हैं या सायन?

भारतीय ज्योतिष को "हिन्दू ज्योतिष" या "वैदिक ज्योतिष" कह कर लोगों के सामने रखने का एक मुख्य कारण यह भी कहा जाता है कि पाश्चात्य देशों के कुछ ज्योतिषियों का विचार है कि उन देशों में यह 'विद्या' भारतीय ज्योतिष' या 'हिन्दू-ज्योतिष' की अपेक्षा 'वैदिक-ज्योतिष' नाम से अधिक प्रचलित-प्रसारित होगी। यह वास्तव में एक प्रशंसनीय बात है क्योंकि हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि हमारी ज्योतिर्विद्या भी देश-विदेशों में प्रचलित हो रही है पर हमें यह देखना है कि क्या वास्तव में ऐसा है कि हम "मिलावट से रहित शुद्ध वैदिक-ज्योतिष" ही लोगों तक पहुँचा रहे हैं या अनजाने में ही केवल नाम-मात्र का ही वैदिक-ज्योतिष? क्योंकि सर्वाधिक चौंका देने वाली बात तो यह है कि -----जैसा कि हम आगे निर्विवाद रूप से सिद्ध करेंगे-----वास्तविक वैदिक खगोल-विज्ञान तथा फलित-ज्योतिष, ये दोनों ही सायन हैं,----उनमें किसी अयनांश चाहे रमण का हो; लाहिरी का हो या कृष्णमूर्ति का---या फिर सरकारी ही क्यों न हो --कोई काम नहीं है। *इसी प्रकार व्रत-पर्वो का निरयण राशि-चक्र से जोड़ने के कारण हम वह भी गलत तिथियों में मना रहे है।*

ठीक इसी प्रकार यदि फलित-ज्योतिष की किसी भी प्रणाली का कोई वैदिक आधार है तो वह है तथाकथित "Western" 'पाश्चात्य' "Secondary Progressions" 'सेकण्डरी प्रोग्रेशन' अर्थात् "दिन-वर्ष पद्धति," अर्थात् जन्म के क्षण से लेकर प्रत्येक सायन सौर-दिवस जातक के एक सायन वर्ष के फलित को दर्शाता है। यह "निरयण ज्योतिषी" लोग अपनी अदूरदर्शिता और मिथ्याभिमान के कारण से ही इस पद्धति को 'पाश्चात्य पद्धति' अतः 'भारतीय पद्धति से अवर,' "हीन", कहते आए हैं क्योंकि आजतक इन्होंने कभी इन दोनों पद्धतियों का न तो तुलनात्मक अध्ययन ही किया और न हीं यह जानने का प्रयत्न किया कि निरयण पद्धति के अतिरिक्त कोई और पद्धति भी है या नहीं और यदि है तो वह कहां तक सही या गलत है। इसका यह परिणाम निकला कि हम अपनी ही सन्तान को अपनी कहने से इन्कार कर रहे हैं क्योंकि अपनी अनभिज्ञता के कारण हम पथ-भ्रष्ट हो गए हैं और हमें अब अपनी वही सन्तान 'दूसरों की संतान' लगती है।

'आपके पास क्या प्रमाण हैं?' आप का चिल्लाना स्वाभाविक है क्योंकि जो 'असत्य' हमारे मस्तिषक में शताब्दियों से अनजाने में ही ठूंस दिये गए हैं उनसे इसको मुक्त करना इतना आसान काम तो है नहीं। वैसे भी कोई भी धारणा हो उसके तो बिना प्रमाण के कभी बदलना चाहिए भी नहीं। अतः हम अब उन प्रमाणों की ओर बढ़ते हैं।

सूर्यसिद्धान्तकार को अयनचलन का ज्ञान ही नहीं था:-

तो चलिए पहले खगोलिकी (astronomy) को ही लेते हैं। भारतवर्ष में खगोलिकी का एक-मात्र "दिव्य" ग्रन्थ है *सूर्य सिद्धान्त* जिससे कि अपरवर्ती अन्य ग्रन्थकारों ने प्रेरणा ली है और हम इतनी शताब्दियों से 'निरयण राशि-चक' से इस लिए चिपके रहे कि "सूर्य सिद्धान्त" के 'प्रवर्तक' "सूर्य भगवान ने उसमें निरयण ध्रुवांक और भगण दिए हैं"। परन्तु हमें अपने आप से यह पूछना चाहिए, सूर्य भगवान से पूछने का साहस तो हम में है नहीं ! कि क्या *सूर्य सिद्धान्त* में जो ध्रुवांक दिए गए हैं वह वास्तव में ही निरयण हैं या हम उन्हें भ्रमवश निरयण समझ रहे हैं, मात्र इसीलिए कि वह सायन की अपेक्षा निरयण ध्रुवांकों के अधिक निकट हैं? इसी बात का निर्णय करने के लिए पहले हमें यह निर्विवाद रूप से सिद्ध करना होगा कि 'सूर्य भगवान' सायन तथा निरयण राशि-चक्रों का अन्तर जानते थे क्योंकि तभी तो वह सायन से 'उत्कृष्ट' निरयण भगण देंगे। तो हम यह कैसे सिद्ध करें? एकमात्र रास्ता यही है कि जो 'सूर्य सिद्धान्त' इस समय जिस रूप में भी हमें उपलब्ध है उसमें पूरी डुबकी लगाई जाए। तो आइए ऐसा ही करते है:

सारे-के-सारे बृहत्काय 'सूर्य सिद्धान्त' में अधिकाधिक केवल मात्र चार/पाँच श्लोक ऐसे हैं जो अयनाश से सम्बन्ध रखते हैं। ये हैं:

त्रिंशत्कृत्योयुगेभानां चक्रं प्राक् परिलम्बते । तद्गुणाद्भूदिनैर्भक्ताद् द्युगणाद्यदवाप्यते ।।
तद्दोस्त्रिघ्ना दशाप्तांशा विज्ञेयाअयनाभिधाः।तत्संस्कृताद् ग्रहात् क्रांतिच्छायाचरदलादिकम् ।।
स्फुटं दृक्तुल्यतां गच्छेदयने विषुवद्वये ।प्राक् चक्रम् चलिते हीने छायार्कात् करणागते ।।
अंतरांशैरथावृत्य पश्चाच्छेशैस्तथाधिके । एवं विषुवतो छाया स्वदेशे या दिनार्धजा ।।
दक्षिणोत्तररेखाया सा तत्र विषुवत्प्रभा ॥ त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक ६ से १२

इनका अनुवाद विदेशी लेखक/अनुवादक एबनज़र बर्जस ने अपने ग्रन्थ "सूर्य सिद्धान्त के अंग्रेज़ी

अनुवाद'' में इस प्रकार किया है: ''एक युग में नक्षत्रचक्र पहले पूर्व की ओर ६०० बार परावर्तित होता है। इस ६०० को इष्ट अहर्गण से गुणा करके महायुगीय सावन दिनों से भाग देने पर जो आवे उसका भुज बनाकर भुज को तीन से गुणा करके दस से भाग दे दो। ऐसा करने से जो कुछ आवे वही अयनाश कहलाता है।ग्रहों के स्थानों में इसका संस्कार देकर तब ग्रहों की क्रान्तिच्छाया, चरदल इत्यादि निकालें''।

कई अन्य विद्वानों की भान्ति बर्जस का भी यही मत है, और हम उनसे सहमत हैं, कि क्योंकि इन चार/पांच श्लोकों को अतिरिक्त पूरे *सूर्य सिद्धान्त* में 'सम्पात बिन्दु के खसकने' जैसे अति महत्त्वपूर्ण और अपिरहार्य विषय का और कहीं भी कोई वर्णन नहीं है अतः लगता है कि यह श्लोक बाद में जोड़े गए हैं। और यदि इन कुछ श्लोकों का भी अर्थ अक्षरशः व्यवहार में लाया जाए और तदनुसार अयनांश और सायन भोगांश निकाले जाएं तो बिल्कुल ही गलत और भ्रान्तिजनक आँकड़े प्राप्त होते हैं। जैसे इन श्लोकों के अनुसार १) अयनांश कभी भी २७ अंश से अधिक नहीं हो सकता है और २) *सूर्य सिद्धान्त* की गणना के अनुसार आजकल जो भी अयनांश है वह निरयण भोगांशों से सायन भोगांश निकालने के लिए उनमें से घटाना है जबकि स्थिति बिल्कुल इसके विपरीत है अर्थात् इन दिनों निरयण भोगांशों में अयनांश जोड़ना है, घटाना नही। ३) इसी प्रकार इस सिद्धान्तानुसार सम्पात बिन्दु खसकने के बदले लोलक की भान्ति आन्दोलित होता है, पहले पूर्व की ओर और फिर पश्चिम की ओर। ४) अयनांश की मध्यमगति प्रतिवर्ष ५४ विकला है जबकि वह प्रतिवर्ष वास्तव में ५०.३ विकला के लगभग है।

क्योंकि ये सारे सिद्धान्त खगोलिकी के वास्तविक सिद्धान्तों के बिल्कुल विपरीत हैं तथा असत्य; अप्रामाणिक और निराधार हैं; इसलिए यही उचित है कि इन कुछ श्लोकों को ''बाद का क्षेपक'' माना जाए अन्यथा 'सूर्य भगवान' का खगोलिकी का ज्ञान नितान्त अधूरा तथा अपरिपक्व मानना पड़ेगा क्योंकि डा०बी० वी० रमण के *प्रसिद्ध व्यक्तियों की जन्म-कुण्ड़लियाँ* नामक पुस्तक में भी भगवान कृष्ण के जन्म समयका अयनांश +५६ अंश दिया गया है जबकि सूर्य सिद्धान्त के अनुसार वह अयनांश अधिक से अधिक २७ अंश हो सकता है और वह भी + के बदले - अर्थात् धन के बदले ऋण! इसके अतिरिक्त उनके ही 'एस्ट्रॉलोजिकल मैगजीन' में आजकल २२ अंश २६कला का अयनांश दिया जा रहा है, जो कि *सूर्य सिद्धान्त* अयनांश के लगभग समान ही है, पर वह भी सम्पात बिन्दु से पूर्व की ओर है अर्थात् *सूर्य सिद्धान्त* के विपरीत निरयण भोगांशों में वह अयनांश जोड़ने से सायन भोगांश निकालते हैं।

डा. रमण अपनी पत्रिका मे प्रायः यह लिखते रहते हैं कि कुछ विदेशी लोग पूर्वाग्रह तथा पक्षपात-पूर्ण दृष्टिकोण के कारण हमारे प्राचीन ग्रन्थों की सही व्याख्या नहीं करते हैं। कभी-कभी ऐसा होता भी है, जैसा कि हम आगे सिद्ध करेंगे, कि कुछ आधुनिक विदेशी लेखक भी कुछेक श्लोकों की ऐसी अनर्गल व्याख्या करते हैं कि ऐसा लगता है कि मानो वह हमें जानबूझ के भटकाने के लिए वह सब लिख रहे हैं। अतः आइए देखते हैं कि हमारे अपने अर्थात् भारतीय व्याख्याकार तथा अनुवादक क्या कहते हैं। वाराणसी के एक 'शत-प्रति-शत शुद्ध' ब्राह्मण महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी, १६०० ई. के लगभग प्रकाशित *सूर्य सिद्धान्त* के ऊपर लिखी अपनी 'सुधावर्षिणी' व्याख्या के पृष्ठ १०६ में लिखते हैं:
''युगे एकस्मिन्महायुगे भानां नक्षत्राणां चक्रं भवलयमित्यर्थः यद्वाभानां सप्तविंशत्यंशानां चक्रम् । यस्य भ्रमणं दोलारूपम् प्राक् पश्चात् सप्तविंशति भाग पर्यन्तं भवति तच्चक्रमित्यर्थः सृष्ट्यादेः क्रान्तिवृत्त नाड़ी वृत्त सम्पातः सप्तविंशत्यंशान् प्राक् ततः पुनः परावर्त्य स्वस्थानमागत्य ततः पश्चिमं सप्तविंशत्यंशान् गत्वा पुनस्तस्मात् परावर्त्य ''

ऐसा लगता है कि इस व्याख्या का ही अर्थ अक्षरशः बर्जस ने ऊपर उद्धृत अपने अनुवाद में दिया है अतः कम-से-कम यहां पर पक्षपात का आरोप नहीं लगाया जा सकता है। यदि थोड़ा-बहुत सन्देह तब भी रहता हो तो चलिए देखते हैं कि डा० रत्नकुमारी स्वाध्याय संस्थान, इलाहाबाद, द्वारा प्रकाशित स्व० महावीर प्रसाद श्रीवास्तव अपने हिन्दी के 'विज्ञान भाष्य' अनुवाद में क्या कहते है। वास्तव में पृष्ठ २३० पर उनके भी ऐसे ही शब्द हैं जो हमने ऊपर दिए हैं अर्थात् ''एक युग में नक्षत्र-चक्र ६०० बार पूर्व की ओर लोलक की भान्ति आंदोलन करता है ''। अन्तर केवल इतना ही है कि क्योंकि उनके द्वारा किया गया यह अनुवाद ई० सन १६४० का था और आज से आधी शताब्दि पूर्व भी खगोलिकी की प्रगति इतनी हुई थी कि उन तथ्यों के सामने सूर्य सिद्धान्तकार का कथन अटपटा लगता। इसलिए उसको झेंप से बचाने के लिए दबी ज़बान से द्विवेदजी को कहना पड़ा कि ''आजकल *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार २१अं ३७क अयनांश है अतः यह निश्चय करने के लिए कि अयनांश वास्तव में ही अधिक से अधिक २७ अंश तक ही होता है या, जैसा कि आधुनिक खगोलिकी कहती है, उससे अधिक है इसके लिए हमें कुछ शताब्दियों तक और प्रतीक्षा करनी पड़ेगी,'' परन्तु क्योंकि *सूर्य सिद्धान्त* के इस 'सिद्धान्त' का कि ''आजकल सम्पात बिन्दु पूर्व के बदले पश्चिम की ओर खसक रहा है'' वह भी कोई उचित व्याख्या या समाधान नहीं ढूंढ सके इसलिए बाध्य होकर पृष्ठ २३३ पर उन्हें भी कहना पड़ा: ''ऊपर - *सूर्य सिद्धान्त* की गणना से सिद्ध है कि अश्विनी का आदि बिन्दु वसन्त सम्पात से २१अं २३क २४वि पच्छिम है। परन्तु यथार्थ मे अश्विनी का आदि बिन्दु इस समय वसन्त सम्पात से पूर्व है इसलिए यह मानना पड़ेगा कि अश्विनी का आदि बिन्दु आन्दोलन आरम्भ करने पर पहले पच्छिम की ओर बढ़ता है जो श्लोक के विरुद्ध है। जान पड़ता है कि आचार्य ने----स्पष्ट है कि यह भारतीय अनुवादक महोदय भी जानते हैं कि *सूर्य*

सिद्धान्त 'सूर्य भगवान' ने नहीं अपितु किसी 'आचार्य' अर्थात् विद्वान् ने लिखा है----वसन्त सम्पात को ही अश्विनी के आदि बिन्दु के दोनों ओर २७ अंश पूर्व और पच्छिम आन्दोलन करता हुआ माना है और *पाठ में किसी कारण गड़बड़ हो गया है''*। आगे यह लिखते हैं कि ''जो मत *सूर्य सिद्धान्त* का है वही *सोमसिद्धान्त, रोमकसिद्धान्त, शाकल्य ब्रह्म सिद्धान्त* और *लघु वसिष्ठसिद्धान्त* का भी है''।

पृष्ठ २३१ पर आगे इनका कहना है ''अयन चलन के संबन्ध में हमारे प्राचीन ज्योतिषियों के मतों में बड़ी भिन्नता है अयन चलन का कारण क्या है यह भारतीय ज्योतिष में कहीं नहीं मिलता। रंगनाथ मिश्र ने अपनी गूढार्थ प्रकाशिका टीका में ईश्वर की इच्छा को ही इसका कारण माना है''।

इससे पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि मूल *सूर्य सिद्धान्त* में इस चमत्कृति अर्थात् ''वसन्त सम्पात बिन्दु के खसकने'' को कहीं भी स्वीकार नहीं किया है क्योंकि यदि आप यह उपर्युक्त कुछेक श्लोक पूर्ण *सूर्य सिद्धान्त* से निकाल भी लेंगे तो भी इनका अभाव बिल्कुल ही नहीं खटकेगा क्योंकि ये श्लोक इतने असम्बद्ध, अटपटे तथा अर्थहीन लगते हैं कि इनका कदापि ही कोई भी अर्थ नहीं बनता है, अतः निश्चय ही यह श्लोक इस ग्रन्थ में बाद में जोड़ दिए गए हैं। यदि हम इस बात पर अड़ ही जाएँ कि वे श्लोक मूलग्रन्थ के ही हैं तो इसका अभिप्राय है कि हम ''सूर्य भगवान'' में अपूर्ण ज्ञान होने का दोष मानते हैं।

इसी बात की और प्रमाणों द्वारा पुष्टि करने के लिए आइए हम इसी ग्रन्थ के पाताधिकार अर्थात् ग्यारहवें अध्याय के श्लोक सं० १ और २ देखते हैं:

एकायन गतौ स्यातां सूर्याचन्द्रमसौ यदा । तद्युतौ मण्डले क्रान्त्योस्तुल्यत्वे वैधृताभिधः । १ ।
विपरीतायनगतौ चन्द्रार्कौ क्रान्तिलिप्तिकाः । समास्तदाव्यतीपातो भगणार्ध तयोर्युतौ । २ ।

इसका अनुवाद बर्जस तथा विज्ञान भाष्यकार दोनों ने ही इस प्रकार किया है: ''जब सूर्य और चन्द्रमा एक अयन में होते हैं और जब उनके भोगांशों का योग १२ राशि अर्थात् ३६० अंश होता है तब दोनों की क्रान्तियां समान होने से वैधृति नामक पात होता है। जब सूर्य और चन्द्रमा भिन्न अयनों में होते हैं और जब इनके भोगांशों का योग ६ राशि, १८० अंश, के समान होता है तब इनकी क्रान्तियां समान होने से व्यतीपात नामक पात होता है ''। न केवल इन दो श्लोकों में अपितु सारे अध्याय में, यहां तक कि सारे ग्रन्थ में ही, उपर्युक्त तीन-चार श्लोकों को छोड़कर अयनांश के विषय में कहीं कोई वर्णन नहीं है। यदि ''आचार्य'' किसी निरयण राशि-चक्र के बारे में लिख रहे होते तो उन्हें स्पष्ट रूप से इस विषय में अयनांश घटाने/बढ़ाने का निर्देश देना चाहिए था क्योंकि किसी भी ग्रह की क्रान्ति केवल सायन भोगांशों से ही निकाली जाती है। यहाँ यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि व्यतीपात और वैधृति सायन भोगांशों के ही योग से १८० अंश या ३६० अंश बनने पर होते हैं निरयण भोगांशों के नहीं और क्योंकि अयनांश घटाने/बढ़ाने का कहीं कोई निर्देश नहीं है तो यही अभिप्राय निकलता है कि यह सायन भोगांश ही हैं।

आगे ''आचार्य'' ने इसी अध्याय के छठे श्लोक में बताया है:

भास्करेन्द्वोर्भचक्रार्धावधि संस्थयोः। दृक्तुल्य साधितांशादि युक्तयोः स्वावपक्रमौ

''जब दृक्-कर्म द्वारा साधित/परिष्कृत सूर्य तथा चन्द्रमा के भोगांश लगभग १२ या ६ राशि अर्थात् ३६० या १८० अंश हो जाएं तब उनकी क्रान्तियों की गणना कीजिए _ '' । यदि हम इन व्याख्याकारों के ''निर्देश'' के अनुसार *सूर्य सिद्धान्त* द्वारा प्राप्त भोगांशों में भी ''ग्रन्थोदित'' अयनांश जोड़ते हैं तो आइए देखते हैं क्या चमत्कार होता है:

पं० महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदीजी की ही एक टीका बहुचर्चित ग्रन्थ वराहमिहिरकृत *पंचसिद्धान्तिका* पर भी है। इसी व्यतीपात-वैधृति संदर्भ में इसी ''पूज्य'' ग्रन्थ से जिनके विषय में कहा जाता है कि वह पांच ''महा-सिद्धान्तों का सार है'' यह कुछ श्लोक हैं:-

अर्केन्दुयोग चक्रे वैधृतमुक्तं दशर्क्षसहितेषु। यदि चक्रे व्यतीपातो वेला मृग्या गतैर्भागैः।५८।
आश्लेषार्द्धादासीद्यदानिवृतिः किलोष्णकिरणस्य।युक्तमयनंतदासीत् सांप्रतमयनं पुनर्वसुतः।५६।
विपरीतायनयातो यदार्ककाष्ठांशशशिसविक्षेपः।भवति तदा व्यतीपातोदिनकृच्छशियोगचक्रार्द्धे।६०

इन श्लोकों के ऊपर इनकी व्याख्या इस प्रकार है:

''दशर्क्षसहितेषु यदि रवि शशि योगो राशि षटकं भवति तदा वैधृतमुक्तमेवं स एव योगो दशर्क्षसहितेषु यदि चक्रं द्वादशसमस्तदा व्यतीपातो भवति । ततो गतैर्भागैर्वेला समयः मृग्या विचार्यः। परन्तु यदा उष्णकिरणस्य रवेरुत्तरादाश्लेषार्द्धादेव निवृतिरासीत् तदवायनं युक्तं पूर्वोक्तं पात लक्षणं च प्राचीनैः समीचीनमुक्तं साम्प्रतं वर्तमानकाले तु पुनर्वसुत उत्तरमयनं निवृत्तं भवति। यद्यपि अत्र पुनर्वसुरिति पदेन तच्चरणज्ञानं न भवति तथापि आचार्य प्रतिपादित संहिता वचनेन पुनर्वसु पदेन पुनर्वसोः पाद त्रयमेव ग्राह्यम्। एवम् तस्मात् कालात् यदा विपरीतायनभागो विपरीतायनांशो भवति । शशि रव्योर्मध्ये क्षेपश्च अर्क काष्ठांशसमः परमक्रान्तिसमस्तदा दिनकृच्छशियोग चक्रार्द्धे व्यतीपातो भवति । अत्रोपपत्तिः । यदा सायनरवि शशियोगो भार्द्ध भवति तदा व्यतिपातो यदा स एव योगश्चक्रं तदा वैधृतिरिति प्राचीनानांसम्प्रदायः। यदाश्लेषार्द्धाद् दक्षिणायन प्रवृत्तिरासीत् तदायनांशः - २३ अं २० क। ततो रवि शशि योगार्ध न्यासः - रविः ऊनः २३अं २०क = सायन रविःचन्द्रः ऊनः २३अं २० क = सायन चन्द्रः अनयोर्योगः = ४६अं ४०क; अतः सायन भोगो रवि चन्द्र योगः ऊनः ४६अं ४० क; *आचार्येनायन गति ज्ञानाभावादेतदुक्तं।*''

संक्षेप में इस सब का अर्थ यह है कि वराहमिहिर के समय के निरयण ग्रहों को सायन बनाने के लिए

आपको प्रत्येक ग्रह में २३अं २०क घटाने पड़ेंगे। यह सर्वविदित ही है कि वराहमिहिर लगभग ५०० ई० में हुए थे और यद्यपि वह स्वयं अयनचलन/दोलन तथा अयनांश के विषय में मौन हैं परन्तु उन्हीं के नाम से प्रचलित तथा प्रकाशित यह ग्रन्थ उनके "वैदिक ज्योतिषी" भक्तों के लिए मूर्द्धण्य है। पर वास्तव में उस समय सरकारी अयनांश भी तीन अंश भी पूरा नहीं था अतः स्वतः सिद्ध है कि यदि हम जैसे-तैसे यह भी मान लें कि स्वयं "आचार्य" ने *सूर्य सिद्धान्त* में अयनांश संस्कार करके सायन भोगांश निकालने को कहा है तो आजकल इस ग्रन्थ के अनुसार अयनांश है २२अं २५कला परन्तु 'गणितागत' निरयण भोगांशों से सायन भोगांश निकालने के लिए यह अयनांश उनमें से घटाना है, उनमें जोड़ना नहीं। अतः इस परिपाटी के अनुसार १. १. १९६४ को *सूर्य सिद्धान्त* सायन सूर्य होगाः निरयण सूर्य धनु में १६अं ३३क ३६वि उसमें से *सूर्य सिद्धान्त* अयनांश घटाया तो सायन सूर्य होगा वृश्चिक राशि में २४अं ६क जबकि यह वास्तव में था सायन मकर राशि में १०अं ३.क! अब आप स्व्यं ही बताएं कि यह अर्थ का अनर्थ कहां तक स्वीकार किया जाए?भगवान का धन्यवाद है कि पं. सुधाकर द्विवेदी ने स्वयं ही कहा है कि *आचार्य ने अयनांश निकालने की यह गलत प्रक्रिया उनके अयनांश विषयक ज्ञान न होने के ही कारण कही है।*

इससे यही सिद्ध होता है कि *सूर्य सिद्धान्त* के आचार्य एक मात्र सायन राशि चक्र का ही वर्णन कर रहे थे क्योंकि उन्हें अन्य किसी अर्थात् निरयण राशि-चक्र के बारे में कोई ज्ञान ही नहीं था परन्तु क्योंकि उनने अत्यन्त शिथिल तथा तत्कालीन अवर मापक यंत्रों के कारण एक सायन वर्ष की अवधि ३६५दिन ५घं ४८मि ३६.५६से मानी है--जो इस समय के प्रचलित *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार एक वर्ष की अवधि है----- अतः उन्होंने पाया कि वसन्त सम्पात के समय पर गणितागत सूर्य के भोगांश प्रत्यक्ष भोगांशों से मेल नहीं खाते हैं। इसलिए उन्होंने गणितागत की अपेक्षा दृक्-कर्मयुक्त भोगांशों को अधिक शुद्ध मानने पर ज़ोर दिया है। अब यह केवल अनुवादक तथा व्याख्याकार महानुभाव ही हैं जो यहा पर "पूर्वोदित प्रकारेण साधिता अंशादयो अयनांशाः" अर्थात् पूर्वोक्त प्रकार से दृक्-कर्म से साधित अयनांश" जोड़ने की गलत व्याख्या करके "ग्रन्थोदित अयनांश" जोड़ने की गलती करते हैं, जो कि मूल ग्रन्थ में वास्तव में कहीं भी नहीं लिखा है।

निरयण पंचांगकार भी *सूर्यसिद्धान्त* में अयनांश के पद्यों को "प्रक्षिप्त" मानते हैः-

इधर उत्तर भारत में कोई ७० वर्षो से एक हिन्दी पंचांग "श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्" प्रकाशित हो रहा है जिसके मुख्य सम्पादक है ड़ा. शक्तिधर शर्मा, M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics)। १९८८--८९ के उसी पंचांग के पृष्ठ ४२-४३ पर उनका कथन है :".....इस तरह अयन दोलन का सिद्धान्त स्वयं *सूर्य सिद्धान्त* द्वारा ही निरस्त होजाता है। *सूर्य सिद्धान्त* का अयनांश साधक यह पद्य 'त्रिंशत्कृत्वो युगे भाणाम् ' प्रक्षिप्त है, इसकी पुष्टि में अनेक आभ्यन्तर प्रमाण हैं। यह प्रक्षेप आचार्य ब्रह्मगुप्त---७वीं शताब्दि----के बाद हुआ है। अपिच मुंजाल आदि अनेक प्राचीन भारतीय ज्योतिषी भी *सूर्य सिद्धान्त* प्रतिपादित अयन दोलन के सिद्धान्त से सहमत नहीं है। वह वसन्त सम्पात का पूर्ण ३६० अंशों में भ्रमण मानते हैं।" इनके कहने का भी यही तात्पर्य निकलता है कि *सूर्य सिद्धान्त* में जो भी आंकड़े दिए गए हैं वह सब के सब सायन ही हैं क्योंकि उस समय अयनांश के विषय में किसीको कोई ज्ञान था ही नही।

१९९९ के हमारे पंचांग में प्रकाशित अयनांश विषय पर रुद्रपुर, नैनीताल, से "देवभूमि पंचांग" के संपादक-प्रकाशक पं०भोलादत्त महतोलिया, शास्त्री, ने अपने विचार इस प्रकार लिखे हैं: "सूर्य सिद्धान्त, ब्रह्मसिद्धान्त, वसिष्ठसिद्धान्त तथा शाकल्य संहिता सहित जितने भी प्राचीन ग्रन्थ इन दिनों उपलब्ध हैं किसी में भी अयनांश की चर्चा तथ्य परक ढ़ंग से नहीं की गई है। सूर्य सिद्धान्त में जो श्लोक अयनांश के बारे में दिए गए हैं वे मूलग्रन्थ के न होकर बाद में प्रक्षिप्त हैं। इसका प्रमाण उसी ग्रन्थ से देखिएः- त्रिप्रश्नाधिकार के श्लोक ६ में समंडल, उन्मंडल व विषुवन्मंडल की स्थिति व परिभाषा।

श्लोक ७, ८: अग्रा, शंकुच्छाया, छाया-परिमाण तथा छाया कर्ण जानना।

श्लोक ९ - ११ (अयनांश विवरण) प्रक्षिप्त --- क्योंकि श्लोक ८ के क्रम से

श्लोक १२ मे छाया के द्वारा पलभा का ज्ञान करना।

श्लोक १३ से १६ तक पलभा से लम्बांश व अक्षांश निकालना; सूर्यनतांश से क्रान्ति, अक्षांश--पलभा, सूर्यका स्फुट भोगादि जानना।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि श्लोक ८ के (छायाकर्ण) विषय के बाद श्लोक १२ का विषय (छायाकर्ण से पलभा) क्रमागत रूप में है। किसी 'पागल' ने भांग के ऊपर धतूरा खाके बीच के चार श्लोक 'त्रिंशत्कृत्यो युगे ....' बलात् ठूंस दिए हैं।"

हम महतोलियाजी से पूरी तरह सहमत हैं कि यह किसी अफीमची का ही काम लगता है कि ऐसे अनर्गल श्लोक बीच में ड़ाल दिए हैं और इससे यह भी स्वतः सिद्ध होता है कि अब जो तथाकथित वैदिक ज्योतिषी भारतवर्ष के सारे पंचांग ऐसे ही प्रक्षिप्त श्लोकों के अनुसार निरयण बनवाने जा रहे हैं वह भी मैंड्रेक्स या उससे भी अधिक नशीली गोली खाए बिना ऐसा नहीं कर पाएंगे क्योंकि यदि वह पंचांग बनाते समय उन में थोड़ा भी विवेक शेष रहेगा तो वह अपनी ही इस अनर्गल हरकत को समझ पाएंगे!

अन्य सिद्धान्तों की क्या आवश्यकता थी? यदि हम यह मानते हैं कि सूर्य सिद्धान्त एक दिव्य कृति है जो कि सृष्टि के आदिकाल से ही चली आ रही है तो यह प्रश्न उठता है कि पितामह सिद्धान्त, वसिष्ठ सिद्धान्त आदि अनेक अन्य सिद्धान्तों की क्या आवश्यकता थी? यदि वह सूर्य सिद्धान्त से पहले के हैं तो सूर्य सिद्धान्त उनसे कनिष्ठ हुआ और यदि वह सब उसके बाद के हैं तो उससे यही सिद्ध होता है कि वराहमिहिर से पहले अन्य आचार्यों को उसमें दिए गए भगण व अन्य ध्रुवांकों पर विश्वास नहीं था। अस्तु अब क्योंकि यह आधा दर्जन सिद्धान्त समूह हमारे पल्ले पड़ ही गया है और क्योंकि सूर्य सिद्धान्त इन सब से "स्पष्टतरा" है तो आइए अयनांश के विषय में इनमें से कुछेक का विश्लेषण करें।

अतः हमें बाध्य होना पड़ता है कि इस बात पर पूरी तरह विचार किया जाए कि "स्पष्टतर" *सूर्य सिद्धान्त* में वास्तव में किस प्रकार के वर्ष का वर्णन है। मध्यमाधिकार में यह दो श्लोक दिए गए हैं:

नाड़ी शष्ट्यातु नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीर्तितम् । तत्त्रिंशता भवेन्मासः सावनो अर्कोदयैः स्मृतः।१२।
ऐन्दवैस्तिथिभिः तद्वत्संक्रान्त्या सौर उच्यते। मासैर्द्वादशभिर्वर्ष दिव्यं तदह उच्यते ।१३।
सुरासुराणामन्योन्यमहोरात्रं विपर्ययात्। षट् षष्टि सङ्गुणं दिव्यं वर्षमासुरमेव च ।१४।

"६० नाड़ियों अर्थात् घटिकाओं का एक नाक्षत्र (sidereal) दिवस तथा रात्रि होते हैं; उन ही तीस नाक्षत्र दिवसों से एक मास बनता है। एक सावन मास में ३० सूर्योदय होते हैं। एक चन्द्र मास में इतने ही अर्थात् तीस तिथियां। एक संक्रान्ति, सूर्य के एक राशि प्रवेश से दूसरे राशिप्रवेश अर्थात् दूसरी संक्रान्ति तक सौर मास बनता है; ऐसे बारह सौर मासों का एक सौर वर्ष बनता है जो कि एक दिव्य दिन कहलाता है जिसमें कि छः सौर मासों का देवताओं का दिन तथा छः सौर मासों की देवताओं की रात्रि होती है तथा असुरों के इसके विपरीत होते हैं"।

यदि आप हाथ में दिया लेकर भी इन श्लोकों का पुनः-पुनः अध्ययन करके उनपर यथाशक्ति मनन भी करेंगे तब भी सौर वर्ष के साथ में "निरयण" या "नाक्षत्र" आदि शब्द कहीं भी नहीं पाएंगे जबकि नाक्षत्र दिवस तथा मासों का वर्णन है। इसके विपरीत इन श्लोकों में एक सौर दिवस का प्रमाण एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक कहा गया है और एक सौर मास एक संक्रान्ति से अर्थात् सूर्य के एक राशि प्रवेश से लेकर दूसरी राशि प्रवेश के समय तक। उन्हीं बारह मासों से एक वर्ष भी बताया गया है, साथ ही इनमें यह भी कहा गया है कि यही सौर वर्ष देवताओं/राक्षसों का एक दिव्य दिन कहलाता है। इतना तो स्पष्ट ही है कि यदि आचार्य किसी निरयण वर्ष की बात कर रहे होते तो वे अवश्य इसका सायन से अलग स्पष्ट उल्लेख करते न कि इसको "दिव्य अहोरात्र" के साथ जोड़ देते। यह तथाकथित "निरयण वर्ष" को दिव्य अहोरात्र के साथ जोड़ने वाली बात हमारे वाराणसी के महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदीजी के भी गले के नीचे नहीं उतरी है तभी तो अपनी "सुधावर्षिणी" व्याख्या के आठवें पृष्ठ पर उनका कहना है:

"द्वादशभिर्मासैः सौरेर्वर्ष सौरवर्ष भवति तदेव दिव्यमहो देवानां दिनमुच्यते । गोलयुक्त्या नाड़ीक्रान्ति मण्डलसम्पातस्थे रविर्यावता कालेन पुनस्तत्सम्पातमेति तदेव दिव्यं दिन भवतीति इयं दिव्य दिनपरिभाषा *त्वयनांशगत्यज्ञानतः* पूर्वाचार्यैरुक्ता भास्कराचार्येनापि -- खेश्चक्रभोगो अर्कवर्ष प्रदिष्टम् द्युरात्रं च देवानां तदेव,*इत्यनेन निरयण सौर वर्ष तुल्यमेव देवासुराणामहोरात्रं भ्रान्तितः कथितमिति सुधीभिर्भृशं विचिन्त्यमिति।*"

"द्वादश सौर मासों से एक सौर वर्ष बनता है और उसी को दिव्य अहोरात्र कहा जाता है। सूर्य जब अपने भ्रमण में एक सम्पात बिन्दु से पुनः उसी सम्पात पर आता है उसीको वास्तव में दिव्य दिन कहा गया है। यह निरयण वर्ष की दिव्य अहोरात्र की परिभाषा तो पूर्वाचार्यों ने अयनांश गति के अज्ञान के कारण कही है। यही बात अर्थात् निरयण वर्ष को दिव्य अहोरात्र से जोड़ने वाली बात भास्कराचार्य ने भी कही है। *इसे स्पष्ट है कि भास्कराचार्य ने भी 'निरयण वर्ष' को दिव्य अहोरात्र भ्रम, भ्रान्ति,से ही कहा है। विद्वानों को इस बात पर अच्छी प्रकार से विचार करना चाहिए कि उन पूर्वाचार्यों ने ऐसी गलती क्यों और कैसे की*"।

वास्तव में उन "पूर्वाचार्यों ने गलती की" यह तो हम तभी कह सकते हैं जब वह निरयण वर्ष को दिव्य दिन से जोड़ते। उन्होंने तो अपनी ओर से सायन वर्ष को ही दिव्य वर्ष माना था जिसको हम ही गलती से निरयण मान बैठे हैं और उन पूर्वाचार्यों को गलत कह रहे हैं!

ऐसा जान पड़ता है कि सूर्यसिद्धान्तकार 'आचार्य' को इस बात का ज्ञान था कि हम "कलियुग के अल्प-बुद्धि प्राणी" अपनी सीमित बुद्धि से उनके द्वारा प्रतिपादित "सौर वर्ष" शब्द को निरयण वर्ष से जोड़ कर अर्थ का अनर्थ करेंगे अतः मानो वह गला फाड़-फाड़ कर इस "सौर वर्ष" का प्रयोग उसी ग्रन्थ के मानाध्याय के तीसरे श्लोक में कहते/करते हैं:

सौरेण द्युनिशोर्मानं षडशीति मुखानि च। अयनं विषुवच्चैव संक्रान्तेः पुण्यकालता।।

"सौर मास से दिन रात्रि का परिमाण, षडशीतिमुख, उत्तरायण और दक्षिणायन, विषुव संक्रान्ति, तथा अन्य संक्रान्तियों का पुण्यकाल निश्चित किया जाता है'

अतः "आचार्य" के वाक्यों का हम जो अनर्गल अर्थ आजकल लगा रहे हैं उसे देखकर तो वह स्वयं भी हक्के-भक्के हो रहे होंगे!

मानो कि इसी बात को पुनः स्पष्ट करने के लिए कि सौर वर्ष से वह शत-प्रति-शत शुद्ध सायन वर्ष का ही वर्णन कर रहे हैं उनने इसी अध्याय में श्लोक ७-१० में आगे कहा हैं:

भचक्रनाभं विषुवद् द्वितयं समसूत्रगम्। अयनद्वितयं चैव चतस्रः प्रथितास्तु ताः।।
तदन्तरेषु संक्रान्ति द्वितयं द्वितयं पुनः। नैरन्तर्यात् तु संक्रान्तेर्ज्ञेयम् विष्णुपदीद्वयम्।।
भानोर्मकरसंक्रान्तेः षण्मासा उत्तरायणम्।कर्क्यादेस्तु तथैव स्यात्षण्मासा दक्षिणायनम्।।
द्विराशिनाथाऋतवस्ततोपि शिशिरादयः। मेषादया द्वादशैते मासस्तैरेव वत्सरः।।

"भूगोल के मध्य में एक ही व्यास पर दो विषुवत् संक्रान्तियां और उसी प्रकार दो अयन संक्रान्तियां कुल चार संक्रान्तियां होती हैं। इनके बीच में दो-दो संक्रान्तियां और होती हैं जिनमें से वह संक्रान्तियां जो इन चारों के बाद ही आती हैं विष्णुपदी कहलाती हैं। जिस समय सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है उस समय से छः महीने का उत्तरायण और जिस समय कर्क राशि में प्रवेश करता है उस समय से छः महीने का दक्षिणायन होता है। प्रत्येक ऋतु दो-दो राशियों का भोग करती है: मकर संक्रान्ति से शिशिर आदि ऋतु-चक्र का आरम्भ होता है; मेष संक्रान्ति से १२ सौर मासों का आरम्भ जिनसे एक वर्ष बनता है''।

सूर्य सिद्धान्त व *पंचसिद्धान्तिका* मे दिए गए अयन और विषुव भी सायन ही हैं:-

अब यदि ''आचार्य'' का यह ग्रन्थ किसी निरयण संक्रान्ति या निरयण राशि-चक्र या निरयण वर्ष के विषय में होता तो उसको कभी भी ऋतुओं तथा अयनों के साथ नहीं जोड़ते। और यदि उन ने जान बूझ के ऐसा किया है अर्थात् निरयण राशिचक्र को ऋतुओं तथा विषुवादि से जोड़ा है तो स्पष्ट है कि उन्हें खगोलिकी का 'क, ख, ग' भी नहीं आता था और तब जितना ही शीघ्र हम ऐसे भ्रम फैलाने वाले ग्रन्थों को रद्दी के टोकरे में ड़ालदें हमारी संस्कृति के लिए उतना ही अच्छा!

परन्तु 'आचार्य' को अच्छी तरह ज्ञात है कि वह क्या कह रहे हैं अतः उन ने यह सब भूगोलाध्याय के इन श्लोकों द्वारा दोहराया है:

मेषादौ तु सदा वृद्धिरुदगुत्तरतोअधिका । देवांशे च क्षपा हानिर्विपरीतं तथासुरे ।५७।
तुलादौ द्युनिशोर्वामं क्षयवृद्धौ तयोरुभे। देशक्रान्ति वशान्नित्यं तद्विज्ञानं पुरोदितम् ।५८।
अयनान्तेविलोमेन देवासुरविभागयोः । नाड़ीषष्ट्या सकृदहर्निशाप्यस्मिन् सकृत् ।६१।
तदन्तरे अपि षष्ठ्यन्ते क्षयवृद्धौ अहर्निशोः।परतो विपरीतो अयं भगोलः परिवर्तते ।६२।

''मेष राशि में प्रवेश करनेके पश्चात् सूर्य जैसे उत्तर की और बढ़ता है विषुवत् रेखा से उत्तर के देशों में दिनमान की वैसे ही रात्रिमान की अपेक्ष वृद्धि और रात्रि की हानि होती है। तुलाराशि में प्रवेश करने के पश्चात् सूर्य जैसे-जैसे दक्षिण की ओर बढ़ता है वैसे ही वैसे उत्तर भाग में दिन की हानि और उसकी अपेक्षा रात्रि की वृद्धि तथा दक्षिण भाग में दिन की वृद्धि और रात्रि की हानि होती है। दिन-रात्रि की क्षय-वृद्धि स्थान के अक्षांश और सूर्य की क्रान्ति पर निर्भर है---अयन के अन्त में अर्थात् कर्क संकान्ति के दिन उत्तर में ६० नाड़ियों का एक दिन और दक्षिण में ६० नाड़ियों की एक रात तथा मकर संकान्ति के दिन दक्षिण में ६० नाड़ियों का एक दिन और उत्तर में ६० नाड़ियों की एक रात होती है''।

जैसा कि स्वस्थ मस्तिष्क का कोई भी व्यक्ति जिसने पाँचवीं श्रेणी तक का भी भूगोल पढ़ा हो यह जानता है कि ऋतु परिवर्तन का अटूट नियम है कि प्रति वर्ष २१ मार्च के अपस-पास दिन-रात्रि एक जैसे होते हैं और उत्तरी क्षेत्र में रातों की अपेक्षा दिन बड़ने और रातें छोटी होने लगती हैं और २०/२१ जून को दिन सबसे बडा होके सितम्बर २० के आस-पास पुनः दिन-रात्रि समान होकर इसके विपरीत क्रम प्रारम्भ होता है। इसी क्रम से मकर संक्रान्ति अर्थात् २१ दिसम्बर का दिन सबसे छोटा होता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह सारी ही चमत्कृतियां सायन मेष-तुला तथा कर्क--मकर संक्रान्तियों के समय होती हैं, न कि निरयण, और उन्हीं में से दो संक्रान्तियों से वसन्त/हेमन्त सम्पात बनते हैं।

इसी तथ्य को हमारे मान्य 'वास्तविक' वराहमिरि ने भी अपने *पंचसिद्धान्तिका* नामक ग्रन्थ में३३/८ और ३४/६ में इन शब्दों में व्यक्त किया है:

मकरादौ गुण युक्तो,मेषादौ तिथियुक्तो रवेर्दिवसः।कर्कटादिषु सत्सु चयस्त्रिकाः शर्वरीमानम्।।
कर्कटादिषु भुक्तं द्विगुणं मध्यंदिनी भवेच्छाया । मकरादिषु वाप्येवं, किंचास्मिन्मंडलाच्छोध्यं।।

महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी की इस पर निम्न व्याख्या है:

"इदानीं दिनमानमाह। मकरादाविति। मकरादौ दिने दिने भूस्वर्गति तिथिमित एकनवपंचैकमितः १६५१ त्रिभिस्त्रिभिः पलैर्युतस्तदा दिनमानं भवेदेवं कर्कटादौ तदेव शर्वरीमानं रात्रिमानं भवति। अत्रोपपत्तिः। अवन्तिकायां मकरादौ परमकल्पदिनमानं पलात्मकं भुवन पंचैकमित प्रकल्प्य ततः प्रतिदिनं पलत्रयस्य वृद्धिः परिकल्पिता दिनमाने। अथ मकरादौ यद्दिनमानं तदेव कर्कटादौ शर्वरीमानमुदितमाचार्येणेति सर्वम् निरवद्यम्।

"मकर संकान्ति के समय अवन्तिका में दिनमान सब से न्यून अर्थात् ३६०० पल ऋण १६५१ पल या १६४६---२७.५ घटी होता है। फिर प्रतिदिन तीन-तीन पल बढ़ता रहता है और जो मकर संक्रान्ति के समय दिनमान होता है वही कर्क संक्रान्ति के समय रात्रिमान यानी उस समय रात्रि सब से छोटी और दिन सबसे बड़ा होता है।'' अब यदि यह सब निरयण संक्रान्तियां हैं तो आप ही बताइए कि सायन संक्रान्तियां कौन सी हैं और भला दिन सायन मकर संक्रान्ति के अतिरिक्त और कभी न्यूनतम हुए हैं?

यद्यपि हम वराहमिहिर के विषय में बड़े आधिकारिक ढ़ंग से भाषण देते हैं और यद्यपि वह स्वयं *सूर्य सिद्धान्त* को ''स्पष्टतरो सावित्रः'' कहकर सबसे अधिक शुद्ध मानते थे, और हम यह भी कहते हैं कि वराहमिहिर को ''अयनचलन'' के विषय में पूर्ण ज्ञान था, पर देखिए वह अपने *पंचसिद्धान्तिका* के पहले ही अध्याय में ६१/६३ श्लोकों मे क्या कहते हैं:

मेष तुलादौ विषुवत्षडशीतिमुखं तुलादिभागेषु। षडशीतिमुखेषु रवेः पितृदिवसा ये अवशेषाः स्युः।।
उदगयनं मकरादावृत्तवः शिशिरादयश्च सूर्यवशात्। द्विभवनकलासमानं दक्षिणमयनं च कर्कटात्।।

''जब सूर्य मेष और तुला में होते हैं तो विषुव में होते हैं। उत्तरायण और शिशिर ऋतु सूर्य की मकर संक्रान्ति के साथ तथा दक्षिनायन उसकी कर्क संक्रान्ति के साथ प्रारम्भ होते हैं''।

अब यदि अपने दुराग्रह, और रूढ़िवाद को सन्तुष्ट करने के लिए हम यह मान भी लें कि *सूर्य सिद्धान्त* के आचार्य ने निरयण भगण का ही वर्णन किया है तो इन भोगांशों से सायन भोगांश निकालने के लिए इनमें *पंचसिद्धान्तिका* में समझाई गई पद्धति से आया अयनांश अर्थात् कोई २३अंश घटाना होगा, न कि बढ़ाना, जो कि वास्तविकता के बिल्कुल विपरीत है। इस पद्धति द्वारा १३ अप्रैल में से २३ अंश घटाने पर उस दिन अर्थात् ''निरयण मेष संक्रान्ति पर'' सायन सूर्य होगा ३३७ अंश अर्थात् लगभग २३ दिन जोड़ने पर आजकल २१ मार्च के बदले ७मई को वसन्त सम्पात होगा जबकि कुछ निरयण मतावलम्बियों के अनुसार आजकल वसन्त सम्पात भी लगभग १४ अप्रैल को होता है। निश्चय ही उनको *सूर्य सिद्धान्त* पर भी भरोसा नहीं है, क्योंकि फिर तो उनको ७ मई को ही सायन मेष संक्रान्ति दिखानी चाहिए थी न कि २१ मार्च को और न ही १४ अप्रैल को! वह तो केवल चित भी मेरी पट भी मेरी चाहते हैं पर दोनों ही उल्टी पड़ती हैं! हमारे ऐसे पंचांग तो न *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार ही हैं, न आधुनिक खगोलिकी के अनुसार और न वह निरयण ही हैं और न सायन ही! इतना तो सर्वविदित ही है कि *सूर्य सिद्धान्त* के आचार्य को इतना तो भूगोल का ज्ञान होगा ही कि वह प्रत्यक्ष की अवहेलना करके किसी काल्पनिक तिथि में विषुव को बताकर असम्भव को सम्भव बनाने का विफल प्रयास नहीं करते! यह काम तो केवल आजकल के भारतवर्ष के ''सर्वज्ञ निरयण फलितज्योतिषी'' तथा कुछ ''निरयण पंचांगकार'' ही कर सकते हैं परन्तु जैसा हम देख चुके हैं, सूर्यसिद्धान्तकार की तो डंके की चोट पर घोषणा है कि:

भानोर्मकरसंक्रान्तेः षण्मासा उत्तरायणम्।कर्क्यादेस्तु तथैव स्यात्षण्मासा दक्षिणायनम्।।
द्विराशि नाथा ऋतवस्ततोपि शिशिरादयः। मेषादयो द्वादशैते मासास्तैरेव वत्सरः।।

''सूर्य की मकर संक्रान्ति से लेकर कर्क संक्रान्ति तक के छः मास दक्षिणायन के होते है और दो-दो राशियों के संक्रमण से दो-दो मासों से उसी क्रम से शिशिर आदि ऋतु बनते हैं। मेष से प्रारम्भ होके ऐसे ही बारह मासों/संक्रान्तियों का एक संवत्सर होता है''।

***सूर्य सिद्धान्त* में दी गई मेषादि राशियों को निरयण मानना अपनी अल्पज्ञता का प्रमाण देना है:**-त्रिप्रश्नाधिकार के श्लोक १७ से १६ तक सूर्य की क्रान्ति नापकर भोगांश जानने की विधि दी गई है और यह श्लोक इस प्रकार है:

परमापक्रमज्याप्तचापं मेषादिगे रविः। कर्क्यादौ प्रोझ्य चक्रार्धात्तुलादौ भार्धसंयुतात्
मृगादौ प्रेझ्य भगणात् मध्याह्नार्कोस्फुटो भवेत्।

इनका अर्थ इस प्रकार है ''सूर्य की परमक्रान्ति ज्या से भाग दे-दे और लब्धि का धनु बनावे। यदि सूर्य मेषादि तीन राशियों में हो तो यही धनु मध्यान्हकालिक सूर्य का स्फुट भोगांश होगा। यदि सूर्य कर्कादि तीन राशियों में हो तो इस धनु को ६ राशि में घटाने से जो कुछ आयेगा वह मध्याह्नकालिक सूर्य का स्फुट भोगांश होगा। यदि सूर्य तुला आदि तीन राशियों में हो तो इस धनु को ६ राशियों में जोड़ने से जो कुछ आवेगा वह मध्यान्हकालिक सूर्य का स्फुट भोगांश होगा। और यदि सूर्य मकर आदि तीन राशियों में हो तो इस धनु को १२ राशियों में घटाने से जो कुछ आवेगा वह मध्यान्हकालिक सूर्य का भोगांश होगा ''। अब चाहें हम कितनी ही खींचातानी क्यों न करें, चाहें हम किसी भी शब्दकोष का प्रयोग क्यों न करें, इन श्लोकों से न तो भोगाशों के बारे में और न ही राशियों के बारे में ''निरयण'' की कहीं गन्ध तक आरही है और वह यथार्थ भी है क्योंकि इस प्रक्रिया से प्राप्त स्फुटांश तो सायन ही होंगे। इसलिए यहां जो लोग यह कहते है कि इसमें जो मेष, कर्क, तुला तथा मकर राशियों का वर्णन है वह निरयण है वह गलत कहते हैं क्योंकि वह निरयण कदापि हो नहीं सकती हैं कारण कि यदि सूर्यसिद्धान्तकार ने सारे के सारे भगणादि निरयण दिए हैं तो उनको यहां पर यह स्पष्ट करना चाहिए था कि इन चमत्कृतियों की राशियां सायन हैं अतः उन भगणों/भोगांशों में से अयनांश घटाना या बढ़ाना है क्योंकि यह सायन हैं। उनने तो ऐसा कुछ किया नहीं, यह तो केवल अनुवादक तथा व्याख्याकार और ''सर्वज्ञ वैदिक ज्योतिषी'' महोदय ही हैं जो सायन/निरयण अपनी ओर से घटा या बढ़ा रहे हैं भले ही मूल ग्रन्थकार अयनांश नाम की किसी प्रेतात्मा से परिचित भी न हों।

बिल्कुल ऐसी ही स्थिति त्रिप्रश्नाधिकार के ४१ से ४४ श्लोकों तक मेषादि राशियों के उदयकाल जानने की रीति के सम्बन्ध में भी है। यह श्लोक हैं:

त्रिभद्युकर्णार्धगुणाः स्वाहोरात्रार्धभाजिताः।।४१।।

क्रमादेकद्वित्रिभज्यास्तच्चापानि पृथक पृथक। स्वाधोअधःप्रविशोध्याथ मेषाल्लंकोदयासवः।।४२।।
खागाष्टयो अर्थगो अगैकाश्शरत्र्यंकहिमांशवः। स्वदेशचरखण्डोना भवन्तीष्टोदयासवः।।४३।।
व्यस्ता व्यस्तेषुतास्तैस्तैः कर्कटाद्यसवस्समृताः। व्युत्क्रमेण षडैवेते भवन्तीष्टास्तुलादयः।।४४।।

इन श्लोकों में मेष से लेकर मीन तक बारह राशियों के निरक्षदेश अर्थात् विषुवत् रेखा के उदयासु अर्थात् अवधि बतलाई गई है साथ में यह भी कि इष्ट स्थान का उदयकाल उनसे कैसे निकाला जाए। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि यहाँ पर भी आचार्य ने कहीं यह नहीं कहा है कि यह सायन उदयासु हैं और निरयण निकालने के लिए उनमें उचित संस्कार करने होंगे। इससे भी यही सिद्ध होता है कि वह बेचारे तो निरयण नाम के पिशाच से ही अनभिज्ञ थे तो अतः कोई संस्कार करने के लिए कहने का प्रश्न ही नहीं उठता। यह पिशाच तो ''वैदिक ज्योतिषियों'' को ही चिमटा है और यदि इसका शीघ्र ही "कीलन" नहीं किया गया तो यह सारी हिन्दू जाति की मज्जा तक चट कर जाएगा।

आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त तथा लल्ल को भी अयनचलन का ज्ञान नहीं था:-

प्रो. पी. सी. सेनगुप्ता ने बर्जस के अनुवाद की भूमिका में पृष्ठ ३७ पर लिखा है कि न तो प्रथम आर्यभट्ट, ५०० ई., की किसी कृति में, न ब्रह्मगुप्त, ६२८ ई., के ''ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त'' में और न ही लल्ल की ''शिष्यधीवृद्धिद'', ७४८ ई., में अयनचलन अथवा अयनदोलन का कहीं कोई वर्णन है यद्यपि इनमें उस समय प्रचलित *सूर्य सिद्धान्त* का कई जगह स्पष्ट उल्लेख है। सेनगुप्ता की इन पंक्तियों को पढ़कर हमने भी इन तीनों आचार्यों के ग्रन्थों को अच्छी प्रकार से आद्योपान्त पुनः देखा और वास्तव में ही इस विषय की कहीं कोई चर्चा ही नहीं है। इतना तो निर्विवाद ही है कि भारतीय खगोलशास्त्र के इतने प्रकाण्ड प्राचीन आचार्य इस सन्दर्भ में कभी भी मौन नहीं रहते यदि इस चमत्कृति की भनक भी उनके कानों में पड़ती। इसी कारण से यह स्वीकार करना पड़ता है कि *सूर्य सिद्धान्त* के यह अयनदोलन के श्लोक लल्ल अर्थात् सातवीं शताब्दि ई. के बाद के प्रक्षिप्त हैं।

सूर्य सिद्धान्त के भगण यदि वैदिक हैं तो ठीक हैं अन्यथा मान्य नहीं हैं:

एक महाप्रश्न या यों कहिए कि महान समस्या आप यहां यह भी खड़ी कर सकते है कि *सूर्य सिद्धान्त* चाहे स्वयं ''सूर्य भगवान'' ने ही क्यों न ''कहा'' हो परन्तु यह तो ''स्मृति'' ही है ''श्रुति'' नहीं अतः यदि वह वेदों के वचनों या सिद्धान्तों से मेल खाता है तो ठीक है अन्यथा *मनुस्मृति* अध्याय १२ श्लोक ६५-६६ में तो स्पष्ट कहा गया है:

यावेदबाह्याःस्मृतयो याश्च काश्चन कुदृष्टयः।सर्वास्ता निष्फलाः प्रेत्यतमोनिष्ठाः हि ताः स्मृता।।
उत्पत्यंते च्यवंते च यान्यतोन्यानि कानिचित्। तान्यर्वाक् कालिकतया निष्फलान्यनृतानि च।।

"जो भी स्मृतियां वेदों के विपरीतार्थक हैं तथा जो भी मन्तव्य वेदों के सार से रहित हैं वे सब ही निष्फल है। ऐसी स्मृतियों या सिद्धान्तों को परलोक में अन्धकार-ग्रस्त करने वाला कहा गया है। वे स्मृतियां उत्पन्न और नष्ट होती रहती हैं और केवल तात्कालिक होने के कारण निष्फल व झूठी हैं''।

इसलिए पाठक यह कह सकते हैं कि ''*सूर्य सिद्धान्त* यदि सायन राशिचक्र आदि देता है तो दे, हम तो 'वैदिक ज्योतिषी' हैं अतः हमें तो वेदों का ही राशिचक्र चाहिए''

वेदों में केवल सायन मासों, ऋतुओं तथा अयनों अतः संक्रान्तियों का वर्णन है:-

जैसा कि हमने १९९४ के अपने पंचांग में सिद्ध किया है, वेदों, पुराणों तथा अन्य धर्मशास्त्रों में तो सायन मासों, ऋतुओं व वर्षों का ही वर्णन है। आइए इसी तथ्य का एक बार विस्तार से पुनः अवलोकन करें:

ऋग्वेदी ब्राह्मण *ऋग्ज्योतिष* का पाठ ऋगवेद की ही भान्ति करते हैं और इसको ऋगवेद के ही समान श्रद्धा भक्ति से देखते भी हैं। उस ग्रन्थ के कुल ३६ श्लोक हैं। इसी से लगभग बिल्कुल मिलता-जुलता एक ग्रन्थ और भी है जिसे कुछ लोग लगध के *वेदांग ज्योतिष* नाम से तो कुछ *यजुर्वेदज्योतिष* के नाम से जानते हैं। दोनों ग्रन्थों में ३१ श्लोक बिल्कुल एक ही जैसे हैं। इन दोनों ग्रन्थों अर्थात् *ऋग्वेदज्योतिष* तथा *यजुर्वेदज्योतिष* के पहले दो श्लोक इस प्रकार है:

पंचसंवत्सरमयं युगाध्यक्षं प्रजापतिम्। दिनर्त्वयनमासांगं प्रणम्य शिरसा शुचिः।।
प्रणम्य शिरसा कालमभिवाद्य सरस्वतीम्। कालज्ञानं प्रवक्षामि लगधस्य महात्मनः।।

''दिवस. ऋतु, अयन और मास जिसके अंग हैं ऐसे पंचसंवत्सरमय युगाध्यक्ष प्रजापति को शिरसा नमस्कार कर शुद्ध होता हुआ मैं काल को नमस्कार कर और सरस्वती का अभिवादन कर महात्मा लगध के बतलाए हुए काल का वर्णन करता हूँ।।''

इन श्लोकों में दिन, ऋतु, अयन तथा मास को काल के अंग बताया गया है। अब इनकी परिभाषा भी इन्हीं के शब्दों में सातवें श्लोक में सुनिए:

धर्मवृद्धिरपांप्रस्थः क्षपाह्रास उदग्गतौ।। दक्षिणेतौ विपर्यस्तौ षण्मुहूर्त्ययनेन तु।।

''सूर्य के उत्तरायण में उदक के एक प्रस्थ अर्थात् ४/६१ नाड़ी दिन बढ़ता है और रात्रि घटती है। दक्षिणायन की स्थिति इसके विपरीत होती है। अयन में इस प्रकार कुल छः मुहूर्त वृद्धि या ह्रास होते हे।'' आगे २२वें श्लोक में इनका कथन है: यदुत्तरस्यायनतोयनंस्याच्छेषं तु यद्दक्षिणतोयनस्य।।

तदेक षष्टया द्विगुणं विभक्तं सद्वादशं स्यादिवसप्रमाणम्।।

"उत्तरायण होने के बाद जितने दिन व्यतीत हुए हों अथवा दक्षिणायन के बाद अयन की समाप्ति होने में जितने दिन शेष रह गये हों उनमें दो का गुणा कर गुणनफल में ६१ का भाग दे। जो लब्धि आवे उसमें १२ जोड़ देने से एक दिन का मुहूर्तात्मक मान आता है।"

भूगोल का पांचवीं कक्षा का छात्र भी इतना तो समझ ही सकता है कि इनमें कौन से अयनों, ऋतुओं और मासों का वर्णन है-------सायन अथवा निरयण?

वैसे तो *ऋग्वेदज्योतिष* के इन श्लोकों से ही यह स्पष्ट होजाता है कि हम किसी काल्पनिक निरयण राशिचक्र को "वैदिक" कहकर अपनी अल्पज्ञता का प्रदर्शन कर रहे हैं तथा मूर्ख बनते आए हैं पर शताब्दियों से एक गलत परिपाटी पर चल रहे मस्तिष्क को एक दम से केवल इतने प्रमाणों से एक धारणा से हटाकर दूसरी पर लाना असम्भव सा ही है अतः इसी बात को और भी अनेक वैदिक प्रमाणों से सदा के लिए सिद्ध करना पड़ेगा। तो चलिए वही करते हैं।

वेदों में सायन मासों तथा ऋतुओं के अनेक प्रमाणः- "यजुर्वेद" का कथन हैः

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू। शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू। नभश्च नभस्यच वार्षिकावृतू ईशश्चोर्जश्च शारदावृतू सहश्च सह्यश्च हेमन्तिकावृतू तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू .

मूल यजुर्वेद संहिता पृष्ठ १३६-४०, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय संस्करण।

"मधु-माधव वसंत ऋतु के मास हैं। शुक्र-शुचि ग्रीष्म ऋतु के। नभ और नभस्य वर्षा के। ईश और ऊर्जा शरत् ऋतु के। सह और सह्य हेमन्त के। तप और तपस्या शिशिर के" ।

एक अर्द्धशिक्षित व्यक्ति को भी वैदिक मासों के नाम-मात्र से ही यह स्पष्ट होना चाहिये कि वैदिक ऋषियों ने उन्हें सम्बद्ध ऋतुओं के साथ किस सुन्दरता से जोड़ा हैः मधु और माधव, शहद तथा उससे बनने वाले अन्य पदार्थ, वसन्त ऋतु के कितने सुन्दर द्योतक हैं जबकि निरयण राशिचक्र वाले यह चाहते हैं कि ग्रीष्म ऋतु को मधुमास का नाम दे-दें! नभ और नभस्य, आकाश के पर्यायवाचक शब्द,वर्षा ऋतु के मास कहे गये हैं! यह नाम भी इसलिए सार्थक हैं क्योंकि इसी ऋतु में मनुष्य आकाश की ओर अधिक देखता रहता है कि कब वर्षा होगी, जिसकी कि इस ऋतु में किसी भी दिन, किसी भी समय आने की सम्भावना होती है। इत्यादि!

शतपथ ब्राह्मण २/१/३ में भी कहा हैः

"....स यत्रोदगावर्तते। देवेषु तर्हि भवति यत्र दक्षिणावर्तते पितृषु तर्हि भवति"

"सूर्य जब उत्तर दिशा में यात्रा करता हैं अर्थात् उत्तरायण में होता है वह देवताओं में होता है; जब दक्षिण दिशा में आता है अर्थात् दक्षिणायन में होता है तब पितरों में वास करता है"।

तैत्तिरीय संहिता का कथन हैः तस्मादित्यः षण्मासो दक्षिणेनैति षडुत्तरेण तै. सं. ६ - ५ - ३

"अतः सूर्य छः मासों में दक्षिण दिशा में जाता हैं अर्थात् दक्षिणायन में तों छः मासों में उत्तर दिशा में अर्थात् उत्तरायण में"

सूर्य सिद्धान्त में भी "वैदिक" अर्थात् सायन राशिचक्र आदि ही हैः-

अब यदि हम *सूर्य सिद्धान्त* की गहराई में जाते हैं तो स्पष्ट होता है कि सूर्य सिद्धान्तकार वेदों के प्रति परम आदर की भावना रखते हैं। भूगोलाध्याय में उन्होंने कहा हैः

ऋचयो अस्य मण्डलं सामान्युस्रा मूर्तिर्यजूंषि।त्रयीमयो अयं भगवान् कालात्मा कालकृद्विभुः।१८।

"ऋचाएं उसकी मण्डल हैं, साम उसके करण तथा यजुर्वेद इसकी मूर्ति। यही परमात्मा मूर्तिमान त्रयीमय, ऋक, यजुः और साममय है।" वेदों के प्रति इस प्रकार सम्मान रखने वाले सूर्य सिद्धान्तकार ने तो मानो वैदिक खगोलिकी पर ही व्याख्या लिखी हो, न कि उसके विरोध में और जैसा कि अनेक बार स्पष्ट किया गया है और जैसा कि भारतवर्ष का प्रत्येक विद्वान वैसे भी जानता ही है, वेदों में केवल सायन राशि-चक्र का ही वर्णन है, निरयण का तो कहीं नाम-मात्र भी नहीं है। यही बात जैसा कि हम ऊपर दिखा चुके हैं *सूर्य सिद्धान्त* में भी हैः "कि सूर्य की मकर संकान्ति से लेकर कर्क संकान्ति तक छः मास दक्षिणायन के होते हे। और दो-दो राशियों के संक्रमण से उसी क्रम से शिशिर आदि ऋतु बनते हैं। मेष से प्रारम्भ होके ऐसे ही बारह मासों/संक्रान्तियों का एक संवत्सर होता है"। अब यहां पर आप राशियों के बदले *सूर्य सिद्धान्त* में

मधु, माधव आदि नाम तथा वेदों में मधु, माधव के बदले *सूर्य सिद्धान्त* के मेष-राशि आदि नाम बदल दीजिए तो यह भी अन्तर मालूम नहीं होगा कि आप वेदों का अध्ययन कर रहे हैं या *सूर्य सिद्धान्त* का! आप निश्चय मानिये कि वेदों में केवल यह ही वचन सायन राशिचक्र के बारे में नहीं हैं अपितु जगह-जगह अन्य स्थलों पर भी सायन राशि-चक्र का ही वर्णन है जो हम आगे और भी अनेक प्रमाणों से सिद्ध करेंगे।

आधुनिक "निरयण" खगोलवेत्ता भी वैदिक "कैलेण्डर" सायन ही मानते हैंः-

यह तो हम ऊपर सिद्ध कर ही चुके हैं कि प्राचीन खगोलवेत्ताओं ने सायन राशि चक्र के भगण आदि दिए हैं क्योंकि वह भी वैदिक भगण सायन ही मानते थे अब यह देखना है कि आधुनिक "निरयण

खगोलवेत्ता'' इस सन्दर्भ में क्या कहते हैं।

कलि संवत् की प्रारम्भ तिथि का विश्लेषण करते हुए भूतपूर्व कमाडोर एस. के. चैटर्जी की जुलाई १९९५ के 'ऐस्ट्रालोजिकल मैगेजीन' के पृष्ठ ५४१ पर यह पंक्तियां देखिए : ''आर्यभट्ट के मन में सम्भवतः कोई ऐसा सम्वत् था जो प्राचीन वैदिक कैलेण्ड़र जैसा ही था जिसके वर्ष मधु, माधव आदि मासों पर आधारित थे और जो मूलतः विषुवदीय अर्थात् सायन था और वसन्त सम्पात से प्रारम्भ होता था''।

इसी बात को और भी अनेक आधुनिक निरयण खगोल वेत्ताओं ने भी स्वीकार किया है कि वैदिक वर्ष, मास और ऋतुचक्र आदि सायन ही थे निरयण नहीं। (यद्यपि खगोलवेत्ता न निरयण होता है न सायन, वह तो केवल वैज्ञानिक तथ्यों को सामने रखता है, परन्तु हमें यहाँ यह उपाधि उनको इसलिए देनी पड़ रही है क्योंकि कुछेक "वैदिक ज्योतिषी'' किसी भी निष्पक्ष बात करने वाले को "नास्तिक'' और ''पाश्चात्य सभ्यता का पिट्ठू'' मान कर उसे बहुत चिढ़ते हैं जबतक उनको इस बात का "प्रमाण'' न दिया जाए कि वह भी उन्ही के *"ज्योतिष'' को अपना रहे हैं)।*

अब आप स्वयं ही देखिए कि जब "निरयण खगोलवेत्ता'' भी वैदिक राशि चक्र को सायन मानते हैं तो भला ''वैदिक ज्योतिष'' निरयण कहां से हो सकता है!

निरयण राशिचक्र मानने के अनेक दुष्परिणाम तथा हानियां:-

इसके अतिरिक्त वेदों की स्पष्ट घोषणा है कि आदित्य केवल बारह ही हैं जिनके नाम इस प्रकार है: विष्णुः,शक्रो, अर्यमा,धाता, त्वष्टा, पूषा, विवस्वान्, सविता, मित्रः, वरुणः, अंशो, भगः।

बृहदारण्यकोपनिषद के ३/६/५ में इस विषय में विदग्ध शाकल्य ऋषि का एक अत्यन्त ही स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण प्रश्न है और उससे भी अधिक स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण उत्तर याज्ञवल्क्य मुनि का है, जो इस प्रकार है: ''कतम आदित्या इति द्वादश वै मासाः संवत्सरश्चैत आदित्या एतेहीदं सर्वमाददाना यन्ति ते यदिदं सर्वम् आददाना यन्ति तस्मादादित्या इति।''

शांकर भाष्यानुसार इसका यह अर्थ है: ''विदग्ध शाकल्य पूछते हैं: हे याज्ञवल्क्य! आदित्य कितने हैं? याज्ञवल्क्य उत्तर देते हैं 'संवत्सर के अवयवरूपी बारह मास ही बारह आदित्य हैं।' कैसे? 'क्योंकि यह मास ही इस स्थावर-जंगम जगत से अपनी गतिशीलता द्वारा उनके शुभाशुभ कर्मो को फलीभूत करके उन कर्मोके फलस्वरूप उनके आयु परिमाण आदि का निर्णय करते हैं। क्योंकि यह मास ही 'भ्रमण करते हुए ग्रहण करते हैं' इसी लिए इनको ही आदित्य कहा गया है।''

अब स्पष्ट ही है कि यदि वैदिक सायन बारह मासों के साथ *सूर्य सिद्धान्त* वाले तथाकथित बारह निरयण मास भी माने जाएं तो हमें उन निरयण मासों के अधिष्ठाता और बारह आदित्यों का 'सृजन' करना होगा तो कुल संख्या चौबीस हो गई। फिर यदि जैसा कि अनेक फलित ज्योतिषी तथा पंचांगकार मानते हैं "सरकारी अयनांश'', जो चाहे कुछ भी हो परन्तु "चित्रापक्षीय'' नहीं है, भी सही माना जाए तो हमें बारह और आदित्यों का 'निर्माण' करना होगा अर्थात् कुल छत्तीस आदित्य! पर हम भला डा० बी० वी० रमण के अयनांश का बहिष्कार कैसे कर सकते हैं क्योंकि उनका तो कहना है कि केवल उसी अयनांश के सहारे उनने सारे विश्व को चौंका देने वाली अनेक सही भविष्रूयवाणियां की है, तो कुल अड़तालीस आदित्य तो होने ही चाहिएं! पर हाँ। हम तो भूल ही गए कि एक कृष्णामूर्ति अयनांश भी है और भारतीय संविधान के विशेषज्ञ तो हमें कठघरे में खड़ा करदेंगे कि हमने उनके साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया है, क्योंकि "कृष्णामूर्ति अयनांश'' के अनुयायियों का तो कहना है कि वह तो ट्रंक काल के ''मैचुअर'' होने के सेकण्ड़ तक पहले ही बता देते हैं तथा प्रश्न द्वारा किसी भी देरी से चलने वाली गाड़ी के आने का केवल घंटा या मिनट नहीं बल्कि सेकण्ड तक समयपूर्व ही सही सही बता देते हैं, सो साठ आदित्यों के बिना तो किसी प्रकार काम नहीं चलने का! अरे हाँ, एक और अयनांश है -''लाहिरी अयनांश'' जो सरकारी अयनांश से भिन्न है, चाहे दस विकलाओं से ही क्यों न हो, तो बहत्तर आदित्य तो चाहिएं ही चाहिएं। यह तो हुआ यदि हम पश्चिमी देशों के सिरिल फागन के अयनांश का बहिष्कार ही करलें क्योंकि हो सकता है उन ''यवन अयनांश वाले मासों पर'' वैदिक आदित्यों के अधिष्ठाता की आवश्यकता नहीं होगी! पर हमें ''रैवत पक्ष'', ''खरेगट अयनांश'', ''छायार्क अयनांश'' आदि और भी अनेक अयनांशों को भी सम्मिलित करना ही पड़ेगा, अन्यथा ''अल्पसंख्यकों की उपेक्षा'' का आरोप लग सकता है हम पर! तो दो-एक सौ आदित्यों का तो प्रबन्ध करना ही पड़ेगा। कोई समस्या नहीं है। आधुनिक खगौलिकी के अनुसार तो आकाश में, अथवा यह कहिए कि आकाश गंगा में, असंख्य तारे हैं और जिस प्रकार से यह निरयणवादी ''इन अयनांशों की 'जनसंख्या' दिन प्रति दिन बढ़ा रहे है'' उस हिसाब से शीघ्र ही उन सब आदित्यों की आवश्यकता होगी।

तो क्यों न हम अभी से अपने-अपने मनपसन्द अयनांशों के अधिष्ठाताओं के रूप में इनका चयन करने के लिए इन आदित्यों को आवेदनपत्र दे-दें! अथवा यह भी हो सकता है कि इन में से प्रत्येक ''निरयण ज्योतिषी'' उन ''विष्णु'' आदि बारह वैदिक आदित्यों को तो अपने ''मनपसन्द अयनांश'' वाले मासों का अधिष्ठाता बनाए और अन्य सब अयनांशों के लिए नवीन आदित्यों का चयन करले जो उनके अयनांशादित्यों के अधीन काम करें! आखिर इससे क्या अन्तर पड़ता है कि वास्तव में कौन सा अयनांश

सही या गलत है, यदि कोई अयनांश सही भी है,क्योंकि उन्हें तो केवल उसी अयनांश से मतलब है जिससे उनका लक्ष्य सिद्ध होता हो अर्थात् उनकी भविष्यवाणियां ही निकलती हों। ("वैदिक ज्योतिष के एक उच्च स्तर के प्राचार्य'' से जब हमने एक बार पूछा कि क्या उनने अयनांश के विषय में छपे मेरे लेख पढ़ लिए तो उनका टक्का सा उत्तर थाः 'अयनांश के विषय पर लेख पढ़ना तो समय व्यर्थ गंवाना है, मैं तो केवल उसी अयनांश को सही मानता हूं जिससे फलित सही-सही बैठता हो' - यह महाशय यद्यपि रमण की दुहाई देते है पर पंचांग प्रयोग में लाते हैं सरकारी अयनांश वाला, वह भी केवल वही पंचांग जिसमे प्रति वर्ष सैंकडों गल्तियां होती हैं -- केवल मात्र इसलिए कि रमण अयनांश वाला कोई पंचांग उपलब्ध नही है नहीं तो इनको उसी से सारे फलित सही मिलते दीखेंगे। *वैसे भी इन 'प्राचार्य' की ''सही भविष्यवाणियों के विषय में हम आगे भी चर्चा करेंगे*)।

निरयणवादियों के परलोक गमन और वापसी के मार्ग भी संदिग्ध हैंः-

उपर्युक्त विवेचन से इतना तो सिद्ध हो ही जाता है कि ''निरयण भक्तों'' के निरयण संक्रान्तियों को उत्तरायण या दक्षिणायन आदि के साथ जोड़ने के अन्ध-विश्वास के कारण उनको कम से कम दो-एक सौ ''निरयण उत्तरायण'' और दक्षिणायन आदि बनाने पड़ेंगे जैसे ''सरकारी उत्तरायण'', ''रमण-उत्तरायण'', ''लाहिरी उत्तरायण'', ''कृष्णमूर्ति उत्तरायण'', ''खारेगट उत्तरायण'', ''सिरिल फागन उत्तरायण'' आदि-आदि! और इसका "सुन्दर परिणाम" देखिएः छान्दोगयोपनिषद ४/१४/५ का कथन हैः

अथ यदु चैवास्मिंछव्यं कुर्वन्ति यदि चनार्चिषमेवाभिसंभवन्त्यर्चिषो अहरह्न
आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षाद्यान् षडुदङ्डेति मासांस्तान्मासेभ्यः संवत्सरम्

और इसपर भगवान शंकराचार्य का भाष्य इस प्रकार है

''आपूर्यमाणपक्षाद्यान्षण्मासानुदङ्ङउत्तरांदिशमेति सविता तान्मासानुत्तरायण देवतां''

अर्थात् "....व्यक्ति मृत्यु के पश्चात् शुक्लपक्ष देवता को, शुक्लपक्ष से शडुदङ् जिन छः महीनों में सूर्य उत्तर दिशा में चलता है उन उत्तरायण के छः महीनों को प्राप्त होता है''।

अब ''रमण अयनांश'' मानने वाले व्यक्ति की जब मृत्यु होगी तो बेचारे यमराजजी भी परेशान होंगे कि इनको कौन से उत्तरायण अथवा दक्षिणायन से ले जाएं (यदि हम यह मान भी लें कि यमराजजी ने भिन्न-भिन्न अयनांशों को मानने वालों के लिए भिन्न-भिन्न उत्तरायण/दक्षिणायन के मार्गनिर्देश चिन्ह लगा रखे हैं जैसे यहाँ भारतवर्ष में जगह जगह डलहोज़ी मार्ग, नेहरू मार्ग आदि के मार्गनिर्देश चिन्ह लगे हुए हैं वैसे ही) क्योंकि इन रमण अयनांश मानने वालों को न तो सरकारी अयनांश ही पूरी तरह मान्य है और न ही रमण अयनांश कारण कि मकर संक्रान्ति अर्थात् पोंगल तो यह मनाते हैं सरकारी अयनांश वाले दिन और फलित ज्योतिष के लिए दुहाई देते हैं रमण अयनांश की तो स्वाभाविक ही है कि वह यमराजजी उनको त्रिशंकु की भान्ति वहीं पर लटकाए रखेंगे। यही हाल सरकारी अयनांश वालों का भी होगा क्योंकि त्यौहार तो वह मनाते हैं सरकारी अयनांश वाले दिन पर फलित ज्योतिष के लिए प्रयोग में लाते हैं बी. वी. रमण की पुस्तकें और लेख जिनमें बिल्कुल दूसरा ही अयनांश दिया गया है''! क्योंकि इसी उपनिषद के ५/१०/५ के अनुसार ''तस्मिन्यावत् संपातमुषित्वा अथैतमेवाध्वानं पुनर्निवर्तन्ते'' अर्थात् "वहां परलोक में कर्मफलों का उपभोग करने के पश्चात् वे प्राणी फिर उसी मार्ग से इस संसार में लौट आते हैं'' तो स्पष्ट ही है कि वापसी के समय भी इन "अवैदिक अयनांश वाले प्राणियों को'' भिन्न-भिन्न अयनांशों के ही अयनों में भटकते रहना पड़ेगा और इस मर्त्यलोक में भी इनकी वापसी इतनी जल्दी नहीं होगी! एक तरह से यह अच्छा ही है क्योकि हो सकता है इस निरयण भ्रान्ति का प्रसार उससे कुछ कम हो! यहाँ एक बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि पाश्यात्य देशों के मृतकों के साथ यमराजजी को ऐसी कोई परेशानी नहीं होगी क्योंकि वह तो केवल एक ही अयनांश मानते हैंः वैदिक अर्थात् सायन!

यह अयन गति के बारे में कथन केवल छान्दोग्योपनिषद में ही नहीं है अपितु सारे के सारे धर्मशास्त्र इसी बात को बार-बार दोहराते है! अपने अन्धेपन के प्रमाण स्वरूप यह "वदिक ज्योतिषी" इस स्पष्ट वेदवाक्य पर भी विचार करने को तैयार नहीं है कि ''यान् षण् उदङ् एति मासान्'' का स्पष्ट अर्थ है कि "जिन छः मासों में सूर्य उत्तर दिशा में होता है" और यह केवल सायन उत्तरायण में सम्भव है।

सारे धर्मशास्त्र सायन राशिचक्र का ही वर्णन करते हैंःइसी प्रकार अन्य धर्मशास्त्रों में भी ऐसे ही सायन राशि व ऋतु-चक्र का ही वर्णन है। आइए अब मनुस्मुति को देखते हैंः

दैवे रात्रि-अहनी वर्ष प्रविभागस्तयोः। अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्याद् दक्षिणायनम्। मनुस्मृति १.६७

"मानवों का वर्ष देवों .का दिवा-रात्रि है---दिन उत्तरायण है तो रात्रि दक्षिणायन''।

लालबहादुर शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित "श्री शिव महापुराण" की विश्वेश्वर संहिता की १५वाँ अध्याय में तो सूर्य व बृहस्पति के मेष, वृष आदि भिन्न-भिन्न राशियों में एक साथ संक्रमण करते समय शिव महापूजा का फल बतलाया गया है। इस अध्याय में ८/६ श्लोक इस प्रकार हैः

तस्माद् दशगुणं ज्ञेयं रवि संक्रमणे बुधाः। विषुवे तद् दशगुणमयने तद् दश स्मृतम्।।

"यदि सूर्य की संक्रान्ति में पूजा की जाए तो फल दस गुणा अधिक है,विषुव में उससे भी दस गुंणा और

अयनों में विषुव से दस गुंणा अधिक।" अब यह कलियुगी पंचांगकार चाहे कोई भी कलियुगी हथियार अपनालें, परन्तु वह यहां संक्रान्ति और राशि शब्दों के बीच में किसी रमण या लहिरी निरयण राशिचक्र की भूल कर भी कल्पना तक नही कर सकते हैं। इसका यही अभिप्राय है कि शैव शास्त्रों में भी केवल सायन राशि-चक्र का ही वर्णन है। क्योंकि इस अध्याय में भिन्न-भिन्न राशियों में सूर्य और बृहस्पति की युति के अनुसार पूजा का फल बताया गया है तो वह युतियां भी स्वतः सायन राशियों के अनुसार ही बताई गई हैं न कि निरयण राशियों के अनुसार।

श्रीमद्भागवत् के पंचम स्कन्ध के २२वें अध्याय के तीसरे श्लोक में तो मानो इसी चमत्कृति की ''ससन्दर्भ व्याख्या'' इस प्रकार की गई है:

"स एष भगवानादिपुरुषेव साक्षान्नारायणो लोकानां स्वस्तये आत्मानं त्रयीमयं कर्म विशुद्धि निमित्तं कविभिरपि च वेदेन जिज्ञास्यमानो द्वादशदा विभज्य षट्सु वसन्तादिषु ऋतुषु यथोपजोषं ऋतुगणान् वहति अथ स एष आत्मा लोकानां द्यावापृथिव्योरन्तरेण नभोवलयस्य कालचक्रगती द्वादश मासान्भुंक्ते राशिसंज्ञान् संवत्सरावयवान्।'' अर्थात् ''वही भगवान वेदपुरुष आदि नारायण, जिसको कि विद्वान-मनीषी वेदों द्वारा जानने का प्रयास करते रहते हैं, वह ही स्वयं अपने आपको सांसारिक प्राणियों की कर्म विशुद्धि के लिए तथा सांसारिक कल्याण के लिए बारह मास रूपी बारह भागों में तथा ऋतु रूपी छः भागों में बांटकर क्रमानुसार उस ऋतु-चक्र का वहन करते हैं। वह आत्मा रूपी परमात्मा ही आकाश तथा पृथिवी के बीच में, आकाशमण्डल में, कालचक्र को चलाते हुए संवत्सर के अंग रूपी बारह राशियों के नाम वाले मासों का उपभोग करते हैं।'' यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि राशि-चक्र को ऋतुओं के साथ जोड़ा गया है अतः वह सायन के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हो सकता है।

"निरयण पंचांगकारों" तथा "निरयण ज्योतिषियों" को अपनी अल्पज्ञता पर शर्म आनी चाहिए जिस से उन्होंने सारे हिन्दू समाज को अधर्म अपनाने पर बाध्य किया। अब जानबूझ के ऐसा करते रहने पर उनको सातवें नरक में भी जगह नहीं मिलेगी।

श्री भोलादत्त महतोलिया ने हमें रुद्रपुर से *श्रीमद्भागवत* (गीताप्रेस, गोरखपुर संस्करण) के पांचवें स्कन्द का २१वां श्लोक लिख कर भेजा है जो पिछले संस्करण में हमसे छूट गया था। यह है:-

"यदा मेष तुलयोर्वर्तते तदाहोरात्राणि समानानि भवन्ति, यदा वृषभादिषु पंचसु च राशिषु चरति तदाहान्येव वर्धन्ते हसति च मासि मास्येकैका घटिका रात्रिषु।।४।। यदा वृश्चिकादिषु पंचसु वर्तते तदाहोरात्राणि विपयर्यानि भवन्ति।।५।। यावद् दक्षिणायनमहानि वर्धन्ते यावदुदगयनं रात्रयः।।६।।"

"जब सूर्य मेष व तुला राशियों में होता है तब दिन रात एक समान होते हैं। जब वृषभादि पांच राशियों में विचरण करता है तब प्रति मास में एक घटी के परिमाण से दिन बड़े और रातें छोटी होती जाती हैं। जब वृश्चिक आदि पांच रात्रियों में होता है तब इसके विपरीत होता है। दक्षिणायन तक दिन बड़े होते है और फिर उत्तरायण तक रातें बड़ी होती हैं"। इससे तो स्पष्ट ही है कि भगवान वेदव्यास सायन राशि-चक्र का तथा सायन विषुव व उत्तरायण आदि का वर्णन कर रहे हैं न कि किसी लाहिरी या रमण उत्तरायण अथवा मेषादि राशियों का।

इसी प्रकार भारतवर्ष में नवरात्र दो बार मनाए जाते हैं एक वासन्ती नवरात्र और दूसरे शारदीय नवरात्र। निरयण पंचांगकारों के अनुसार तो, जैसा कि हम इस पंचांग में आगे सिद्ध करेंगे, आज से कोई १३००० वर्ष पूर्व हमारे पूर्वज वासन्ती नवरात्र २० सितंम्बर और शारदीय नवरात्र २१ मार्च को मनाते रहे होंगे अर्थात् वह शारदीय नवरात्रों के समय वासन्ती नवरात्र और वासन्ती नवरात्रों के समच शारदीय नवरात्र मनाते थे। कहने के तात्पर्य यह कि आधुनिक सर्वज्ञ निरयण पंचांगकारों की अपेक्षा हमारे वास्तविक वैदिक ऋषि इतने मूर्ख थे कि उनको वसन्त और शरत्काल तक का भी सही ज्ञान नहीं थां। हम शायद यह मानने को भी तैयार होजाते कि ऐसा ही हुआ होगा परन्तु शारदीय नवरात्रों में प्रत्येक हिन्दू परिवार में दुर्गा सप्तशती का पाठ होता है और उसमें बारहवें अध्याय का बारहवाँ श्लोक इस प्रकार है: "....शरत् काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी"। स्वयं भगवती जगदम्बा चण्ड़ मुण्ड़ तथा महिषासुर आदि दैत्यों का वध करके शरत् कालीन वार्षिकी महापूजा का माहात्म्य बताती हैं "शरत् काल में प्रति वर्ष जो वार्षिकी पूजा की जाती है...."। अब यह "वैदिक ज्योतिषी" तथा "वैदिक पंचांगकार" यहाँ पर चाहे कितनी ही खींचातानी करें, किसी भी शब्दकोष का प्रयोग करें परन्तु "शरत् काल" और "वार्षिकी महापूजा" का और कोई अर्थ लगा ही नहीं सकते हैं बगैर शरत् काल और वार्षिकी पूजा के।

हम अपने १६६४ के पंचांग में यह सिद्ध कर ही चुके है कि किस प्रकार अन्य सभी पुराणों में भी सायन राशि-चक्र को ही सौर मासों, ऋतुओं व अयनों के साथ जोड़ा गया है।

अब क्योंकि हमने इन पृष्ठों में निर्विवाद रूप से यह सदा के लिए सिद्ध करदिया है कि सारे के सारे शैव शास्त्र, वैष्णव शास्त्र व शाक्त शास्त्र तथा वेद, स्मृतिया, पुराण व प्राचीन सिद्धान्त ग्रन्थों में केवल एक ही राशि व ऋतुचक्र का वर्णन है और वह है सायन तो इससे यह भी स्वतः ही सिद्ध होजाता है कि यह तथाकथित वैदिक पंचांगकार व वैदिक ज्योतिषी इन सभी शैव, वैष्णव, वेदान्ती व शाक्त संप्रदाय वालों --- अर्थात् सारी की सारी हिन्दू जनता को किसी काल्पनिक लाहिरी या रमण निरयण राशि-चक्र के

अनुसार व्रत-त्योहार निश्चित करके ज़बर्दस्ती अधर्म की ओर ढकेलते रहे है। अब क्योंकि इन पृष्ठों द्वारा उनको इस तथ्य का ज्ञान कराया गया है तो मैं नहीं मानता कि *अपने पंचांगों की बिक्री के लिए या फिर साधारण जनता की अपना भविष्य जानने की दुर्बलता का अनुचित लाभ उठानें के लिए कोई भी व्यक्ति अब भी "किसी रमण या लाहिरी निरयण राशिचक्र" का ही सिक्का भुनाता रहेंगा क्योंकि इस ऋषिभूमि में इतना धनलोलुप कोई कदापि हो ही नहीं सकता है जो* पैसे के लालच से जानबूझ के सारी जनता को अधर्म की ओर प्रवृत्त कराता रहेगा।*अभी तक जो कुछ भी हुआ है वह अनजाने में ही हुआ है।*

कुछ विदेशी "निरयण भक्तों'' की भीष्मपितामह के "सरकारी उत्तरायण'' और निरयण कुम्भ संक्रान्ति में प्राणत्याग की हास्यास्पद युक्तिः- अब क्योंकि भारतवर्ष में सारे ही चमत्कार, व्रत-पर्व-त्योहार आदि हम अपनी सुविधा या यों कहिए कि वास्तविक दिनों के बदले यथेष्ट दिनों में मनाते हैं सो कहा जाता है कि दक्षिण भारत के किसी स्थान में प्रति वर्ष "मकर संक्रान्ति'' के दिन लाखों दर्शकों को ''मकर ज्योति'' के दर्शन होते हैं। और वह मकर संक्रान्ति होती निरयण ही है! इस विषय में जो आश्चर्य की बात है वह यह है कि वह ''मकर ज्योति'' दिखती "लाहिरी-सरकारी'' मकर संक्रान्ति पर ही है न डा. रमण के अयनांश अनुसार न *सूर्य सिद्धान्त* के अयनांश अनुसार, न रैवतपक्ष अयनांश अनुसार और सायन मकर संक्रान्ति पर तो कदापि नहीं जबकि वह वास्तव में उसी दिन दिखनी चाहिए! यह तो डा. रमण वाली बात ही हुई, वह भी तो अपने अयनांश को तिलांजलि देकर सरकारी अयनांश वाले दिन ही मकर संक्रान्ति मनाते हैं! लगता है कि स्वर्गलोक में रहने वाले देवता भी अपने कार्यक्रम सरकारी तिथि-पत्रे के अनुसार ही निश्चय करते हैं! हो सकता है वह भी भारत सरकार द्वारा प्रकाशित ''राष्ट्रीय पंचांग'' का ''आयात'' करते हों! रिज़र्व बैंक को तत्काल देखना चाहिए कि कहीं वह स्वर्गलोक के देवता विदेशी-मुद्रा नियमों का उल्लंघन तो नहीं कर रहे है!

मकर संक्रान्ति तथा उत्तरायण को सरकारी अयनांश के अनुसार बनाने के चक्कर में कुछेक "निरयण भक्त'' तो यह सिद्ध करने की धुन में लगे हैं कि भीष्म पितामह ने भी "निरयण कुम्भ सक्रान्ति'' वाले "सरकारी निरयण उत्तरायण" के दिन ही अपने पार्थिव शरीर का त्याग किया था! महाभारत के अनुशासन पर्व के अध्याय १२६ में २६वां श्लोक इस प्रकार हैः

माघो अयं समनुप्राप्तो मासः सौम्यः युधिष्ठिर। त्रिभागशेषः पक्षोयं शुक्लो भवितुमर्हति

एक विदेशी "निरयण भक्त'' ने तो मार्च १९६५ के "ऐस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन'' में इसका अनुवाद इस प्रकार किया हैः "जब पूर्णिमान्त चन्द्रमा मघा नक्षत्र में होता है तब माघ मास होता है। इस नक्षत्र का मध्य भाग निरयण कुम्भ राशि के ६ अंश ४० कला में है। ईसा पूर्व १८वीं शताब्दी में इस पूर्णिमान्त से एक सप्ताह पूर्व निरयण सूर्य कुम्भ राशि के ० अंश पर रहा होगा या यों कहिए कि नक्षत्र के मध्य भाग से ७ अंश पूर्व अर्थात् यह श्लोक भी वही दर्शाता है जो हम अभी मैत्रायणी उपनिषद के विषय में कह चुके हैं''। और मैत्रायणी उपनिषद के विषय में भी उनका कथन सुनिएः ''यह नक्षत्र बिन्दु अर्थात् मघा ईसा पूर्व १८०० वर्ष में उत्तरायण के समय एक ओर से तो निरयण सिंह राशि के ० अंश पर है तो दूसरी ओर निरयण कुम्भ राशि के ० अंश पर''। इन्हीं के अनुसार उसी लेख में इनका यह भी कहना है कि कलियुग निस्संदेह ईसा पूर्व ३१०२ वर्ष में ही प्रारम्भ हुआ था। दूसरे शब्दों में यों कहिए कि इन विदेशी महानुभाव के ही अपने ही कथन के अनुसार भीष्म पितामह ने कलियुग के प्रारम्भ होने के १३०० वर्ष पश्चात् अपना शरीर त्याग दिया था। इसका यह अभिप्राय हुआ कि भीष्म पितामह के इस कथन का किः

अष्टपंचाशतं रात्र्यः शयानस्याद्य मे गताः।शरेषु निशिताग्रेषु यथा वर्षशतं तथा।।

अर्थात् "यद्यपि मैं इन तीक्ष्ण तीरों की शैया पर केवल ५८ दिवसों से लेटा हुआ हूँ तथापि ऐसा लग रहा है मानो इन पर १०० वर्षों से लेटा हुआ हूँ'' यह अर्थ निकालना चाहिए "भीष्म पितामह का एक-एक दिन से अभिप्राय २२/७ वर्ष है'' क्योंकि यह महानुभाव राशि, नक्षत्रों तथा नवांशों के आंकड़े उन संख्याओं के साथ जोड़ने में भी दक्ष हैं जो किसी प्रकार उन से जोड़े नहीं जा सकते। आखिर इन निरयण भक्त ने यही तो सिद्ध करना है कि ''केवल निरयण राशि-चक्र ही "वैदिक' राशि चक्र है'' इसके लिए चा इन्हें हमारे धर्मशास्त्रों की कोई भी व्याख्या क्यों न करनी या करानी पड़े! बेचारे भीष्म पितामह तो इ भारतीय ''निरयणवादियों'' की यह अल्पज्ञता और हठधर्म देख कर कि "सारा वैदिक राशि-चक्र'' निरय भचक्र पर आधारित है अपनी चित्ता पर भी बार-बार चौंक रहे होंगे।

इनके लेख का आद्योपान्त अध्ययन करने पर तो यही लगता है कि इनको स्वयं ही ज्ञात न है कि यह सिद्ध क्या करना चाहते हैं और सिद्ध क्या कर रहे हैं। Amnesty International "ऐमनेर इन्टरनेशनल'' की भान्ति यह सिद्ध करने की धुन में कि सुदूर कश्मीर में अर्द्ध-सैनिक बलों ने वहां के र समुदाय विशेष के नागरिकों के साथ ज़्यादती की है उनने अपनी पत्रिका में कन्याकुमारी की किसी हि स्त्री का चित्र छापा था जो किसी सुप्रसिद्ध मुसलमान फक़ीर के मज़ार पर प्रार्थना कर रही थी। हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक के बदले उनने उस चित्र की यह परिभाषा दी कि वह एक कश्म मुसलमान स्त्री अर्द्धसैनिक बलों द्वारा अपने पति के मारे जाने पर शोक मना रही थी। बिल्कुल उसी प्र

यह लेखक महाशय भी एक तरफ से यह मानते हैं कि कलियुग वास्तव में ही ईसापूर्व ३१०२ मे प्रारम्भ हुआ पर भीष्म पितामह का देहत्याग कलियुग प्रारम्भ के १३०० वर्ष बाद कहते हैं। इन्हीं लेखक महोदय का कहना है कि अलक्षेन्द्र के साथ आए हुए यूनानी पर्यटक मैगस्थनीज ने भारत में १५३ राजाओं की तथा गणतंत्रों की परम्परा गिनाई है जो ईसा पूर्व ६७७७ तक जाती है और उधर से साथ में यह भी कह रहे हैं कि मैत्रायणी उपनिषद ईसा पूर्व १८०० में बना है क्योंकि उसमें मघा और श्रविष्ठा नक्षत्रों का वर्णन है और इन नक्षत्र के सायन मध्यम भोगांश ईसापूर्व १८०० में ही सिंह और कुम्भ राशि के शून्य अंश थे। इसी लेख में यह लिख रहे हैं कि "वेदों में दो प्रकार के राशिचक्र का वर्णन है एक सायन और दूसरा निरयण";यद्यपि निरयण राशिचक्र के बारे में अपनी काल्पनाओं की उड़ानों के अतिरिक्त और कोई प्रमाण नहीं दे सके है और न दे सकते हैं --- जैसा कि हम सिद्ध कर चुके हैं.....और इनका ही कहना है कि "सायन राशिचक्र तो वसन्तसम्पात से प्रारम्भ होता है और निरयण आकाश में किसी अन्य विशेष बिन्दु से। सायन वैदिक मास ऋतुओं के साथ जुड़े हुए हैं, दो महीनों का वसन्त, दो का ग्रीष्म, दो की वर्षा आदि।" अब यदि यह वेदों में सायन राशिचक्र मान ही रहे हैं और सूर्य का सायण संक्रमण भी मान रहे हैं और उनको ऋतुओं के साथ भी जोड़ रहे हैं तो यह उत्तरायण और दक्षिणायन को निरयण कहां से बना रहे हैं जब कि वसन्त सम्पात को यह स्वयं ही सायन मान रहे हैं? पता नहीं यह विदेशी महोदय तथा इनके चम्चे---या गुरु?---वास्तव में ही अक्ल के अन्धे हैं या भारतीय जनता को ही इस सीमा तक मूर्ख समझ रहे हैं कि इनके इस वाक्छल को कोई नहीं समझेगा?

वैसे तो हम सायन राशि-चक्र ही वैदिक राशि-चक्र सिद्ध करने के लिए अन्य शास्त्रों से अनेक प्रमाण दे ही चुके हैं अब इन विदेशी महोदय के अनर्गल तर्कों के खण्डन के लिए *महाभारत* को ही लेते हैं।क्या हम इसी *महाभारत* के शान्तिपर्व, अ० २२५/३६ का यह सीधा-साधा अर्थ भी नहीं समझ सकते हैं:

१. अयनं तस्य षण्मासानुत्तरं दक्षिणं तथा। येन संयाति लोकेषु शीतोष्णे विसृजन रविः।।

"उस सूर्य भगवान के छः-छः मासों के दो अयन हैं उत्तर और दक्षिण जिनमें भ्रमण करते हुए वह विश्व के लिए शीत और उष्ण अर्थात् सर्दी और गर्मी का 'सृजन' करते जारहे हैं"। क्या इनको इतना भी भूगोल का ज्ञान नहीं है कि उत्तरायण को निरयण संक्रान्तियों से जोड़ने से कलियुगारम्भ के समय अर्थात् ईसा पूर्व ३२०० वर्ष में भारतवर्ष में शीतकाल अर्थात् शिशिर नहीं अपितु हेमन्त होगा। क्या यह भीष्मपितामह को भी अपनी ही तरह शीत व हेमन्त का अन्तर समझने में असमर्थ मानते हैं?

२. यही बात स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने अनुशासनपर्व के ४६ अध्याय, २६वें श्लोक में दोहराई है:

आवृते भगवत्यर्के स हि लोकान् गमिष्यति। त्वद्दर्शनं महाबाहो तस्मादर्हति कौरवः।।

"हे महाबाहो युधिष्ठिर! जब सूर्य वापस घूमेंगे अर्थात् उत्तरायण की ओर जाएंगे तब भीष्मपितामह परलोक गमन करेंगे"। परन्तु इन "निरयण वादियों" को तो आदत पड़ गई है कि ऐसे श्लोकों की उपेक्षा करें जो उनकी धारणा के विरुद्ध हों! वास्तव में तो यह हमारे लिए ही अत्यधिक अपमानजनक बात है कि हम हर "ऐरे, गैरे नत्थू खैरे" को अपने धर्मशास्त्रों की व्याख्या मनमाने ढ़ंग से करने देते हैं यदि वह हमारी धारणाओं, चाहे वह गलत ही क्यों न हों, से सहमत है अन्यथा मुझे तो महाभारत के इन श्लोकों की अवहेलना करने का कोई कारण दिखाई नही देता:

३. निवृत्त मात्रे त्वयन उत्तरे वै दिवाकरे..... शान्तिपर्व ४७/३

व्यावर्तमाने भगवत्युदीचीं सूर्ये दिशं कालवशात् प्रपन्ने..... शान्तिपर्व ५१/१७

इनके परिशीलन से तो यह लेशमात्र भी सन्देह नहीं रहता है कि भीष्मपितामह एक बनावटी अर्थात् निरयण नहीं अपितु वास्तविक अर्थात् सायन उत्तरायन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

लगता है भगवान वेदव्यास को पहले से ही ज्ञात था कि कुछ "निरयण भक्त" अपने अक्ल के अन्धेपन से दक्षिणायन और उत्तरायण जैसी स्पष्ट चमत्कृतियों को भी विदेशी "लेखकों" के खिलवाड़ का साधन बनाएंगे तभी तो उनने वैष्णवधर्मपर्व के पृष्ठ ६३७३ पर स्वयं भगवान कृष्ण से घोषणा करवाई है: ४. राजन्नयनयोर्मध्ये विषुवं सम्प्रचक्षते । समे रात्रि दिनं तत्र संध्यायां विषुवे नृप।।

"महाराज युधिष्ठिर! उत्तरायण और दक्षिणायन के मध्य भाग में जबकि रात और दिन बराबर होते हैं, वह समय 'विषुव' नाम से जाना जाता है।" *क्या अभी भी यह '"निरयणवादी" नहीं चेतेंगे कि "वैदिक फलित-ज्योतिष" को निरयण सिद्ध करने के चक्कर में यह स्वयं ही खिलौना बन गए हैं?*

इन विदेशी लेखक महापुरुष की सूचनार्थ हम यहाँ पर यह बता दें कि इन महानुभाव को इस बात को सिद्ध करने के लिए पहले अपने गुरु डा० बी० वी० रमण को झूठा साबित करना पड़ेगा कि भीष्मपितामह ने सचमुच में ही कलियुग प्रारम्भ होने के १३०० वर्ष बाद प्राण त्याग किया था क्योंकि डा० रमण ने तो अपनी पुस्तक "नोटेबल हार्स्कोप्स" मे यही कहा है कि कलियुग ईसा पूर्व ३१०२ वर्ष में ही प्रारम्भ हुआ था और वह कभी इस बात को मानने को तैय्यार नहीं होंगे कि भीष्म पितामह ने कलियुग प्रारम्भ के १३०० वर्ष बाद देहत्याग किया था! तथापि सब प्रमाणों के विपरीत यदि हम यह मान भी लें कि भीष्मपितामह ने देहत्याग ईसा पूर्व १८०० में ही किया था तब भी उस दिन इनके द्वारा गणित की गई माघ पूर्णिमा से आठ दिन पूर्व सायन मकर संक्रान्ति ही थी! देखिए कैसे: उन दिनों सरकारी अयनांश ---जिसको यह महाशय वैदिक अयनांश सिद्ध करना चाहते है।----कोई २६/३० अंश धन था अर्थात् निरयण

भोगांशों से सायन भोगांश निकालने के लिए उन निरयण भोगांशों में से अयनांश घटाना पड़ता, जबकि आजकल उनमें अयनांश जोड़ना पड़ता है। अतः उस समय जिसको यह लेखक महोदय निरयण कुम्भ संक्रान्ति मानते हैं उसी दिन सायन मकर संक्रान्ति अतः उत्तरायण थे! और कोई ठेठ निरयण भक्त भी यह नहीं कह सकता है कि किसी भी ज्योतिष-शास्त्र में चाहे *सूर्य सिद्धान्त* ही क्यों न हो ''कुम्भ संक्रान्ति वाले दिन उत्तरायण'' प्रारम्भ होना लिखा है! लगता है कि ऐसा अनर्गल असत्य ''ऐस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन'' जैसी पत्रिका में केवल इसी लिए छप सकता है कि उसके दर्जनभर सम्पादकों ने इस गलत व्याख्या की ओर ध्यान नहीं दिया है *अन्यथा यदि सोच-समझ के छापा है तो उसका यही मतलब है कि उन सम्पादकों को न तो अपने धर्मशास्त्रों का ज्ञान है न वैदिक और न ही आधुनिक खगोलिकी का अतः उन में से किसी भी सम्पादक को किसी पंचांग समिति की अध्यक्षता करने का कोई अधिकार नहीं है।*

और ऐसे ही अनापशनाप लिखकर चम्चागरी करने वाले विदेशी लेखकों को जब उनको "वैदिक ज्योतिष'' में "निष्णात'' आधुनिक वराहमिहिर "वैदिक ऋषियों'' की उपाधियां देते हैं तो यह "वैदिक ज्योतिष'' का अपमान नहीं तो क्या है?

हमारी निरयणभक्ति हम में धर्मशास्त्रों के ज्ञान का अभाव दर्शाती है:- हमने जब इन विदेशी महोदय का यह लेख पढ़ा तो हमें पूरा विश्वास था कि इसकी आलोचना अवश्य होगी और प्रतिक्रिया के रूप में पाठक अवश्य ही विरोध प्रकट करेंगे परन्तु आज तक इस पत्रिका में कोई ऐसा पत्र नहीं छपा। इन तथ्यों की उपेक्षा का कारण यही लगता है कि इन निरयण भक्तों को स्वयं ही अपने शास्त्रों का ज्ञान नहीं है और इसीलिए यह किसी भी व्यक्ति को उनके मनमाने अर्थ लगाकर हमें मूर्ख बनाने की अनुमति देते हैं! वैसे ऊँचे मंचों पर चढ़कर अपने भाषणों में शास्त्रों के कुछेक श्लोकों की अपने शास्त्र असंगत मत को सिद्ध करने के लिए मनमानी व्याख्या करना एक बात है और उन शास्त्रों का श्रद्धा, भक्ति और परिश्रमपूर्वक अध्ययन करना कुछ और बात है। वास्तव में तभी उन शास्त्र रूपी निधियों का सही अर्थ पता लग सकता है अन्यथा *तोते भी कुछ श्लोक तो रट ही लेते हैं।*

निरयण भक्ति से हम संस्कृत भाषा का भी अपमान कर रहे हैं:- ऐसा लगता है कि मोनियर विलियम नामक शब्दकोषकार इन सब निरयण ज्योतिर्विदों के एकत्रित ज्ञान से भी अधिक ''हिन्दू'' अर्थात् ''वैदिक'' खगोलिकी जानते थे तथा उनका संस्कृत भाषा का भी इन सब से अधिक और अच्छा ज्ञान था क्योंकि अपनी संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी में उनने इन चमत्कृतियों की व्याख्या यों की है: ''उत्तरायण : सूर्य का कान्तिवृत्त से उत्तर दिशा में भ्रमण''। और ''दक्षिणायन : सूर्य का कान्तिवृत्त से दक्षिण दिशा में भ्रमण''। वैसे भी आप यदि किसी भी हिन्दी अथवा संस्कृत के शब्दकोष में उत्तरायण शब्द की परिभषा देखेंगे तो ''सूर्यका मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर जाना'' ही पाएंगे। लगता है इन निरयण ज्योतिषियों को इन सभी शब्दकोषों को नए सिरे से ही बनवाना होगा! आखिर यह सब कोषकार होते कौन हैं इनकी निरयण धारणाओं के विपरीत परभिषा देने वाले? पता नहीं इन "निरयण ज्योतिषियों'' की समझ में यह बात क्यों नहीं आती है कि उत्तरायण वास्तव में खगोलिकी की एक चमत्कृति है जो कि सूर्य के २७० अंशों के सायन भोगांशों के कारण अधिकतम दक्षिण क्रान्ति पर पहुँचने के बाद प्रारम्भ होती है जब वह मानो दक्षिण क्रान्ति के उस उच्च शिखर से उतरकर उत्तर दिशा की अर्थात् उत्तर क्रान्ति की ओर अपनी यात्रा प्रारम्भ करते हैं तभी और उसी कारण से ऐसा कहा जाता है कि "सूर्य अब उत्तरायण में है''। फिर जब ० अंश सायन मेष के भोगांशों पर पहुँचने के कारण उनकी क्रान्ति भी ० अंश उत्तर हो जाती है तभी यह कहा जाता है कि "यह महाविषुवकाल अथवा वसन्त सम्पात है''। तत्पश्चात् सायन कर्क राशि के ० भोगांशों पर पहुँचने से जब वह अधिकतम उत्तर क्रान्ति के शिखर से मानो उतर कर दक्षिण क्रान्ति की ओर अग्रसर होजाते हैं तभी और इसी कारण से ऐसा कहा जाता है कि "सूर्य अब दक्षिणायन में है''। फिर जिस समय सायन तुला राशि में ० अंश भोगांश होने के कारण वह ० अंश उत्तर क्रान्ति पर पहुँचते हैं तभी पुनः यह कहा जाता है कि "सूर्य हेमन्त सम्पात में है''। वास्तव में सूर्य के यह भोगांश ० अंश, ९० अंश, १८० अंश तथा २७० अंश होते हैं, और वह होते हैं सायन, चाहें हम उन्हें कोई भी नाम क्यों न दें। सभी धर्मों के ज्ञाता भीष्म पितामह को तो इतना खगोलिकी का ज्ञान रहा ही होगा और चाहे इन "निरयण वादियों'' की यह सिद्ध करने के लिए कितनी ही मजबूरियां क्यों न हों कि उनने "निरयण उत्तरायण'' अर्थात् वास्तविक उत्तरायण से अन्य किसी और दिन अपना शरीर त्याग दिया था, वह तो ऐसा करने वाले नहीं थे।

निरयण पंचांग भी उत्तरायण आदि सायन संक्रान्तियों वाले दिन ही मानते हैं:-

इधर उत्तर भारत में जितने भी पंचांग हिन्दी या उर्दू आदि भाषाओं में छपते हैं वह सब के सब सायन मकर संक्रान्ति वाले दिन ही उत्तरायण और सायन कर्क संक्रान्ति वाले दिन दक्षिणायन मानते हैं और अपने पंचांगों में लिखते भी हैं। यही हाल वसन्त सम्पात और हेमन्त सम्पात का भी है -- जिनके साथ स्पष्ट रूप से उत्तर गोल और दक्षिण गोल भी लिखा जाता है। इसी प्रकार ही इन निरयण पंचांगों में भी वैदिक ऋतुओं के अनुसार ही वसन्त, ग्रीष्म आदि ऋतुएं भी लिखी जाती हैं। यह सब के सब सायन

संक्रान्तियों वाले दिन ही लिखे जाते है। पश्चिम बंगाल, उडीसा, बिहार और यहां तक कि महाराष्ट्र के पंचांगों में भी, चाहे वह हिन्दी में हों या बंगाली में मराठी में या गुजराती में --या फिर अंग्रेज़ी में ही क्यों न हों-----यह वैदिक चमत्कृतियां सायन संक्रान्तियों वाले दिन ही छपती हैं और मनाई जाती हैं। "निरयण भक्तों'' के एकमात्र आधार *सूर्य सिद्धान्त* पर छपने वाले पंचांग भी मकर संक्रान्ति वाले दिन ही उत्तरायण मानते हैं---यह अलग बात है कि गलत वर्षमान के कारण से वह मकर संक्रान्ति वास्तविक मकर संकान्ति से कभी २३ दिन बाद होती है तो कभी २१ दिन। इससे यही सिद्ध होता है कि भले ही हम भारतवासी निरयण की भूल-भुलैय्या में फंस कर पथभ्रष्ट होगए हों लेकिन हमनें अपनी वैदिक परम्पराओं से नाता बनाए रखा है और भले ही कुछ विदेशी महोदय और उनके "त्वदेशी चम्चे'' हमें वह नाता तोड़ने के लिए कुतर्क देते रहें हममें उनकी वह दुष्क्रिया समझने की विवेक शक्ति है।

इस विवेचन से तो यही निष्कर्ष निकलता है कुछ भारतीय निरयण भक्तों की निरयण मकर संक्रान्ति को उत्त्रायण के साथ जोड़ने की हास्यास्पद चेष्टा का यही कारण है कि वह *सूर्य सिद्धान्त* को ''निरयण सिद्धान्त'' मानते हैं और क्योंकि हम यह ऊपर सिद्ध कर चुके हैं कि सूर्य सिद्धान्तकार वैदिक खगोलिकी की ही व्याख्या कर रहे थे और क्योंकि वैदिक खगोलिकी सायन पर आधारित है निरयण पर नहीं अतः इस "निरयण संक्रान्तियों'' की गलत परम्परा को शीघ्र ही समाप्त करना चाहिए।

हो सकता है अभी भी कुछ पाठकों को यह समझने में कठिनाई हो रही होगी कि *सूर्य सिद्धान्त* में भगण सायन है निरयण नहीं और क्योंकि प्राचीन भारत में विशेषकर इस ग्रन्थ को अपौरुषेय माना जाता था अतः हमें इस के विषय में कुछ और विवेचन करना ही होगा।

तर्क की कसौटी से भी *सूर्य सिद्धान्त* के अयन और ऋतु भी सायन ही हैं:-

यदि आप इस ग्रन्थ के मानाध्याय अर्थात् ग्यारहवें अध्याय के सातवें और आठवें श्लोकों का, जो कि पिछले पृष्ठों में दिए गए हैं, भलीभान्ति परिशीलन करेंगे तो आप देखेंगे कि वहाँ दो संक्रान्तियों को तो ''अयन संक्रान्ति'' तथा दो को ''विषुव संक्रान्ति'' नाम दिया गया है। इन ही चमत्कृतियों का आगे नवें तथा दसवें श्लोक में और अच्छी प्रकार से स्पष्टीकरण किया गया है कि ''सूर्य की मकर संक्रान्ति से उत्तरायण तथा कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है''। आइए अब हम इन निरयण भक्तों की सन्तुष्टि के लिए *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार प्राप्त निरयण भोगांशों से अयन तथा विषुव जानने के लिए उन भोगांशों में अयनांश का संस्कार करते हैं, वह भी उपर्युक्त व्याख्या के अनुसार वर्तमान निरयण भोगांशों से अयनांश घटाकर, उनमें जोड़कर नहीं, जो कि वास्तव में गलत है। फिर उन्हें ''दृक् कर्म'' द्वारा परिष्कृत करके विषुव तथा अयन संक्रान्तियों ज्ञात करभी लें, तब भी उनका नाम मेष-तुला और मकर-कर्क ही तो रखना होगा। क्यों? क्योंकि सूर्य सिद्धान्तकार ने तो उनके यही नाम रखे हैं! *और क्योंकि यह निरयणवादी यह मानकर चलते हैं कि यह नाम निरयण राशियों/संकन्तियों के हैं तो फिर इन्हें यह भी बताना होगा कि सायन संक्रान्तियों/राशियों के क्या नाम हैं* क्योंकि सूर्य सिद्धान्तकार ने तो और कोई नाम दिया ही नहीं है कारण कि उनको किसी निरयण राशि-चक्र के विषय में ज्ञान था ही नहीं और उनने वास्तव में इन्हीं सायन भोगांशों के आधार पर चन्द्र मासों के नाम भी मार्गशीर्ष, पौष आदि रखे थे ।

वेदों तथा अन्य शास्त्रो में 'रमण' ऋतु हैं या 'लाहिरी' के या 'सरकारी' या फिर 'सिरिलफागन' के?

प्रत्येक धर्मप्राण हिन्दू परिवार में यज्ञोपवीत तथा विवाह आदि संस्कारों के समय यजर्वुद के "पुरुषसूक्त'' का पाठ किया जाता है। वैसे भी कुछेक धार्मिक सज्जन इसका तथा अन्य वैदिक मन्त्रों का दैनिक पाठ करते हैं। इसमें एक मंत्र इस प्रकार है: '' देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः'' अर्थात् ''देवताओं ने उस परमपुरुष परमात्मा की यज्ञ द्वारा पूजा की। उस यज्ञ में वसन्त ऋतु घी था, ग्रीष्म ईन्धन और शरदृतु हवि''। जब मैं निरयण ज्योतिष का अनन्य भक्त था तब भी यह मंत्र सुनने पर मेरे मन में यह प्रश्न उठता कि यदि राशिचक्र अर्थात् ऋतुचक्र को निरयण माना जाए तो देवताओं ने कौन सी ऋतुओं से यज्ञ की रचना की थी? रमण अयनांश वाले या लाहिरी या सरकारी? समस्या यह है कि ये भिन्न अयनांशों वाले ऋतु तो कभी एक ही समय प्रारम्भ हो नहीं सकते हैं। बेचारे देवताओं को भी एक "पंचांगकारों की समिति'' का आयोजन करना पड़ा होगा! पता नहीं उसकी अध्यक्षता किसने की। यदि आपको पता हो तो कृपया मुझे भी सूचित करें! इसी प्रकार *श्रीमद्भगवद्गीता* के दसवें अध्याय में भगवान कृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं कि ''मासानां मार्गशीषोस्मि ऋतूनां कुसुमाकरः'' जिसका अर्थ यों है कि ''मासों में तो मैं मार्गशीर्ष हों और ऋतुओं में वसन्त'' अब हम यदि जैसे-तैसे यह मान भी लें कि भगवान कृष्ण के भी दिमाग के पुर्ज़े इन निरयण भक्तों ही की तरह कुछ ढ़ीले थे और वह दिसम्बर के कटकटाते जाड़े को ही वसन्त मानते थे क्योंकि निरयण वसन्त तो उनके समय में दिसम्बर में ही पड़ता था पर यहां भी वही प्रश्न पुनः उठेगा कि वह ''रमण वसन्त'' को अपने से अभिन्न मानते हैं या ''सरकारी वसन्त'' को या ''लाहिरी वसन्त'' को या फिर ''सिरिल फागन वसन्त'' को? क्योंकि डा. रमण ने भगवान कृष्ण की जन्म-कुण्डली तो उन ही से बनवाई है, अतः कुछ तो भगवान कृष्ण को भी इस बात का लिहाज़ होगा ही होगा अतः वह ''सिरिल फागन'' वसन्त को अपने से अभिन्न मानते होंगे, अन्य सब वसन्तों को अंगूठा दिखाकर! है ना?

निरयण संक्रान्तियों तथा ऋतुओं से तुलसीदास और सूरदास तक अनभिज्ञ थेः-

गोस्वामी तुलसीदासजी की अमरकृति *श्रीरामचरितमानस* में रामजन्म मास के प्रसंग में यह पंक्तियां विशेष विचारणीय हैं: "नवमी तिथि मधुमास पुनीता, सुकलपच्छ अभिजित हरिप्रीता" इनमें सायन वैदिक मधु मास का ही नाम दिया गया है जिसको कि हम आजकल चैत्र मास कहते हैं। इसी प्रकार "बरषा बिगत सरद ऋतु आई" तथा "उदित अगस्त पंथ जल सोषा" आदि अनेक ऐसे प्रसंग और वर्णन है जहां किसी निरयण वर्षा या शरदृतु की कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती है क्योंकि रामजन्म के समय तो निरयण वर्षा ऋतु में कभी वर्षा हो नहीं सकती है न ही निरयण शरत् ऋतु में आकाश निर्मल होसकता है कारण कि इन निरयण ऋतुओं की तिथियां उस समय कम से कम छः मास आगे पीछे रही होंगी अर्थात् तब निरयण शिशिर में ग्रीष्म और निरयण शरत् में वसन्त चल रहा होगा! यही बात सूरदास के प्रसिद्ध भ्रमरगीत पद्य "सदा रहत पावस ऋतु हमपर जबसे स्याम सिधारे" अर्थात् " गोपियां कहती है कि जब से श्याम मथुरा गए हमारी आँखों से सावन-भादों की झड़ी लगी रहती है"। अब भगवान कृष्ण के जन्म समय का निरयण श्रावण/भाद्र तो आजके श्रावण/भाद्र से ७२अंश अयनांश अर्थात् कोई ७५ दिन पहले यानी २५ अप्रैल से २५ जून तक रहता था और इन्हीं दो महीनों में सारे भारतवर्ष में पानी के लिए हाहाकार मचता है,---बेचारे दिल्ली व गोकुल वासियों को तो अपने पड़ोसियों से पानी की भिक्षा मांगनी पड़ती है---- पावस ऋतु की झड़ी तो दूर रही! पर होसकता है इन निरयण भक्तों को तब भी सावन की झड़ी दिखती हो! वैसे भी तो कहावत है "सावन के अन्धे को सब हरा दिखाई देता है"!

इसी प्रकार के अनेक वर्णन रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि सभी धर्मग्रन्थों में मिलते हैं जो कदापि किसी कृत्रिम वर्षा या शिशिर के नहीं हो सकते हैं।

ऐतिहासिक प्रमाण भी *सूर्य सिद्धान्त* का वर्षमान सायन ही सिद्ध करते हैः-

१७ अप्रैल १९६५ के "दैनिक हिन्दुस्तान टाईम्स" मे पी. टी. आई के हवाले से एक समाचार प्रकाशित हुआ था कि "वाशिंगटनस्थित दक्षिण भारत के गणपति सतपथी ने यह सिद्ध किया है कि 'मैक्सिको का वास्तुकलाप्रवर्तक मय तथा भारतवर्ष का सूर्यसिद्धान्तकार मय एक ही व्यक्ति थे'। इस सम्बन्ध में श्री सतपथी ने कई प्रमाण दिए हैं। प्रायः सभी भारतवासी भी इस बात से सहमत हैं कि प्राचीन काल में भारतवर्ष से ही खगोलिकी तथा वास्तुकला आदि का प्रसार बहुत सारे अन्य देशों में हुआ है। इन्ही सतपथीजी का कथन है कि जैसे महाराजा युधिष्ठिर के प्रासाद में सूखे में जल और जल में सूखे की भ्रान्ति इन मयदानव का ही कलाकौशल का परिचायक था उसी प्रकार उन ने मैक्सिको में भी एक ऐसा ही पिरामिड़ pyramid बनवाया था जिसमें हर वर्ष एक निश्चित तिथि को सूर्य किरणों और उनके द्वारा जनित छाया से एक विशालकाय भुजंग का आभास होता है जो धीरे-धीरे अपनी पूँछ को अपने मुँह में डाल लेता है।"

निरयणभक्तों को जहाँ इस बात से तो अत्यधिक प्रसन्नता होगी कि उनके सूर्यसिद्धान्तकार तो देशविदेशों में प्रसिद्ध मय ही हैं वहीं यह जानकर खेद भी होगा कि मय द्वारा बनाए हुए उस पिरामिड की वह चमत्कृति हर वर्ष महाविषुव दिवस अर्थात् सायन मेष संक्रान्ति वाले दिन ही होती है न कि किसी निरयण संक्रान्ति वाले दिन। इससे तो इतना स्पष्ट ही है कि मय को भारतवर्ष में कोई चुनाव तो लड़ना नहीं था जो वह यहां के निरयण भक्तों के लिए वर्षमान निरयण देते और मैक्सिको के लिए वास्तविक सायन! इससे दो ही बातें सिद्ध होती है एक तो यह कि उनने वर्षमान अपनी तरफ से दिया सायन ही था परन्तु तत्कालीन यांत्रिकी इतनी उन्नत नहीं थी कि वह बिल्कुल सही वर्षमान दे पाते। *दूसरी बात यह हो सकती है कि जो सूर्य सिद्धान्त इस समय उपलब्ध है वह मूलरूप में न होकर उसमें अत्यधिक "शोध" तथा "बीज संस्कार" किये गये हैं जिनने उसको सायन से निरयण बना दिया!*

उपर्युक्त समाचार में यह भी कहा गया है कि मैक्सिको में वास्तुपुरुष मंडल को ही वहां के तिथिपत्रे अर्थात् पंचांग बनाने में प्रयोग में लाया जाता है!

इधर दिल्ली में जो जन्तरमन्तर नामक प्राचीन वेध शाला है वह भी सायन मान पर ही आधारित है क्योंकि निरयण मान से, विषेशकर सूर्य सिद्धान्त से, तो कभी कोई गणित सही बैठता ही नहीं!

दो प्रकार के राशिचक्रों की कल्पना और भी हास्यास्पद हैः

होसकता है कि अब आप यह सोच रहे हों कि इन सब बातों से यह निर्विवाद रूप से सिद्ध तो हो गया कि वेदों तथा अन्य धर्मशास्त्रों में राशिचक्र आदि सब सायन ही हैं। अब क्यों न ऐसा कुछ किया जाए कि साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे अर्थात् व्रत-त्योहारों के लिए तो सायन राशि चक्र अपनाया जाए परन्तु फलितज्योतिष के लिए "सबसे अधिक सही भविष्यवाणियाँ देने वाले अयनांश" के आधार पर निरयण राशिचक्र भी रखाजाए? परन्तु अभी जैसा हम ऊपर दिखा आए हैं दो प्रकार का राशिचक अर्थात् सायन भी और निरयण भी मानना तो न केवल परलोक में ही अपितु इसलोक में भी हमारी दुर्गति ही करेगा। इसके अतिरिक्त दोनों प्रकार के राशिचक्र एक साथ कदापि नहीं हो सकते हैं -- एक फलित ज्योतिष के लिए तो दूसरा वैज्ञानिक अनुसन्धान के लिए क्योंकि राशि चक्र तो क्या किसी

भी चक्र का प्रारम्भ बिन्दु एक ही धरातल पर रहते हुए एक ही माना जासकता है।

हमारे निरयण नेताओं ने हमें वैदिक तथा खगोलिकी के क्षेत्रों में कंगाल बनाया है:

सूर्यसिद्धान्त में दिए गए ध्रुवांकों से हम परलोक तो क्या चन्द्रलोक में भी ठीक से नहीं पहुंच पाएंगे और उन आकँड़ों के आधार पर बेचारा नील आर्मस्ट्रांग चन्द्रलोक तक पहुचने के बदले अभी तक "निरयण/सायन" तथा "लाहिरी-रमण" की ही भूलभुलैय्या में घूम रहा होता। यही हाल धूमकेतु "शूमेकर-लेवी" का बृहस्पति ग्रह के साथ टकराने के समय का अनुमान लगाने वालों का होता। जो फलित ज्योतिषी यह कहते हैं कि वह तो केवल सही फल देने वाले प्रत्यक्ष अयनांश को ही मानते हैं उनसे यह पूछना चाहिए कि चन्द्रमा पर ठीक निर्धारित दशमलव सेकण्ड समय पर बिना किसी दुर्घटना के पहुंचने से अधिक और सही क्या फलित या भविष्यवाणी हो सकते है क्योंकि वैज्ञानिकों ने सायन आँकड़ों के सहारे ही तो उस सेकण्ड तक की पहले ही सही-सही घोषणा कर रखी थी जिस "सेकण्ड" पर आर्मस्ट्रांग चन्द्रमा पर उतरा था। इसी प्रकार वैज्ञानिकों का भिन्न-भिन्न ग्रहों पर "सैटिलाईट्स" भेजने का जो अनवरत प्रयास चल रहा है और जिसमें उनको आशातीत सफलता भी मिली है वह भी तो केवल सायन भोगांशों के ही द्वारा है, न कि किसी रमण या लाहिरी राशिचक्र से। निरयण राशिचक्र से तो हम आजतक अपनी वेधशाला भी नहीं बना पाए तो चन्द्रमा पर पहुँचना तो दूर रहा। इन निरयण भक्तों के पुच्छल्ला बने रहने से तो हमने कठोपनिषद १/२/५ की यह उक्ति अक्षरशः चरितार्थ की है:

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः।
दन्द्रम्यमाना परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

"ऐसे (निरयण भक्त) व्यक्ति जो अविद्या में ही डूबे रहते हैं, अपने को बुद्धिमान और पण्डित (वामदेव और वराहमिहिर!) मानके बैठते हैं।किन्तु यह वास्तव में होते अहंकार से भरे मूर्ख ही है और जैसे एक अन्धे के पीछे अन्य अन्धे चलकर नष्ट हो जाते हैं वही इनका (तथा इनके चम्चों का) भी हाल हो जाता है।" यदि ऐसा नहीं हुआ होता तो कोई कारण नहीं है कि भारतवर्ष खगोलिकी के क्षेत्र में इतना पिछड़ा होता। ऐसा केवल इसलिए हुआ कि इन "वामदेवों और वराहमिहिरों" ने भारतवर्ष में अपनी वेधशाला बनाने के लिए अनेक बाधाएं खड़ी करदीं, क्योंकि खगोलिकी के वास्तविक ज्ञान से तो लोग यह समझ जाते कि किस प्रकार उन्हें एक निराधार लाहिरी और रमण राशिचक्र के आधार पर "सही भविष्यवाणियां" की जाती हैं और किस प्रकार उनको चमत्कारिक "उपाय" भी बताए जाते हैं। और इन निरयणवादियों को ऐसा लगा कि यदि वह सायन राशिचक्र ही अपनाएंगे तो भला फिर उनकी क्या विषेशता रहेगी!

अतः दो प्रकार के राशिचक्रों की कल्पना करना और भी अधिक हास्यास्पद और आत्मघाती होगा!

सौर मासों के नाम भी वैदिक सायन संक्रान्तियों से ही सम्बद्ध थे व होने चाहिएं:

चैत्रादि मासों के प्रारम्भकाल के विषय में डा० बी० वी० रमण जुलाई १९९४ के अपने सम्पादकीय में ही मेघनाद सहा की अध्यक्षता मे स्थापित की गई "कैलेण्डर रिफार्म कमेटी" पर आक्षेप करते हुए लिखते है : "सायन मासों का वसन्त सम्पात् से प्रारम्भ करके उनका चैत्र, वैशाखादि नाम रखना वैज्ञानिक नहीं है क्योंकि वह पूर्णिमान्त चान्द्र नक्षत्रों से जुड़े हुए है। हमें वर्ष के पहले मास चैत्र को सहा कमीटी के साथ मेलान करने की चिन्ता नहीं करनी चहिए। लौकिक उपयोग के लिए यह १४ अप्रैल को वैशाख से प्रारम्भ हो सकता है जबकि सूर्य निरयण मेष में प्रवेश करता है। 'सहा कमीटी' के रिपोर्ट वाले चैत्र, वैशाख आदि मासों को भले ही दूरदर्शन, आकाश वाणी आदि अन्य सरकारी संस्थाओं ने स्वीकार कर लिया हो परन्तु यह तिथियां उन संस्थाओं द्वारा जब भी दोहराई जाती हैं तो ग्रामीण जनसाधारण भी उन संस्थाओं पर हंसते हैं कि सरकार जानबूझ के गलत चैत्रादि मास बता रही है जो वास्तविक 'अर्थात् निरयण' चैत्रादि से भिन्न हैं"।

भीष्म पितामह यदि आजकल जीवित होते तो वह ग्रामीण जनता पर तो नहीं हंसते क्योंकि उनको तो "विद्वान लोग जैसा कहेंगे वह वैसा ही समझेंगे" परन्तु वह डा० रमण जैसे विद्वानों पर अवश्य हंसते। क्यों? देखिए: इन निरयण वादियों के हिसाब से तो चैत्रादि मास निरयण सक्रान्ति के साथ जुड़े हुए हैं और क्योंकि महाभारत के समय में डा० रमण के ही कथनानुसार अयनांश कोई ५१ अंश धन था अर्थात् निरयण चैत्र तब १ दिसंबर को प्रारम्भ होता, जिन दिनों तापमान शून्य के लगभग होजाता है और पर्वतीय स्थानों पर हिमपात होता है। और जब महाराज युधिष्ठिर भीष्म पितामह से राजधर्म से सम्बद्ध युद्ध के समय भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में करने योग्य कर्म पूछते हैं तो भीष्मपितामह उत्तर देते हैं :

तृणच्छन्नानि वेश्मानि पंकेनाथ प्रलेपयेत्। निर्हरेच्च तृणं मासि चैत्रे वह्नि भयात् तथा।। शांति. ६६/४७

"यदि चैत्र के मास में आक्रमण हो या शत्रु पर आक्रमण करना हो तो अपने जनपद आदि के तृण से ढके हुए घरों का कीचड़ से लेपन कराले और खेतों खलिहानों में पड़े घास-फूस को उठवा ले कि कहीं शत्रुपक्ष उनमें आग न लगवा दे।" स्पष्ट ही है कि भीष्म पितामह को निरयण चैत्र नाम का कोई उन्माद नहीं था क्योंकि कटकटाते हुए जाड़े में ना तो कहीं कोई घास-फूस ही खेतों खलिहानों में होता है और न ही हिम और वर्षा में उनमें कोई आग लगाने की मूर्खता कर सकता है कुछ निरयण भक्तों को छोड़ कर! यह सब वसन्तसम्पात,सायन चैत्र,में ही सम्भव है और तभी युद्ध के लिए प्रस्थान भी होता है, शीतकाल में नहीं।

हम सारे के सारे निरयण ज्योतिषियों से एक कर बद्ध प्रार्थना करते हैं कि यदि उनको वैदिक मधु, माधव आदि मासों के नामो से ऋतुओं का कोई सम्बन्ध नहीं दिख रहा है तो वह कम से कम महाकवि कालिदास का अमरकाव्य *ऋतुसंहार* पढ़लें। उनको ऋतुपरिवर्तन के ज्ञान के लिए भूगोल की अन्य किसी पुस्तक का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं होगी!

निरयण राशि व ऋतुचक्र न चल है न अचल अपितु त्रिशंकु की भान्ति बीच में लटका हुआ: यह निरयण भक्त बड़े ही ज़ोर-शोर से चिल्लाते हैं कि हमारा राशिचक्र तो "अचल'' है (अचल सम्पति की भान्ति!) स्थिर है, सायन की भान्ति "चल'' नहीं। पर क्या स्थिति वास्तव में ऐसी है या केवल "दिल के बहलाने को ग़ालिब यह ख़याल अच्छा है''? देखिए कैसे: सरकारी अयनांश वाले तो कहते हैं कि २८५ ईस्वी में अयनांश शून्य था जिसका यह अर्थ निकलता है कि तब वह भी मेष संक्रान्ति २१ मार्च को ही मनाते थे अर्थात् तब उनका सौर नववर्ष, वैशाखादि और वैशाखी भी उसी दिन प्रारम्भ होते थे। अब क्योकि अयनांश प्रति ७२ वर्षो में एक अंश बढ़ता जाता है तो आजकल वही मेष संकान्ति, वैशाखी व वैशाखादि अब वह लाहिरी वाले १४ अप्रैल को मना रहे हैं तो रमण वाले १२ अप्रैल को पूरे चौबीस दिन बाद और प्रति ७२ वर्षो के बाद एक-एक दिन और आगे खिसकते जाएंगे! अभी तो वह यह भी निश्चय नहीं कर पाए हैं कि वह लाहिरी वसन्त मनाएंगे या रमण वसंत या सिरिल फागन वाला!

कुछ लोगों का विचार है कि नववर्ष दीपावली वाले दिन प्रारम्भ होता है जैसे महारांष्ट्र और गुजरात में और कुछ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को जैसे उत्तर भारत में परन्तु पहली जनवरी को सब "हैप्पी न्यू इयर ...नववर्ष की वधाई" कहते हैं!

पिछले कुछ वर्षों से तो एक और ही भयावह स्थिति बनती जा रही है। कुछ "वैदिक ज्योतिषी" तो राष्ट्र का भविष्य १ जनवरी की ग्रहस्थिति के अनुसार बताने लगे हैं वहाँ भी कुछ तो प्रातः ५-३० अर्थात् ग्रीनविच की मध्यरात्रि की ग्रहस्थिति के अनुसार फलित बताते हैं तो कुछ १२ बजे रात की ग्रहस्थिति के अनुसार वह भी भा. स्टै. टा. से न कि दिल्ली के स्थानीय समय के अनुसार! शायद इन बेचारों को यह भी ज्ञात नहीं है कि कोई स्थानीय समय भी होता है। लेकिन इन सब में एक ही बात समान है---सब के सब अपने को "वैदिक ज्योतिषी" कहते है क्योकि यदि वह ऐसा नहीं करेगे तो जनसाधारण को बेवकूफ कैसे बनाएंगे जो कि इनका एकमात्र ध्येय है। इन "सर्वज्ञ ज्योतिषियों" से इस नववर्ष का वैदिक आधार पूछने को साहस कोई नहीं रखता है नहीं तो बहुप्रतिष्ठित पत्रिकाओं में ऐसे लेख प्रकाशित नही होते!

अब इसमें ''स्थिर'' क्या रहा? न तो ऋतुचक से संबन्ध ही स्थिर रहा और न हमारा नववर्ष का दिन ही कि हम वह १ जनवरी को मना रहे हैं कि १४ अप्रैल को कि १२ अर्पैल को कि२१ मार्च को और न सौर राशिचक की प्रारम्भ तिथि ही! इससे तो सायन वाले ही अच्छे हैं जो ''चल'' होते हुए भी कम से कम अपना नववर्ष तो प्रति वर्ष निश्चित दिन पर मनाते है! उनका सौर राशिचक भी तो प्रतिर्ष उसी दिन अर्थात् २१ मार्च को ही प्रारम्भ होता है! ऐसे "स्थिर राशिचक्र" से तो हिजरी संवत् ही अच्छा है जिसमें कम से कम अमान्त चन्द्र के दिखने पर तो नए मास या वर्ष का प्रारम्भ माना जाता है।

चन्द्रमासों को भी सायन संक्रान्तियों के साथ ही जोड़ना चाहिए: यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि *महाभारत* में मेष आदि राशियों के नाम कहीं भी नहीं हैं और केवल सौर मासों के नाम चैत्र आदि दिए गए हैं यह भी निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता है। अनेक स्थानों पर यह चैत्रादि नाम चन्द्र मासों के लिए आए हैं जैसा कि अभी ऊपर उत्तरायण के सन्दर्भ में देख आए हैं। प्रायः सौर मासों के नाम वैदिक नामों पर ही आधारित मधु, माधव आदि हैं और उनको ऋतुओं के साथ ही जोड़ा भी गया है जैसा कि हमने १९९४ के अपने पंचांग में सिद्ध किया है। इसी प्रकार अयन संक्रान्तियों का भी अनेक स्थलों पर वर्णन है। यदि हम यह मानकर चलें कि चन्द्र मास निरयण नक्षत्र-मानों पर आधारित थे तो क्योंकि चित्रा नक्षत्र के निरयण भोगांश निरयण भक्तों के अनुसार उस समय भी अर्थात् आज से ५१०० वर्ष पूर्व भी कोई १८० अंश ही थे तो उस समय चैत्री पूर्णिमा के लिए निरयण सूर्य शून्य अंश अर्थात् निरयण मेष राशि के शून्य अंशों के आसपास ही रहा होगा। उस समय सरकारी अयनाश क्योंकि ४७ अंश धन था अर्थात् निरयण से सायन बनाने के लिए निरयण भोगांशों में से अयनांश घटाना था तो इसका यह अर्थ निकलता है कि क्योंकि निरयण सूर्य ०अंश अर्थात् ३६० अंश और ४७ अंश सरकारी अयनांश घटाने से वह सायन कुम्भ राशि के १३ अंश बनते हैं। क्योंकि अयनांश का एक अंश ७२ वर्षो में घटता या बढ़ता है तो हम यों कह सकते हैं कि कलियुग आरम्भ से कोई ६००० वर्ष पूर्व सायन मकर संक्रान्ति और निरयण चैत्री पूर्णिमा लगभग एक ही साथ होते थे। जनसाधारण की भाषा में इसका यह अभिप्राय निकलता है कि भीष्मपितामह के पूर्वज दिसम्बर के कटकटाते जाड़े में वसन्तोत्सव, वसन्त पंचमी और वासन्ती नवरात्र आदि मनाते थे। आप कितने ही ठेठ निरयण भक्त क्यों न हों तब भी आप यही कहेंगे कि भले ही आधुनिक निरयण ज्योतिषी अपने अड़ियलपन में ऐसा करलें परन्तु भीष्मपितामह के प्रपितामह ऐसा करते होंगे, यह असम्भव है। अतः यही निष्कर्ष निकालना पड़ता है कि महाभारत काल में भी चन्द्र

चैत्रादि मास भी सायन ऋतुचक्र से ही जुड़े हुए थे।

वैदिक चन्द्र मास भी ऋतुचक्र से ही जुड़े थे, किसी काल्पनिक समानविभाग वाले निरयण नक्षत्रचक्र से नहीं: आइए अब वैदिक कालीन चन्द्र मासों को देखते है। लोकमान्य तिलक के अनुसार वैदिक युग आज से कम-से-कम दस हज़ार वर्ष पूर्व अर्थात् कलियुग से भी ५००० वर्ष पूर्व में ही माना जाता है-----और उनकी इस बात का आजतक किसी ने खण्डन नहीं किया एक-आध आधुनिक ''वामदेव'' को छोड़कर। इससे यही सिद्ध होता है कि यदि वास्तविक वामदेव ऋषि भी चन्द्र नववर्ष अर्थात् चैत्री नवरात्र जिसका वास्तविक नाम वासन्ती नवरात्र है चित्रा नक्षत्र के निरयण भोगांशो की पूर्णिमा के अनुसार मनाते थे तो अभी-अभी समझाई गई रीति से वह भी नवम्बर-दिसम्बर के मासों में ही वसन्तोत्सव, वसन्तपंचमी और वासन्ती नवरात्र मनाते रहे होंगे। क्या यही पाठ हमारे आजकल के वामदेव और उनके ''वैदिक ज्योतिषी'' हमें पढ़ाना चाहते हैं? आप चाहे ''निरयण ज्योतिष का प्रचार करने वाले कितने ही कट्टर आतंकवादी'' क्यों न हों तब भी यह बात आप के भी गले के नीचे उतरने वाली नहीं है!

आधुनिक खगोलिकी से ही पंचांग बनने चाहिएं, *सूर्यसिद्धान्त* आदि से नहीं:-

डा. बी.वी. रमण ने अपनी एस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन के जुलाई १९९४ के सम्पादकीय में स्वामी आनन्दगिरि के "स्मृतिसार समुच्चय'' के इस श्लोक का उद्धरण दिया है:

सूर्य सिद्धान्त पंचांगं विलोक्यैव प्रवर्तयेत्। प्रमाणं तदिति ज्ञेयं अन्यथा व्याकुलं भवेत्।।

'केवल *सूर्य सिद्धान्त* से बने पंचांग का प्रयोग करे क्योंकि वही प्रामाणिक है अन्यथा व्याकुल होगा'।''

साधारणतया इसके यह अभिप्राय हैं कि आजकल संसारभर की ७० प्रतिशत से अधिक हिन्दू-जनता 'व्याकुल' पंचांगों का प्रयोग करके "व्याकुल'' हो रही है और इन "व्याकुलों'' में स्वयं डा० बी० वी० रमण तथा उनके चेले भी शामिल हैं। साथ ही साथ सारे के सारे आदरणीय जगद्गुरु तथा अन्य धर्माचार्य आदि भी 'व्याकुल' पंचांगों का प्रयोग करके "व्याकुल" हो रहे हैं क्योंकि लगभग यह सब के सब दृक्-गणित पर आधारित पंचांगों का ही प्रयोग कर रहे है!

डा. रमण को स्वयं *सूर्य सिद्धान्त* पर न पहले कभी विश्वास था और न अब है:-

कहा जाता है कि अप्रैल १९९४ में जो पंचांग समिति दिल्ली में हुई थी उसमें दक्षिणभारत के एक ऐसे पंचांगकार महोदय भी थे जिनके परिवार में पिछले एक सहस्र वर्षो से भी अधिक समय से *सूर्य सिद्धान्त* के आधार पर पंचांग बनता आरहा है और उसी पंचांग समिति में यह भी प्रस्ताव पारित किया गया कि *सूर्य सिद्धान्त* मे हीं बीज संस्कार करके उसे दृक्तुल्य बनाया जाय और भारतवर्ष के आगामी पंचांग केवल उसी से बनाए जाएं। आश्चर्य की बात है कि स्वयं डा रमण की ''नोटेबल हारस्कोप्स'' नामक पुस्तक में प्रकाशित १०० के लगभग कुण्डलियां भी जिसका सर्वप्रथम संस्करण १९५४ ई० में प्रकाशित हुआ था आधुनिक दृक्गणित से ही बनाई गई हैं वह भी किसी भारतवासी ने नहीं बल्कि एक विदेशी "म्लेच्छ ज्योतिषी" सिरिल फागण द्वारा---जिनको सहस्त्र वर्षो से अधिक अनुभवी पंचाग कर्ता के समक्ष एक नौसिखिय ही कहा जा सकता है -- हाँ अयनांश तो डा रमण वाला ही प्रयोग में लाया गया है! दुःख की बात है कि डा रमण ने कम से कम भगवान कृष्ण और गौतम बुद्ध जैसे अवतारों की कुण्डलियां भी *सूर्य सिद्धान्त* पर आधारित पंचांग से न बनवा कर आधुनिक दृक् गणित से ही बनवाली जिसका प्रचार भारतवर्ष में अधिकाधिक सौ वर्षो से ही होगा! यदि बीज संस्कार के बाद उनको *सूर्य सिद्धान्त* से शुद्ध गणित मिलने की आशा है तो उस समय ऐसा कराके उनने उसी से भगवान कृष्ण आदि की कुण्डलियां क्यो नहीं बनवाई और सहस्रों वर्षो से पंचांग बनारहे दक्षिण भारतीय ज्योतिषियों को छोड़ कर एक विदेशी नौसिखिए से वह पत्रियां क्यों बनवा ली? इससे भी मज़ेदार बात तो यह है कि अपनी मैगज़ीन के जुलाई १९९४ के अंक में इनहीं डा रमण का रोना है कि १९५४ में बिठाई गई ''कैलेण्ड़र रिफार्म कमेटी'' में दक्षिण भारत के किसी ज्योतिषी को सम्मिलित नहीं किया गया था। अरे भई, जब आपको स्वयं ही न दक्षिण भारतीय ज्योतिषयों पर और न ही *सूर्य सिद्धान्त* पर विश्वास है तो दूसरों को दोष क्यों दे रहे हो।

इसी प्रकार सूर्य सिद्धान्त के अनुसार तो मकर संक्रान्ति और उत्तरायण एक ही दिन प्रारम्भ होते हैं परन्तु एस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन में उत्तरायण २२ दिसम्बर १९९५ को तो मकर संक्रान्ति १५ जनवरी १९९६ को दिखाई है! स्पष्ट है कि व्रत त्यौहारों के मामले में भी डा. रमण को न अपने अयनांश पर विश्वास है न सूर्य सिद्धान्त पर -- यदि है तो केवल लाहिरी-चित्रा-सरकारी अयनांश पर!

"वैदिक ज्योतिषी" अपनी "चमत्कारिक भविष्यवाणियों" से जनता को मूर्ख बनाते हैं:

डा. रमण की उपर्युक्त पुस्तक ("नोटेबल हार्स्कोप्स) के अनुसार भगवान कृष्ण का जन्म ईसापूर्व १६ जोलाई ३२२८ को मध्यरात्रि के समय हुआ था। हम यहाँ पाठकों की जानकारी के लिए *सूर्य सिद्धान्त* तथा आधुनिक खगोलिकी -- दोनों ही के आधर पर तत्कालीन मध्यमभोग देरहे हैं। आधुनिक खगोलिकी के मध्यमभोग तो सायन हैं ही और यदि हम यह मानकर भी चलें कि *सूर्य सिद्धान्त* के मध्यमभोग निरयण हैं तो भी उससे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ेगा क्योंकि कलियुगारम्भ के समय *सूर्य सिद्धान्त* अयनांश भी शून्य था अतः प्रति वर्ष ५४ विकलाओं के हिसाब से उससे सवासौ वर्ष पूर्व अयनांश १ अंश ५३ कला

धन था। अन्यथा यदि हम "राष्ट्रीय पंचांग" की भान्ति आधुनिक खगोलिकी के आधार पर बनाए गए मध्यभोगों में अयनांश संस्कार करके उनको निरयण बनाएंगे तो उस समय का सरकारी अयनांश क्योंकि ४८ अंश १८ कला ४७ विकला धन था अर्थात् निरयण भोगांशों में अयनांश जोड़ना था तो इससे भी इन भोगांशों और *सूर्य सिद्धान्त* के भोगांशों में अन्तर कुछ कम हास्यास्पद नहीं होगा जैसा कि आगे की तालिका से स्पष्ट है।

तर्क तथा धार्मिक दृष्टि से तो भगवान कृष्ण के जन्मकालीन ग्रहस्पष्ट बिना किसी संस्कार के सूर्य सिद्धान्त के आधार से ही होने चाहिएं क्योंकि यदि यह माना जाए कि कलियुगारम्भ से पहले ही उस ग्रन्थ में "बीज संस्कारों" की आवश्यकता थी तो वह भला फिर कौन सा समय था जब कि उसमें दिए गए ध्रुवांक शुद्ध माने जासकते हैं। वैसे भी जन्म से पहले "बीज संस्कार" अश्लील शब्द है!

ग्रह	सूर्यसिद्धान्त मध्यमभोग	आधुनिक मध्यमभोग पंचांग स०	आधुनिक मध्यमभोग विश्वसमय	पंचांग स० से सायन अन्तर	पंचांग समय से लाहिरी निरयण अन्तर
सूर्य	०५ ०० २३	०३ ०० ०७	६० ५६	-६० १६	-१२ ३२
" भूउपभू	०२ १७ २६	०६ १४ ४३			
चन्द्रमा	०१ १० ००	११ ०८ ००	३४६ १२	-६२ ०	-१३ ४१
" भूउपभू	०० २० ५२	०५ ०३ ०८			
मंगल	०२ २३ ११	०० १० ५६	११ २२	-६४ ०२	-४५ ४३
बृहस्पति	०४ २८ २३	०३ १५ ०८	१०५ ३७	+४३ १५	+०५ ४
शुक्र	१० ०६ ३०	०६ १३ २०	२८४ ३१	+२६ १०	+२२ ०८
शनि	०८ २६ ०८	०६ ०५ १५	१८५ ३७	-८० ५४	-३२ ३५
राहु	०३ ०० २५	०१ २६ ३४	३६ ३१	-३३ ५१	+१४ २८

इस तालिका से तो यह निर्विवाद ही सिद्ध होजाता है कि भगवान कृष्ण की जन्मकुण्डली तो उनके कुल पुरोहित ने आधुनिक खगोलिकी से नहीं बनवाई होगी और यदि उस समय *सूर्य सिद्धान्त* के ही भगण प्रचलित थे तो उस समय का फलित भी उसी के आधार पर सही उतरना चाहिए था। मंगल और शनि जैसे ग्रहों में भी जहां ८० अंशों तक का अन्तर हो तो वहां पर फलित आधुनिक खगोलिकी के आधार पर लिखकर यह कहना कि हम तो "वैदिक ज्योतिष" के आधार पर सही फलित बताते है और साथ में उन हीं आधुनिक खगोलवेत्ताओं को "मूर्ख", "दुष्ट", "नास्तिक" आदि उपाधियां देना, क्योंकि वह हमारी इस चालाकी को समझते हैं---यह तो वैदिक ज्योतिष के नहीं अपितु आद्य शंकराचार्य के शब्दों में "उदरनिमित्तम् कृत बहु वेषम्" अर्थात् "पापी पेट के सवाल" के लक्षण हैं। सबसे मज़ेदार बात यहां यह है कि भगवान कृष्ण का चन्द्रस्पष्ट और उसपर आधारित विंशोत्तरी दशा-भुक्ति तक की गणना "भूकेन्द्रीय" चन्द्रमा से ही की गई है और उसी के अनुसार फलित सही बताए गए है भूपृष्ठीय मथुरा के चन्द्रमा के अनुसार नहीं! अभिप्राय यह कि तथाकथित "वैदिक ज्योतिष" के मनपसंद अयनांश से फलित सही सिद्ध करना है आँकड़े कुछ भी हो और कहीं के भी हों और उस ज्योतिष का वेदों से कोई नाता ना भी हो। बिल्कुल यही स्थिति "भृगु", "रावण", "अगस्त्य" आदि संहिताओं के साथ भी है जिनमें स्वयं "भृगुजी" तथा "अगस्त्य" भी आधुनिक खगोलिकी के द्वारा बनाऐ गए दृक् गणित पर आधारित जन्मपत्रियों के सही फलित बताते है। लगता है उनको भी डा, रमण की ही भान्ति *सूर्य सिद्धान्त* पर विश्वास नहीं था अपितु सुदूर भविष्य में केवल "यवनों" द्वारा आविष्कृत ग्रह स्पष्ट पर ही!

जानकार निरयण पंचांगकर्त्ता भी द्वितीय भास्कराचार्य के वर्षमान तक को भी सायन ही मानते हैं: "श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्" के सम्पादक डा. शक्तिधर शर्मा व प्रो० प्रियव्रत शर्मा ने "शास्त्रीय पंचांग मीमंसा" नामक एक संस्कृत ग्रन्थ भी लिखा है। उस के "प्राक्कथन" के पृष्ठ ४ पर उन के यह शब्द विचारणीय हैं: "It may be mentioned here that the methods for determining Solar year, given by Bhaskara(ii)etc. actually give Tropical year and not Sidereal year. But the results obtained by them are reported to be Sidereal and accepted as such" अर्थात् "यहाँ पर यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि द्वितीय भास्कराचार्य आदि प्राचीन खगोलवेत्ताओं ने वर्षमान निकालने की जो विधि बताई है वह अपनी ओर से तो उनने वास्तव में सायन वर्ष निकालने की दी है निरयण नहीं परन्तु उनसे प्राप्त वर्ष निकलते हैं निरयण अतः उनको निरयण ही स्वीकार किया गया।" यह तो वैसी ही बात हुई कि कोलम्बस तो निकले थे "इण्डिया" की खोज करने परन्तु पहुँच गए सुदूर अमरीका में। उन ने इसीको 'इण्डिया' समझा और वहां के वासियों का नाम रक्खा गया 'रेड इण्डियन'! गलती तो केवल तब पता चली जब "वास्तविक इण्डिया" की खोज हुई परन्तु उन अमरीकी निवासियों को अभी भी "रेड इण्डियन" और

उत्तर व दक्षिण अमरीका के बीच वाले द्वीप को आज भी "वेस्ट इंडीज़" ही कहा जाता है और वहां की क्रिकेट टीम भी इसी नाम से अभी भी जानी जाती है----बिलकुल वैसे ही जैसे कि हम अब भी निरयण वर्ष को ही "वैदिक" कहते हैं यह जानते हुए भी कि यह गलत है क्योंकि केवल सायन वर्ष ही वैदिक है।

धर्माचार्यो से करबद्ध प्रार्थना कि वह निरयण के बदले सायन वैदिक पंचांगों का ही प्रचलन कराएं और व्रत-त्यौहार तथा मुहूर्त के लिए भी वही आधार बनवाएं:- एक और दुःख की बात यह भी है कि कुछ एक निरयण पंचांग अपने पंचांगों की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए कुछ पूजनीय जगद्गुरुओं के प्रमाणपत्र उन में प्रकाशित करतें हैं कि उनका वह निरयण पंचांग शास्त्र-सम्मत तथा उन धर्माचार्यो द्वारा अनुमोदित है। स्पष्ट ही है कि उन पूजनीय सन्तों ने इस लेख में उठाए गए प्रश्नों पर विचार नहीं किया है कि वेदों तथा शास्त्रों के अनुसार यदि कोई राशिचक्र है तो वह केवल सायन है निरयण नहीं। और यदि सभी प्रमाणों के विरुद्ध होने पर भी यह मान भी लिया जाए कि *सूर्य सिद्धान्त* में निरयण राशि चक्र का ही वर्णन है तो फिर वह सिद्धान्त वेद-बाह्य होने के कारण मनु के कथनानुसार कूड़ादान में ड़ालने के योग्य ही है!

श्रीयोगवासिष्ठ महारामायण में ''पाषाणोपाख्यान'' में एक प्रसंग इस प्रकार है: भगवान वसिष्ठ कुछ समय के लिए आकाश के सुदूर किसी एकान्त कोने में एक संकल्पात्मक कुटिया बनाकर समाधिरत होगए। समाधि से विरत होकर उनने किसी अन्य ब्रह्माण्ड में प्रवेश करने के लिए अपने उस शरीर को तो वहीं कुटिया में ही स्थापित किया और उससे भी अति सूक्ष्म अन्य आकाश शरीर के द्वारा उस दूसरे ब्रह्माण्ड में प्रवेश किया। इसी बीच कोई अन्य सिद्ध विद्याधर भी एकान्त की तलाश में उस कुटिया को देखकर वहीं निर्विकल्प समाधि लगाकर बैठ गए किन्तु उससे पहले भगवान वसिष्ठ के उस शरीर को मृत समझकर उस कुटिया से बाहर फैंक दिया। जब वसिष्ठ मुनि ने उस दूसरे ब्रह्माण्ड से वापिस आकर अपने पूर्व शरीर को तलाश करने पर नहीं पाया तो अपनी उस संकल्पों द्वारा निर्मित कुटिया का संवरण करके वह मर्त्य लोक की ओर आने लगे। इस प्रकार उस संकल्प कुटिया के नष्ट होने पर उसमें जो सिद्ध विद्याधर निर्विकल्प समाधि लगाए हुए बैठे थे वह आकाश से उसी अवस्था में गिर कर धरती की ओर आने लगे। वसिष्ठ मुनि ने उनके पीछे भागकर अपनी संकल्प शक्ति द्वारा उनको गिरने से रोक कर समाधि से जगाया और पूछा कि "अरे भई अपने शरीर के धरती की ओर पतन का भी भास नहीं होरहा है क्या?" उन दूसरे सिद्ध विद्याधर ने जब अपनी त्रिकालदृष्टि से सारी कहानी जान ली तो भगवान वसिष्ठ से उनके उस पूर्व शरीर के अपमान की क्षमायाचना की। भगवान वसिष्ठ के मन में यह प्रश्न उठा कि अरे भई तुम कैसे त्रिकालदर्शी सिद्ध हो कि तुमने यह देखा ही नहीं कि मैं अपने उस पूर्व-शरीर की तलाश में पुनः आऊंगा, तो इसपर वह सिद्ध कहता है:

सिद्धैर्न यावदवधान परैर्विचार्य निर्णीतमुत्तमधियान्तरशेष वस्तु।
तावत् त्रिकालकलनं न विदन्ति किंचिदित्यब्जजादि मनसोपि मुने स्वभावः।।

निर्वाण प्रकरण उत्तरार्द्ध अध्याय ६३ श्लोक ६६

स्वामी आनन्दबोध यति की तात्पर्यप्रकाश टीका के अनुसार इस श्लोक का भावार्थ यह है: ''हे मुने, आपके जैसे सिद्ध भी जबतक समाधिनिष्ठ होकर उत्तम बुद्धि से अपने भीतर समस्त वस्तुओं का विचार नहीं करते, तबतक वे त्रिकाल के सब वृत्तान्तों का ज्ञान नहीं कर पाते। इसी तरह का ब्रह्मा आदि के भी मन का स्वभाव है, फिर मेरे जैसे पुरुषों की तो बात ही क्या? इसलिए आपके वृत्तान्त का अपरिज्ञान एवं शरीर का हटाना आदि जो मैंने अपराध किया है उसे क्षमा कीजिए।''

अतः सर्वज्ञ होने के बावजूद भी जबतक महापुरुषों का भी किसी विशेष बात की ओर ध्यान आकृष्ट नहीं किया जाता है तब तक वह उस बात के प्रति उदासीन से ही रहते है। कुछ ऐसी ही स्थिति इन पूजनीय जगद्गुरुओं के आशीर्वाद पत्रों की भी है जो इन निरयण पंचांगों में छपते है। उनका ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट ही नहीं किया गया कि वह निरयण-सायन विवाद पर अपनी सम्मति दें। उनको तो केवल चित्रापक्ष/रमणपक्ष और रैवत पक्ष आदि के बारे में ही थोड़ी बहुत जानकारी देकर उनसे वह ''प्रमाण पत्र'' लिए गए है। अब यहां यह सारी स्थिति स्पष्ट कर दी गइ हैं और क्योंकि भगवद्गीता के अनुसारः यद् यद् आचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।----

अतः मेरी इन सब परमादरणीय धर्माचार्यो, जगद्गुरुओं, महाप्रभुओं तथा महन्तों और मठाधीशों से कर-बद्ध प्रार्थना है कि वह अपनी इस धारणा पर पुनर्विचार करें कि हम निरयण भगणों का प्रयोग वेदों के अनुसार कर रहे हैं, क्योंकि यह धारणा वास्तव में भ्रान्तिपूर्ण और निराधार है। अतः ये सन्त महापुरुष हमें प्रेरणा दें कि हम शीघ्रातिशीघ्र वास्तविक वैदिक अर्थात् सायन राशि-चक्र को अपनाएं और उसी के अनुसार तिथि-नक्षत्र, योग, करण, अधिकमास-क्षयमास आदि का निर्णय कराके चान्द्र मासों के चैत्र, वैशाख आदि नाम भी सायन संक्रान्तियों व पूर्णिमान्त-अमान्त के आधार पर ही करालें न कि जैसे आजकल निरयण संक्रान्तियों के आधार पर कराया जाता है, वैसे।

इस सन्दर्भ मे ''कैलेण्डर रिफार्म कमीटी रिपोर्ट'' के पृष्ठ २६० पर जो कहा गया है मैं यहाँ उसे उद्धृत् करना अपना परम-कर्त्तव्य समझता हूँ : *''निरयण पद्धति का अनुसरण करने वाले निरयण पंचांगकार जो यह समझते हैं कि वह धर्म का अनुसरण कर रहे हैं या करा रहे हैं भूल कर रहे हैं क्योंकि ऐसा करके वह वास्तव में सारी की सारी हिन्दू जनता को अधर्म का अनुसरण करने के लिए बाध्य कर रहे हैं''।*

अतः यद्यपि यह सब धारणाएं बदलने का काम इतना आसान नहीं है तथापि केवल यह पूजनीय सन्त-महापुरुष व जगद्गुरु ही ऐसा कराने में सक्षम हैं अन्यथा हिन्दू धर्म का ह्रास निश्चित ही समझें।

वेदों में अधिकमास सायन राशिचक्र से ही जुड़े होने का प्रमाण है: पहली बार १९०४ ई० में प्रकाशित, लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली, द्वारा वितरित "ऋगवेद संहिता" में १/२५/८ मंत्र यों है: वेद मासो धृत व्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते।।

उसी संस्करण में इसका संस्कृत भाष्य इस प्रकार दिया गया है: "धृत्त नियमः (वरुणः) प्रजायुक्तान्द्वादश मासन्वेत्ति यः (च त्रयोदशोमासः) उत्पद्यते (तमपि वेत्ति)"। उन्ही भाष्यकारों पं० शंकर दत्त शास्त्री व शिवनाथ आहिताग्नि ने पृष्ठ ५६६ पर इसकी हिन्दी भाषा में स्वयं ही यों व्याख्या की है: "साल के बारह महीने और महीनों की प्रजा अर्थात् दिन, घड़ी, पल, विपल इन सबको वरुण जानते हैं। किसी साल में १३ महीते भी होते हैं क्योंकि चन्द्रमास अर्थात् अमावस्या से अमावस्या तक का समय २९ दिन ३१ घड़ी ५० पल (२९ दिन १२ घंटे ४४ मि) का होता है इस को बारह गुणा करने से साल ३५४ दिन २२ घड़ी (३५४ दिन ८ घंटा ४८ मिनट) का हुआ। परन्तु सौर वर्ष, सूर्य के सायन मेष से चल कर पुनः सायन मेष में आने तक का काल, ३६५ दिन, १४ घड़ी, ३२ पल (३६५ दिन ५ घंटा ४८ मिनट ४८ सेकण्ड) का होता है। इस से प्रति वर्ष १० दिन ५२ घडी का अन्तर पड़ता है। इसलिए तीन वर्ष में एक वर्ष में एक मास बढ़ा के चन्द्र और सौर वर्ष का मेल करते हैं। यही तेरहवां महीना है जिसको वरुण जानते हैं"। यह तो स्पष्ट ही है कि यह अनुवादक/व्याख्याकार न तो किसी विदेशी सायन प्रचारक के "ऐजन्ट" थे और न इनको किसी रमण या लाहिरी वाले से कोई वैमनस्य क्योंकि १९०४ ई० में इन अयनांशों का जन्म ही नहीं हुआ था भले ही उनके प्रवर्तकों का हुआ हो। न यह ही कहा जासकता है कि यह व्याख्याकार कोई भ्रान्ति फैला रहे थे आधुनिक "वैदिक ज्योतिषियों" की भान्ति क्योंकि इनका फलित ज्योतिष पर कोई ग्रन्थ नहीं है!

इतने अकाट्य प्रमाणों और तर्कों को न मानकर भी यदि कुछ निरयण भक्त यही कहते हैं कि "वैदिक मास तो ऋतुचक्र से नहीं जुडे थे" परन्तु तब भी वह सब निरयणवादी एकमत होकर यह तो मानते ही हैं कि "दृक् या बीज संस्कार करने का शास्त्रों का निर्देश है" अतः जैसा हमने पिछले पृष्ठों में दिखाया है, क्योंकि ऋतुचक्र सबसे बड़ी प्रत्यक्ष दृक् चमत्कृति है अतः चन्द्र तथा सौर मासों को उनके साथ जोड़ने का शास्त्रों का निर्देश हैं। इसलिए हमें यथाशीघ्र अपने चन्द्र व सौर मासों में ऐसे ''बीज संस्कार'' करने चाहिएं कि वह ऋतुचक्र से पूर्णरूपेण सदा के लिए जुड़ जाएं। यदि यह ''दृक् तुल्य बनानें के'' शास्त्रों के निर्देश की अवहेलना करेंगे तो जानबूझ के शास्त्रों का अपमान करने के महापातकी कहलाएंगे और हिन्दू धर्म को मिलियामेट करने का महापाप करेंगे जो उन्हें बहुत महँगा पड़ेगा।

हम वैदिक सायन राशिचक्र से अवैदिक निरयण राशिचक्र की ओर कैसे आए?

अब एक अतिप्रश्न अर्थात् ''महाप्रश्न'' उठता है: ''हम क्यों, कब और कैसे वास्तविक वैदिक सायन पद्धति से पथभ्रष्ट होकर निरयण की भूल-भुलैय्या में भटक गए और इस गलत निष्कर्ष पर कैसे पहुंचे कि सूर्य सिद्धान्तकार निरयण वर्ष का विवरण दे रहे थे''?आइए अब इस प्रश्न से निपटलें:

एक सायन वर्ष में आधुनिक मापदण्डों के अनुसार ३६५दिन ५ घंटे ४८ मिनट ४५.७ सेकण्ड अर्थात् कुल ५,२५,६४६ मिनट होते हैं जबकि इस समय उपलब्ध *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार एक वर्ष का परिमाण है ३६५ दिन ६ घंटा १२ मिनट ३६.५६ सेकण्ड अर्थात कुल् ५,२५,६७३ मिनट----अर्थात् सवा पांच लाख मिनटों में अधिकाधिक मात्र चौबीस मिनटों का अन्तर! ध्यान रहे कि आजकल समय का परिमाण परमाणु-घड़ियों, सैटिलाइटों तथा दूरवीक्षण जैसे सूक्ष्म यन्त्रों द्वारा मापा जाता है तथापि इन सब सावधानियों के बावजूद -- सदैव कुछेक वर्षो के पश्चात् हमें 'निर्देश' दिए जाते हैं कि हम अपनी-अपनी घडियां एक-एक सेकण्ड़ 'रोक लें'। ग्रह गणित के लिए तो इन सूक्ष्म से सूक्ष्म यन्त्रों, यहां तक कि इस पृथिवी-पिण्ड को ही बेकार मान कर एक अन्य ही मापक अर्थात् पंचांग समय का प्रयोग किया जाता है और यह किसी भी बड़े-से-बड़े वैज्ञानिक को भी पता नहीं है कि आज की तिथि में यह समय वास्तविक समय से वास्तव में कितना आगे या पीछे है ---केवलमात्र अनुमान लगाया जाता है कि इस वर्ष यह समय विश्व समय से एक मिनट अधिक है पर हो सकता है कि कुछेक शताब्दियों के बाद यह अन्तर २४ मिनट ही हो जाए! इसके विपरीत सूर्य सिद्धान्तकालीन प्राचीन भारत में यह समय मापक यन्त्र ज्योतिषोपनिषदाध्याय श्लोक २१ के अनुसार इस प्रकार के थे:

तोय यंत्र कपालाद्यैर्मयूर नर वानरैः।ससूत्र रेणु गर्भैश्च सम्यक् कालं प्रसादयेत् ।।

"जलयन्त्रों, कपालयन्त्रों, मयूरों, मानवों, वानरों तथा सूत्रयुक्त रेणु-यन्त्रों द्वारा"। यद्यपि इन यन्त्रों की निर्माण-विधि मनुस्मृति आदि गन्थों में विस्तारपूर्वक दी गई है तथापि इस बात की कोई गारण्टी नहीं है कि नियमपूर्वक बनाया गया ऐसा यन्त्र भी "साठ घटिकाओं में साठ बार ही डूबेगा'' जैसा कि *सूर्य सिद्धान्त* के ज्योतिषोपनिषदाध्याय के २३ श्लोक में कहा गया है:

ताम्रपात्रमधश्छिद्रं न्यस्ते कुण्ड़े अमलाम्भसि । षष्टिर्मज्जत्यहोरात्रं स्फुटं यंत्रं कपालकम् ।।

"पेंदे में छेद किए हुए एक तांबे के पात्र को एक स्वच्छ जल के कुण्ड में डाल देना चाहिए। वह साठ घटियों के अहोरात्र में साठ बार डूब जाता है''। इस कपाल यंत्र की निर्माण पद्धति श्रीपति ने अपने "सिद्धान्त शेखर'' नामक ग्रन्थ में भी दी है परन्तु इस का ठीक-ठीक निर्माण करना कितना कठिन है, इसका अनुमान भास्कराचार्य के "गोलाध्याय यंत्रध्याय'' के ८वें श्लोक से लगता है:

"अत्र दशभिः शुल्भस्य पलैरित्यादि यद् घटी लक्षणम् कश्चित् कृते तद्युक्ति शून्यं दुर्घटं चेत्येतदुपेक्षितम्।'' अर्थात् "कुछ व्यक्तियों ने जो घटीयन्त्र का निर्माण तांबे के दस पल आदि से करने को कहा है क्योंकि उनके निर्माण के पीछे कोई तर्क नहीं है इसलिए यहां पर उनकी उपेक्षा की गई है।'' अस्तु, हमारा अभिप्राय यहां पर यह सिद्ध करने का ही है कि भले ही उन "घटी यंत्रादि'' यन्त्रों की निर्माण विधि त्रुटि-रहित रही हो परन्तु उस समय की जो अणुयंत्रों के निर्माण करने की स्थिति थी वह इतनी उन्नत नहीं थी कि शत-प्रति शत सही निर्माण किया जा सके।

जैसा कि हमने देखा है कि *सूर्य सिद्धान्त* वर्ष और आधुनिक सायन वर्ष में केवल २४ मिनटों का अन्तर है जिसका अभिप्राय यह हुआ कि यह अन्तर ५,२५,६४६ मिनटों मे है अर्थात् एक लाख मिनटों में केवल ४.५६ मिनट अर्थात् .००४५६ प्रतिशत से भी कम! आश्चर्य की बात यह नहीं है कि इतना अन्तर कैसे था अपितु आश्चर्य इस बात का है कि इतना थोडा अन्तर कैसे था----जो कि बिल्कुल नगण्य है। मेरे पास एक ''क्वार्ट्ज़'' कलाई घड़ी है जो ''राष्ट्र के समय प्रहरी''अर्थात् एच० एम० टी० द्वारा निर्मित है। इतने उच्च तकनीक द्वारा बनी यह घडी भी प्रति दिन ३ सेकण्ड़ आगे हो जाती है, वास्तव में दो दिन में सात सेकण्ड़। इतना मामूली अन्तर तो दैनिक जीवन में बिल्कुल ही अर्थहीन है। परन्तु आप विश्वास मानिए कि यही ''अर्थहीन अन्तर'' एक वर्ष में पूरे चौबीस मिनट बन जाता है! पहले तो मेरा विचार था कि मैं एच.एम.टी. वालों से "इस तेज़ी'' के लिए दावा करलूँ पर यह सोच कर चुप रहा कि कहीं वह यह उत्तर न दें कि हमने तो आपकी घडी को *सूर्य सिद्धान्त* के वर्ष मान के अनुसार बनाया है! भारतवर्ष में तो इसी सन्दर्भ में एक चुटकुला भी है कि "रेल्वे टाईम से घडी मिला कर चला तो प्लेन छूट गया, दूरदर्शन से घड़ी मिलाई तो आकाशवाणी के समाचार छूट गये और अपनी पत्नी की घडी से घडी मिलाई तो सब काम ठीक से चलने लगे!''

कहने का तात्पर्य यह है कि यह मानने में कोई असंगति नहीं है कि तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार *सूर्य सिद्धान्त* के सायन वर्ष और वास्तविक सायन वर्ष में जो अन्तर है वह केवल इस लिए है कि उस समय वर्ष का सही मान निकालने के साधन इतने परिष्कृत नहीं थे जितने कि आजकल हैं।

अब *सूर्य सिद्धान्त* के तथाकथित ''निरयण' वर्ष के बारे में विचार करते हैं: ज्यों ज्यों समय बीतता गया अपरकालीन खगोलवेत्ताओं को यह चौबीस मिनट का अन्तर खलने लगा। वह सोचने लगे कि भला "सूर्य भगवान'' का मस्तिष्क थोड़े ही इतना ''गर्म'' हो गया होगा कि वह एक वर्ष में २४ मिनट का अन्तर मान के चलते। साथ ही *सूर्य सिद्धान्त* के प्रचलित होने के कुछ शताब्दियों के पश्चात् यह भी पाया गया कि सायन के अतिरिक्त एक निरयण वर्ष भी हो सकता है जिसका कि सही परिमाण ३६५ दिन ६ घंटे ६मिनट ६.७ सेकण्ड़ है अतः यह वर्तमान *सूर्य सिद्धान्त* के सौर वर्ष से केवल ३ मिनट २७ सेकण्ड कम है। इसलिए इन बाद के खगोलवेत्ताओं ने सूर्य भगवान को "वर्ष का गलत मान'' चुनने के आरोप से मुक्त करने के विचार से यह धारणा बनाई कि हो न हो "सूर्य भगवान'' ने निरयण वर्ष का ही वर्णन किया हो क्योंकि इसमें केवल तीन ही मिनटों का अन्तर है -- या यों कहिए कि उभयतः पाशा रज्जुः होने के कारण से इस-धर्म भीरु जनता ने यह ही पक्का निश्चय बना लिया कि सूर्य सिद्धान्तकार ने तो वर्ष निरयण ही ले लिया है। यद्यपि इसमें भी अन्तर था पर वह था केवल तीन मिनटों का। अब इस धारणा को सही सिद्ध करने के लिए कि *सूर्य सिद्धान्त* का सौर वर्ष निरयण ही हैं उनको मूल ग्रन्थ में अयनांश जैसे कुछ क्षेपक श्लोक डालने पड़े। ऐसा करने से बाद में इतनी समस्याएं खड़ी हो जाएंगी इसका उन्हें आभास भी नहीं था और अनजाने में ही एक बहुत बड़ा विवाद खड़ा कर लिया। इसके अतिरिक्त क्योंकि विषुवबिन्दु के खसकने का ज्ञान उस समय नगण्य ही था और अन्य देशों द्वारा भी इस पर विचार/अनुसन्धान हो रहा था -- उनको उस समय यह भी ज्ञान नहीं था कि अयनांश *सूर्य सिद्धान्त* के भोगांशों से घटाना है या उनमें जोड़ना और न ही यह ज्ञान था कि अयन खसकते भी हैं या नहीं या लोलक की भान्ति आन्दोलित होते रहते हैं। इस प्रकार इस चमत्कृति के अल्प या यों कहिए कि विपरीत ज्ञान पर निर्भर करते हुए समस्या को और भी जटिल बना दिया!

क्योंकि *सूर्य सिद्धान्त* के सौर वर्ष का मान एक वास्तविक निरयण वर्ष के मान से भी पूरा मेल नहीं खाता है, इनमें ३ मिनटों से अधिक का अन्तर है, इस कारण निरयण भगण मानने पर भी स्थिति सुधरने के बदले जटिल होती गई जिसके परिणाम स्वरूप इन अन्तर्विरोधों को दूर करने के लिए अनेक

प्रयत्न किए गए जिनके फलस्वरूप हमें कम से कम एक दर्जन अयनांशों से भुगतना पड़ रहा है और हर अयनांश का अनुयायी अपने द्वारा स्वीकृत अयनांश को ही सही और *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार मानता है!

बिल्कुल यही स्थिति सूर्य सिद्धान्त के अन्य ग्रहों के ध्रुवांकों के साथ भी है जो न आधुनिक निरयण ध्रुवांकों से मेल खाते हैं न सायन क्योंकि वह भी उस समय केवल अनुमानतः "ठीक" थें।

सायन राशिचक्र व दिनवर्ष पद्धति Secondary Progression ही वास्तवकि वैदिक फलितज्योतिष का आधार है: यह तो रही *सूर्य सिद्धान्त* के निरयण होने की कहानी। आइए अब फलित ज्योतिष को लेते हैं अर्थात् सायन भगण तथा सायन "दिन-वर्ष पद्धति", जिसको अंग्रेज़ी में "सेकन्डरी प्रोग्रेशन" Secondary Progression कहा जाता है वही वास्तविक वैदिक फलित ज्योतिष भी है इस बात को सिद्ध करते हैं:

हमारे पूर्वजों को प्रसिद्ध वैज्ञानिक ऐल्बर्ट आनस्टाईन के "थ्योरी आफ रिलेटिविटी" Theory of Relativity का सहस्रों वर्ष पूर्व ही पूर्ण ज्ञान था। हिन्दी भाषा में इस सिद्धान्त की यों व्याख्या की जा सकती है कि "अखिल ब्रह्माण्ड की देश-कालात्मक गतियाँ परस्पर सम्बद्ध हैं और एक क्षेत्र का काल परिमाण दूसरे क्षेत्र के समय मान से कई गुणा अधिक या कम हो सकता है"। सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा है कि एक बार महाराजा खट्वांग दानवों के विरुद्ध युद्ध में देवराज इन्द्र की सहायता करने के लिए स्वर्गलोक की राजधानी अमरावती गए थे। कृतकार्य होके जब उन्हें देवराज इन्द्र पृथिवी लोक पर पुनः ले आए तो उन्हें अपनी सहायता करने के फलस्वरूप वरदान मांगने को कहा। महाराजा खट्वांग ने सबसे पहले यह पूछा कि यद्यपि स्वर्गलोक के कालपरिमाण के अनुसार मैं अमरावती में बहुत थोड़े समय रहा तथापि पृथिवी लोक के काल परिमाणानुसार ऐसा लगता है कि मुझे वहां अत्यधिक समय व्यतीत हुआ है अतः पहले तो यह बताइए कि अब मेरी कितनी आयु शेष रह गई है ताकि उसी के अनुरूप वरदान मैं आपसे मांग लूँ"। यह सुनकर इन्द्र ने उनसे कहा कि वास्तव में ही अमरावती के काल परिमाण की तुलना में यहां अर्थात् पृथिवी लोक पर बहुत समय व्यतीत हो गया है अतः आपके जीवन के केवल कुछ दिवस ही शेष रह गए है.... "

इसी प्रकार *श्रीयोगवासिष्ठ महारामायण* में तो अनेक स्थलों पर इसी बात को दोहराया गया है कि "देश दैर्घ्य यथानास्ति कालदैर्घ्य तथैवच" अर्थात् जैसे विस्तृत से विस्तृत ब्रह्माण्डों को एक साधारण मनुष्य भी मृत्यु-मूर्च्छा अथवा स्वप्नादि में अपने हृदय पटल के एक त्रसरेणु में भी उत्पन्न और लीन कर सकता है उसी प्रकार सहस्रों युगों के कालपरिमाण को भी वह क्षण मात्र में योग अथवा ज्ञान द्वारा परिवर्तित करता है"। वसिष्ठ मुनि ने तो इस काल तारतम्य का सुन्दर तथा सजीव वर्णन यों किया है:-

यन्मूहूर्तः प्रजेशस्य स मनोर्जीवितं मुनेः । जीवितं यद्विरिंचस्य तद्दिनं किल चक्रिणः।।
विष्णोर्यज्जीवितं राम तद् वृषांकस्य वासरः। ध्यान प्रक्षीण चित्तस्य न दिनानि न रात्रयः।।

योगवासिष्ठ महारामायण उत्पत्ति प्र० ६०/२५-२६

"मनु के संपूर्ण जीवन की अवधि ब्रह्माजी के एक मुहूर्त के समान है; ब्रह्माजी का सौ वर्षो का सारे का सारा जीवन विष्णु भगवान के एक दिवा-रात्रि के समान है तथा भगवान विष्णु की सौ वर्षो की पूर्ण आयु भगवान शंकर के एक दिन के समान है परन्तु ध्यान द्वारा जिनके चित्त क्षीण हुए हैं उनके लिए तो न दिन हैं न रात -- क्योंकि वह तो काल की सारी परिधियों को लांघ चुके हैं!"

यद्यपि हमारी "धर्मनिरपेक्ष" भारत सरकार के "संवेदनशील" नियमों के अनुसार राजाकीय विद्यालयों/महाविद्यालयों में संस्कृत भाषा का अध्ययन-अध्यापन "अल्पसंक्षकों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला है" तथापि शायद ही कोई हिन्दू परिवार होगा जो श्रीमद्भगवद्गीता के आठवें अध्याय से अनभिज्ञ हो। कश्मीर में तो प्रत्येक श्राद्ध अथवा अन्य किसी धार्मिक कृत्य के लिए इस अध्याय का पाठ "अनिवार्य" है। आश्चर्य की बात तो यह है कि यद्यपि अखिल भारत का "अल्पसंख्यक समुदाय" कश्मीर का "बहुसंख्यक संप्रदाय" है तथापि वहां उनको हिन्दुओं के इस तथाकथित भड़काने वाले कृत्य से कभी किसी प्रकार की आपत्ति नहीं हुई पर हो सकता है हमारी सरकार ने भी निरयण ज्योतिष द्वारा इस बात का पता लगाया हो कि यदि वह संस्कृत् भाषा का पठन-पाठन बन्द नहीं करायेगी तो "अल्पसंख्यकों" को बहुत ठेस पहुचेंगी, बहुसंख्यकों पर इसका क्या प्रभाव होगा यह बात अब उनको सायन ज्योतिष द्वारा जाननी चाहिए! अस्तु, यह आठवां अध्याय यदि देखा जाए तो काल-परिमाण के ऊपर एक "थीसिस" ही है और इसका १७वां श्लोक यो है:

सहस्रयुगपर्यन्तम् अहर्यद् ब्रह्मणो विदुः । रात्रिं युग सहस्रान्तां ते अहोरात्र विदो जनाः।।

अर्थात् "ब्रह्माजी का एक दिन एक हज़ार दिव्य चतुर्युगों के बराबर है तथा उनकी रात्रि भी इतने ही परिमाण की है, यह जानने वाले ही दिवा-रात्रि का ज्ञान रखने वाले कहलाए जा सकते हैं"। क्या आप

समझते हैं कि भगवान कृष्ण ने यह वाक्य किसी नशे की हालत में कहे थे! वास्तव में यह श्लोक कहकर तो मानो उनने समय के बारे में कुछ भी कहने या लिखने वालों के लिए एक कसोटी निश्चित कर दी है जिससे अनभिज्ञ मनुष्य इस विषय में कुछ भी बोलने का अधिकार नहीं रखते हैं।

इस सब से यह सिद्ध होता है कि यह तथ्य भारतीय शास्त्रकारों को अनादिकाल से ज्ञात है कि सृष्टि के भिन्न-भिन्न खण्डों में---भिन्न-भिन्न भागों में---भिन्न-भिन्न स्तरों पर काल परिमाण भिन्न हैं और जो अवधि एक स्तर पर एक दिन के परिमाण वाली है वही अन्य स्तर पर एक वर्ष बनती है।

वास्तव में इसी बात को *मनुस्मृति, श्रीमद्भागवत्* तथा *देवीपुराण* आदि हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थों में अनेक बार दोहराया गया है कि "देवताओं का एक दिन मानवों के एक सायन वर्ष के समान है''। अतः यह भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि "एक दिन एक वर्ष के समान है'' सिद्धान्त को सूर्य सिद्धान्तकार व अन्य अनेक प्राचीन भारतीय खगोलवेत्ताओं ने भी बार बार दोहराया है। *सूर्य सिद्धान्त* से तो हम इस सन्दर्भ में पहले ही उद्धरण दे चुके है अतः अब भास्कराचार्य को देखते हैं:

रवेश्चक्रभोगो अर्क वर्षम् प्रदिष्टं। द्युरात्रम् च देवासुराणां तदेव।।

"सूर्य का राशि-चक्र का एक भ्रमण जिससे कि मानवों का एक वर्ष बनता है, देवताओं का एक दिन कहलाता है।'' अब जैसा कि पहले ही ऊपर कई बार कहा गया है सूर्य सिद्धान्तकार ऐसी कोई भी बात नहीं करते जिसका कि वैदिक आधार न हो तो स्पष्ट ही है कि "देवताओं का एक दिन मानवों के एक वर्ष के बराबर है'' तो इस सिद्धान्त का भी पौराणिक आधार के अतिरिक्त कोई वैदिक आधार अवश्य होना चाहिए, तो लीजिए वह भी प्रस्तुत है:

एकं वा इदं देवानामहः । यत्संवत्सरः। तैत्रीय संहिता ३ - ६ - २

''जिसको मानवों का संवत्सर अर्थात् सायन वर्ष कहते हैं वह देवताओं का एक दिन है''

क्योंकि मैं यह नहीं कह सकता हूँ कि मैंने वेदों का सम्यक अध्ययन किया है अतः यह भी सम्भव है कि मैंने कई ऐसे ही अन्य उद्धरणों को ध्यान से न देखा हो परन्तु यह एकमात्र वैदिक उद्धरण भी यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि "एक दिन एक वर्ष के समान है'' एक वैदिक सिद्धान्त ही है और इसी वैदिक सिद्धान्त को जब हम फलित ज्योतिष पर लागू करते हैं तो सायन ज्योतिष का "दिन-वर्ष पद्धति'' अथवा "सेकण्डरी प्राग्रेशन'' बन जाता है! सो निश्चय ही यह सिद्ध होता है कि दिनवर्ष पद्धति Secondary Progressions ही वैदिक फलितज्योतिष का दूसरा नाम है।

इस तथ्य को आत्मसात् करने के पश्चात् हो सकता है कि आप मेरे पीछे हाथ धो कर पड़ जाएंगे कि "मै गलत उद्धरण तथा उदाहरण देकर अपना उल्लू सीधा करना चाहता हूँ क्योंकि यह सिद्धान्त तो यह कहता है कि देवताओं का एक दिन मानवों के एक वर्ष के समान होता है न कि यह कि मानवों का ही दिन मानवों के वर्ष के समान है। ऐसी असंगत बातें तो हमने न कभी सुनी है और न देखीं।'' आपका यह आक्षेप बिल्कुल सही है और मैं इसके उत्तर में आपके समक्ष केवल एक उद्धरण प्रस्तुत कर सकता हूँ: तथा भारतं धर्मेषु धर्मज्ञैरिह दृश्यते । अहोरात्रम् महाराज तुल्यं सम्वत्सरेण ह।।

तथैव वेद वचन श्रूयते नित्यदा विभो। संवत्सरस्य महाराज पूर्णो भवति कृच्छ्रतः।।

''हे भारत! धर्म को जानने वाले सदा ही एक दिवस को एक संवत्सर के समान मानते है। इसी प्रकार हम सदा ही वेदों के यह वचन भी सुनते हैं कि कृच्छ्व्रत में एक दिन एक वर्ष के समान होता है''

अब मैं केवल यही कर सकता हूँ कि अगले उद्धरण के ही शब्दों में आप से आग्रह करूं कि आप इस दुराग्रह को तिलांजलि देदें कि "दिन-वर्ष पद्धति'' फलित ज्योतिष की विदेशी प्रणाली है:

यदि वेदाः प्रमाणास्ते दिवसादूर्ध्वमप्युत। त्रयोदश समाः कालं ज्ञायतां परिनिष्ठिताः।।

''यदि आप वेदों को प्रमाण मानते हैं तो आप यह मानकर चलिए कि 'एक दिवस एक वर्ष के समान है' के सिद्धान्त अनुसार वन में हमारे तेरह दिवस पूरे होते हुए ही तेरह वर्ष पूरे होगए''।

यह श्लोक किसी विदेशी "पक्षपातपूर्ण'' लेखक के उद्धरण नहीं है अपितु भीमसेन की धर्मराज युधिष्ठिर के प्रति एक याचना है जिसका वर्णन *महाभारत* वनपर्व के अध्याय ५२ के २३वें श्लोक से २५वें श्लोक तक है जो कि ऊपर दिए गए हैं। *महाभारत* के यह श्लोक भी किसी नकली संस्करण से नहीं लिए गए हैं जिसके विषय में यह कहा जासके कि किसी विदेशी ज्योतिषी ने अपने 'सेकन्डरी प्रोग्रेशन' को सिद्ध करने के लिए उसमें ठोंस दिए हैं अपितु यह श्लोक गीता प्रेस, गोरखपुर वाले संस्करण से लिए गए हैं और उनका कथन है कि उनका संस्करण ''नीलकण्ठी टीका पर आधारित है'' अर्थात् इस उद्धरण के प्रामाणिक होने में किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं है। यह ''वैदिक ज्योतिषी'' यह भी नहीं कह सकते हैं कि इनका वैदिक ज्ञान तो भीमसेन से भी अधिक है जिसने कि डंके की चोट पर वेदों की दोहाई देते हुए कहा है कि मानवों का ही एक दिन एक वर्ष के समान है और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि स्वयं धर्मराज युधिष्ठिर ने भी भीमसेन के इस कथन का कि "एक दिवस एक वर्ष के समान है यह एक अकाट्य वैदिक सत्य है'' कहीं भी खण्डन नहीं किया है यद्यपि अन्य कुछ बातों को उन्होंने अवश्य अस्वीकार किया है।

निरयण भक्तों के परमाराध्य "बृहत्पराशरी" वाले वास्तविक पाराशर मुनि का भी कथन है:

तैः षडभिरयनं, वर्षे द्वे अयने दक्षिणोत्तरे। अयनं दक्षिणं रात्रिर्देवानामुत्तरं निशा।। १/३/१०
वास्तव में इस ग्रन्थ के प्रथम अंश का पूरा तीसरा अध्याय कालक्रम के सुन्दर तारतम्य का चित्रण ही है।

अब तो आप स्वयं ही इस निष्कर्ष पर पहुंचे होंगे कि वास्तविक "वैदिक खगोलिकी'' और "वैदिक फलित ज्योतिष'' क्या हैं : सायन राशिचक्र तथा 'दिन वर्ष पद्धति'। अतः जिस दशा-भुक्तियों वाले फलित ज्योतिष को तथा निरयण ग्रहगणित पद्धति को हम आजतक वैदिक मानते आए हैं उसे हम ''नाम-मात्र का वैदिक ज्योतिष'' तथा ''नाम-मात्र की वैदिक ग्रह गणित पद्धति'' कह सकते हैं।

आपको यह सुनकर भी आश्चर्य होगा कि सायन फलित ज्योतिष पद्धति में 'सेकण्डरी प्रोग्रेशन' के अतिरिक्त एक और आयाम भी है जिसको "माईनर प्रोग्रेशन'' Minor Progression अर्थात् मास-वर्ष पद्धति कहा जाता है। इस पद्धति में जन्मकालीन सूर्य और चद्रमा में जितना अन्तर है उतना ही अन्तर पुनः होने पर एक वर्ष पूर्ण हो जाता है और इस प्रकार इस अवधि को एक वर्ष के समान माना गया है। सदा की भान्ति इस सिद्धान्त का भी कोई वैदिक आधार अवश्य होगा और वह यह है:
त्रिंशतं रात्रिर्दीक्षितः स्यात् त्रिंशदक्षरोविराट्। मासं दीक्षितः स्याद्यो मासः स संवत्सरः।। तै० सं. ५:६:७
'तीस रात्रियों के लिए दीक्षित रहे क्योंकि विराट् तीस अक्षरों का है। एक मास के लिए दीक्षित रहे क्योंकि जो मास है वही वर्ष है''। इससे यहां यह भी प्रमाणित हो जाता है कि जैसे वेदों ने "मानवों के एक मास को ही उनके ही एक वर्ष के समान माना है'' वैसे ही "मानवों के एक दिवस को उनके ही एक वर्ष के समान मानने'' के भी अनेक प्रमाण होंगे।
इसी सन्दर्भ में भीमसेन वनपर्व के इसी अध्याय में अपने ज्येष्ठ भ्राता धर्मराज युधिष्ठिर से यह कहते हैः-

अस्माभिरुषिताः सम्यग्वने मासास्त्रयोदश। परिनामेण तान्पश्य तावतः परिवत्सरान्।
अस्ति मासः प्रतिनिधिर्यथा प्राहुर्मनीषिणः । पूतिकामिव सोमस्य तथेदं क्रियतामिति।

"हमने इस वन में पहले ही तेरह मास बिताए हैं। आप उनको ही तेरह वर्ष मान लीजिए। विद्वानों का कहना है कि एक मास एक वर्ष का प्रतिनिधित्व करता है जैसे कि यज्ञ कर्म में पूतिका, एक प्रकार की जड़ी बूटी, सोमलता का प्रतिनिधित्व करती है।''

उपर्युक्त कथन का सारांश यह है कि यह अब निर्विवाद रूप से सिद्ध हुआ कि "एक दिवस, चाहे वह देवताओं का हो या मानवों का, एक वर्ष के समान है,''यह तथ्य एक वैदिक सिद्धान्त है।

अब रह गई प्रत्यक्ष प्रमाण की बात कि छः महीने के समान एक दिन और इसी अवधि की एक रात्रि भी हो सकती है तो यह तो एक सर्वविदित तथ्य है कि ध्रुवों पर छः महीने का दिन और छः महीने की रात्रि होती है----जब दक्षिण ध्रुव पर दिन होता है तो उत्तरीय ध्रुव पर रात्रि होती है और जब उत्तरीय ध्रुव पर दिन होता है तो दक्षिण ध्रुव पर रात्रि होती है। यही बात सूर्यसिद्धान्तकार ने भी कही है जो हम ऊपर देख ही चुके हैं।

''दशाभुक्ति वैदिक पद्धति है'' इस धारणा का कोई आधार या प्रमाण नहीं हैः

''एस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन'' बंगलोर ने हमारे १९९४ के "श्रीकृष्ण यूनिवर्सल पंचांग'' की समीक्षा करते हुए लिखा था कि "लेखक यह सिद्ध नहीं कर पाया है कि भारतवर्ष में हमारे पूर्वज फलित ज्योतिष के लिए सायन पद्धति अर्थात् सायन भोगांशों और 'सेकण्डरी प्रोग्रेशन' का प्रयोग करते थे''। कम से कम अब तो वह ऐसा नहीं कह सकते हैं। *इसके विपरीत अब हम उनसे तथा अन्य सभी निरयण ज्योतिषी मित्रों के सामने चाहे वे ज्योतिर्विद्या में पारंगत हैं या नौसिखिये, यह चुनौती रखते है कि वह वेदों अथवा कम से कम पुराणों से ही एक भी ऐसा अकाट्य प्रमाण दें जिससे यह सिद्ध होता हो कि हमारे वैदिक कालीन अथवा पौराणिक कालीन पूर्वज दशा-भुक्ति पद्धति का प्रयोग करते थे, चाहे वह विंशोत्तरी हो या अष्टोत्तरी या योगिनी या कालचक्र या जैमिनी अथवा अन्य कोई भी।* मैं उन्हें रमण या लाहिरी या सरकारी या अन्य कोई भी अयनांश वैदिक अथवा पौराणिक आधार पर सिद्ध करने के लिए इसलिए नहीं कह रहा हूँ क्योंकि जैसा हम ने ऊपर देखा है कुछेक निरयण भक्त तो अपनी गलत धारणाओं को भी प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए किसी भी धार्मिक गन्थ के किसी भी श्लोक के अर्थ का अनर्थ कर बैठते हैं और यह गलत परम्परा हमारे लिए असहनीय है। अभीतक तो हम केवल राजनीतिज्ञों के बारे में ही यह धारणा बनाए बैठे थे कि वह बिना ठीक से समझे, या यों कहिए कि उस ग्रन्थ को बिना पढ़े ही, मनु के पीछे हाथ धोकर पड़े थे कि उनने 'ब्राह्मणवाद' फैलाया है, चाहे उसका जो भी अर्थ हो, लेकिन अब तो यह लगता है कि यह निरयणवादी भी उन राजनीतिज्ञों से कुछ कम नहीं हैं जो अपने शास्त्रों के अर्थ तोडते और मरोडते हैं यदि ऐसा करने से उनकी भ्रान्त धारणाएं सिद्ध करने में उन्हें सहायता मिलती हो।

क्योंकि दशा-भुक्ति वैदिक होने के बारे में कोई प्रमाण यह दे नहीं सकते है अतः इन्हें चाहिएं कि वह उस को और यहां तक कि सारी निरयण पद्धति को ''वैदिक ज्योतिष'' कहना छोड़ दें। यदि यह निरयणवादी तब भी ऐसा नहीं करते हैं तो जनसाधारण को चाहिए कि वह *मनुस्मृति* के कथनानुसार ऐसी वेद-बहिष्कृत अर्थात् अवैदिक निरयण पद्धतियों का बहिष्कार करलें अन्यथा वह जनसाधारण ही "इहलोक और परलोक दोनों से ही हाथ धो बैठेंगे।''

मुझे विश्वास् है कि अबतक आप ने स्वयं इस बात का निर्णय कर लिया होगा कि वैदिक ज्योतिष

तथा वैदिक खगोलिकी वास्तव में क्या हैं -- "नेदं यदिदमुपासते'' अर्थात् "यह जिसकी तुम उपासना कर रहे हैं वह नहीं है'' अपितु सायन खगोलिकी तथा दिन-वर्ष पद्धति ही वास्तविक वैदिक ज्योतिष हैं और निरयण भोगांशों तथा दशा-भुक्ति पद्धति को तो हम अधिकतम ''तथा-कथित ज्योतिष'' और ''तथा-कथित खगोलिकी'' कह सकते हैं।

क्या दिनवर्ष पद्धति पाश्चात्य मूल की है? अब यहाँ एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि हम भारतवासियों ने फिर फलित ज्योतिष के इतने प्रामाणिक अंग अर्थात् सायन भोगांशों और "दिन-वर्ष पद्धति'' की उपेक्षा क्यों और कैसे की जबकि पाश्चात्य देशों ने इसको अपना लिया?

मज़ेदार बात तो यह है कि पाश्चात्य ज्योतिषी भी फलित ज्योतिष की इस पद्धति के लिए अपने एकमात्र धर्मग्रन्थ "पवित्र बाईबल'' से यह उद्धरण देते है: "मैंने तुम्हारे लिए एक वर्ष के बदले एक दिन निश्चित किया है'' एज़कील १४:३० तथा "यशु के समय अर्थात् जीवन का एक दिवस एक वर्ष के समान है'' नम्बर्स १४:३४। परन्तु आइए अब इस तथाकथित "पाश्चात्य पद्धति'' की जीवन-गाथा "पाश्चात्य ज्योतिषियों'' के ही शब्दों में ढूँढ़ने व सुनने का प्रयत्न करते हैं।

ऐल्फर्ड पियर्स द्वारा आज से सौ वर्षो से भी अधिक पूर्व लिखित और ऐमरीकन फैडरेशन आफ ऐस्ट्रोलाजर्स, अमरीका, द्वारा प्रकाशित "दी टेक्स्ट बुक आफ एस्ट्रोलोजी'' के पृष्ठ सं १७५ पर दिए गए यह शब्द देखने योग्य हैं: ".....कुछ लोग प्राईमरी डाईरेक्शन्स के बदले *अरब देशवासियों द्वारा अपनाया हुआ सेकण्डरी डाइरेक्शन्स* अपनाते है।'' आगे इसी पुस्तक के पृष्ठ २२३ पर उनको खिजलाहट है कि: "यह अत्यंत शोचनीय बात है कि यह अरबों की मूर्खता भरी पद्धति अभी भी कुछ आधुनिक पुस्तकों में भी प्रकाशित हो रही है।'' यही बात कि "दिन वर्ष पद्धति'' पाश्चात्य ज्योतिष में अरब देशों से आई है वहां के सभी विद्वानों ने मानली है। पश्चिमी देशों में इस पद्धति का मुख्य प्रचारक-प्रसारक सत्रहवीं शताब्दी ईस्वी के प्लैसिदस टाईटस रहे हैं जो "प्लैसिडियन टेब्लस'' के लिए प्रसिद्ध हैं। यहां यह कहना भी आवश्यक है कि पश्चिमी देशों में वहां की फलितज्योतिष की मुख्य पद्धति "प्राईमरी डाईरेक्शन्स'' भी प्लैसिडस के ही समय से अधिक प्रचलित हुई है क्योंकि उसीने द्वितीय शताब्दी ईस्वी के यूनानी ज्योतिषी टाल्मी के ज्योतिर्विद्या के मुख्य ग्रन्थ ''टेट्राब्लोस'' का प्रामाणिक अनुवाद स्पैनिष भाषा में किया था जिससे उस ग्रन्थ का अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में किया गया। इसी ''टेट्राब्लों'' में ''प्राईमरी डाइरेक्शन्स'' के मूल सिद्धान्त समझाए गए हैं। "खाल्डियन'' अर्थात् इराक आदि देशों में प्राचीनतम काल से प्रचलित ''द्रेष्काण दशा'' आदि तो इससे बिल्कुल ही भिन्न है और इसको सेन्ट जर्मेन ने ज्योतिर्विद्या पर लिखी गई अपनी पुस्तकों में दिया है। इससे स्पष्ट है कि प्रारम्भ में पश्चिमी देशों में फलित-ज्योतिष की अपनी कोई पद्धति नहीं थी जबकि हम भारतवासी "प्रोग्रेशन'' अर्थात् दिन-वर्ष पद्धति को 'पाश्चात्य' कहते है और पाश्चात्य इसको "अरब देशीय'' कहते हैं! इसी बात के अन्य और भी ऐतिहासिक प्रमाण देखिए:

"इन्नर ट्रैडिशन्स'' द्वारा प्रकाशित पुस्तक "लॉस्ट कीज़ टु प्रेडिक्शन्स'' में उसके लेखक राबर्ट ज़ोलर पृष्ठ ८ पर लिखते हैं: "अरबों ने भारत और स्पेन के बीच में एक सम्पर्क सूत्र स्थापित किया।'' यह बात ध्यान देने योग्य है कि स्पेन के ही प्लैसिदस संत ने ही ज्योतिर्विद्या के ग्रन्थों का अनुवाद स्पैनिश भाषा में किया था जिससे उनका अनुवाद बाद में अंग्रेज़ी भाषा में किया गया। वह आगे लिखते हैं "वैज्ञानिक और दार्शनिक ज्ञान का जो पारस्परिक आदान-प्रदान हुआ उससे ज्योतिष कला पर काफी प्रभाव पड़ा क्योंकि इस 'कला' को खगोलिकी और आध्यात्मिक ज्ञान का गोपनीय संगम माना जाता था। उदाहरण के लिए आठवीं शताब्दी ईस्वी मे खलीफ-अल-मनसूर के ज्योतिषियों ने संस्कृत के खगोलिकी के सिद्धान्त ग्रन्थों और त्रिकोणमिति के ग्रन्थों का अनुवाद अरबी भाषा में किया। पाश्चात्य देशों में इस समय उपलब्ध पारम्परिक ज्योतिषग्रन्थ अधिकतर उसी समय की देन है। अल्बीरूनी की 'एलिमेन्ट्स आफ ऐस्ट्रालोजी' इस सन्दर्भ में विशेष उल्लेखनीय है क्योंकि यह पाईथागोरस के दर्शन पर आधारित गणित तथा ज्यामिति के प्रभाव को दर्शाता है। यह कृति स्पष्ट रूप से दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी में भारत, फारस तथा मध्य-पूर्व क्षेत्र में प्रचलित ज्योतिर्विद्या की भिन्न-भिन्न धाराओं का एक रेकार्ड है।'' यहीं ज़ोलर महोदय अपनी इसी पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि "इसके अतिरिक्त 'लिबर ऐस्ट्रानामिया' नामक पुस्तक हमारे सामने मध्य-युग में प्रचिलत ज्योतिर्विद्या का एक स्पष्ट चित्र खींचती है। यह वही युग है जबकि यूरप में अरबों द्वारा ज्योतिष का प्रचार-प्रसार आरम्भ किए बहुत थोड़ा समय हुआ था।''

इससे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि "सेकण्डरी प्रोग्रेशन'' पश्चिमी देशों में अरबों द्वारा प्रचलित किए गए क्योंकि सेफारियल नामक सुप्रसिद्ध ज्योतिषी लेखक भी अपनी "न्यू डिक्शनरी आफ ऐस्ट्रालोजी'' मे लिखते है कि "सेकण्डरी प्रोग्रेशन तो खाल्डीयन रेकार्डो में बिल्कुल उपलब्ध नहीं हैं।''

क्या दिनवर्ष पद्धति अरब देश वालों की मौलिक पद्धति है?

तो चलिए अब अरब देशों से पश्चिमी देशों मे जाने वाली "अरब ज्योतिष पद्धति'' पर विचार करते हैं और विशेषतः अल्बेरूनी---AlBiruni--के विषय में जानने का प्रयत्न करते हैं जिनके प्रयासों के फलस्वरूप "सेकण्डरी प्रोग्रेशन'' तथा किसी सीमा तक सायन खगोलिकी पश्चिमी देशों में प्रचलित प्रसारित हुई। सायन खगोलिकी उनके द्वारा केवल किसी सीमा तक इसलिए कहा गया क्योंकि अल्बेरूनी

से पूर्व ही टालमी की सायन खगोलिकी पर आधारित फलित ज्योतिष तथा ज्योतिर्गणित की पुस्तकें ''टेट्राबिबलोस'' आदि का प्रचार प्रसार वहाँ होने लगा था।

सर्वप्रथम हमें यह बात यहां पर स्पष्ट कर देनी चाहिए कि मुसलमानों के धर्म-ग्रन्थ ''कुराने शरीफ'' में इस्लाम के अनुयायियों को भविष्यवाणियां करने में प्रोत्साहन के बदले भर्त्सना ही लिखी है अतः अरब ज्योतिषियों ने कभी यह दावा नहीं किया कि फलित-ज्योतिष पर उनका कोई स्वत्व अधिकार है और न ही उन्होंने इस सन्दर्भ में कभी किसी धार्मिक ग्रन्थ का ही कोई उद्धरण दिया। इसके विपरीत उनका तिथि-पत्रा केवल चन्द्रमा की सूर्य के साथ युति पर ही अवलम्बित है जिसका कि सूर्य के सायन या निरयण, किसी भी प्रकार के संक्रमण से कोई सम्बन्ध नहीं है और वह भारतीय तथा पाश्चात्य तिथि-पत्रे, दोनों से ही बिल्कुल ही भिन्न है।

भारतवर्ष में भारतीय ज्योतिष के इतिहास का एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है जो शंकर बालकृष्ण दीक्षित ने मराठी भाषा में "भारतीय ज्योतिष'' नाम से प्रकाशित कराया था। बाद में इसका अनुवाद हिन्दी तथा अंग्रेज़ी भाषाओं में भी हुआ था। अंग्रेज़ी संस्करण तो शायद ''इण्डिया मीटियारालोजिकल डिपार्टमेंट'' द्वारा प्रकाशित था लेकिन अब भारत सरकार की कृपा से अप्राप्य है और यह स्वयं भारत सरकार को भी ज्ञात नहीं कि इसका पुनर्मुद्रण कब होगा, होगा भी या नहीं। हिन्दी संस्करण का पुनर्मुद्रण अभी उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने किया है लेकिन इसमें बहुत ही कमियां हैं। आश्चर्य की बात है कि इसमें कहीं भी, न आदि में और न अन्त में, कहीं कोई क्रमसूची है और न कोई विषयसूची जिसकी कमी बहुत ही ज्यादा खलती है। इसके विपरीत किसी 'ज्योतिष कलानिधि' द्वारा लिखा "ज्योतिष शास्त्र पर आधुनिक विचार'' नामक ४० पृष्ठों का लम्बा-चौड़ा लेख प्रकाशित हुआ है। उस लेख को पढ़ने के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि उन महाशय ने मूल ग्रन्थ का अध्ययन किया ही नहीं है लेकिन क्योंकि सरकारी संस्थानों के लिए यह कोई नई बात नहीं है कि कोई भी काम करने-कराने के लिए योग्यता कम और अन्य बातें अधिक जाँची जाती हैं सो यहाँ भी वही हुआ है। अस्तु। इस ग्रन्थ के पृष्ठ सं ६८६-६० पर शंकर बालकृष्ण दीक्षित लिखते हैं: ''अब्दुल रहमान अलबेरुनी का जन्म ईसवी सन ६७३ में खीवा नामक स्थान में हुआ था। कालान्तर में अलबेरुनी वहीं के तत्कालीन शासक का मंत्री बना। फिर जब महमूद गज़नवी ने खोवा पर अधिकार किया तब अलबेरुनी नज़रबन्द बना लिया गया। नज़रबन्दी की स्थिति में ही महमूद गज़नवी उसे भारत ले आया। अलबेरुनी सन् १०१७ से लगभग १०३१ ई० तक भारत में रहा। सन् १०३१-३२ अर्थात् शक ६५३ के आसपास उसने अरबी भाषा में *इंडिका* नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में भारतवर्ष के अनेक ग्रन्थ शामिल है। उलबेरुनी ने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया था। संस्कृत भाषा में लिखित अनेक ग्रन्थों का उसने अवलोकन भी किया था। ज्योतिष शास्त्र पर उसका विशेष अधिकार था। उसमें उसकी अत्यधिक रुचि और गति थी। कई ज्योतिष ग्रन्थों का उसने अरबी भाषा में अनुवाद भी किया था। इसके *इंडिका* नामक ग्रन्थ का अनुवाद बर्लिन के प्रोफेसर एडवर्ड सी० साचो ने किया है। उस ग्रन्थ के दो भाग हैं। उसमें मुख्य रूप से शक ६५० ईसवी के पूर्व के ग्रन्थकारों के सम्बन्ध में विशेष जानकारी दी गयी है।''

"मुसलमानों में हिन्दू ज्योतिष शास्त्र का प्रचार'' नामक शीर्षक से वह आगे लिखते हैं: "वर्षों तक सिन्ध प्रान्त बगदाद के खलीफाओं के अधीन था। उनमें खलीफा मंसूर के ई० सन् ७५३ से ७७४ तक के शासन काल में सिन्ध प्रान्त के तत्कालीन एक शासक के यहाँ से एक दूत सन् ७७१ ई० में उसके दरबार में गया था। (ध्यान रहे कि इसी खलीफा मंसूर के विषय में राबर्ट ज़ोलर ने भी अपनी पुस्तक में वर्णन किया है) उस दूत के साथ कई ज्योतिषी भी बगदाद गये थे। उन ज्योतिषियों के द्वारा संस्कृत के कतिपय ज्योतिष ग्रन्थों का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ। खलीफा हारूँ रशीद के शासनकाल में ई० सन् ७८६ से ८०६ में वैद्यक तथा ज्योतिष विषयक ग्रन्थों का अरबी में अनुवाद हुआ। उस समय ब्रह्मगुप्त के *ब्रह्मसिद्धान्त* तथा *खण्डखाद्य* का अरबी भाषा में उल्था हुआ। इतना ही नहीं, संस्कृत भाषा में लिखित ज्योतिष के विविध सिद्धान्त ग्रन्थों के आधार पर अरबी भाषा में स्वतन्त्र ग्रन्थों की भी रचना हुई थी, ऐसा प्रतीत होता है । अलफज़ारी, याकूब बिन तारिक, अबू अल हसन नामक अरबी भाषा के ज्योतिष ग्रन्थकार ईसवी सन् की आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वर्तमान थे। ऊपर लिखे हिन्दू ज्योतिषियों की सहायता से उनने अरबी भाषा में ज्योतिष शास्त्र के स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखे । उपर्युक्त ग्रन्थ आजतक उपलब्ध नहीं हो पाए पर इतना तो स्पष्ट है कि अलबेरुनी के संग्रह में उपर्युक्त तीनों लेखकों के ग्रन्थ विद्यमान थे। प्रथम दोनों लेखकों के ग्रन्थों का उल्लेख तो अलबेरुनी ने बार-बार किया है। उन ग्रन्थों में कालमान, महायुग अथवा कल्प की ग्रह भगण संख्या, ग्रहकक्षा योजना, मध्यम ग्रह साधन हेतु अहगर्ण प्रक्रिया, भुजज्या, ग्रहों का अस्तोदय, चंद्रदर्शन आदि संस्कृत ग्रन्थों के अनेक प्रकरण समाहित किये गये थे। *अरबनिवासियों ने ज्योतिष शास्त्र का सर्वप्रथम ज्ञान भारतीय ज्योतिष ग्रन्थों के आधार पर सम्पादित किया। तदनन्तर उन्हें टालमी के ग्रन्थों का पता चला। मुस्लिम जनता को हिंदू ज्योतिष शास्त्र का परिज्ञान सर्वप्रथम अलफज़ारी ने कराया। याकूब ने जब ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थ की रचना की तब खण्डखाद्य का अरबी अनुवाद हो चुका था। वह अनुवाद अलफज़ारी ने किया होगा।''*

इसी पुस्तक के पृष्ठ३०१ के अनुसार "बेरुनी के ग्रन्थ के आधार पर प्रोफेसर साचो लिखते

हैं:प्राच्य-सुधार के इतिहास में ब्रह्मगुप्त का स्थान बहुत ऊँचा है।*अरबनिवासियों को टालमी के ग्रन्थ का पता लगने के पहिले उन्हें ब्रह्मगुप्त ने ज्योतिष शास्त्र सिखाया* क्योंकि अरबी भाषा के साहित्य में 'सिन्धिद' और 'अल अरकन्द' ग्रन्थों के नाम बार-बार आते हैं और वे दोनों ब्रह्मगुप्त के *ब्रह्मसिद्धान्त* और *खण्डखाद्य* के अनुवाद हैं"!भाग २ पृष्ठ ३०४।"*खण्डखाद्य* की बलभद्रकृत टीका का उल्लेख बेरुनी ने बार-बार किया है। उसने *ब्रह्मसिद्धान्त* और *खण्डखाद्य* का अरबी में अनुवाद किया था। उसके पहले के अनुवाद अच्छे नहीं थे, ऐसा बेरूनी ने उनमें दोष दिखलाया है। ये अनुवाद अभी तक उपलब्ध नहीं हो सके है। बेरूनी सिन्धप्रान्त में बहुत दिनों तक रहा था। उसके लेखों के अनेकों स्थलों से प्रकट होता है कि उस समय सिन्ध में ब्रह्मगुप्त के ग्रन्थों का प्राधान्य था।''

वैसे भी इतना तो इन निरयण ज्योतिषियों को भी मानना ही पड़ेगा कि यदि अल्बेरूनी के समय में भारत में निरयण गणित अथवा फलित का प्रचलन होता तो कोई भी प्रचारक भारत से उस पद्धति को सीख कर अन्य देशों में उसके विपरीत सायन पद्धति का भारतीय कहकर प्रचार नहीं करता!

यह स्पष्ट करना बहुत आवश्यक है कि उपर्युक्त कथन का यह अर्थ कदापि नहीं लगाया जा सकता है कि अल्बेरुनी से पहले किसी और अरब या भारतीय विद्वान द्वारा किसी भारतीय खगोल ज्योतिष या फलित ज्योतिष के ग्रन्थ का अरबी में अनुवाद नहीं हुआ था। अवश्य हुआ है और यहांतक कि अलक्षेन्द्र के समय से ही भारत की विद्याओं का अन्य देशों के साथ आदान प्रदान रहा है। अल्बेरूनी के विषय में यहाँ विस्तार से इसलिए लिखा है क्योंकि उनके विषय में documentary proof *लिखित प्रमाण है।*

दिनवर्ष पद्धति ''बैबिलान'' की भी नहीं है : *बृहज्जातकम्* के सप्तम अध्याय के पहले ही श्लोक में जिन "मय, यवन, मणित्थ'' आदि ज्योतिषियों के नाम गिनाए गए हैं उनमें "यवन'' नाम तो यूनानी है ही है परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि "मय'' नामक यह व्यक्ति *सूर्य सिद्धान्त* से किसी प्रकार से जुड़ा हुआ है या उसी नाम का कोई अन्य व्यक्ति है। इतना तो यहां पर स्पष्ट हो ही जाता है कि यदि "दिन वर्ष पद्धति'' यूनानी मूल की होती तो वराहमिहिर के समय तक भारत में अवश्य आई होती और वराहमिहिर ने भी दशाभुक्ति के प्रसंग में अवश्य इसका खण्डन या मण्डन किया होता।

अब यदि यह कहा जाए कि होसकता है कि दिन वर्ष पद्धति प्राचीन ''बैबिलान'' से अरब देशों में प्रसारित हुई होगी तो यह भी असंगत ही है क्योंकि वह प्रत्यक्ष को छोड़ के अनुमान के पीछे भागने वाली बात हो जाती है। अभी तक तो पुरातत्त्व वेत्ताओं को बैबिलान की संस्कृति के विषय में बिल्कुल ही कुछ पता नहीं लग पाया है और जब हम ऊपर यह सिद्ध कर ही चुके हैं कि भारतवर्ष में "एक दिन को एक वर्ष मानने की परम्परा बहुत प्राचीन काल से ही चली आरही है'' तो उसकी उपेक्षा करके "बैबिलान'' की काल्पनिक संस्कृति को श्रेय देना मूर्खता ही है। अरब देशों की यह कोई मौलिक पद्धति नहीं है इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि जब हम उन देशों से "ताज़िक'' और "प्रश्न शास्त्र'' तथा "रमल'' सीख सकते थे, तो यदि यह पद्धति उनकी निजी पद्धति होती तो हमें यह उनसे सीखने में क्या आपत्ति हो सकती थी। इतना ही नहीं जब हम जैमिनी पद्धति जैसी बिना सिर-पैर की मण्डूक दशा-भुक्ति तथा ''आत्म कारक'', ''दारकारक'' आदि असंख्य कारकों को भी अपना सकते हैं, भले ही उससे हमारी तथाकथित पाराशरी दशा-भुक्ति पद्धति का सर्वनाश ही क्यों न होता हो, तो हम अरब देशों की दिनवर्ष पद्धति क्यों नहीं अपनाते। कम से कम किसी ज्योतिष ग्रन्थ में इस पद्धति का खण्डन या मण्डन तो हुआ ही होता। हमें वराहमिहिर के यह सर्वविदित उद्गार नहीं भूलने चाहिएं:

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।ऋषिवत्ते अपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैवविद्द्विजः।।
"यवन यद्यपि म्लेच्छ हैं परन्तु उनमें ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान उच्च कोटि का है।केवल इसी गुण से तो हम उनकी भी ऋषियों की भान्ति पूजा करते हैं ''। यह अलग बात है कि आजकल के वराहमिहिर सायन राशिचक्र आदि को इसलिए नहीं अपना रहे हैं कि "वह पाश्चात्य है' और किसी काल्पनिक देश को "असली वैदिक ज्योतिष का प्रवर्तक होने का श्रेय देरहे हैं" *जबकि पाराशरी सहित सारे ही "वैदिक ज्योतिष"ग्रन्थों में "अनफा, सुनफा, दुरूधरा व केमद्रुम" शब्दों से वही ग्रन्थ"विदेशी सिद्ध होते हैं।*

यहाँ पर यह स्पश्ट करना भी अत्यावश्यक है कि वेदों के इस सिद्धान्त को कि "एक दिन एक वर्ष के समान है'' दैनिक जीवन या फलित ज्योतिष में लागू करने का काम कभी भी किसी जनसाधारण का नहीं होसकता है अपितु वास्तव में ही किसी उच्चकोटि के सिद्धपुरुष का है और यह भी होसकता है कि महाभारत के समय में ही इसका प्रचलन रहा हो परन्तु वह ग्रन्थ हमतक पहुंचने के बदले अन्य देशों में पहुंच गए।

ब्रह्मगुप्त का *ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त* भी सायन वर्षमान पर ही आधारित है:-

इसी "भारतीय ज्योतषि'' पुस्तक के अनुसार ब्रह्मगुप्त का "ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त'' ग्रहगणित की एक अत्युत्तम कृति है और वह मेष संक्रान्ति को वेध द्वारा विषुव के साथ पूरी तरह मिलाना चाहता था। शंकर बालकृष्ण दीक्षित के शब्दों में पृष्ठ ३०५ परः "उपर्युक्त विवेचन द्वारा सायन गणना की पोषक यह एक बात ज्ञात हुई कि ब्रह्मगुप्त के मत में सायन रवि सक्रमण ही वास्तविक रवि संक्रमण था। उसके अनुसार उनका उद्देश्य वर्षमान बदलने का था और उन्होंने बदला भी। यदि वे यावज्जीवन वेध करके

उसकी तुलना करते तो उनके सरीखे अन्वेषक को सायनवर्ष का वास्तविक मान ज्ञात होना कठिन नहीं था। सम्भव है, सायनवर्ष का शुद्ध मान जानते हुए भी उन्हें परम्परागत वर्षमान छोड़ने का साहस न हुआ हो।'' शंकर बालकृष्ण दीक्षित का पृष्ठ ६८१ पर यह कथन कितना महत्त्वपूर्ण है कि: ''हमारे प्राचीन ग्रन्थ अपौरुषेय हैं और सर्वांगपूर्ण हैं यह विश्वास ज्योतिष शास्त्र की उन्नति के लिए बड़ा घातक सिद्ध हुआ। वैसे ही यद्यपि आर्यभट्ट तथा ब्रह्मगुप्त के ग्रन्थ पौरुषेय थे तथापि उनमें अपौरुष ग्रन्थों के समान श्रद्धा रखने के कारण इस शास्त्र की क्रमोन्नति के मार्ग में अनुल्लंघनीय बाधाएँ उपस्थित हो गई।'' *बिल्कुल ठीक यही परिस्थिति आजकल के इन "वैदिक ज्योतिषियों'' की भी है जो केवल अपनी निर्मूल मान्यताओं के कारण ही "निरयण ज्योतिर्गणित'' को वैदिक ज्योतिष कहते हैं यद्यपि वास्तविक वैदिक ज्योतिष के साथ उसका दूर का भी नाता नहीं है।* शंकर बालकृष्ण दीक्षित का यह कथन इस सन्दर्भ में कितना उपयुक्त है कि "जो वर्षमान पहले से अर्थात् *सूर्य सिद्धान्त* काल से, चला आ रहा था उसकी शुद्धता की ही नहीं गई। इसलिए वर्तमान पंचांग शुद्धि के मार्ग में जो सबसे बड़ी समस्या है वह वर्षमान को शुद्ध करने की है। ब्रह्मगुप्त ने प्रथम अनुभव किया कि विषुवदिन पहले से पीछे हटा है। परन्तु अन्तर का मान यद्यपि आर्यभट्ट के समय से अर्थात् केवल १५० वर्ष का था तथापि परम्परागत विश्वास के कारण कलियुगारम्भ से इतना अंन्तर पड़ा होगा ऐसा समझकर ३७०० वर्षों में उसको बांट दिया गया । *ऐसा न होता तो ब्रह्मगुप्त ने ही सायन वर्षमान का प्रचार किया होता। और यदि उसने ऐसा किया होता तो आज उसके लिए इतने प्रयास न करने पड़ते।''* पता नहीं कि आजकल के इन निरयण ज्योतिषियों में इस अकाट्य तथ्य को मानने का साहस क्यों नहीं है?

अलफज़ारी तथा अल्बेरूनी आदि ने भारतीय फलित-ज्योतिष ग्रन्थों का जो उस समय आदिम रूप में उपलब्ध थे अनुवाद करके "सेकण्डरी प्रोग्रेशन'' अर्थात् दिन-वर्ष आदि पद्धतियों का उपयोग किया जिनका बाद में पश्चिम में प्रचार-प्रसार हुआ।

दिनवर्ष पद्धति भारत से ही अन्य देशों में कैसे प्रचलित-प्रसारित हुई?

अबतक तो यह स्पष्ट हो गया कि सायन भोगांशों का प्रयोग तथा "सेकण्डरी प्रोग्रेशन'' अर्थात् 'दिन-वर्ष पद्धति'' जिनको हम "पाश्चात्य'' कहते हैं तथा "पाश्चात्य लोग'' जिनको "अरब'' का बताते हैं वास्तव में भारतीय खगोलिकी तथा भारतीय फलित ज्योतिष की सन्तान हैं और केवल इन का ही वैदिक आधार है अतः केवल वह प्रणालियां ही वास्तविक "वैदिक ज्योतिष'' कहलाने के योग्य हैं "नेदं यदिदमुपास्यते'' वह निरयण ज्योतिष वैदिक नहीं है जिसको हम इस समय तक मानते आए हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह भी स्पष्ट होगया कि अरब देश वालों ने हम से यह विद्याएं सीख कर इन का प्रचार-प्रसार पश्चिमी देशों में किया। कैसे? आइए देखते हैं। ऐसा लगता है कि जो स्थिति रमल शास्त्र के साथ हुई वही ''सेकण्डरी प्रोग्रेशन'' के साथ भी हुई। ''भारतीय ज्योतिष'' के पृष्ठ ६४१ पर शंकर बालकृष्ण दीक्षित लिखते हैं: "रमल शब्द अरबी भाषा का है और इस समय संस्कृत में इस विषय के जो ग्रन्थ उपलब्ध हैं उनमें पारिभाषिक शब्द प्रायः अरबी के ही हैं। इससे आपाततः यह विद्या मुसलमानों की प्रतीत होती है पर बात ऐसी नहीं है। बावर नामक एक यूरोपियन को प्राचीन गुप्त राजाओं के समय की लिपि में भोजपत्र पर लिखी हुई एक पुस्तक मिली है। उसमें भिन्न भिन्न तीन विषयों का वर्णन है। वह सन् ३५० और ५०० के मध्य मे लिखी गई है---वह सिद्ध हो चुका है। उसमें आधुनिक रमल सरीखी पद्धति है परन्तु पारिभाषिक नाम अधिकतर संस्कृत और कुछ प्राकृत हैं। तंजौर के पुस्तकालय में गर्गसंहिता की एक प्रति है। उसमें पाशकावलि नामक २३५ श्लोकों का एक प्रकरण है। मैंने देखा, उसके एक श्लोक में दुन्दुभि शब्द आया है जो कि उपर्युक्त पुस्तक में भी है। इससें सिद्ध होता है कि रमल विद्या इसी देश की है। बावर की पुस्तक की पाशकावलि की भाषा से अनुमान होता है कि वह शक काल के तीन चार सौ वर्ष पहिले की होगी इससे सिद्ध होता है उस समय हमारे देश में यह विद्या थी। बाद में इसके मूल संस्कृत ग्रन्थ लुप्त हो गये और उसके बाद अरबी ग्रन्थों के आधार पर संस्कृत में ग्रन्थ बनने लगे''। यही बात दिनवर्ष पद्धति के साथ भी हुई है!

दिनवर्ष पद्धति की प्रक्रिया भी वैदिक ही है:- आइए अब यह देखते हैं कि यह "सेकण्डरी प्रोग्रेशन्स'' या "दिन-वर्ष पद्धति'' है क्या और यदि यह मान भी लिया जाए कि इसके मूल स्रोत वेद ही हैं तब भी हम यह कैसे कह रहे है कि इस पद्धति की प्रक्रिया भी वैदिक है:

इस पद्धति की प्रणाली अंशात्मक कोणों पर आधारित है अर्थात् एक ग्रह दूसरे ग्रह को ०, ३०, ४५, ६०, ६०, १२०, १८० आदि अंशों की दूरी से प्रभावित करता है। जन्म के पश्चात् का प्रत्येक सायन सौर दिन प्रति वर्ष की स्थिति को दर्शाता है अर्थात् यदि हमें अपने २४वें वर्ष के विषय में जानना है तो हमें जन्म के पश्चात् २४वें दिन की ग्रहों की स्थिति देखनी होगी कि वह ग्रह जन्मकालीन ग्रहों अथवा लग्न या दशम भाव स्पष्ट से या तत्कालीन स्थिति में आपस में कौन सा कोण बनाते हैं अथवा उस २४वें दिन का लग्न व दशम भाव स्पष्ट जन्मकालीन ग्रहों के साथ या तत्कालीन ग्रहों के साथ कौन सा कोण बनाते है। जैसा कि ज्योतिर्विद्या का एक नौसिखिया भी जानता है सूर्य और चन्द्रमा जातक के दो आधार स्तम्भ माने जाते हैं। और क्या आप जानते है कि तिथि अथवा करण का क्या अभिप्राय है? करण सूर्य और

चन्द्रमा के प्रति छः अंशों का और तिथि १२ अंशों का पारस्परिक अंशात्मक अंतर है जो निम्न वैदिक कथनानुसार अमावस्या में परिणत हो जाता है:-

चन्द्रमा अमावस्यामादित्यमनुप्रविशति आदित्याद्वै चंद्रमा जायते।।ऐत. ब्रा. ४० . ५

अर्थात् "अमावस्या पर चन्द्रमा सूर्य में प्रविष्ट होकर पुनः जन्म लेता है।'' और वेद भगवान ही इस समय के अखिल ब्रह्माण्ड में एक मात्र ऐसे ग्रन्थ हैं जिनमें एक बार नहीं अपितु अनेकों बार तिथियों का वर्णन मिलता है। वास्तव में भारतवर्ष ही सारे विश्व में एक मात्र ऐसा देश है जो कि इस प्रकार के सायन पद्धति के दृष्टि संकलन का अवलम्बन करता है और जिन पर उनका सारे का सारा कर्मकाण्ड़ निर्भर करता है। यद्यपि मुसलमानों का "हिजरी'' कैलेण्ड़र भी सूर्य और चन्द्रमा के पारस्परिक दृष्टि संकलन पर आधारित है परन्तु वह इससे भिन्न है और यह भी हो सकता है कि उस कैलेण्ड़र की रूप-रेखा भी उन ने भारतवर्ष से ही प्राप्त की हो। पुनश्च यद्यपि भारतवर्ष ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ भिन्न-भिन्न तिथियों में जन्म लेने का फल बताया जाता है और भारतवर्ष ही शायद एकमात्र ऐसा देश है जहां चन्द्र तिथियों के अनुसार जन्म या पुण्य तिथि मनाई जाती है जैसे चैत्र शुक्ल पक्ष में रामनवमी। पर कितने दुःख की बात है कि आजकल की यहाँ की "ज्योतिष की दुकानें'' अपने चेलों को सीधे ग्रहों के फल पर ले जाती हैं, तिथियों को बीच में ही छोड़कर! अस्तु, यही पारस्परिक अंशात्मक योग न केवल सूर्य-चन्द्रमा पर अपितु अन्य ग्रहों पर तथा लग्न-दशम पर भी जब प्रयोग में लाया जाता है तो "आस्पेकटेरियन'' या "स्पेक्यूलम'' अर्थात् ग्रहों का पारस्परिक अंशात्मक अन्तर कहलाता है। इस प्रकार यह वास्तव में तिथि और करणों का ही एक विकसित रूप है। इसी प्रकार सारा-ऋतु-चक भी तो मानो उन ही "दृष्टि संकलनों'' पर टिका हुआ है क्योंकि दोनों सम्पात-बिन्दु तथा अयन बिन्दु अर्थात् सायन मेष, कर्क, तुला तथा मकर राशि के शून्य अंश परस्पर में सदा ही ६० अंशों का कोण बनाए रखते है! फिर भी हम यह कहते हैं कि "यह दृष्टि संकलन तो पाश्चात्य हैं'' कैसी विडम्बना है यह? इसी प्रकार *सूर्य सिद्धान्त* में वैधृति-व्यतीपात पर एक पूरा अध्याय है फिर भी हम यह कहते हैं कि क्रान्ति साम्य एक पाश्चात्य "आसपेक्ट'' है! यह केवल हठ-धर्म और अल्पज्ञता ही हैं!

वैदिक खगोलिकी के अनुसार जन्मकालीन भावस्पट भावमध्य नहीं है अपितु भाव का आरम्भ है ''दिन वर्ष'' पद्धति की भान्तिः- निरयण पद्धति की ही एक ओर विडम्बना है, लग्नस्पष्ट या अन्य भावों को भावमध्य माना जाता है इसलिए क्योंकि तथाकथित "पाश्चात्य'' सायन पद्धति में उनको भाव का आरम्भ माना जाता है-- और भला जिस बात को सायन पद्धति वाले मानते हूँ उसको ही यदि हम भी मानें तो हमारे तथाकथित "वैदिक ज्योतिष'' की हेठी नहीं होगी चाहे वह "सायन पद्धति वालों की मान्यता'' हमारे ही खगोलिकी और वास्तविक परम्पराओं के अनुसार क्यो न हो? कैसे? देखियेः उल्टे सीधे शब्दों का सहारा लिए बिना ही हम यह कह सकते हैं कि औदयकालिक अर्थात् सूर्योदय के समय वही लग्न उतनी ही राशि अंश, कला, विकला होते हैं जितने कि उस समय सूर्य के भोगांश होते हैं। और यह बात तो धर्मशास्त्र से अनभिज्ञ लोगों को भी ज्ञात ही है कि भारतवर्ष में तो दिन सूर्योदय से ही प्रारम्भ माना जाता है और यदि कोई तिथि, नक्षत्र, या योग पिछले दिन के सूर्योदय के बाद प्रारम्भ होकर आजके सूर्योदय से एक मिनट, यहाँ तक कि एक सेकण्ड पूर्व भी समाप्त हुआ हो तो उसके विषय में कहा जाता है कि वह तिथि या नक्षत्र आदि ''क्षय'' है क्योंकि वह न पिछले सूर्योदय के समय विद्यमान थे और न आज के सूर्योदय के समय ही। इसी प्रकार दिन अर्थात् वार भी सूर्योदय वाला ही लिया जाता है। वेदों के भी अनेक वचन इस आशय के हैं कि "सूर्योदय के साथ ही जो रात्रि में मृतकों के समान थे, पुनर्जीवित होगए''। इसका अभिप्राय यह हुआ कि सूर्योदय से एक मिनट, यहां तक कि एक सेकण्ड पूर्व जन्म लेने वाले के विषय में यह कहा जाएगा कि उसने पिछले वार, तिथि या नक्षत्र आदि में जन्म लिया है। परन्तु यह निरयणवादी तब भी यही कहते हैं कि "तनु'' तो हमारा तब "आधा'' है यानी चाहे कुछ भी हो, जन्म हमने भले ही सूर्योदय के बाद लिया हो, तिथि, नक्षत्र, योग और करण या दिन भले ही सब सूर्योदय के बाद के हों परन्तु "तनु'' का प्रारम्भ तो हम तब भी सूर्योदय से पहले का ही मानेंगे क्योंकि उन्हें "पाश्चात्य वादियों'' से भिन्न दिखना है। भले ही इसमें उन्हें कोई प्रमाण उपलब्ध हो या नहीं हो, वह उनको ज़बर्दस्ती पैदा करेंगे! यह सब केवल इसलिए कह रहे हैं कि इन्हें यह बार-बार जतलाया गया है कि सायन पद्धति विदेशों की है जबकि हमारे सारे प्रमाण, यहाँ तक कि भाव-स्पष्ट के प्रमाण भी, चिल्ला-चिल्ला कर यह कह रहे हैं कि सायन पद्धति ही वैदिक पद्धति है!

वास्तविक नक्षत्रों/तारों के भोगांश भी वैदिक खगोलिकी के अनुसार सायन हैं, निरयण नहीं:- ग्रहों की पारस्परिक अंशात्मक योगों की जब बात करते हैं तो हम ग्रहों और नक्षत्रों का पारस्परिक दृष्टि संकलन भला कैसे भूल सकते है? वेदों में नक्षत्रों के बारे में भी अनेक बार उल्लेख है। "मूल यजुर्वेद संहिता'' में पृष्ठ १३८ पर इन नक्षत्रों का उसी क्रम से वर्णन है जिस क्रम से आजकल प्रचलित है अन्तर केवल इतना है कि वहाँ पर उनको कृत्तिका से प्रारम्भ होते कहा है ना कि अश्विनी से और इसके कारण तथा व्युत्पत्ति की भी हम आगे इन ही पृष्ठों में विवेचन करेंगे। *आश्चर्य तो यह है कि अरब देशों, चीन तथा भारतवर्ष में नक्षत्रों का एक ही क्रम पाया जाता है और इससे यही सिद्ध होता है*

कि इनका मूल स्रोत भी एक ही है और यह भी हो सकता है कि वह स्रोत वेद ही हों। परन्तु जैसा कि भारतवर्ष में इन "वैदिक ज्योतिषियों'' द्वारा होता रहा है इन नक्षत्रों के क्षेत्र को भी जटिल बनाए बिना नहीं छोड़ा गया।

वास्तविकता यह है कि श्रीमद्भागवत के पांचवें स्कन्ध; २२वें अध्याय के पांचवें और छठे श्लोक में स्पष्ट कथन है कि:

"अथ स एष आत्मा लोकानां द्यावापृथिव्योरन्तरेण नभोवलयस्य कालचक्रमतौ द्वादशमासान् भुंक्ते राशि संज्ञान संवत्सरावयवान् मासः पक्षद्वयं दिवा नक्तंचेति सपादर्क्ष द्वयमुपदिशन्ति"

इसमें सूर्य के एक राशि संक्रमण में एक सौर मास---दो पक्ष--तथा सवा दो नक्षत्रों का वर्णन है। *जैसा कि हम निर्विवाद रूप से सिद्ध कर चुके हैं यह सायन संक्रमण का ही वर्णन है किसी निरयण का नहीं और उसी मे "नक्षत्रों'' को भी साथ में जोड़ा गया है।*

इसी बात को *सूर्य सिद्धान्त* के मानाध्याय के १६वें श्लोक में इस प्रकार दोहराया गया है:

कार्तिकादिषु संयोगे कृत्तकादि द्वयं द्वयं। अन्त्योपान्त्यौ पंचमश्च त्रिधा मासास्त्रयस्स्मृताः।।

''कार्तिकादि मासों का संयोग कृत्तिकादि नक्षत्रों से दो-दो के साथ होता है केवल अन्तिम मास और उससे ठीक पहले मास का तथा पांचवे मासों का संयोग तीन-तीन नक्षत्रों से होता है।''

इससे पहले १५वें श्लोक में चन्द्र मास का नाम पौर्णिमान्त नक्षत्र के आधार पर रखने को कहा गया है अतः यह वर्णन भी चन्द्र मासों के ही सम्बन्ध में है परन्तु ऊपर श्रीमद्भागवत के अनुसार वह वर्णन सौर मास का है। साथ ही साथ भारतवर्ष के जितने भी सिद्धान्त ग्रन्थ हैं उनमें प्रत्येक ग्रन्थ में नक्षत्रों के योगताराओं के ध्रुवाभिमुख शर तथा भोग आदि निकालने की विधि दी गई है। कई ग्रन्थों में तो इन योगताराओं के तत्कालीन भोग और शर आदि भी दिए गए है। समस्या तब जटिल हो जाती है जब हम इन योगताराओं को तथा राशिचक के १३अंश २० कलाओं के २७ "नक्षत्रों'' को एक मान बैठते है केवल इसलिए कि दोनों के नाम एक जैसे है। क्योकि यह समस्या भी कुछ कम गम्भीर नहीं है अतः इसको ठीक प्रकार से समझना परमावश्यक है:

कहा जाता है कि "निरयण' मेष के शून्य बिन्दु से प्रारम्भ होकर प्रत्येक नक्षत्र १३ अंश २० कला तक रहता है जैसे अश्विनी नक्षत्र "निरयण'' मेष राशि के ० अंश से प्रारम्भ होके उसी राशि के १३ अंश २० कला तक, फिर उसके बाद भरणी नक्षत्र उसी राशि के २६ अंश ४० कला तक और तत्पश्चात् कृत्तिका नक्षत्र ''निरयण'' वृषभ राशि के १० अंश तक रहता है इत्यादि। अब इससे तो एक जगहंसाई कराने वाली स्थिति बन गई है। उदाहरणार्थ इन पंक्तियों को १७ जोलाई १९६४ को लिखना प्रारम्भ किया गया था जबकि पंचांगों में यह दर्शाया गया थौ कि स्वाति नक्षत्र १६ जोलाई १९६४ के १८ घं ५१ मि. से प्रारम्भ होकर १७ जोलाई को १७ घं २४ मि. तक रहेगा क्योकि उस दिन उस समय चन्द्रमा "निरयण'' तुला राशि के २० अंश को पार कर लेगा। आइए अब देखते हैं कि वास्तव में चन्द्रमा की स्वाति तारे के साथ युति कब हुई। उस दिन स्वाति तारे के "निरयण'' भोगांश थे तुला राशि के ० अंश २२ कला १६ विकला जिससे यह तात्पर्य निकलता है कि चन्द्रमा की युति उस नक्षत्र के साथ १६ जोलाई --- न कि १७ जोलाई को ---- हुई थी और वह भी प्रातः ८ बजकर ६ मिनट पर अर्थात् पूरे ११ घंटा पूर्व जबकि चन्द्रमा ने उस समय वास्तव में स्वाति नक्षत्र की सीमा के भीतर प्रवेश भी नही किया था और यह "सर्वज्ञ" पंचांगकार यह कह रहे हैं कि चन्द्रमा उस समय स्वाति में था। अब स्पष्ट ही है कि जब यह चमत्कारी फलित-ज्योतिषी उस समय जन्म लेने वाले किसी जातक की कुण्डली बनाएंगे तो स्वाभाविक ही है कि वह उस जातक का स्वाति नक्षत्र के अनुसार नामकरण करेंगे, फिर फल कहना शुरू करेंगे और उस जातक के बारे में यह कहा जाएगा कि "इस का जन्म स्वाति नक्षत्र, अन्त्य नाड़ी, देव गण तथा महिष योनि में हुआ है'' और यदि उसका जन्म १७ जोलाई को छः बजे सायं हुआ हो तो वह वास्तविक स्वाति नक्षत्र को पूरे १६ अंश अर्थात् लगभग डेढ़ नक्षत्र पीछे छोड चुका होगा और उसने वास्तव में विशाखा नक्षत्र के अन्तिम चरण में जन्म लिया है। उस बेचारे की विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी आदि दशा-भुक्तियाँ आदि भी उसी आधार पर निकाली जाएंगी जबकि वह व्यक्ति उस नक्षत्र को कई प्रकाश वर्षो से पीछे छोड़ चुका है। और भी मज़ेदार बात यह है कि उस के विवाह के समय उसके लिए पत्रियां भी इसी नितान्त गलत आधार के "नाडी'', "गण'' आदि आधारों पर मिलाई जाएगी। यदि ठीक प्रकार से देखा जाए तो चित्रा और स्वाति नक्षत्र के बीच बहुत थोड़ा अर्थात् एक अंश से भी कम अन्तर है जिसका यह अर्थ निकलता है कि आजकल "सायन तुला राशि के २३/२४ अंशों के बीच जन्म लेने वाला व्यक्ति इन दोनों ही नक्षत्रों के प्रभाव से प्रभावित होगा''। अब स्पष्ट ही है कि वेदों ने कभी इस प्रकार की कल्पना भी नहीं की होगी कि हम इस प्रकार के नक्षत्र-चक्र का "आविष्कार'' करेंगे जो वास्तविक स्थिति से कोसों दूर हो। उन का तो यह अभिप्राय रहा होगा कि किसी भी नक्षत्र के साथ किसी भी ग्रह की वास्तविक युति तभी कही जासकती है जब दोनों के भोगांश एक ही जैसे हों ।

वास्तव में *वाल्मीकि रामायण* में राजा दशरथ के स्पष्ट शब्द हैं: "अवष्टब्धं च मे नक्षत्रं दारुणैः ग्रहैः'' अर्थात् "मेरे नक्षत्र को दारुण ग्रहो ने स्तम्भित कर रखा है'' जिसका यह अर्थ निकाला जा सकता है कि महाराजा दशरथ का जन्मकालीन चन्द्रमा जिस नक्षत्र के साथ उस समय युति करता था उस नक्षत्र

के साथ अब उस समय अर्थात् जब वह राम के राज्याभिषेक के बारे में विचार कर रहे थे तब, मंगल, शनि, राहु आदि क्रूर ग्रह युति या प्रतियुति कर रहे होंगे। यह युतियाँ/प्रतियुतियाँ भी वास्तव में अंशात्मक योग ही हैं जो जातक के "सेकण्डरी प्रोग्रेशन" अथवा गोचर में प्रभाव दर्शा रहे होंगे। इसी सिद्धान्त को और स्पष्ट रूप से हृदयंगम कराने के लिए हम *महाभारत* का यह उद्धरण प्रस्तुत करते हैं:

स तस्यास्तनुमध्यायाः समीपे रजनीचरः। ददृशे रोहिणीमेत्य शनैश्चरिव ग्रहः।। वन० २८१/६
"वह रावण तो उस सूक्ष्म कटि वाली सीता के समीप ऐसा लग रहा था मानो रोहिणी नक्षत्र के पास शनैश्चर ग्रह हो" अब रोहिणी नक्षत्र की अवधि के बारे में यह कहा जाता है कि वह "निरयण" वृषभ राशि के १० अंशों से प्रारम्भ होके उसी राशि के २३ अंश २० कला तक रहता है जबकि उस नक्षत्र के वास्तविक निरयण भोगांश उसी राशि के १६ अंश हैं। स्पष्ट ही है कि यह उपमा बिल्कुल ही निरर्थक हो जाती है यदि हम यह मान कर न चलें कि शनि की रोहिणी नक्षत्र के तत्कालीन वास्तिवक भोगांशों के साथ युति की ही उपमा दी गई है। अतः प्रत्येक नक्षत्र की अवधि जो १३ अंश २० कला समान रूप से मानी जाती है यह न केवल खगोलिकी के दृष्टिकोण से अपितु शास्त्रीय प्रमाणों के भी विरुद्ध ही है। यही बात हमने अपने १९९३ के पंचांग में रोहिणी शकटभेद का वर्णन करते बार-बार दोहराई थी कि सूर्य सिद्धान्तकार ने इस योग के लिए यह स्पष्ट किया है कि यह युति भोगांशों की वास्तिवक युति होनी चाहिए तथा शर आदि भी तदनुसार ही होने चाहिएं।

सूर्य सिद्धान्त तो इस विषय में नक्षत्र ग्रह युति अधिकार के १३वें श्लोक में दो टूक कह रहा है कि रोहिणी शकट भेद के लिए उस ग्रह के भोगांश वृषभ राशि के १७ अंश होने चाहिएं और साथ में शर भी दो अंश से अधिक होना चाहिए -- और वह भी दक्षिण शर। यदि उनको इन निरयण भक्तों की भान्ति एक काल्पनिक नक्षत्र भाग ही विवक्षित था तो केवल यही कहने से काम चलता कि जब भी कोई ग्रह वृषभ राशि के १० अंशों में होगा वह रोहिणी शकट भेद करेगा और तबतक करता रहेंगा जबतक वह उस राशि के २३ अंश २० कला पार न करले।

इससे यह भी स्पष्ट रूप से सिद्ध होजाता है कि मुहूर्त, दशा-भुक्ति, पत्री मेलापक ---- अर्थात् संक्षेप में धार्मिक या ज्योतिष ---- भले ही वह फलित ज्योतिष ही क्यों न हो----- सभी प्रकार के कार्य कलापों के लिए हम ऐसा नक्षत्र मान लेते हैं जो न केवल अर्थहीन तथा भ्रमित करने वाला है बल्कि खगोलिकी और शास्त्रीय सिद्धान्तों के विरुद्ध भी है और इससे अत्यधिक समस्याएं खड़ी हो सकती हैं। वैसे तो यह फलित ज्योतिषी "दृक् गणित" अर्थात् ग्रहों या नक्षत्रों की वास्तविक स्थिति की दोहाई देते हैं पर जब पंचांग की बिक्री का या जनसाधारण को मूर्ख बनाकर धन कमाने का प्रश्न आता है तो दुनिया भर के टोटके प्रयोग में लाए जाते है जिनमें में से एक टोटका यह काल्पनिक नक्षत्र, योग आदि और उसपर आधारित मेलापक का है--जिसका आगे विचार होगा। अतः स्वाभाविक है कि ऐसे पंचांग और ऐसे मेलापक आदि ना तो दृक् ही हैं न शास्त्रीय ही, यदि हैं तो बस लकीर के फकीर।

सूर्य की वास्तविक आर्द्रा नक्षत्र के साथ युति ही वैदिक आर्द्रा प्रवेश है:-

भारतवर्ष के ज्योतिषी 'राष्ट्रों का भविष्य बताने के लिए' प्रति वर्ष "आर्द्रा प्रवेश" की विशेष कुण्डली बनाते हैं। वैसे तो इसका अर्थ यही होना चाहिए कि "सूर्य जिस समय आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करे उस समय की कुण्डली"। पर क्या आप जानते हैं कि यह कुण्डली किस समय के लिए बनती है? जब सूर्य के "निरयण" भोगांश मिथुन राशि के ६ अंश ४० कला होते हैं जबकि वास्तव में उस नक्षत्र के सरकारी "निरयण" भोगांश आजकल हैं मिथुन राशि के ही ४ अंश ५४ कला अर्थात् जिस समय यह पंचांगकार यह कहते हैं कि वह ग्रह तो अभी मृगशिरा नक्षत्र में ही है! इस बात की हैरानी होती है कि यह ज्योतिषी कैसे यह घोषणा करते हैं कि उन गलत प्रवेश कुण्डलियों के फल सही आगए! यही हाल अश्विनी नक्षत्र के विषय में है। कहा जाता है कि रवि अथवा अन्य कोई ग्रह निरयण मेष राशि में प्रवेश करने के साथ ही अश्विनी नक्षत्र में भी प्रवेश करता है जबकि वास्तव में वह तारा आजकल उस निरयण भोगांश से दस अंशों से भी अधिक दूरी पर है। और यदि कोई खगोलिकी का ज्ञान रखने वाला वैज्ञानिक हमसे इस गलत धारणा और फलित के विषय में कुछ पूछता है तो यह उसे "नास्तिक, मूर्ख, अज्ञानी" आदि उपाधियों से विभूषित करते हैं ------अपने लिए "ज्योतिष सम्राट्", "गणक मार्त्तण्ड", "गणक भास्कर" आदि उपाधियां लेकर -- भले ही यह स्वयं वास्तविक ज्ञान से कोसों दूर हों।

वास्तविक स्थिति को समझाने के लिए यहां यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि आज से कोई ६४०० वर्ष पूर्व आर्द्रा नक्षत्र के वास्तविक मध्यम भोग सायन मेष राशि के शून्य अंश थे अर्थात् उस समय सूर्य की युति जब इस नक्षत्र से होती थी तभी वसन्त सम्पात होता था और सौर नववर्ष भी प्रारम्भ होता था। कैसे? देखिए: जैसा कि आप इस पंचांग के अन्तिम पृष्ठ से देख सकते हैं इन दिनों आर्द्रा नक्षत्र के सायन मध्यम भोगांश हैं ८८अंश ४२ कला। प्रति ७२ वर्ष एक अंश के हिसाब से यह भोगांश शून्य थे: ७२ गुणा ८८-४२ = ६४०० वर्ष पूर्व।क्योंकि राशि चक्र का ३० अंशों का काल्पनिक समान भागात्मक विभाजन तब तक प्रचलित नहीं हुआ था अतः वह वास्तविक वैदिक ज्योतिषी उस समय "आर्द्रा प्रवेश" को इसलिए महत्व देते थे क्योंकि तभी सूर्य का वसन्त सम्पात होता था। अब आजकल के "वैदिक

ज्योतिषी'' तो न वास्तविक वसन्त सम्पात को और न आर्द्रा प्रवेश को ही लेते हैं वह तो साँप निकलने पर केवल लकीर पीटते रहते हैं और घोषणा करते हैं कि उस लकीर को पीटने से "हमें सही फलित मिल रहे हैं''! यहाँ यह बात भी स्पष्ट करना परमावश्यक है कि नक्षत्रों के साथ यह युतियाँ केवल प्रतीकात्मक ही हैं क्योंकि अन्यथा हमारी आकाश गंगा का निकटतम तारा भी हमसे तीन प्रकाश वर्षो की दूरी पर है और हमारे सूर्य से भी कई लाख गुणा बड़ा अतः यदि यह माना जाए कि यह युति वास्तविक है तो उसका यह अभिप्राय हुआ कि रेत का एक कण लाखों मीलों की दूरी से हिमालय पर्वत से युति कर रहा है!

समान विभाग "नक्षत्रों" को उसी नाम के तारों --योगताराओं---(नक्षत्रों) से जोड़ना हमारे खगोलिकी के ज्ञान के अभाव को दर्शाता है: हमें यहाँ विवश होकर एक बार फिर वही शब्द दोहराने पड़ रहे हैं जो हमने १९९४ के अपने पंचांग के पृष्ठ १६ पर कहे थे: "निरयण ज्योतिषियों को एक ओर ज़बर्दस्त गलतफहमी यह भी है कि राशिचक्र को १३अंश २०कला के समान विभाग वाले नक्षत्रचक्र के साथ जोड़ने से हमने उन नक्षत्रों के साथ सदा के लिए संबन्ध स्थापित किया है अतः यह निरयण राशिचक्र सवीपरि है।"परन्तु वास्तव में यह एक बिल्कुल गलत व निराधार धारणा है जैसा कि इस तालिका से स्पष्ट होगा:

नक्षत्र नाम	निरयण परिमाण रा अं क वि से	 रा अं क वि तक	तारा	सरकारी नि० भोगांश	निरयण भो से अन्तर
आर्द्रा	०२-०६-४०-०	०२-२०-००-००	आर्द्रा	०२-०४-५३-५१	-१अं ४६ क
स्वाति	०६-०६-४०-०	०६-२०-००-००	स्वाति	०६-००-२२-३६	-६अं १७ क
ज्येष्ठा	०७-१६-४०-०	०८-००-००-००	ज्येष्ठा	०७-१५-५४-१८	-०अं ४६ क
पूर्वाषाढ़ा	०८-१३-२०-०	०८-२६-४०-००	पूर्वाषाढ	०८-१०-४३-२६	-२अं ३७ क
उत्तराषाढ़ा	०८-२६-४०-०	०९-१०-००-००	उत्तराषा	०८-१८-३१-४१	-८अं ०८ क
धनिष्ठा	०९-२३-२०-०	१०-०६-४०-००	धनिष्ठा	०९-२२-२६-०४	-०अं ५१ क
अभिजित	०९-०६-४०-०	०९-१०-५३-२०	अभिजित	०८-२१-२७-३१	-१५अं १३ क

ऊपर की तालिका में निरयण परिमाण से अभिप्राय है वही सदाबहार १३अंश २० कलाओं का निरयण राशियों में उस नक्षत्र विभाग का प्रारम्भ और अन्त और सरकारी निरयण भोगांशों से अभिप्राय है १ जनवरी १९९६ को उस नक्षत्र विभाग से मिलते जुलते नाम वाले तारों के वास्तविक सायन मध्यम भोगांश जिनमें से २३अंश ४८कला सरकारी अयनांश घटाया गया है।

इस तालिका में जैसा आप देख रहे होंगे कुल २८ नक्षत्रो में से ७ अर्थात् २५ प्रतिशत नक्षत्र तो ऐसे हैं जो वास्तव में पिछले नक्षत्र की परिधि में आते हैं जैसे आर्द्रा नक्षत्र जो मिथुन राशि के ६अंश ४० कला से प्रारम्भ माना जाता है वास्तव में उसी राशि के ४ अंश ५४ कला पर है अतः उस हिसाब से मृगशिरा नक्षत्र में ही है। इसी प्रकार अन्य २१ नक्षत्रों में से यदि कोई नक्षत्र उस विभाग के प्रारम्भ में ही है जैसे मूल नक्षत्र धनु राशि के प्रारम्भ में तो कोई अन्य नक्षत्र अपने "विभाग" के अन्त में है जैसे भरणी नक्षत्र मेष राशि के २१अंश २४ कला पर। क्योंकि यह निरयणवादी कहते हैं कि सब के सब नक्षत्रों के निरयण मध्यम भोगांश आज से सहस्त्रों वर्ष पूर्व भी उतने ही थे जितने कि आज हैं जिसका यह अभिप्राय निकलता है कि भीष्मपितामह के प्रपितामह भी ऐसे ही बिना सिर-पैर के किसी सम विभाग वाले नक्षत्र विभाग को मानते थे। अतः दूसरे शब्दों में यह पंचांगकार यह कहना चाहते हैं कि इनकी सर्वज्ञता के सामने हमारे पूर्वजों की अक्ल घास चरने गई थी!

कैलेण्डर रिफार्म कमीटी रिपोर्ट में जो पृष्ठ १८३/८४ पर कहा गया है उसको एक बार यहाँ पुनः दोहराना आवश्यक है: "हमें इस बात का कोई ज्ञान नहीं है कि भारतवर्ष में नक्षत्र विभागों के प्रारम्भ और अन्तिम बिन्दु किस आधार पर निर्धारित किए गए थे। .. यदि हम नक्षत्र चक्र को रेवती तारे से भी प्रारम्भ मानकर चलते हैं तब भी समस्या का कोई समाधान नहीं नज़र आता है।...वास्तव में उसी नाम के तारों का मेलान समान विभाग वाले नक्षत्र चक्र से किसी भी प्रकार तालमेल नहीं बैठता है।"

विदेशी निरयण भक्तों को भी तारकाओं के सायन भोगांश ही मानने पड़े:

यह कहा जाता है कि कलियुग ईसा पूर्व ३१०२ वर्षो में १७/१८ फरवरी को उज्जयिनी की स्थानीय मध्यरात्रि के समय प्रारम्भ हुआ था। कई निरयण भक्तों ने तो यह सिद्ध करने का प्रयत्न भी किया है कि उस समय सभी ग्रहों के भोगांश मेष राशि के ० अंश थे परन्तु बर्जस ने अपने "सूर्य सिद्धान्त'' के अंग्रेज़ी अनुवाद के पृष्ठ २० में यह बात निर्विवाद रूप से सिद्ध की है कि ऐसा होना असम्भव था और इसी बात को पुनः "रिपोर्ट आफ दी कैलेण्डर रिफार्म कमीटी'' के पृष्ठ २५३ पर भी प्रमाणित किया गया है और इस विषय पर हम भी इसी लेख में आगे कुछ और लिखेंगे। हाँ अपितु उस समय अर्थात् ईसा से ३१०२ वर्ष पूर्व खगोल विज्ञान की जो वास्तविक महत्त्वपूर्ण "घटना'' हुई वह इस प्रकार है : उस समय

रोहिणी तारे का मध्यम भोगांश मेष राशि के ० अंश था और ज्येष्ठा तारे का मध्यम भोगांश तुला राशि के ० अंश। यह दोनों ही सायन भोगांश थे क्योंकि इन तारों के निरयण भोगांशो में तो कभी भी एक या दो कलाओं से अधिक अन्तर नहीं हो सकता है। यह दोनों ही तारे प्रथम परिमाण के अतः बहुत ही महत्वपूर्ण और शक्तिशाली प्रतीक माने जाते हैं। इसका यह अभिप्राय हुआ कि उस समय रोहिणी तारा वसन्त सम्पात के साथ पूर्ण युति कर रहा था और खगोलिकी की एक और ऐसी चमत्कृति भी उसी समय कार्यान्वित हो रही थी जिसका और कहीं उदाहरण नहीं मिलता है। क्योंकि ज्येष्ठा तारा रोहिणी तारे से सदैव पूर्ण १८० अंशों की दूरी पर रहता है और यह तारा उस समय एक ओर से तो हेमन्त सम्पात बिन्दु के साथ पूर्ण युति कर रहा था तो दूसरी ओर से वसन्त सम्पात बिन्दु के साथ १८० अंशों का कोण बनाकर उससे युति करने वाले रोहिणी तारे के साथ एक प्रकार की अक्षरेखा बनाकर उसके प्रभाव को भी उत्तेजित कर रहा था। खगोलिकी की इस "घटना" से एक नए "युग" के प्रारम्भ होने के संकेत थे। इसी अक्ष रेखा के साथ एक ओर से पूर्वाफाल्गुनी तारा ६० अंश का कोण बना रहा था तो दूसरी ओर शतभिषक तारा भी उतने ही अंशों का कोण बना कर एक "ग्रैण्ड क्रास" बना रहा था अर्थात् दो अक्ष धुरियाँ एक दूसरे को काट रही थीं। *इसका यह अभिप्राय निकलता है कि यह समय एक ऐसे युग के प्रारम्भ होने का द्योतक था जो "क्रास" अर्थात् "कलि" अर्थात् कलह दर्शाता है।*

इससे यही सिद्ध होता है कि भले ही उस समय ग्रहों के वास्तविक मध्यमभोग शून्य अंश नहीं थे परन्तु खगोलिकी की एक ऐसी चमत्कृति ईसा पूर्व ३१०२ ई. में अवश्य हुई थी जो कि यदि उस समय को "कलियुग का आरम्भ" माना जाए तो कोई असंगत बात नहीं है। वैसे तो इस संबन्ध में महाभारत के शान्ति पर्व का यह श्लोक बहुत ही महत्त्वपूर्ण है:

ततस्तिष्ये अथ सम्प्राप्ते युगे कलि पुरस्कृते। एकपादस्थितो धर्मो यत्र तत्र भविष्यति।। ३४०/६

"उसके पश्चात् जब तिष्य नक्षत्र आएगा तो कलियुग के आगमन का प्रतीक होगा। उस समय धर्म चार पादों के बदले एक पाद पर ही सब जगह टिकेगा"

शान्तिपर्व के ही अध्याय ३४६ के ४५वें श्लोक में इसी बात को अधिक विस्तार से स्पष्ट किया गया है:

पुनस्तिष्ये च सम्प्राप्ते कुरवो नाम भारताः। भविष्यन्ति महात्मानो राजानः प्रथिता भूवि।।

"जब तिष्य नक्षत्र आएगा तो उस समय भारतवर्ष में कुरूवंश के राजा प्रसिद्ध होंगे"

तिष्य नक्षत्र के मध्यम भोग आज से कोई ६२५० वर्ष पूर्व अर्थात् ईसा पूर्व लगभग ७२५० वर्ष में शून्य थे। शास्त्रों में इस बात का स्पष्ट वर्णन है कि कोई भी नया युग एकदम से प्रारम्भ नहीं होता है अपितु हरेक युग की एक संधि भी होती है। वैसे भी एक प्रणाली का शासन एक दम समाप्त होकर दूसरी प्रणाली का शासन तत्काल ही प्रारम्भ हुआ हो ऐसा कभी नहीं होता है। भारतवर्ष को भी यद्यपि अंग्रेज़ी सरकार को हटाते-हटाते २०० वर्ष लग गये थे तब भी जब उनने हटना स्वीकार भी करलिया भारतवर्ष एकदम से गणतंत्र न बनकर "संधि" काल से गुज़रा था। अतः इसी प्रकार से यह भी हो सकता है कि द्वापरयुग के जाने की तैयारी के साथ-साथ ही कलियुग ने अपना अधिकार जमाना प्रारम्भ किया हो जो प्रक्रिया ईसा पूर्व ७२५० से प्रारम्भ होकर ईसा पूर्व ३१०२ तक अर्थात् लगभग चार हज़ार वर्षो तक चलती रही और फिर भगवान कृष्ण के अन्तर्धान होने के साथ ही कलियुग ने अपना एक छत्र अधिकार जमा लिया हो। इसी कारण से स्वयं भवान श्रीकृष्ण ने अपने जीवन काल में ही कलियुग का राज्य माना है। हरिवंश के विष्णुपर्व ५७/६२ में उन ने कहा है:

त्रेतायुगे प्रसुप्तोऽसि विदितो मेऽसि नारदात्। इदं कलियुगं विद्धि किमन्यत् करवानि ते।।

"नारद से सुना है कि आप त्रेतायुग में सो गए थे। इस समय कलियुग है"

कलियुगारम्भ के समय *सूर्य सिद्धान्त* के शून्य मध्यम भोगों के बारे में यह भी सम्भव है कि वास्तविक मूल *सूर्य सिद्धान्त* में उस समय के रोहिणी तारे के ही मध्यम भोग शून्य बताए गए हों जो श्लोक शनै-शनै विकृत होकर "सभी ग्रहों के शून्य मध्यम भोग में परिणत" हो गये और वही ध्रुवांक बनाए गए।

"भीष्म पितामह को १३०० वर्षो तक तीरों की शैया पर लिटाए रखने वाले" विदेशी महानुभाव ने उसी लेख में अपने कथन का कि नक्षत्र-चक्र के भोगांश निरयण हैं तथा प्राचीन काल में भी यह निरयण ही थे स्वयं ही खण्डन किया है क्योंकि वह भी स्वयं ही यही कह रहे हैं कि ३१०० ई० पूर्व "रोहिणी तारा वसन्त सम्पात के साथ युति कर रहा था और ज्येष्ठा तारा हेमन्त सम्पात के साथ"। इन महाशय को इतना भी खगोल-शास्त्र का ज्ञान नहीं है कि निरयण मानने पर तो इन तारों के भोगांश उस समय भी यही रहे होंगे जो आजकल हैं अर्थात् वृषभ राशि और वृश्चिक राशि के लगभग १६ अंश! कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि निराधार तथ्यों के आधार पर दूसरों को मूर्ख बनाने के लिए पहले हमारी अपनी ही मूर्खता सामने आजाती है क्योंकि *महाभारत* के ही तिष्य नक्षत्र की "संप्राप्ति" से क्या अर्थ निकलता है इनकी समझ में यह भी नहीं आया है! और यदि वह आज भी यह मानकर चलते हैं कि यह योगतारा समूह स्थिर" है --अर्थात् आज भी वही मध्यम भोग हैं जो सहस्त्रों वर्ष पूर्व थे तो इसका यही अभिप्राय है कि उन्हें खगोलिकी का 'क, ख, ग' तक नहीं आता है --- तब भी उन्हें वैदिक ऋषि की "उपाधि" दी गई!

निरयण पंचांगकर्त्ता भी नक्षत्रों की निरयण सम विभाग पद्धति को काल्पनिक ही

मानते हैं, यथार्थ नहीं:- निरयण पंचांगकारों में अग्रणी एन, सी, लाहिरी ने कालिनाथ मुखर्जी के ''पापुलर ऐस्ट्रानामी'' (Popular Astronomy) के प्राक्कथन में पृष्ठ १२ पर लिखा है "हमें भास्कराचार्य की कृति से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन ऋषियों ने नक्षत्रमण्डल का समान विभाजन नहीं अपितु असमान विभाजन किया था जिसमें पन्द्रह नक्षत्रों में प्रत्येक की अवधि १३अंश १०कला ३५विकला के मध्यम भोग थे;भरणी, आर्द्रा आदि के मध्यम भोग इनसे आधे थे, रोहिणी आदि के मध्यम भोग डेवढ़ थे। बाद में इस असमान विभाजन से गणित करना क्लिष्ट पाया गया इसलिए राशिचक्र को २७ समान भागों में बांटा गया।

१९६१-६२ के "श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्'' के पृष्ठ ४३ पर उसके सम्पादक ड़ा. शक्तिधर शर्मा के यह विचार सुनिए: "अतः यह स्पष्ट है कि नक्षत्र चक्र की सम विभाग परम्परा से पूर्व विषम विभाग की परिपाटी प्रचलित थी और वही अधिक तर्क संगत कही जा सकती है। सिद्धान्त ग्रन्थों तथा अबकी परम्परा में स्वीकृत सम विभाग पद्धति काल्पनिक (fictitious) विभाजन पद्धति है और इसे व्यवहारार्थ स्वीकृत किया गया है''!

इसी प्रकार दक्षिण भारत के प्रसिद्ध तमिल पंचांगकार प्रो. ऐल. वी. ऐस. मणि का एक लेख जनवरी १९६२ के "ऐक्सप्रेस स्टार टैलर'' में प्रकाशित हुआ था जिसमें उन्होंने पृष्ठ ८० पर स्पष्ट रूप से घोषित किया था "इस प्रकार से हम यह देखते हैं कि फलित ज्योतिष में प्रत्येक नक्षत्र राशिचक्र का १३अंश २० कलाओं का केवल एक काल्पनिक भाग है और इस प्रकार ३६० अंशों के पूरे राशिचक्र में कुल २७ भाग हैं जो सबके सब काल्पनिक हैं। अतः जब हम फलित बताते समय यह कहते हैं कि कोई ग्रह अमुक नक्षत्र में है तो उसका यह अभिप्राय है कि वह ग्रह राशिचक्र के उस भाग में है जिसको हम ने उस नक्षत्र के नाम के साथ जोड़ा है। उसी नाम के तारे से इसका कोई सम्बन्ध हो यह आवश्यक नहीं है।''

अब यदि यह सब नक्षत्र चक्र काल्पनिक ही है तो बात ही खत्म होगई परन्तु तब केवल यह प्रश्न रहता है कि उन विदेशी लेखक महोदय को काल्पनिक मघा नक्षत्र को वास्तविक मघा से जोड़ कर उसे निरयण सिद्ध करने के लिए बेचारे भीष्मपितामह को १३०० वर्षो तक तीरों की शैया पर लिटाए रखने की क्या आवश्यकता पडी? ऐसा लगता है कि इन निरयण ज्योतिषियों का कोई धर्म-ईमान नहीं है--जब मर्जी हो किसी नक्षत्र या रशि को काल्पनिक कहें और जब मर्ज़ी हो वास्तविक सिद्ध करने के लिए एडी-चोटी का जोर लगाएं,चाहे उसके लिए उन्हें अपने ही धर्मशास्त्रों की गलत व्याख्या क्यों न करनी या करानी पड़े।

ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक काल में प्रारम्भ में राशिचक्र के ३० अंशों के १२ समान विभागों के बदले २७ भाग बना रखे थे और प्रत्येक भाग उस समय महत्वपूर्ण हो जाता जब उस नाम के तारे का मध्यम भोग शून्य होता। क्योंकि वेदों में रविवार, आदि वारों का कहीं भी नाम नहीं है अतः उस समय वारों का प्रचलन नहीं रहा होगा, ऐसा लगता है। यह बात "आर्द्रा प्रवेश" आदि "मील के पत्थरों" से विदित होती है अर्थात् जब आर्द्रा नक्षत्र के भोगांश शून्य थे; "ततस्तिष्ये समनुप्राप्ते"---जब तिष्य नक्षत्र के भोगांश शून्य थे;यजुर्वेद में नक्षत्रों का कृत्तिका से प्रारम्भ अर्थात् जब उस नक्षत्र के भोगांश शून्य थे, इत्यादि।

निरयण पचांगकार तारकाओं के साथ खिलवाड़ करते है: इससे भी मज़ेदार बात तो यह है कि निरयण पंचांग जहां इन तारों के भोगांश आजकल शताब्दियों तक लगभग एक ही जैसा दिखाते हैं वहीं प्रति वर्ष उन्हें उनके शर. क्रान्ति तथा विषुवांश भिन्न दिखाने पड़ते हैं! उनको इतना भी खगोलिकी का ज्ञान नहीं है कि यदि वह विषुवांश और क्रान्ति हर साल भिन्न दिखाते हैं तो भला उनसे निकाले जाने वाले भोगांश परिवर्तन रहित कैसे होसकते है। वास्तव में वह एक छलावा करते हैं कि उन तारों के जो सायन भोगांश हाते हैं उनमें से वह मनचाहा अयनांश घटाकर उनको निरयण बनाते है। यह अयनांश आलकल प्रतिवर्ष लगभग उतना ही घटता है जितनी कि इन तारों की गति आगे को होती है और परिणामस्वरूप उनके भोगांश तो एक ही जैसे रहते हैं परन्तु क्योंकि उनके वास्तविक भोगांश तो सायन हैं अतः शर, क्रान्ति आदि विवश होकर उन्हें बिना किसी संस्कार के ही देने पड़ते हैं। यानी कान सीधे से नहीं पीछे से हाथ घुमा कर पकड़ लिए! पर पूर्वकाल में जब अयनांश धन था तब क्या स्थिति रही होगी?

महाभारत में निरयण राशियों की कल्पना करना अपनी अल्पज्ञता दिखाना है:-

"भगं नक्षत्रमाक्रम्यसूर्यपुत्रेण पीड्यते विशाखायाः समीपस्थौ बृहस्पति शनैश्चरौ '' भीष्मपर्व ३ /१४

"भीष्म पितामह को कलियुग में प्राणत्याग कराने वाले विदेशी निरयण भक्त महाशय'' तो निरयण राशि और नक्षत्र-चक्र तथा ग्रहों की निरयण दृष्टि को वैदिक राशि-चक्र आदि सिद्ध करने के चक्कर में इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार करते हैं कि ''शनि को क्योंकि विशाखा नक्षत्र को आक्रान्त करते हुए कहा गया है अतः वह वृश्चिक राशि के प्रारम्भ में था और क्योंकि साथ में यह भी कहा गया है कि वह पूर्वाफाल्गुणी और रोहिणी को भी पीड़ित कर रहा था अतः इसका यह अभिप्राय है कि वह उन नक्षत्रों की राशियों को अर्थात् वृषभ राशि को सप्तम और सिंह राशि को दशम दृष्टि से देख रहा था।'' वैसे तो हम ने जितने भी फलित ज्योतिष के ग्रन्थ देखे हैं किसी में कहीं भी इस बात का वर्णन नहीं है कि कोई ग्रह किसी राशि के तथाकथित नक्षत्र को देखता है युतियाँ/प्रतियुतियाँ तो अवश्य सुनी हैं। श्रीमद्भागवतकार तो भिक्षुगीता में स्पष्ट कहते हैं कि "ग्रहैर्गहस्यैव वदन्ति पीडा'' अर्थात् ग्रह ग्रहों को ही पीड़ित करते हैं

जिसका यह अभिप्राय है कि एक ग्रह दूसरे ग्रह को युति/प्रतियुति द्वारा प्रभावित करता है और राजा दशरथ के यह शब्द कि "अवष्टब्धं च मे नक्षत्रं दारुणैर्ग्रहैः" का भी और कोई अर्थ कभी भी नहीं निकाला जा सकता है बगैर इसके कि कई क्रूर ग्रह उनके जन्म कालीन नक्षत्र के साथ युति/प्रतियुति आदि कर रहे थे। इन महाशय ने ग्रहों की नक्षत्रों पर भी निरयण दृष्टि जोड कर "वैदिक फलित ज्योतिष" में एक बखेड़ा और खड़ा कर दिया! वैसे भी ईसा पूर्व जनवरी १८०० में " शनि ग्रह के सरकारी निरयण, मध्यम व स्पष्ट, -- True and Mean दोनों ही प्रकार के भोगांश" मेष/वृष राशि के थे जिसका यह अभिप्राय हुआ कि इन महाशय के अनुसार बेचारे भीष्म पितामह को पन्द्रह वर्ष और भी तीरों की शैय्या पर लेटे रहना पड़ा होगा क्योंकि यदि महाभारत युद्ध इनके कथनानुसार ही ईसा पूर्व ३१०२ में न होके ईसा पूर्व १८०० में हुआ था तो शनि को वृष राशि से वृश्चिक राशि तक पहुँचने में १५ वर्ष तो लगेंगे ही और उसके बाद ही तो भीष्मपितामह प्राणत्याग करेंगे। इससे यह अपने ही कथन को कि "भीष्म पितामह ने ई० पूर्व १८००" में प्राण त्याग किए, स्वयं ही नकार रहे हैं! एक और बात यह भी समझ नहीं आती है कि इन महाशय ने भीष्मपर्व के इसी अधयाय के अन्य श्लोकों तथा उद्योगपर्व के ४३/८ श्लोकों को ऐसे क्यों नहीं मरोड़ा कि इन के द्वारा मंगल की चौथी और आठवीं दृष्टि सिद्ध होती है :

मघासु अंगारको वक्रः .

वक्रानुवक्रं कृत्वा च श्रवणं पावक भ्रमः। ब्रह्मराशिं समावृत्य लोहितांगो व्यवस्थितः।।

कृत्वा चांगारको वक्रं ज्येष्ठायां मधुसूदन। अनुराधां प्रार्थयते मैत्रं संगमयन्निव।।

अर्थात् "मंगल मघा में वक्री था मंगल श्रवण में वक्री-मार्गी चलरहा था मंगल ज्येष्ठा में वक्री था और वह अनुराधा के साथ मित्रता के सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था"। ऐसा शायद जानबूझ के इसलिए नहीं किया क्योंकि इन श्लोकों में किसी प्रकार से भी यह अर्थ घसीटा नहीं जा सकता है जिससे यह सिद्ध हो कि मंगल की चौथी, सातवीं और आठवीं दृष्टि उस समय प्रचलित थी। हम इस बात की भी उपेक्षा नहीं कर सकते हैं कि *महाभारत* के पूरे एक लाख श्लोकों में कहीं भी किसी राशि का नाम तक नहीं है यद्यपि उनमें सारे नक्षत्रों तथा ग्रहों का एक बार नहीं अनेकों बार वर्णन है। हम यह भी नहीं कह सकते हैं कि उस समय के खगोलवेत्ताओं को राशि-चक्र का ज्ञान ही नहीं था क्योंकि *महाभारत* से भी पहले की कृति *वाल्मीकि रामायण* में तो स्पष्ट वर्णन है कि ".....स्वोच्च संस्थेषु पंचसु ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह" इस में कर्क राशि का भी और लग्न भाव का भी स्पष्ट वर्णन है। *महाभारत* में किसी भी राशि का वर्णन न होने का अर्थ यही कहा जा सकता है कि उस समय सूर्य का मधु, माधव आदि मासों मे जो भ्रमण था वही मेष आदि राशियों का पर्यायवाचक था और अन्य ग्रहों की पारस्परिक युतियां/प्रतियुतियां आदि और उनके भिन्न-भिन्न नक्षत्रों अर्थात् तारों के वास्तविक सायन भोगांशों के साथ बनने वाले ६०, १८० आदि अंशात्मक कोण ही फलित के लिए प्रतीक माने जाते थे। जहाँ तक हम *महाभारत* के परिशीलन से समझ पाए हैं इसके अतिरिक्त और कोई अर्थ लगाना अर्थ का अनर्थ करने के सिवा और कुछ भी नहीं होगा। इसी प्रकार वेदों में भी किसी राशि चक्र तो क्या मेष आदि किसी राशि का नाममात्र भी नहीं है यद्यपि उसमें ऋतु, मास, तिथि, पक्ष और संवत्सर शब्दों का वर्णन अनेक बार है। केवल कुछेक ग्रहों के नाम भी हैं जैसे बृहस्पति आदि जबकि नक्षत्रों के नाम कई बार दोहराये गये हैं। इसके दो कारण स्पष्ट हैं : पहला तो यह कि उन वास्तविक "वैदिक ज्योतिषियों" के लिए यह "वेदानां चक्षुः" शास्त्र आजकल के तथाकथित "वैदिक ज्योतिषियों" की भान्ति केवल "कंचन, कामिनी और काया" का फलित जानने के लिए नहीं था अतः उन्होने इस संबन्ध में "फलित ज्योतिष" का अधिक प्रचार-प्रसार नहीं किया। दूसरा कारण यह भी है कि उन ऋषियों के दिन-वर्ष पद्धति और ग्रहों की नक्षत्रों के साथ अथवा ग्रहों की पारस्परिक युति/प्रतियुति आदि कोणों द्वारा बनने वाले योगों आदि का ज्ञान गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा "श्रुति" अर्थात् केवल मौखिक रूप में होने के कारण आगे चलकर कहीं लुप्त प्राय होगया और वह कहीं किसी प्रकार से अरब वासियों के हाथ लग गया जहां उसका प्रचार-प्रसार चालू रहा।

महाभारत के ही भीष्म-पर्व के दूसरे अध्याय के ३२वें श्लोक से खगोलिकी की एक ओर कुंजी हमारे सामने आई है और लगता है कि यह निरयणवादी जान बूझ के उसकी उपेक्षा करते आए हैं इस ड़र से कि कहीं उनकी पोल न खुल जाए:-

या चैषा विश्रुता राजंस्त्रैलोक्ये साधुसम्मता।अरुन्धती तयाप्येष वसिष्ठः पृष्ठतः कृतः।।

"हे राजन्! यह जो अपने पतिव्रता धर्म से विश्व-प्रसिद्ध अरुन्धती Alcor तारा है उसने भी अपने पति वसिष्ठ Mizar को सप्तऋषि "The Great Bear" नक्षत्र मंडल में पीछे छोड़ दिया है"। इससे तो यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि नक्षत्रमंडल के तारापुंजों के भोगांश सायन माने जाते थे निरयण नहीं क्योंकि निरयण भेगांश मानने पर यह तारे सदा ही एक दूसरे से लगभग एक ही दूरी पर रहते हैं। यह भी स्पष्ट है कि महाभारत के समय अरुन्धती तारे की गति वसिष्ठ तारे की अपेक्षा "अति-शीघ्र" हुई होगी जिस कारण से वह वसिष्ठ से आगे दीखने लगा था।

क्योंकि *महाभारत* में तिष्य, वसिष्ठ, अरुन्धती आदि सभी तारों की गति का वर्णन है, इससे "वैदिक ज्योतिषियों" की यह भ्रान्त धारणा भी निरस्त हो जाती है कि "न क्षरतीति नक्षत्रं" अर्थात् नक्षत्र क्योंकि अपने स्थान से हिलते नहीं हैं -- गतिशून्य हैं----इसीलिए नक्षत्र कहलाते हैं! वास्तव में

यास्काचार्यकृत "निरुक्त" की यह परिभाषा भी इसलिए सही कही जा सकती है क्योंकि ग्रहों की अपेक्षा इन "नक्षत्रों" की गति लगभग शून्य ही है---परन्तु बिल्कुल शून्य नहीं है।

यह भी होसकता है कि *महाभारत* में कहीं मेष आदि राशियों का नाम इसलिए नहीं है कि भगवान वेदव्यास को ज्ञात था कि यह कलियुग के अल्पज्ञ "निरयण वैदिक ज्योतिषी" नक्षत्रचक्र के एक समान काल्पनिक विभाजन को राशियों के साथ जोड़ेगे और उनके श्लोकों का अर्थ तोड़-मरोड कर यह सिद्ध करने का प्रयत्न करेंगे कि "वेदव्यास ने भी तो इसी राशिचक्र का वर्णन किया है"!

"चित्रापक्ष" तो क्या कोई भी अयनांश वैदिक नहीं है:- तथाकथित "चित्रापक्ष अयनांश" को "वैदिक अयनांश" सिद्ध करने के प्रयास में तैत्तिरीय संहिता के कुछ छन्दों का उल्लेख किया जाता है कि इन में "चित्रा तारे की पूर्णमासी का वर्णन कई बार आया है अतः यह बहुत महत्त्वपूर्ण है"। तैत्तिरीय संहिता के ही ७/४/८ छन्दों द्वारा ही यहाँ भी वास्तविक स्थिति स्पष्ट होगी :

संवत्सरस्य यत्फाल्गुणी पूर्णिमा असौ मुखमेव संवत्सरमारभ्य दीक्ष्यंते तस्यैकैव निर्यया सम्मेधे विषुवन्तं संपद्यते। चैत्र पूर्णिमास्यां दीक्षेरण् मुखम् वै तत्संवत्सरस्य यत् चित्रा पूर्णिमा।

अर्थात् "फाल्गुणी पूर्णमा के दिन दीक्षा लेनी चाहिए क्योंकि यही पूर्णिमा संवत्सर का मुख है अतः इसमें दीक्षा लेने वाला संवत्सर के मुख से ही दीक्षित कहा जाता है परन्तु इसमें एक ही त्रुटि है कि फाल्गुन पूर्णिमा को यदि पहला मास माना जाए तो विषुवान् अर्थात् दक्षिणायन वर्षा ऋतु के मध्य में मानना पड़ेगा अतः चैत्री पूर्णिमा के दिन दीक्षा ले क्योंकि वही संवत्सर का मुख है।" इससे यह बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि उपर्युक्त छन्द के समय पूर्वाफाल्गुनी पूर्णिमान्त से अर्थात् आजकल के फाल्गुन मास से चान्द्र संवत्सर आरम्भ माना जाता था परन्तु उस स्थिति में विषुवान् अर्थात् दक्षिणायन वर्षा के प्रारम्भ के बदले वर्षा के मध्य में पडने लगा था जो कि उन मन्त्र दृष्टा ऋषियों को असह्य था। अतः उनने यह स्पष्ट घोषणा की कि क्योंकि विषुवान और वर्षा ऋतु का आरम्भ दोनों एक ही साथ में होना ही प्राकृतिक और वैदिक हैं और क्योंकि ऐसा तभी होगा जब चैत्री पूर्णिमा से वर्षारम्भ माना जाए अतः उसी को वर्ष का मुख माना जाना चाहिए!"

यह बिल्कुल वैसी ही स्थिति है जो हमने अपने १९९४ के पंचांग के पृष्ठ १७ पर स्पष्ट की थी कि भगवान राम का जन्म चैत्र शुक्लपक्ष की नवमी को हुआ था जब कि मधुमास था तथा सूर्य मेष राशि में था। यह सब तभी हो सकता है जब सूर्य सायन मेष में माना जाए और चान्द्र चैत्र को वैदिक मधुमास अर्थात् सायन संक्रान्तियों के साथ जोड़ा जाए अन्यथा यह तीनों परिस्थितियाँ आपस में मेल नहीं खाती हैं। इस वैदिक कथन से आधुनिक "वैदिक ज्योतिषियों" का जो विषुवान आदि को निरयण संक्रान्तियों से जोड़ने का गलत "फतवा" दे रहे हैं उनका भी खण्डन होता है क्योंकि आजकल की निरयण कर्क संकान्ति तो १६ जोलाई को होती है उसमें भी बिल्कुल वही दोष आजाता है जो उन मंत्रदृष्टा ऋषियों को असह्य था अर्थात् कर्क संकान्ति अर्थात् विषुवान--दक्षिणायन--का वर्षा काल के मध्य मे आना क्योकि वैदिक ऋषियों के अनुसार विषुवान,दक्षिणायन अर्थात् कर्क संकान्ति तथा नाभस मास और वर्षा ऋतु मानो एक दूसरे के पर्यायवाचक हैं।

बेचारे चित्रा तारे की विवशता:- पंचांगों के ऊपर आप प्रायः लिखा हुआ पाते होंगे "केतकी चित्रापक्ष अयनांश"। अब इसकी कहानी सुनिए। " केतकी" का अर्थ तो यह है कि वह पंचांग केतकर के "ज्योतिर्गणितम्" आदि ग्रन्थों से बना है परन्तु यह असम्भव है क्योंकि उन पंचांगों के भोगांशों में और केतकर के कोष्ठकों से प्राप्त भोगांशों में कम से कम ३/४ कलाओं तक का अन्तर होता है। अस्तु। अब आप यदि किसी निरयण पंचांगकर्त्ता से यह पूछेंगे कि "चित्रा तारे के भोगांश क्या हैं" तो उसका उत्तर होगा १८० अंश। आगे यह पूछिए कि यह १८० अंश की दूरी कौन से प्रारम्भ बिन्दु से है तो या तो आपका यह प्रश्न उसकी समझ में आएगा ही नहीं और यदि वह प्रश्न समझ जाएगा तो निरुत्तर हो जाएगा। जानते हैं क्यों? क्योंकि "चित्रापक्ष वालों" के हिसाब से जो चित्रा तारे के १८० अंश निरयण भोगांश हैं वह "प्रारम्भ बिन्द्र" चित्रा तारे से ही १८० अंश की दूरी पर हैं। नहीं समझे ना? एक उदाहरण देता हूँ। आप ही के मकान से जो मकान १८० मील की दूरी पर है उसी मकान से आपका मकान १८० मील दूर है! तब भी नहीं समझे? तो किसी विद्वान "निरयण पंचांगकर्ता" से ही पूछिए क्योंकि वास्तव में मैं भी स्वयं यह पहेली नहीं समझ पाया हूँ। हाँ यह राज़ की बात आपको बता सकता हूँ कि किसी राष्ट्रीय पंचांग में यदि आप देखेंगे तो आपको उनमें इस अयनांश का कोई नाम नहीं मिलेगा क्योंकि उनको मालूम है कि चित्रा निरयण भोगांशों की ही भान्ति यह भी एक कृत्रिम अयनांश ही है। इसीलिए तो मैंने इसका नाम "सरकारी अयनांश" रखा है!

चित्रापक्ष की "जन्मकुण्डली": यहाँ पर यह स्पष्ट करना भी परमावश्यक है कि जिस अयनांश को हम "चित्रापक्ष" कह रहे हैं उसका चित्रा नक्षत्र के साथ दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि १९५४ में---नेहरू युग में---भारतसरकार द्वारा "पंचांग संशोधन समिति" का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष परमाणु विज्ञान केन्द्र, कलकत्ता के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक मेघनाद सहा थे। एन. सी. लाहिरी

इस समिति के सदस्य तथा सचिव भी थे। वह स्वयं १६३६ई. से अपना अंग्रेज़ी में "सुप्रसिद्ध लाहिरी ऐफिमेरिस" और बांगला भाषा में "विशुद्ध सिद्धान्त पंजिका" प्रकाशित करते थे जो अभी भी चल रहे हैं।

एन. सी. लाहिरी ने जनसाधारण की मनोवैज्ञानिक स्थिति को अच्छी तरह से समझ लिया था कि क्योंकि वह उस समय ग्रहलाघव पर आधारित पंचांगों के "व्यसनी" बन गए थे अतः वह न तो वास्तविक वैदिक अर्थात् सायन पंचांग को और न सूर्यसिद्धान्त पर आधारित पंचांग को स्वीकार करेंगे कारण कि सायन स्पष्ट से तो संक्रान्ति २१ दिन और सूर्यसिद्धान्त स्पष्ट से ३/४ दिन के अन्तराल पर आजाती। अतः उन्होंने प्रारम्भ से ही अपना पंचांग विदेशी वेधशालाओं से बने "नाटिक्ल अलमनाक" से बनाया अन्तर केवल इतना ही था कि उनमें उन्होंने अपने ही द्वारा आविष्कृत एक ऐसा अयनांश घटाया जो लगभग ग्रहलाघव अयनांश के ही समान था। इसके लिए वह कोई ऐसा नाम ढूंढ रहे थे कि जिससे लोग आसानी से स्वीकार करें। चित्रा नक्षत्र के तत्कालीन भोगांशों ने उसकी मूश्किल आसान करदी, उस समय तक इस तारे का कोई नाम भी नहीं जानता था। १६३६ में इसका मध्यम भोग था २०२अं ५६क २३ वि पर यह थे सायन भोगांश। उन्होंने इन भोगांशों को १८० + २२अ ५६क २३ वि बना लिया। इनमें यथेष्ट धूनन संस्कार आदि करके यह "स्पष्ट अयनांश" बन गया २३अ ०क ३६वि जबकि ग्रहलाघव अयनांश उस समय था २३अ ३६क ४३वि। एक साधारण व्यक्ति को उन दिनों ३७ कलाओं का अन्तर कहां पता लगता अतः वह इसी अयनांश का प्रयोग करते रहे और इसी कारण से इसको तब से लगातार लाहिरी अयनांश कहा जाता है। क्योंकि वह ग्रहस्पष्ट तथा ग्रहण आदि विवरण विदेशी "नाटिकल अलमनाक" के आधार पर दे रहे थे अतः वह सब चमत्कृतियां उनके द्वारा लिखित समय पर घटती रहीं और परिणामस्वरूप जनसाधारण को ग्रहलाघव या सूर्य सिद्धान्त से अधिक विश्वास "लाहिरी अयनांश" और "लाहिरी एफिमेरिस" पर दृढ़ होता गया----वास्तविक वैदिक अर्थात् सायन स्पष्ट से तो बिल्कुल ही नाता टूट गया जबकि स्वयं एन. सी. लाहिरी के सही ग्रहगणित का आधार विदेशी वेधशालाओं के सायन भोगांश ही थे जिनमें वह अयनांश रूपी मुण्डनसंस्कार करके उन को ही निरयण बनाते थे।

उसी समिति के सदस्य, डा. के. एल दफ्तरी, ने प्रारम्भ में ही चेतावनी दी थी कि निरयण राशिचक्र को अपनाने से तो स्थिति सुधरने के बदले बिगड़ ही जाएगी और अन्ततः विवश होकर उनने उसी रिपोर्ट के पृष्ठ २६० पर अपनी असहमति इन शब्दों में व्यक्त कीः "निरयण पद्वति का अनुसरण करने वाले पंचांगकार यह समझ रहे हैं कि वह हिन्दू जनता को धर्म के मार्ग पर ले जारहे हैं वास्तव में सारी हिन्दू जनता को ही अधर्म की ओर धकेल रहे है।" *लेकिन जैसा कि ऐसी समितियों में होता है उस सही आवाज़ को बहुमत के आडम्बर से दबा दिया गया क्योंकि निरयण पंचांगों को बिक्री खतरे में पड़ रही थी।*

इसी समिति में यह विकट स्थिति भी सामने आगई थी कि निरयण भोगांश मानने पर भी संक्रान्तियों में *सूर्यसिद्धान्त* वाले रेवत्यन्त तारे से भी ४/५ अंशों अर्थात् दिनों का अन्तर था और लोकमान्य तिलक तथा अन्य बहुत सारे विद्वानों का मत था कि रेवती तारे से ही अयनांश लिया जाए और संक्रान्तियों को ४/५ दिन एक ही बार में पीछे किया जाए। परन्तु एन. सी. लाहिरी जैसे पंचांगकारों को अपने पंचांगों की बिक्री उस मत को स्वीकार करने से कम होते दिखी। इसलिए यही बहुमत रहा कि ''धर्मशास्त्र जाए भाड़ में'' हमारे पंचांगों की रूपरेखा के अनुसार ही ''संशोधन'' होने चाहिएं। अब क्योंकि उस समय ''लाहिरी अयनांश'' ही *ग्रहलाघव* के अधिक निकट था तो अब बाकी पंचांगकारों को यह कहां स्वीकार होता कि वह अपने पंचांग अपने प्रतिद्वन्द्वी ''लाहिरी अयनांश'' पर छापें अतः उनको इसका कोई ऐसा नामकरण करना पड़ा कि सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे सो उन्होंने इसका नाम ''चित्रापक्ष रखा''!

इस स्थिति का सुन्दर चित्रण "श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांगम्" के सम्पादक, डा. शक्तिधर शर्मा, एम. एस. सी. पी.एच. डी., ने अपने १६६२-६३ के पंचांग के पृष्ठ ५२-५३ पर इस प्रकार किया हैः "जनता उस मार्ग को सहज ही अपना लेती है जिसमें कम से कम प्रतिरोध हो। जनता की इस मनोवैज्ञानिक निर्बलता का लाभ चित्रापक्ष वालों ने उठा लिया।"

अतः यह अयनांश "चित्रापक्ष" नहीं है क्योंकि आजकल चित्रा तारे के भोगांश भी इस अयनांश से १८० अंशों से एक कला से अधिक अन्तर पर है और शास्त्रीय अयनांश यह इस कारण नहीं है कि किसी सिद्धान्त ग्रन्थ में इस तारे को कहीं महत्त्व नहीं दिया गया है यद्यपि सूर्य सिद्धान्त में रेवती तारे से राशिचक्र का स्पष्ट वर्णन है। इस प्रकार आप निश्चिन्त हो जाइए कि इस ''चित्रापक्ष'' के पीछ कोई भी वैदिक, पौराणिक, 'सूर्य सिद्धान्तीय'' या वैज्ञानिक आधार न होकर केवल पंचांग बिक्री का आधार रहा है।

स्वयं डा. मेघनाद सहा इस समस्या को समझ तो गए कि इस तरह से हमारा नाता वास्तविक वैदिक राशिचक्र से बिल्कुल ही छूट जाएगा परन्तु बहुमत के आगें वह भी कुछ नहीं कर सकते थे तथापि उन ने सायन राशिचक्र से सम्बन्ध बनाए रखने के लिए शक संवत् को राष्ट्रीय संवत् बनाया जो वसन्त सम्पात से जुड़ा है परन्तु जैसा हमने पीछे देखा, "दुरन्धर फलित ज्योतिषी" तो सायन से बिल्कुल ही नाता तोड़ना चाहते हैं कि कही उनकी पोल न खुल जाए।

एन. सी लाहिरी स्वयं भी वास्तव में सायन राशिचक्र और वास्तविक सायन नक्षत्र मध्यम भोग ही मानते थे, निरयण नहीं: अंग्रेज़ी में निरयण पंचांगकारों के प्रवर्तक इन ही

एन. सी. लाहिरी ने कालिनाथ मुखर्जी की ''पापुलर ऐस्ट्रानामी'' के प्राक्कथन के पृष्ठ १० पर लिखा है कि ''आधुनिक परिपाटी के विपरीत प्राचीन काल में निरयण वृष राशि और कृत्तिका नक्षत्र दोनों एक साथ ही प्रारम्भ होते थे। इसी से *वाल्मीकि रामायण* में श्रीराम जन्म की ग्रहस्थिति अर्थात् नवमी तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र तथा मेष में सूर्य यह तीनों बातें हो सकती हैं, अन्यथा नहीं''।

हम अभी ऊपर देख चुके हैं कि वैदिक काल में भी नक्षत्रों का आरम्भ अश्विनी से नहीं अपितु कृत्तिका से माना जाता था। आजकल राशिचक्र का आरम्भ अश्विनी नक्षत्र के साथ जोड़ना वास्तव में आधुनिक ''वैदिक ज्योतिषियों'' द्वारा सायन चमत्कृतियों का दुरुपयोग है और कुछ नहीं। कैसे? देखिए: जैसा कि हम पीछे कह आए हैं आज से कोई चार हज़ार वर्ष पहले अर्थात् ईसा पूर्व २००० में सरकारी अयनांश कोई तीस अंश धन था अर्थात् निरयण से सायन बनाने के लिए उनमें अयनांश घटाने हैं --तो निरयण वृष के शून्य अंशों में से ३० अंश अयनांश घटाने से उस समय वह भोगांश थे वास्तव में सायन मेष राशि के शून्य अंश। इसी प्रकार उस समय कृत्तिका नक्षत्र के वास्तविक सायन मध्यम भोगांश भी मेष राशि के शून्य अंश ही थे। कैसे? यह भी देखिए: इस समय इस नक्षत्र के सायन मध्यम भोग हैं कोई ६० अंश तो आज से ७२ गुणा ६० वर्ष पूर्व अर्थात् ४३२० वर्ष अर्थात् ईसा पूर्व २३०० में वह भी शून्य अर्थात् मेष राशि के शून्य अंश था। अतः स्वतः सिद्ध होजाता है कि वास्तव में एन.सी० लाहिरी भी प्राचीन कालीन राशिचक्र का आरम्भ सायन मेष राशि के शून्य अंशों से तथा नक्षत्रों के वास्तविक सायन मध्यमभोग को ही स्वयं ही सिद्ध करते हैं, अपने पंचांग की क्रिी बढ़ाने के लिए भले ही उनने एक काल्पनिक अयनांश का आविष्कार करके जनसाधारण के लिए अनेक समस्याएं पैदा करदीं हों

निरयण पंचांगकार भी स्वयं ही अपनाए गए अयनांशों को निराधार मानते हैं:-

उत्तर भारत में हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाले एक पंचांग के सम्पादक के विचार अयनांश के विषय में सुनिए जो उनने १९६१--६२ के अपने ही पंचांग में ''अशुद्ध वर्षमान के प्रयोग से भारतीय राशिचक्र का विचलन'' नामक लेख में व्यक्त किए थे :- ''पहला सुझाव मुख्यतः लोकमान्य तिलक की ओर से था कि----सूर्यसिद्धान्तोक्त ------'रेवत्यन्त तारा' को ही मेषारम्भ बिन्दु मानकर पंचांगों का निर्माण किया जाए। तिलक का यह सुझाव यद्यपि शत-प्रतिशत यथार्थ और पूर्णतया तर्क संगत था, लेकिन इसे कार्यान्वित करना आसान नहीं था। इसे कार्यान्वित करने के लिए सभी सौर संक्रान्तियों के दिनों को तीन या चार दिन पीछे --पहले--करना पड़ता जो कि व्यवहारानुकूल नहीं था।'' अब उस सुझाव को न मानने का परिणाम भी उन्हीं के शब्दों में सुनिए ''अतः अब----चित्रापक्ष अयनांश मानने से----भविष्य में हमेशा मेषादि राशियों के----तथा अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के-----प्रारम्भ बिन्दु भी अपने अपने मूल प्रारम्भ बिन्दुओं से ३.५ अंश के अन्तर पर ही रहेंगे''! पर विड़म्बना यह है कि अपने पंचांग में ''आकाशी कौसिंल का वर्षफल'' इनको भी इसी गलत सरकारी अयनांश के अनुसार देना पड़ता है और फिर उसको सही भी सिद्ध करना पड़ता है----भले ही इनके हिसाब से भी सारे का सारा राशि तथा नक्षत्रचक्र अपने मूलबिन्दुओं से ३.५ अंश के अन्तर पर है! इसी प्रकार सारे के सारे व्रत-त्योहार, क्षयमास/अधिकमास, मुहूर्त आदि इनको भी सरकारी अयनांश के अनुसार देने पड़ते हैं और फिर ''शास्त्रार्थ'' द्वारा उनकी ही शास्त्र-सम्मत भी सिद्ध करना पड़ता है-----बिल्कुल यही हाल तो बेचारे डा० रमण का भी है!

यही स्थिति ''विश्वप्रसिद्ध'' काशीविश्वपंचांगम् कर्त्ताओं की है जो बेचारे *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार ''मिश्रमाण भोगांश'' तो ढ़ोते आए हैं, यहां तक कि वह वेदों तथा अन्य शास्त्रों को तिलांजलि देकर तथाकथित निरयण भकर संक्रान्ति वाले दिन ही उत्तरायण भी लिखते आए हैं पर विवश होकर उनको भी सूर्य/चन्द्रगहण तथा ग्रहों का उदयास्त भारत सरकार के दृक् गणित से ही ''भिक्षा'' मांग कर देने पड़ रहे हैं! कारण केवल इतना ही है कि *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार तो यह ग्रहण एक दिन आगे पीछे हो सकते हैं और क्योंकि यह एक दृश्य चमत्कृति है अतः उनको यह ज्ञात है कि भारतवर्ष में इतना धर्मान्ध तो कोई भी नहीं है कि इन ग्रहणों का निश्चित तिथि से एक दिन आगे पीछे होने को ''भगवान की लीला'' समझेगा। इससे तो यही सिद्ध होता है कि उन ''सूर्य सिद्धान्त के ठेकेदारों को'' स्वयं भी *सूर्य सिद्धान्त* की चमत्कृतियों पर विश्वास नहीं है। हाँ एक ओर से तो कहते हैं कि दृक्गणित शास्त्र सम्मत नही है तो दूसरी ओर साथ में ''जहाज़ी पंचांग'' के दैनिक ग्रहस्पष्ट भी देरहे हैं --- *वह भी सायन!* वह काहे के लिए दे रहे हैं यह भी उन्हीं पंचांगकारों के शब्दों में सुनिए उसी पंचांग की भूमिका में: ''प्रातः ५-३० बजे के दृश्य ग्रह पृथक से दिये गये है। आशा है इससे धार्मिक जनता पूरा लाभ उठाएगी''। दूसरे *शब्दों में कह सकते हैं कि धार्मिक जनता के लिए तो दृश्य ग्रह हैं,वह भी सायन और सूर्य सिद्धान्त अनुसार ग्रह इसलिए देरहे हैं कि उनसे ''अधार्मिक जनता अर्थात् केवल रूढिवादी जनता लाभ उठा सके''!*

उधर महाराष्ट्र में यद्यपि ''तिलक'' पंचांग तो बनता है दृक् गणित से पर उसमें अयनांश रेवती पक्ष का लिया जाता है क्योंकि *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार राशिचक्र का आदि वहीं से है परन्तु अयनांश की वार्षिक गति वह भी *सूर्य सिद्धान्त* की ५४ विकलाओं के बदले ५०.३ विकला ही मानकर चलते हैं क्योंकि यही आधुनिक खगोलिकी के अनुसार सही गति है अर्थात् अयनांश का आदि बिन्दु तो है *सूर्य सिद्धान्त* का शेष सब उसके विरुद्ध यानी ''न इधर के रहे न उधर के रहे''!

शताब्दियों से चला आ रहा कश्मीर का एक सुप्रसिद्ध पंचांग तो आज भी *ग्रहलाघव* से ही बन रहा है इसलिए नहीं कि वह पंचांगकार उन करण ग्रन्थों को दिव्य कृतियां मान रहे है क्योंकि दो-तीन वर्ष पूर्व उसी पंचांग में स्वयं उनका कथन था कि ''हमको यह बात मालूम है कि हमारे पंचांग के तिथि नक्षत्र आदि समाप्ति काल में बहुत गड़बड़ है। हम उसको ठीक करने में प्रयत्नशील हैं।'' अभीतक उनके प्रयत्न सफल नहीं हुए परन्तु पचांग धर्म के नाम पर जनता को मूर्ख बनाता जारहा है।

वैसे भी यह करण ग्रन्थों से बनने वाले सारे ही पंचांग ग्रहणों का विवरण या तो देते ही नहीं है और यदि देते हैं तो दूसरे पंचांगों से नकल करके क्योंकि ग्रहण निकालना इनके बस की बात नहीं है।

उधर बम्बई से प्रकाशित होने वाले १९६३-६४ के ''जन्मभूमि'' नामक गुजराती पंचांग के पृष्ठ २०६-२१० पर श्री रमणलाल पो. पंचाल का लेख प्रकाशित हुआ था जिसमें उन्होंने यह स्पष्ट किया था कि निरयण राशिक्र मानने से हमारा सम्बन्ध ऋतुओं से छूट रहा है। उसी लेख में यह भी कहा गया था कि जहाँ लोग *ग्रहलाघव* जैसे करणग्रन्थ से बनाए गए पंचांग तक सही मान सकते हैं वहां भला सही सायन पर आधारित सायन स्पष्ट वह जातक के फलादेश के लिए क्यों नहीं मानेंगे। ''बस केवल थोड़ी हिम्मत चाहिए इसके लिए''!

"काशीविश्वपंचांगम्" ने तो डर के मारे ग्रहों के यहां तक कि सूर्य चन्द्रमा के भी क्रान्ति शर देना ही बन्द कर दिया है क्योंक *सूर्य सिद्धान्त* से प्राप्त भोगांशों को तो वह निरयण कहकर गाड़ी चला सकते हैं परन्तु यदि उसी ग्रन्थ के अनुसार प्राप्त रीति से उन निरयण भोगों में से अयनांश धन करने के बदले ऋण करेंगे, जैसा कि उस में लिखा गया है, तो वह क्रान्ति शर बिल्कुल ही गलत निकलेंगे और वह किसी से भी मेल न खाएंगे। इसलिए ''एक चुप सौ सुख''। क्रन्ति, शर छपेंगे नहीं तो कोई तुलना करेगा नहीं तो अन्तर कहां से पकड़ेगा! पर इनसे यह अवश्य पूछना चाहिए कि वह *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार पंचांग बनाने के उपरान्त भी *सूर्य सिद्धान्त* द्वारा वर्णित वैधृति/व्यतीपात क्यों नहीं देते है? केवल इसीलिए ना कि वह सूर्य चन्द्रमा की क्रान्ति पर आधारित हैं और वह क्रान्ति-शर सूर्य सिद्धान्त के गणित के आधार से सही नहीं हो सकते हैं।

इसी प्रकार एन. सी. लाहिरी भी, जो तथाकथित ''चित्रापक्ष'' अयनांश के लिए प्रसिद्ध हैं, ---इतने प्रसिद्ध कि तथाकथित बृहत्पाराशरी के एक अंग्रेज़ी अनुवादक ने तो यहां तक कहा है कि महर्षि पाराशर के इस ग्रन्थ का फलित लाहिरी अयनांश से बिल्कुल ठीक आता है-----वह भी अपने अयनांश के प्रारम्भ बिन्दु से सन्तुष्ट नहीं हैं। जैसा हम अभी ऊपर कह आए हैं उनके विचार से निरयण राशिचक्र का आरम्भ मेष के बदले वृषराशि और कृत्तिका नक्षत्र से होना चाहिए अर्थात् कृत्तिका नक्षत्र का प्रारम्भ समान विभाजन के उपरान्त भी मेष राशि के २६अंश ४० कलाओं से न होकर वृष राशि के शून्य अंशों से होना चाहिए। दूसरे शब्दों में उनके मनपसन्द चित्रा तारे के निरयण मध्यम भोगांश तब होगे १८० के बदले १८३ अंश २० कला! बेचारा पाराशर तो आश्चर्य चकित होरहा होगा लाहिरी के यह विचार सुन के कि कहां तो उसने अपना फलित ग्रन्थ ५००० वर्ष पूर्व लाहिरी अयनांश के आधार से बनाया था और कहां अभी वही "लाहिरी" स्वयं अपनें अयनांश को ही नकार रहा है!

तो यह भी निर्विवाद ही सिद्ध हुआ कि निरयण पंचांगकारों को भी अपने अयनांशों पर भी विश्वास नहीं है!

अयनांश निकालने के लिए भी नक्षत्रों के सायन भोगांश निकालने पड़ते हैं:

भारतीय निरयण पंचांगकारों को पथभ्रष्ट करने के लिए सबसे अधिक श्रेय एन. सी. लाहिरी को जाता है। तथाकथित "चित्रापक्ष'' अयनांश सिद्ध करने के लिए उनने अपने ''टेब्लस आफ दि सन'' में जो पद्धति अपनाई है वह यों है: चित्रा तारे के पहले १९५० ई. के सायन भोगांश निकाले और फिर उसके बाद २८५ ई. के सायन भोगांश निकाले। इन दोनों सायन भोगांशों में जो अन्तर आया उसका नाम उनने ''चित्रा पक्ष अयनांश'' रख लिया! यही हाल रैवत पक्ष वालों का है। उनके हिसाब से ५४७ ई. में रेवती तारे के सायन भोगांश शून्य थे। जिस वर्ष उस तारे के जो भी सायन भोगांश है वही ''रैवतपक्ष अयनांश'' हुआ। पर हां। हम निरयण ज्योतिषी इस बात को यों घुमा फिरा कर कहते हैं कि ''उस समय का संपात बिन्दु उस नक्षत्र के साथ युति कर रहा था''। वैसे आप यदि किसी भी वेधशाला का तारकाओं का सूचीपत्र उठाकर देखेंगे तो उसमें प्रायः तारकाओं के केवल क्रान्ति और विषुव पाएंगे जिनसे मध्यम भोगांश गणित द्वारा निकाले जाते हैं --- परन्तु वह होते सायन भोगांश ही हैं किसी निरयण का कहीं कोई नाम ही नहीं होता है और उन ही से यह निरयणवादी निरयण बनालेते हैं।

प्राचीन भारतीय खगोलिकी तारकाओं की गति मानती है अतः वह निरयण भोगांश नहीं हो सकते:

आप प्राचीन खगोलिकी का कोई भी ग्रन्थ उठाकर देख लीजिए--चाहे *सूर्य सिद्धान्त* हो या *आर्यभट्टीयम्*। उनमें दिए गए तारकाओं के भोगांशों आदि की तुलना उनके बाद के ग्रन्थों के साथ कीजिए। आप देखेंगे कि उनमें अवश्य अन्तर हैं। यदि यह भोगांश निरयण होते तो सदा एक ही जैसे रहते परन्तु ऐसा नहीं है। इसी प्रकार जैसा हम देख ही चुके हैं *महाभारत* में सप्त ऋषियों तक की गति

का स्पष्ट वर्णन है।

निरयण फलितज्योतिषी "सम्मोहन" अवस्था में हैं: मैं जब स्वयं निरयण ज्योतिष का अनन्य भक्त था तो उस समय जो-जो प्रश्न मेरे मस्तिष्क में हथोड़े चला रहे थे लगभग उन सबका उत्तर मैंने आपके सामने रख ही लिया है! अब केवलमात्र एक और "महाप्रश्न" रहता है, ऐसा मेरा विश्वास है और वह प्रश्न है: "यदि सायन भोगांश तथा 'सेकण्डरी प्रोग्रेशन' ही वास्तविक खगोलिकी तथा फलित ज्योतिष है तो अभी तक जो 'निरयण ज्योतिषी' निरयण भोगांशों तथा दशा-भुक्ति के आधार पर भविष्यवाणियां करते आए हैं और कर रहे हैं वह कैसे सही निकली और निकल रही हैं?"

इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें पहले इसी प्रश्न को पूरी तरहे सें यों स्पष्ट करना होगा:-

१, दक्षिण तथा उत्तर भारत के ४० प्रतिशत से अधिक 'वैदिक ज्योतिषियों" की भविष्यवाणियां आज भी *सूर्य सिद्धान्त* के ग्रहस्पष्ट से सही कैसे होती हैं जबकि उन के मध्यमभोगों को निरयण मानने पर भी उनमें आधुनिक खगोलिकी के मध्यमभोगों से १७ कला से लेकर ३० अंशो तक का अन्तर है?

२, मध्य भारत तथा उत्तर भारत की ३० प्रतिशत तथा कश्मीर की शत-प्रति-शत हिन्दू जनता को *ग्रहलाघव* के ग्रहस्पष्ट से भविष्यवाणियां सही कैसे निकलती हैं जबकि वह अयनांश तथा ग्रह स्पष्ट न *सूर्य सिद्धान्त* से मिलता है न आधुनिक खगोलिकी से और न ही रमण अयनांश या ग्रहस्पष्ट से?

३, डा, रमण की भविष्यवाणियां सही कैसे निकलती हैं जबकि उनका अयनांश न *सूर्य सिद्धान्त* से मिलता है न *गहलाघव* से और न सरकारी अयनांश से ही?

४, कृष्णामूर्ति पद्धति से फलित कैसे सही निकलता है जबकि न उनका अयनांश और न भावस्पष्ट ही किसी से मेल खाता है---वह भावस्पष्ट को भावमध्य नहीं भावारम्भ मानते हैं सायन पद्धति की भाँति?

५, विदेशी निरयण भक्तों को सिरिल फागन के अयनांश से सही फलित कैसे मिलता है क्योंकि वह किसी भी भारतीय अयनांश यहां तक कि *सूर्य सिद्धान्त, ग्रहलाघव* आदि से भी मेल नहीं खाता है?

६, सबसे बड़ी बात तो यह है कि सरकारी अयनांश वालों को सही फलित कैसे मिलता है जबकि न वह अयनांश और न वह ग्रहस्पष्ट ही शास्त्रीय है और न आधुनिक ही (क्योंकि आधुनिक खगोलिकी के ग्रहस्पष्ट तो केवल सायन है) और न उपर्युक्त किसी भी ग्रहस्पष्ट अथवा अयनांश से मेल खाता है?

७, भिन्न-भिन्न अयनांशों के आधार पर भी सभी नाड़ीग्रन्थों के फलित ठीक कैसे निकलते हैं जबकि कुछ कलाओं के अन्तर से ही नाड़ी अंश भी बदल जाते है और भिन्न भिन्न अयनांशों में तो कम से कम एक अंश तक का अन्तर है?

८. "भृगु","रावण" आदि संहिताओं से "रमण". "लाहिरी" तथा अन्य अयनांशों से बनी सभी कुण्डलियों के फलित सही कैसे हो सकते हैं जबकि भृगु, रावण आदि के समय इस नाम का कोई अयनांश नहीं था?

तो आइए अब इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ते हैं।

भगवान गौड़पादाचार्य की अद्वैत वेदान्त की एक अद्वितीय विश्व विख्यात कृति है *गौड़पादीय कारिका*। आपके इन प्रश्नों का उत्तर उन की ही इन कारिकाओं द्वारा दिया जा सकता है : जब प्रत्येक पक्ष का "पूर्वपक्षीय" अर्थात् अनुयायी उनके सामने सांख्य, कणाद, वैशेषिक अपने अपने मतों का उल्लेख करके यह सिद्ध करने का प्रयत्न करता हैं कि केवल उनका ही मत सीधे मोक्ष तक पहुँचाने का एकमात्र मार्ग है---बिल्कुल वैसे ही जैसे आजकल का प्रत्येक अलग-अलग अयनांशों का भक्त, जैसे "रमण-अयनांश भक्त", "सरकारी अयनांश भक्त", 'कृष्णामूर्ति अयनांश भक्त" आदि यह मानकर चलता है कि केवलमात्र उनका ही अयनांश सीधे सही भविष्यवाणी रूपी परमात्मा तक पहुँचा सकता है-----तो सबसे पहले गौड़पादाचार्य उनका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इस प्रकार करते हैं:

यं भावं दर्शयेद्यस्य तं भावम् स तु पश्यति। तं चावति स भूत्वासौ तद्ग्रहः समुपैति तम्।। वै० प्र० ३०

"गुरु जिस को जो भाव दिखला देता है वह उसीको आत्मस्वरूप से देखने लगता है फिर उस भाव में होनेवाला अभिनिवेश उस के आत्मभाव को प्राप्त होता है।" संक्षेप में यों कह सकते हैं कि वह प्रत्येक मत, या प्रत्येक अयनांश का अनुयायी अपने अपने गुरु द्वारा अनजाने में ही एक प्रकार से हिप्नोटाइज़ (hypnotise) सम्मोहन क्रिया से वश में किया जाता है और वह शिष्य अपनी क्षीर-नीर-विवेक की शक्ति मानो खो बैठता है क्योंकि उसको ऐसा लगता है कि गुरु द्वारा दिखाए गए मत में---अयनांश में---दोष निकालना तो मानो स्वयं सर्वज्ञ परमेश्वर के ज्ञान को चुनौती देना है! परन्तु वास्तव में इससे क्या होता है, वह भी इन ही परमाचार्य के शब्दों में सुनिए :

भूतं न जायते किंचिदभूतं नैव जायते। विवदन्तो अद्वया ह्येवमजातिं ख्यापयन्ति ते।।

अलात शान्ति प्रकरण चौथी कारिका

"किन्हींका मत है कोई सद्वस्तु उत्पन्न नहीं होती और कोई कहते हैं असद्वस्तुका जन्म नहीं होता उसप्रकार ये 'अद्वैतवादी' अजातवाद को ही प्रकाशित करते हैं।" और भगवान शंकराचार्य का इस पर भाष्य देखिये: " विवदन्तो विरूद्धं वदन्तो अद्वया अद्वैतिनो ह्येते अन्यान्यस्य पक्षौ सदसतोर्जन्मनी प्रतिषेधन्तो अजातिमनुत्पत्तिपथं ख्यापयन्ति प्रकाशयन्ति ते।" अर्थात् "इस प्रकार परस्पर विवाद यानी विरुद्ध भाषण करने वाले ये 'अद्वैतवादी'----भिन्न-भिन्न अयनांश वादी-----एक दूसरे के पक्ष का खण्डन करते हुए

अजाति---अनुत्पत्ति को ही----सायन भोगांशों को ही---प्रकाशित करते हैं।'' ऊपर की इन कारिकाओं के अर्थ में बीच में अयनांश सम्बन्धी शब्द जोड़ने के लिए क्षमा चाहता हूँ परन्तु ''निरयण भक्तों'' को सम्मोहन की अवस्था से बाहर लाने का dehypnotise करने का इससे अच्छा उपाय हमें नहीं सूझा।

इसका स्पष्टतम उदाहरण ''विश्वप्रसिद्ध शास्त्रीय निरयण पंचांग'' अर्थात् ''काशी विश्व पंचांग'' के सम्पादकों के ही शब्दों में सुनिए जो उनने १९९३ के अपने पंचांग की भूमिका में लिखे हैं: ''आजकल जो जहाज़ीपंचांग निकलता है उसको देखकर कितने विद्वानों की सम्मति उसी प्रकार बने ग्रहों से पंचांग बनाने की है और कितने बनाते भी हैं। परन्तु इन पंचांगों में बहुत मतभेद रहता है। कारण यह कि कोई २७ अंश, कोई २३ अंश, कोई १६ अंश, इस प्रकार के कई अयनांशों की कल्पना करते हैं। *जबतक इन अयनांशों का निश्चय केवल दृश्यगणनावश न हो जाय तब तक उन पंचांगों की धार्मिक सार्थकता का विचार कैसे किया जाय, क्योंकि उन पंचांगों के ग्रह न दृश्य ही रहे न आर्षग्रन्थ के अनुकूल ही हुए!''* कम से कम इन सम्पादकों पर आप ''नास्तिक'', ''मूर्ख'', ''विदेशी वैज्ञानिकों के पिट्ठू'' आदि होने का आरोप तो नहीं लगा सकते हैं! और वैसे भी इनका यह कथन तो तर्कसंगत है ही!

उनके इन तर्कों से भी तो यही सिद्ध होता है कि भिन्न-भिन्न अयनांशों पर आधारित भविष्यवाणियां कदापि सही नहीं हो सकती ह (चाहे उनके अलग-अगल अनुयायी कुछ भी कहें) क्योंकि वह न दृक् हैं न शास्त्रीय और क्योंकि यह सारे अयनांश एक दूसरे का खण्डन करते है।

वास्तविक ''पाराशरी'' आदि फलित ग्रन्थ इस समय तो क्या कई शताब्दियों से ही कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं:-कोई भी भवन अधिकाधिक उतना ही टिकाऊ होसकता है जितनी उसकी नींव गहरी और दृढ़ हो अतः यह निश्चित करने के लिए कि ''वैदिक ज्योतिष'' का फलित कितना ठीक हो सकता है पहले उसके ग्रन्थों की प्रामाणिकता देखनी होगी।

कुछ आधुनिक ज्योतिषी जो वेदों तथा वास्तविक ज्योतिष ज्ञान से कोसों दूर हैं, विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी आदि दशा पद्धतियों को ''ऋषि-मूलक'' सिद्ध करने के लिए विकृत रूप में उपलब्ध आधुनिक ''बृहत्पाराशर होराशास्त्रम्'' के उद्धरण देते हैं। इस ग्रन्थ के विषय में पृष्ठ ६३४ पर शंकर बालकृष्ण दीक्षित *भारतीय ज्योतिष* में क्या लिखते है सुनिए: ''पाराशरी का नाम ज्योतिषियों में बड़ा प्रसिद्ध है। बृहत्पाराशरी नामक एक ग्रन्थ बम्बई के ज्ञानसागर प्रेस में श्रीधर शिवलाल ने शक १८१४ में छपाया है। इसके पूर्व और उत्तर दो खण्ड हैं। पूर्वखण्ड में ८० अध्याय हैं। उस पुस्तक में लिखा है कि इनमें से ५१ अध्याय भिन्न-भिन्न स्थानों में बहुत प्रयत्न करने पर मिले और वह भी खण्डित थे, जटाशंकरसुत श्रीधर ने उन्हें पूर्ण करके छपाया। पूर्वखण्ड में ४१९६ श्लोक हैं। इनमें से कितने मूलग्रन्थ के हैं और कितने श्रीधर अथवा मुद्रक ने अन्य ग्रन्थों से लिये हैं, इसें जानने का कोई उपाय नहीं है। एक जगह अयनांश लाने के लिए *ग्रहलाघव* का श्लोक दिया है पर वहां यह नहीं लिखा है कि वह श्लोक *ग्रहलाघव* का है। सारांश यह कि इसके पूर्व खण्ड को पाराशरकृत कहना व्यर्थ है। उत्तरखण्ड में २० अध्याय हैं। उनमें अधिकतर अनुष्टुप छन्द के ८१२ श्लोक हैं। इसमें न लिखी बातें गर्गकृत होराशास्त्र में देखने को कहा है। *कहीं कहीं कुछ कार्य सायन ग्रहों द्वारा करने को कहे हैं।* पता नहीं, वराहमिहिर के पहले की पाराशरी उपलब्ध है या नहीं। भटोत्पल ने *बृहज्जातकम्* के सप्तम अध्याय के नवें श्लोक की टीका में लिखा है: 'पाराशरीसंहिता केवलमस्माभिर्दृष्टा न जातकम्। श्रूयते स्कन्धत्रयं पाराशरस्येति। तदर्थ वराहमिहिरः शक्तिपूर्वैरित्याह।' अर्थात् 'पाराशर के तीन स्कन्ध सुनने में आते हैं, इसीलिए वराहमिहिर ने शक्ति अर्थात् पाराशर का उल्लेख अध्याय ७ श्लोक १ में किया है। पर मैंने पराशर की केवल संहिता देखी है, उसका जातक नहीं देखा है।' *भटोत्पल के समय, शक ८८८ में भी, पाराशरी उपलब्ध नहीं थी तो इस समय कहां मिलेगी?''*

यहां यह प्रश्न उठता है कि क्या किसी भी आधुनिक वराहमिहिर ने वास्तविक वराहमिहिर की *बृहज्जातकम्* पर लिखी भटोत्पल की यह टीका नहीं पढ़ी है? यदि नहीं तो यही कह सकते हैं कि उनको आधुनिक वराहमिहिर कहलाने का अधिकार नहीं है। और यदि पढ़ी है तो उनने जनसाधारण के सामने यह बात क्यों नहीं रखी कि वास्तविक *बृहत्पाराशर होराशास्त्रम्* इस समय उपलब्ध नही है? क्या इस ड़र से कि फिर वह पाराशर की दुहाई नहीं दे सकेंगे?

एक और आश्चर्य की बात यह भी है कि पाराशर मुनि के एक मात्र ग्रन्थ ''विष्णुपुराण'' में कहीं भी इस बात का वर्णन नहीं है कि उन्होंने फलित ज्योतिष पर भी कोई ग्रन्थ लिखा है। हो सकता है पाराशर गोत्र के किसी व्यक्ति ने बाद में कभी कोई पुस्तक लिखी हो जिसमें उसने ''सेकण्डरी प्रोग्रेशन'' तथा फलित ज्योतिष के अन्य सिद्धान्तों का वर्णन किया हो जो बाद में अरबों के हाथ लगी। इस समय जो आधा दर्जन "पाराशरियां'' उपलब्ध हैं--और प्रत्यकें पाराशरीकर्ता अपने को असली "पाराशर" मानता है----वह तो लगता है कुछ लालची ब्राह्मणों द्वारा लिखी गई हैं क्योकि हर अशुभ ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा के साथ उनमें लिखा है ''गां महिषां दद्यात्'' अर्थात् इन दशा-भुक्ति वाले मनुष्य को ''गाय/भूमि तथा भैंस का दान करना चाहिए''। स्कूटर या गाडियाँ तो उन दिनों थीं नही!

यदि वास्तव में ही वेदव्यास के पिता पाराशरमुनि ने कोई ''पाराशरी'' लिखी होती तो महाभारत

युद्ध प्रारम्भ होने से पहले जो व्यासमुनि द्वारा दुर्योधन को युद्ध से रोकने के प्रयास हो रहे थे उस सन्दर्भ में वह अवश्य उससे कहते ''बेटा! मैंने तो तुम्हारी पत्री अपने पिताश्री द्वारा लिखित 'पाराशरी' से बाँच ली है। तुम्हारे ऊपर तो मारकेश की महादशा लग रही है अतः तुम यह युद्ध मत करो।'' न तो उन ने युधिष्ठिर को सान्त्वना देते ही यह कहा है कि ''बेटा! 'पाराशरी' के अनुसार तो अब तुम्हारे राजयोग कारक ग्रहों की महादशा प्रारम्भ हो रही है अतः तुम निश्चिन्त होके युद्ध करो''। कम से कम आजके ज्योतिषी तो अवश्य ही ऐसा ही कहते! परन्तु उन ने ऐसा कुछ न कहकर उत्पातों, ग्रहण आदि अन्य निमित्तों तथा धूमकेतु व नक्षत्रचार द्वारा सूचित महान नरसंहार की ओर ध्यान दिलाया और उन्हीं माध्यमों द्वारा कौरवों की पराजय बताई । महाभारत में गर्गमुनि का वर्णन अवश्य है, वह भी ग्रहगति के ज्ञान के विषय में अर्थात् खगोलिकी के संबन्ध में न कि फलित के सम्बन्ध में। परन्तु पाराशर मुनि का तो इस सन्दर्भ में कहीं कोई वर्णन ही नहीं है! भगवान जाने कौन सी *पाराशरी* वास्तव में थी, यदि कोई थी भी।

अब जब ''पाराशरी के अस्तित्व'' पर ही इतना बड़ा प्रश्न चिन्ह लग गया तो उसपर आधारित दशा-भुक्तियों के फल ठीक होंगे यह असम्भव है।

"बृहत्पाराशरी" को लाहिरी या रमण अयनांश पर आधारित मानने वाले "ज्योतिषियो" को अपनी अल्पज्ञता और अज्ञान पर शर्म आनी चाहिए: अब चलिए हम यह भी मान लेते हैं कि हमारे आधुनिक "वराहमिहर और वामदेव" सच ही कह रहे हैं और "सच के सिवा कुछ नही कह रहे हैं" कि वह जिन आधा दर्जन "बृहत्पाराशरियों" की दुहाई दे रहे हैं वह सब की सब वास्तव में ही महर्षि पाराशर द्वारा ही लिखित है तो भी इन "वराहमिहिरों और वामदेवों" को अपनी अल्पज्ञता पर शर्म आनी चाहिए कि उन ने उसको रमण या लाहिरी आदि अयनांशों वाले राशिचक्रों पर आधारित मान लिया है। कैसे? देखिए: रुद्रपुर के श्री भोलादत्त महतोलिया ने हमें "श्रीविष्णु महापुराण" के कुछ श्लोक भेजे हैं जो हमसे पिछले वर्ष के पंचांग में छूट गए थे। इन श्लोकों से तो इन तथाकथित वैदिक ज्योतिषियों के इस असत्य का भाण्ड़ा-फोड़ होजाता है कि पाराशर मुनि ने "ऐसी पाराशरी लिखी थी जो लाहिरी अयनांश से बिल्कुल सही फल देती ह"। यह श्लोक इस ग्रन्थ के द्वितीय अंश के आठवें अध्याय से हैं:

कुलालचक्र पर्यन्तो भ्रमन्नेष दिवाकरः । करोत्यहस्तथा रात्रिं विमुंचन्मेदिनीं द्विज ।।२७।।
अयनस्योत्तरस्यादौ मकरं याति भास्करः। ततः कुंभं च मीनंच राशे राश्यन्तरं द्विज।।२८।।
त्रिष्वेतेष्वथ भुक्तेषु ततो वैषुवतीं गतिम्। प्रयाति सविता कुर्वन्नहोरात्रं ततः समम् ।।२६।।
ततो रात्रिः क्षयं याति वर्द्धतेऽनुदिनं दिनम्।।३०।।
ततश्च मिथुनस्यान्ते परां काष्ठामुपागतः।।राशिं कर्कटकं प्राप्य कुरुते दक्षिणायनम् ।।३१।।
दशपंच मुहूर्त वै अहर्वैषुवतं स्मृतम्।।६५।।
वर्धते ह्रसते चैवाप्ययने दक्षिणोत्तरे। अहस्तु ग्रसते रात्रिं रात्रिर्ग्रसति वासरम् ।।६६।।

"हे द्विज! कुलाल-चक्र (कुम्हारके चाक) के सिरेपर घूमते हुए जीवके समान भ्रमण करता हुआ वह सूर्य पुथिवीके तीसों भागोंका अतिक्रमण करनेपर एक दिन-रात्रि करता है।।२७।। हे द्विज! उत्तरायणके आरम्भमें सूर्य सबसे पहले मकरराशिमें जाता है, उसके पश्चात् वह कुम्भ और मीन राशियों में एक राशिसे दूसरी राशिमें जाता है।।२८।। इन तीनों राशियोंको भोग चुकनेपर सूर्य रात्रि और दिनको समान करता हुआ वैषुवती गति का अवलम्बन करता है, (अर्थात् वह भूमध्य-रेखाके बीचमें ही चलता है)।।२६।। उसके अनन्तर नित्यप्रति रात्रि क्षीण होने लगती है और दिन बढ़ने लगता है। फिर (मेष तथा वृष राशिका अतिक्रमण कर) मिथुन राशिसे निकलकर उत्तरायणकी अन्तिम सीमापर उपस्थित हो वह कर्कराशिमें पहुँचकर दक्षिणायनका आरम्भ करता है।।३०-३१।।.....वैषुवत् दिवस पन्द्रह मुहूर्तका होता है, किन्तु उत्तरायण और दक्षिणयनमें क्रमशः उसके वृद्धि और ह्रास होने लगते हैं। इस प्रकार उत्तरायणमें दिन रात्रि का ग्रास करने लगता है और दक्षिणायनमें रात्रि दिनका ग्रास करती रहती है।"

मानो इन "सर्वज्ञ वैदिक ज्योतिषियों" की "सर्वज्ञता" को फटकारने के लिए ही इसी अध्याय में महर्षि पाराशर आगे कहते हैं:

शरद्वसन्तयोर्मध्ये विषुवं तु विभाव्यते। तुला मेष गते भानौ समरात्रि दिवं तु तत्।।६७।।
कर्कटावस्थिते भानौ दक्षिणायनमुच्यते । उत्तरायणमप्युक्तं मकरस्थे दिवाकरे।।६८।।

"शरद् और वसन्तऋतुके मध्यमें सूर्य के तुला अथवा मेषराशिमें जानेपर 'विषुव' होता है। उस समय दिन और रात्रि समान होते हैं।।६७।। सूर्य कर्क राशिमें उपस्थित होने पर दक्षिणायन कहा जाता है और उसके मकर राशिपर आनेसे उत्तरायण कहलाता है।।६८।।"

इन भौगोलिक तथा खगोलीय चमत्कृतियों में तो कोई कट्टर से कट्टर निरयणवादी भी यह नहीं कह सकता है कि महर्षि पाराशर ने यहां पर किसी निरयण राशिचक्र का वर्णन किया है।

इससे तो यही स्पष्ट होता है कि न तो उन विदेशी "वामदेवों" ने और न हमारे "स्वदेशी वराहमिहरों" ने ही वास्तविक महर्षि पाराशर द्वारा लिखित "श्रीविष्णु पुराण" का अध्ययन किया है। यह भी हो सकता है कि बहुत सारे "वैदिक ज्योतिषियों" ने इस ग्रन्थ का नाम तक नहीं सुना होगा। कितने आश्चर्य की बात है कि यह असंख्य वराहमिहर और वामदेव यह दावा करते हैं कि इसी पौराणिक ग्रन्थ

श्रीविष्णुपुराण के रचयिता "वेदव्यास के पिता महर्षि पाराशर" ने वृहत्पाराशरी लिखी है जिसके आधार पर यह ज्योतिषी देश-विदेशों के धनवानों और निर्धनों का; नेताओं और अभिनेताओं का अर्थात् सारी मानवजाति के ही सुन्दर या असुन्दर भविष्य का बखान करते हैं----*और साथ में यह भी दावा करते हैं कि वह पाराशरी है निरयण!* इससे तो केवल इनकी अल्पज्ञता ही झलकती है क्योंकि मैं नहीं मानता कि धन और यश की लालसा में यह इतने बौरा गए हैं कि यह समझते हैं कि महर्षि पाराशर भी बहुत सारे ज्योतिषियों की तरह वाक्छल करते थे अतः उन्होंने "श्रीविष्णुपुराण" के लिए तो सायन राशिचक्र का वर्णन किया परन्तु इन वराहमिहरों और वामदेवों के लिए निरयण राशिचक्र का।

क्योंकि "धुरन्धर वैदिक ज्योतिषियों" के अनुसार भी आज से ५००० वर्ष पूर्व अयनांश कम से कम ५०अंश धन अर्थात् + था अतः यह भी नहीं कह सकते हैं कि महर्षि पाराशर के समय अयनांश क्योंकि नगण्य था अतः उनने मेष-तुला राशियों को विषुव के साथ जोड़ दिया था क्योकि सम्पात उन दिनों निरयण वृषभ/वृश्चिक राशियों के २०-२० अंश में होता मेष/तुला के प्रारम्भ में नहीं!

हम पीछे यह सिद्ध कर आए हैं कि महर्षि पाराशर भी "एक दिवस वर्ष के समान" मानते थे।

कहीं कोई "वैदिक ज्योतिषी" यह समझलें कि "विष्णुपुराण" के यह श्लोक महतोलियाजी ने या हमने अपनी ओर से लिखे हैं अतः यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह मूल श्लोक तथा इनका अनुवाद गीताप्रेस, गोरखपुर संस्करण से अक्षरशः उद्धृत किए गए हैं --- किसी विदेशी सायन वैज्ञानिक द्वारा प्रकाशित संस्करण से नहीं!

मुझे यह भी ज्ञात है कि इतना ढीठ कोई भी "वैदिक ज्योतिषी" नहीं होगा कि इन पंक्तियों को पढ़ने के पश्चात् भी उसकी आँखें नहीं खुलेंगी क्योंकि शायद ही कोई ज्योतिषी इतना गिरा हुआ है कि कोई कुछ भी कहे उसको तो येन-केन-प्रकारेण ---झूठ को सच बनाकर---धन और यश चाहिए!

निरयण राशिचक्र तथा नक्षत्र-चक्र की कपालक्रियाः यह काल्पनिक-निरयण-ज्योतिष-प्रासाद तो उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर अब ढह ही गया है फिर भी यदि कुछ भग्नावशेष रह गए हो तो आइए उनके भी एक और झटके से मिट्टी मे मिला लें! "वृहत्पाराशरी" वाले यही पाराशर मुनि इसी "श्रीविष्णुपुराण" के द्वितीय अंश के आठवे अध्याय में आगे कहते हैं:

प्रथमे कृत्तिका भागे यदा भास्वांस्तदा शशी । विशाखानां चतुर्थेऽशे मुने तिष्ठत्यसंशयम्।।७६।।
विशाखायां यदा सूर्यश्चरत्यंशंतृतीयकम्।तदा चन्द्रं विजानीयात्कृत्तिकां शिरसि स्थितम्।।७७।।
तदैव विषुवाख्योऽय कालः पुण्योऽभिधीयते। तदा दानानि देयानि देवेभ्यः प्रयतात्मभिः ।। ७८।।

"हे मुने! जिस समय सूर्य कृत्तिका नक्षत्र के प्रथम भाग में तथा निस्सन्देह चन्द्रमा विशाखा के चतुर्थ भाग में हो, अथवा जिस समय सूर्य विशाखाके तृतीय भाग में तथा चन्द्रमा कृत्तिका के प्रथम भाग में हों, तभी यह विषुव अर्थात् सम्पात नामक अति पवित्र काल कहा जाता है....." जैसा कि हम ऊपर देख ही चुके हैं महर्षि पाराशर ने तो मेष और तुला रशियों को ही विषुव के साथ जोडा हैं, जो कि केवल सायन हो सकती हैं, और यहां उन चमत्कृतियों को ही वह कृत्तिका के प्रथम चरण और विशाखा के तृतीय-चतुर्थ चरण के साथा जोड़ रहे हैं। अब यदि महर्षि ने किसी निरयण समान विभाग वाले कृत्तिका या विशाखा विभाग की कल्पना की होती तो वह नक्षत्रचरण तो फिर उस समय भी निरयण वृष राशि के ० अंश और वृश्चिक राशि के शून्य अंश पर होते जबकि हम ऊपर देख चुके हैं कि तथाकथित निरयण सम्पात तो उस समय वृष/वृश्चिक राशि के २० अंशों में होना चाहिए थां। इससे यह भी सिद्ध होता है कि आधुनिक वैदिक ज्योतिषियों की धारणाओं के विपरीत, समान विभाग वाला नक्षत्रचक्र भी महर्षि पाराशर ने भी सायन राशिचक्र के साथ ही जोडा है क्योकि कुछ समय पूर्व दर्शाए गए तथ्यों के आधार से तो यह निस्सन्देह सिद्ध हो चुका है कि आजसे ५००० वर्ष पूर्व कृत्तिका नक्षत्र का सायन भोग शून्य था अतः वह नक्षत्र, वसन्त सम्पात और सायन मेष राशि एक ही साथ में प्रारम्भ होते थे, क्योंकि जिस समय जिस नक्षत्र के भोगांश शून्य होते उसका महत्त्व वसन्त सम्पात से जुड़े होने के कारण से अत्यधिक बढ़ जाता। इससे तो इन निरयणवदियों की इन आशाओं पर भी पानी फिर जाता है कि प्राचीन ऋषि नक्षत्रचक्र को स्थिर मानते थे।

क्या इन निरयणवादियों को "पाराशरी" को निरयण मानने की मूर्खता जतलाने के लिए और भी कुछ प्रमाण चाहिए? चलिए वह भी इनके सामने प्रस्तुत करते हैं: "श्रीविष्णुपुराण" के निम्न श्लोक राशियों, मासों व ऋतुओं तथा अयनों को किस सुन्दरता से परस्पर जोड़ते हैं, देखते ही बनता है:

तपस्तपस्यौ मधुमाधवौच शुक्रः शुचिश्चायनमुत्तरं स्यात्।
नभोनभस्यौ च इषस्तथोर्जस्सहः सहस्याविति दक्षिणं तत्।। अंश २, अध्यां ८, श्लोक ८१

"तप, तपस्या, मधु, माधव, शुक्र और शुचि तो उत्तरायण के मास हैं जबकि नभ, नभस्य, ईश, ऊर्जा, सह, और सहस्य दक्षिणयन के मास हैं"। मैं नहीं समझता कि कोई निरयणवादी इतना अल्पज्ञ होगा कि वह महर्षि पाराशर के मेष आदि राशियों को मधु आदि वैदिक मासों और अयनों से जोडने के पश्चात् भी यह कहेगा कि "पाराशर द्वारा लिखित पाराशरी तो निरयण है"।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इन पंक्तियों को पढ़कर सच्चे वैदिक ज्योतिषी "इस काल्पनिक निरयण पाराशरी" की कपालक्रिया अपने ही करकमलों से स्वयं ही करेंगे!

मुहूर्तों का चयन भी सायन राशिचक्र के आधार पर ही होना चाहिए: क्योंकि सारे के सारे मुहूर्त लग्नों, राशियो, मासों तथा ऋतुओं और नक्षत्रों पर आधारित हैं और जैसा हम देख ही चुके हैं वेदों तथा अन्य शास्त्रों में यह सबके सब----यहां तक कि फलित ज्योतिष में भी ---आधार बिन्दु सायन हैं, अतः हमें तत्काल सायन राशिचक्र पर आधारित मुहूर्त ही बनाने चाहिएं अन्यथा निरयण मुहूर्त पर विवाह आदि संस्कार निर्धारित करने वाले पंचांगकार तो सारी की सारी हिन्दू जनता की "हत्या के दोषी होंगे"

वराहमिहिर से ही दशा भुक्ति पद्धतियों का प्रचलन प्रारम्भ:-आजकी तारीख में यदि फलित-ज्योतिष का कोई भी प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थ मौलिक रूप में उपलब्ध कहा जा सकता है तो वह है वराहमिरि का लगभग ५०० ई० में लिखा ''बृहज्जातकम्''। इसमें भटोत्पल के अनुसार पाराशर का तो वर्णन है पर पाराशरी की ४५ महादशा पद्धतियों में से एक का भी वर्णन नहीं है जबकि स्वयं वराहमिहिर ने एक अन्य ही दशा-अन्तर्दशा पद्धति सविस्तार समझाई है। इस समय उपलब्ध दर्जनभर लघु और बृहत्पाराशरियों में वराहमिहिर की इस दशा पद्धति के विषय में सब को सांप सूंघ गया है -- किसी में कोई वर्णन नहीं है। लगता है इन पाराशरियों के ''निर्माता-निर्देशक'' आधुनिक वराहमिहरों की ही भान्ति गणित से बहुत कतराते थे अतः इस दशा पद्धति को गोल ही करदिया। यह भी हो सकता है कि इन महाशय ने यह सोच लिया हो कि वराहमिहिर वाली दशा पद्धति देने से कहीं उनकी पोल न खुल जाए कि यह ग्रन्थ तो वराहमिहिर के बाद के हैं जबकि वह यह प्रयत्न कर रहे थे कि उसको फलित ज्योतिष का प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाए लेकिन साथ में १०वीं/११वीं शताब्दि के *ग्रहलाघव* का अयनांश दे रहे है!

जब हम वास्तविक वराहमिहिर द्वारा बताई गई दशा पद्धति क्लिष्ट होने के कारण अपना ही नहीं रहे हैं तो फलित सही होने के विषय में हम उनका जो भी गुणगान कर रहे हैं वह केवल दिखावा है, वास्तविकता नहीं।

अन्य ''ऋषियों'' द्वारा प्रणीत ग्रन्थ भी कृत्रिम हैं, मौलिक नहीं:-'वैदिक ज्योतिष'' का एक और ग्रन्थ है ''जैमिनी सूत्रम्''। इसकी दशा-भुक्ति पद्धति तथा आत्मकारक, कारकांश और राशियों की परस्पर दृष्टि आदि व तथाकथित पाराशरी पद्धति में उतना ही अन्तर है जितना कि शीर्षासन व शवासन में ---अर्थात् यह दोनों पद्धतियां एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं यहां तक कि एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत भी हैं क्योंकि यह एक दूसरे को बिल्कुल नकारती हैं तथापि मरता क्या न करता वाली उक्ति के आधार पर भीष्मपितामह को १३०० वर्षो तक तीरों की शैय्या पर लिटाए रखने वाले विदेशी लेखक महोदय ने इन *जैमिनि सूत्रम्* के लेखक को भी वैदिक ऋषि जैमिनी सिद्ध करने का प्रयास किया है ----यद्यपि प्रो. पी. एस. शास्त्री ने अपने अनुवाद में स्पष्ट घोषण की है कि यह जैमिनी कोई वैदिक ऋषि न होकर केवल जैमिनी नाम का साधारण लेखक है। इस बात से इन विदेशी लेखक को क्या अन्तर पड़ता है कि न तो कहीं वैदिक ऋषि जैमिनी ने यह कहा है कि उनने ज्योतिष पर भी कोई ग्रन्थ लिखा है और न ही ज्योतिष के ''जैमिनी सूत्रकार'' ने कहीं पर यह कहा है कि वह वैदिक ऋषि जैमिनी ही हैं। भले ही इन दोनों की लिखने की शैली भी एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। ऐसा लगता है कि कुछ वर्षो के पश्चात् इन पंक्तियों के लेखक के बारे में भी कुछ अपना उल्लू सीधा करने वाले यह कहना प्रारम्भ करदेंगे कि वह तो वही ''कृष्ण'' थे जिसने पाण्डवों और कौरवों के युद्ध में अर्जुन के रथ की भागडोर सम्भाली थी। प्रमाण? यह क्या कोई कम प्रमाण है कि दोनों के नाम एक ही जैसे हैं! इससे ऐसे व्यक्तियों को कोई अन्तर नहीं पड़ता कि दोनों में से एक ने भी कभी भूले से भी यह दावा नहीं किया कि वह दोनों एक हैं! वैसे भी आजकल एक मुख्यमंत्री के बारे में यह कहा जाता है कि वह तो ''यदुवंशी यादव का ही पुनरवतार है!'' वराहमिहिर ने भी न तो *जैमिनी सूत्रम्* का न उनके प्रणेता का ही और न ही उनके किसी सिद्धान्त का कहीं कोई वर्णन किया है जबकि अन्य ग्रन्थकारों के नाम दिए हैं यहांतक कि भटोत्पल ने भी बृहज्जातकम पर लिखी अपनी टीका में इसका कही वर्णन नहीं किया है। इससे यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि ''जैमिनी सूत्रम्'' किसी वैदिक ऋषि जैमिनी ने नहीं लिखा है अपितु किसी जैमिनी नामक व्यक्ति ने अन्य दशाभुक्ति पद्धतियों से असफलता पाकर और उनसे खिजला कर अपना कोई नया ही मत निकाला जैसे अभी कुछ वर्ष पूर्व से ''कृष्णमूर्ति पद्धति'' का प्रादुर्भाव हुआ है जो न स्वदेशी है न विदेशी और न सायन न निरयण।

इसी प्रकार *गर्ग जातकम्* और *गर्गसंहिता* के बारे में यह कहा जाता है कि वह पुस्तक भगवान कृष्ण के कुलगुरु गर्ग मुनि ने रची है जिनने भगवान कृष्ण व बलरामजी की जन्मकुण्डली बनाई थी---डा० रमण को सिरिल फागन से क्यों बनवानी पड़ी तब भी यह तो वह ही जानें! प्रमाण? यही कि दोनों के नाम एक ही जैसे हैं। वैसे यथार्थ स्थिति तो महाभारत के गदापर्व, अध्याय ३७ के श्लोक १३ से १५ में देखिए:

तस्माद् गन्धर्व तीर्थाच्च महाबाहुररिंदमः। गर्ग स्रोतो महातीर्थमाजगामैककुण्डली।।
तत्र गर्गेन वृद्धेन तपसा भावितात्मना। कालज्ञान गतिश्चैव ज्योतिषां च व्यतिक्रमः।।
उत्पाता दारुणाश्चैव शुभाश्च जनमेजय। सरस्वत्याः शुभे तीर्थे विदिता वै महात्मना।।
तस्य नाम्ना च तत्तीर्थ गर्ग स्रोत इति स्मृतम्।

"शत्रुओं का दमन करने वाले बलरामजी उस गन्धर्व तीर्थ से गर्ग तीर्थ पर चलेगए। वहाँ पर पवित्रात्मा वृद्ध गर्ग ने तपस्या के द्वारा सरस्वती नदी के किनारे कालज्ञान तथा सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों की गति व सभी शुभ तथा दारुण उत्पातों के विषय में ज्ञान प्राप्त किया था। इसी कारण से उस स्थान का नाम गर्गस्रोत पड़ गया था।'' अब आप इसमें स्वयं ही देखिए कि इसमें क्या कहीं इस बात का वर्णन है कि बलरामजी ने अपनी जन्मपत्री के बारे में गर्गमुनि से कोई बात की? इन श्लोकों सें तो उल्टा ऐसा लगता है कि गर्ग मुनि बलरामजी के समय से बहुत पहले हुए हैं क्योकि उनके सरस्वती नदी के तट पर तपस्या करने का स्पष्ट वर्णन है जबकि स्वयं ममहाभारत के अनुसार यह नदी बलरामजी के समय अदृश्य हो चुकी थी।

इन्हीं गर्गमुनि का वर्णन श्रीशिव महापुराण में पार्वती विवाह मुहूर्त के प्रसंग में यों है:

तत्रोपविष्टो गर्गश्च यत्रास्ति घटिकालयम्। यावच्छेषा घटी तावत्कृतम्प्रणवभाषणम्।। २/३/४७/४८

इन ग्रन्थों में कहीं भी कोई आभास मात्र भी नहीं है कि गर्गमुनिने फलित ज्योतिष के विषय में भी कुछ कहा है! इन श्लोकों से एक प्रश्न यह भी उठता है कि यदि *सूर्य सिद्धान्त* सृष्टि के आदिकाल में ही मयदानव को सिखाया गया था तो गर्गमुनि को तपस्या द्वारा ग्रहगणित जानने की क्या आवश्यकता पड़ी? या उनको भी डा० रमण ही की भान्ति उस ग्रन्थ के ग्रहगणित पर भरोसा नहीं था? *पहले पहले तो मैं स्वयं भी यह ''गर्गजातकम्'', ''बृहत्पाराशरी'' आदि नाम सुनके यह मानकर चलता था कि यह वास्तव में ही गर्ग मुनि या पाराशरादि ऋषि हैं जिन्होंने यह ग्रन्थ लिखे हैं परन्तु भगवान शंकराचार्य के ब्रह्मसूत्र भाष्य का यह तर्क देखकर तो हमारी आँखें खुल गईं:* श्वेताश्वतर उपनिषद के ५वें अध्याय का दूसरा श्लोक इस प्रकार है: ''ऋषिं प्रसूतं कपिलं यस्तमग्रे ज्ञानैर्भिभर्ति जायमानं च पश्येत् '' इसका एक अर्थ यह हो सकता है कि ''ऋषियों में श्रेष्ठ कपिल मुनि को.....''। अब क्योकि इसमें '' ऋषिम् कपिलम्'' शब्दों का प्रयोग किया गया है अतः सांख्य मतावलम्बी इसको इस बात का प्रमाण मान कर चलते हैं कि यह वैदिक मुनि कपिल ही हैं जो उनके सांख्य मत के प्रवर्तक हैं क्योंकि उनका नाम भी कपिल है। तो लीजिए सुनिए भगवान भाष्यकार ब्रह्मसूत्र में क्या कहते हैं: ''सिवाय इसके कि दोनों के नाम एक ही जैसे हैं इस बात को सिद्ध करने का और क्या प्रमाण है कि यह वही कपिल मुनि हैं जिनका वर्णन उपनिषदों में आया हैं? तो क्या केवल इसी आधार पर यह सिद्ध हो सकता है कि वह वास्तव में वेदोक्त कपिल मुनि ही है? कदापि नहीं।''

सो यह रही इन गर्ग और पाराशर आदि ''वैदिक ऋषियों'' की तथा उनके द्वारा रचित फलित ग्रन्थों पर आधारित भविष्यवाणियों की प्रामाणिकता!

''वैदिक ज्योतिषी'' भृगु, रावण, आदि प्राचीन नामों से मूर्ख बनाते हैं:

अरे हाँ ''वैदिक ज्योतिष'' के प्रचार के लिए ही तो आजकल भृगु, रावण, अरुण, अगस्त्य आदि संहिताओं का भी खूब प्रचार किया जा रहा है यह कह कर कि वह ग्रन्थ वास्तव में ही ''शुक्राचार्य के पिता भृगु मुनि'', ''महापण्डित रावण'' तथा ''सूर्य भगवान के सारथी अरुण'' व ''समुद्र को आचमन बनाकर पीने वाले अगस्त्य मुनि'' ने ही लिखे हैं! प्रमाण? बस उन ''वैदिक ज्योतिषियों'' तथा उन के चमचों या फिर उन ग्रन्थों के प्रकाशकों का कथन है। वह क्या किसी सत्यवादी हरिश्चन्द्र के कथन से कुछ कम है? इसी प्रकार ''नाडी ग्रन्थों'' की भी बाढ़ सी आई है। प्रमाण? बाबावाक्यं प्रमाणम! यह सब ''वैदिक ज्योतिष'' का ही कमाल है क्योंकि यह सब आखिर वैदिक ऋषि ही तो हैं और भला उन्हें इन ग्रन्थों को लिखने के अतिरिक्त और काम ही क्या था? इससे क्या अन्तर पड़ता है कि पहले गुरु-शिष्य परम्परा के अनुसार सब मौखिक रूप से ही होता था जिस कारण वेदों को श्रुति कहा जाता है। कागज़ का तो तब आविष्कार ही नहीं हुआ था। परन्तु इन ''संहिताओं'' के लिए तो स्पेशल कागज़ सुलभ कराया गया होगा स्वर्गलोक में ''फैक्टरी'' लगवाकर! वैसे भी यह ''संहिता'' वाले कहते हैं कि असली ग्रन्थ तो भोजपत्र पर लिखे हुए हैं जो उनको उनके पूर्वजों से प्राप्त हुए हैं। इससे भी कोई अन्तर नहीं पड़ता है कि किसी भी रामायण अथवा अन्य किसी ग्रन्थ में इन सब मुनियों ने कहीं कोई संकेत मात्र भी नहीं दिया है कि उनने ऐसे किसी ग्रन्थ की भी रचना की है जो फलित ज्योतिष से संबद्ध है परन्तु यह ''वैदिक ज्योतिषी'' थोडे ही झूठ बोलेंगे। उनने वह ज़बर्दस्ती लिखवाई होगी उन मुनियों को अपने तहखाने में बन्द करके! समझ में नहीं आता कि अभी तक कृष्णद्वैपायन भगवान वेदव्यास को इनने इस ''ज्योतिष के महाभारत'' में क्यों नहीं घसीटा ---जबकि उनके पिताश्री पाराशर मुनि को खूब उछाला जरहा है--क्योंकि *ब्रह्मसूत्र* के यह वाक्य कि ''ज्योतिर्दर्शनात्'' और ''ज्योतिषैकेषामित्यन्ये'' में भला ''ज्योतिष'' शब्दों का फलित ज्योतिष के अतिरिक्त और क्या अभिप्राय हो सकता है? इसी प्रकार उनके द्वारा रचित ग्रन्थों में अवश्य ही ''रमणीय'', ''लहर'' आदि शब्द भी हैं। कृष्ण शब्द तो अनेकों बार आया है तो भला इन शब्दों का अर्थ ''रमण'', ''लाहिरी'' और ''कृष्णामूर्ति'' अयनांशों के सिवा और क्या हो सकता है? अतः सभी 'निरयण भक्तों' को अपने मनपसन्द अयनांश के प्रमाण में उन ग्रन्थों के श्लोक अभी से ढूँढ़ने चाहिएं!

यह 'रावण संहिता'' आदि ग्रन्थ तो बिल्कुल भरत, गणेश, महाराज युधिष्ठिर, यहाँ तक कि स्वयं रावण की भी, उन ही कुण्डलियों की भान्ति हैं जो प्रायः कुछेक हिन्दी अथवा अन्य प्रान्तीय भाषाओं के पंचांगों में छपती रहती है मानो कि वह जन्मकुण्डलियाँ स्वयं उन अवतारों के पुरोहितों ने बना कर उन पंचांग कर्ताओं को पकड़ा दी हों। पर हाँ उनमें यह कहीं भी नहीं लिखा होता है कि उन पंचांगकारों ने

वह कुण्डलियाँ लाई कहाँ से!

मैं इन संहिताओं के ''चालकों'' से विशेषकर यह पूछना चाहूंगा कि यदि रावण ज्योतिष शास्त्र का इतना महापंडित था तो क्या उसको यह पता नहीं था कि रामसे युद्ध करने से उसका नाम लेवा पानी देवा तक नहीं रहेगा? और यदि उत्तर यह है कि ''ज्योतिषियों को अपनी पत्रियाँ देखने से मना है''' तो यही कहना होगा कि ऐसा ज्योतिष किस काम का जिससे मनुष्य स्वयं अपना भला-बुरा समय नहीं देख सकता हो? और वह भला दूसरों को क्या उपदेश दे सकता है? वैसे भी शायद इस बात की ओर हमारा ध्यान कभी नहीं गया कि राम और रावण, दोनों नाम र अक्षर से ही प्रारम्भ होते है। अतः दोनों का गोचर एक ही जैसा रहा होगा और दोनों पर ''वैदिक ज्योतिष'' के अनुसार साडे-सती भी एक साथ रही होगी! अन्तर केवल इतना ही रहा होगा कि एक ने ''वैदिक ज्योतिषी जी'' द्वारा कहे गये उपाय ''शास्त्रोक्त ढंग से'' अपनाए होंगे और दूसरे ने '' अशास्त्रीय ढ़ंग से'' जैसा हम आगे भूतपर्व प्रधान मंत्री के विषय में देखेंगे। है ना यही बात? अस्तु।

अब यह ''संहिताएं'' ही जब प्रकाशकों तथा ''वैदिक ज्योतिषियों'' के ''अर्थ-हिताय'' हैं तो उनमें दिया गया फलित ''जजमान हिताय'' होगा यह असम्भव है।

वैसे एक बात और भी है -- यह *रावण संहिता* आदि के प्रवर्तक/प्रचारक/प्रकाशक वास्तव में ही यथा नाम तथा गुण सिद्ध हो रहे है --- वास्तविक रावण भी ''कंचन, कामिनी, काया'' के चक्कर में अपना और अपने सारे भाई बन्धुओं का सर्वनाश कर बैठा था और लगता है कि बहुत सारे ''वैदिक ज्योतिषी'' भी झूठ का प्रचार करके यही कुछ करने पर उतारू हुए हैं क्योंकि गीताजी के कथनानुसार तोः

त्रिविदं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः। कामः कोधस्तथा लौभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।

और यह तीनों ''नरक के द्वार तो कंचन, कामिनी और काया'' के ही पर्यायवाचक शब्द हैं और उदाहरणार्थ एक "तात्रिंक रावण" आजकल "कांचन के कारण" तिहार नामक "नरक" में है!

भृगु आदि संहिताएं भी सायन ही हो सकती हैं, निरयण कदापि नहीं: जैसा हम देख चुके हैं, भगवान वसिष्ठ के पुत्र और स्वयं ब्रह्माजी के पौत्र पाराशर मुनि जब केवल सायन राशि और नक्षत्रचक्र ही मानते और अपनाते थें तो उनके समकालीन या अपरवर्ती अन्य भृगृ आदि ऋषियों ने यदि किसी भृगु आदि संहिता की रचना की भी होगी तो वह सायन ही होगी, उसका निरयण होना असम्भव है।

धर्मशास्त्र के अनुसार भृगु आदि मुनियों द्वारा फलित ज्योतिष के ग्रन्थ लिखना असम्भवः- १९९४ के अपने पंचांग में हम यह सिद्व कर ही चुके हैं कि प्राचीन भारत के किसी भी खगोलवेत्ता ने चाहे वह सूर्य सिद्धान्तकार हो या आर्यभट्ट या फिर गणेश दैवज्ञ ---फलित ज्योतिष को कहीं छुआ तक नहीं है ---बिल्कुल आधुनिक खगोलवेत्ताओं की भान्ति-----और *मनुस्मृति* तथा *वसिष्ठ संहिता* आदि ग्रन्थों के अनुसार तो ''नक्षत्रजीवी'' अर्थात् ''ग्रहों/नक्षत्रों के आधार पर फलित ज्योतिष बताने को अपनी जीविका बनाने वाले'' को तो ''पापमूर्ति'' अतः ''सभी धार्मिक कृत्यों से बहिष्कार्य'' कहा गया है। *महाभारत* में तो भीष्मपितामह युधिष्ठिर को बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहते हैं :

आह्वायका देवलका नाक्षत्रा ग्रामयाजकाः।एते ब्राह्मण चाण्डाला महापथिकपंचकाः।।शान्ति. अ० ६७/६

''.....नक्षत्रजीवी ब्राह्मण के साथ तो राजा को चाण्डाल के समान बर्ताव करना याहिए''।

अब जहाँ यह ऋषि-मुनि ''नक्षत्र जीवियों'' के बारे में ऐसी राय रख रहे हों कि उनके साथ चाण्डाल का सा व्यवहार होना चाहिए वहीं स्वयं उन ऋषि-मुनियों ने ही जनसाधारण के लिए ''पाराशरी'' और ''भृगुसंहिता'' आदि फलित के ग्रन्थ लिखे होंगे, असम्भव है----जबतक उनको किसी निरयणवादी ज्योतिषी ने कारागार में बन्द कंरके न लिखवाया हो। यह ''वैदिक ज्योतिषी'' महाशय कौन हैं, यह तो वही जानें।

यह बृहद्यवनजातक, सारावली, जातकपारिजात, जातकाभरण, फलदीपिका, भावार्थरत्नाकर आदि जो अन्य ग्रन्थ आजकी तिथि में प्रचलन में हैं तो यह सब के सब पिछली कुछ शताब्दियों में फलित ज्योतिष का साधारण सा ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों द्वारा ही लिखे गए हैं जैसे आजकल भी बहुत सारे ''वैदिक ज्योतिषी'' डा. रमण द्वारा लिखित कुछेक ज्योतिष की पुस्तकों को पढ़कर एक-आध किताब लिख ही डालते हैं। और प्रायः जो बात एक ग्रन्थ में लिखी गई है वही अन्य ग्रन्थों में भी दोहराई गई है। इनमें कोई मौलिक अनुसन्धान हुआ हो ऐसा कुछ भी नहीं लगता है। इनमें से किसी भी ग्रन्थ में वराहमिहिर कृत दशाभुक्ति पद्धति का कोई वर्णन नहीं है। यह सब के सब गणित से कतराते थे यद्यपि सब के सब शिक्षा देते थे कि गणित का ज्ञान आवश्यक है। आजकल के राजनीतिज्ञों की भान्ति यह भी किसी को नाराज़ नहीं करना चाहते थे अतः इनने कभी भी यह नहीं कहा कि वह *सूर्य सिद्धान्त* के अनुयायी थे या *ग्रहलाघव* के या *आर्यभट्ट* के। वास्तव में तो इनकी भी बिल्कुल वही स्थिति थी जो आजकल के ''वैदिक ज्योतिषियों'' की हैः जो पंचांग उनके ''मुहल्ले'' में अधिक प्रचलित था उसी से जन्मपत्री बनाई। अब इस झंझट में कौन जाए कि वह पंचांग *ग्रहलाघव* से बना है या *सूर्य सिद्धान्त* से। अतः यह कहना कि यह ग्रन्थकार प्राचीन ऋषियों की श्रेणी में आते हैं वैसे ही है जैसे कि हम आजकल के ''वैदिक ज्योतिषियों'' को वराहमिहिर की उपाधि देते हैं भले ही उनने भटोत्पल का नाम तक न सुना हो।

अब यदि इन ''वैदिक ज्योतिष'' ग्रन्थों पर ही इतना बड़ा प्रश्नचिन्ह लग गया तो उनके द्वारा प्राप्त फलित कितने सही हो सकते हैं यह तो ऊपर वाला ही जाने।

''भृगु'', ''रावण'', ''अगस्त्य'' आदि तथाकथित संहिताओं का फलित कदापि सही नहीं हो सकता है: यदि हम अपने आप को खुश करने के लिए अपनी ही ''अक्ल का गला घोंटकर'' यह मान भी लें कि यह ''भृगु'',''अगस्त्य'' आदि संहिताएं वास्तव में ही ''भृगु'', ''अगस्त्य'' आदि मुनियों द्वारा ही लिखी गई हैं, वह भी लाहिरी अयनांशस पर, तब भी इनका फलित सही हो यह नितांत असम्भव है। कारण? प्राचीनकाल के ध्रुवांकों का तो आधुनिक खगोलिकी के ध्रुवांकों के साथ मेल कदापि हो नहीं सकता है और आजकल जितनी भी कुण्डलियां इन संहिता वालों को दिखाई जाती हैं वह सब होती हैं आधुनिक खगोलिकी पर आधारित प्रायः कम्प्यूटर द्वारा बनाई गई! उदाहरणार्थ नीचे हम भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव के जन्मकालीन मध्यमभोग सूर्य सिद्धान्त और आधुनिक खगोलिकी के आधार से देरहे हैं:

ग्रह	सूर्यसिद्धान्त मध्यमभोग			आधुनिक खगोलिकी मध्य.			सरकारी निरयण अन्तर	
	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क
सूर्य	०२	१७	५६	०२	१३	०६	+४	५०
चन्द्रमा	११	१६	४५	११	१६	४७	- ०	०२
मंगल	०२	०३	००	०२	०४	१६	+१	१६
बुध	०८	०२	३८	०७	२५	४३	+६	५५
बृहस्पति	०५	०२	१३	०४	२७	४५	+४	१३
शुक्र	१०	०३	००	०६	२५	०८	+७	५२
शनि	०४	२१	११	०४	२६	४३	+५	०२
राहु	०६	०४	२८	०६	००	०७	- ४	२१

यह लगभग आठ अंशों का अन्तर तब भी है यदि हम यह मान भी लें कि ''सूर्य सिद्धान्त '' भी बिल्कुल सरकारी अयनांश के अनुसार ही बनाया गया था। चन्द्रमा में केवल २ कलाओं का अन्तर एक संयोग मात्र ही है क्योंकि कहीं कहीं यह अन्तर दस अंशों तक भी है जैसा हम आगे देखेंगे। वैसे भी चन्द्रदेवता की अलग कहानी पर विंशोत्तरी दशा-भुक्ति के प्रसंग में विचार होगा।

अब यदि यह प्रधानमंत्री किसी ''भृगु'' या ''अगस्त्य'' आदि संहिता वाले के चक्कर में आगए होंगे --- ऋषियों व मुनियों के नाम पर कोई भी किसी को भी मूर्ख बना सकता है विशेषतः पढ़े लिखे राजनीतिज्ञों को जैसा कि प्रायः समाचार पत्रों की सुखियों से प्रमाणित होता है---तो कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि उस 'संहिता' वाले ने श्री राव की कम्प्यूटर कुण्डली ही अपनी ''भूर्जपत्रों'' पर ''हस्तलिखित संहिता'' के साथ मिलाई होगी और वह कम्प्युटर वाले ग्रह जिनमें ''सूर्य सिद्धान्त'' के ग्रहों से आठ आठ अंशों तक का अन्तर है वही अक्षरशः मिले भी होंगे! यह बिल्कुल वैसी ही स्थिति है जैसी ''पाराशरी'' के एक अंग्रेज़ी अनुवादक ने अपनी भूमिका में लिखी है कि ''इस ग्रन्थ में लाहिरी अयनांश से ही सही फलित देते देखा गया है''! ठीक भी है। वह महर्षि ही किस खेत की मूली है जिसको सहस्रों वर्ष पूर्व इतना भी ज्ञान नहीं रहा होगा कि कलियुग के भारतवासी मानव ''सूर्य सिद्धान्त'' के मध्यमभोगों को तिलांजलि देकर यवनों द्वारा साधित दृक्गणित से ही जन्म पत्रियां बनवा लेंगे ---बेचारे भूतपर्व प्रधानमंत्री तो फिर भी एक मानव ही हैं यहां तक कि स्वयं भगवान श्रीकृष्ण भी वही जन्मपत्री यशोदा मैय्या के मक्खन की भान्ति पसन्द करेंगे! अतः उन बेचारे महर्षियों को फलित भी उन ही ग्रहों के आधार पर कहना पड़ा होगा! ''उपाय'' भी उन संहिताओं में वैसे ही दिये होते है।

ठीक यही हाल नाड़ी ग्रन्थों का भी है! वह यद्यपि लिखे गए होंगे ''सूर्य सिद्धान्त'' के ग्रह स्पष्ट के अनुसार पर आजकल वह भी 'केवल 'लाहिरी'' और ''रमण" दोनों अयनांशों से ही सही उतरते हैं।

''वैदिक ज्योतिषी'' दन्तकथाओं को ही सही फलित का प्रमाण मानते है:-''वैदिक ज्योतिष'' के चमत्कार के प्रमाणों के रूप में उधर कश्मीर में एक दन्तकथा प्रचलित है कि केवल शनि की ''साढ़े-सती'' के कारण ही महाराज नल ने अपनी सोती हुई पत्नी की आधी धोती फाड ली थी अपने तन को ढ़कने के लिए। जब मैंने सारे *महाभारत* को उलीच लिया इस दन्तकथा का आधार पाने के लिए तो उसमें साढेसती का तो कहीं पता नहीं लगा पर हाँ यह जानकारी अवश्य मिली कि राजा नल एक जुआरी थे और उन्हें जुआ ठीक से खेलना आता नहीं था जिस कारण से वह इतने दरिद्र हुए कि उनको अपना तन ढ़कने के लिए अपनी पत्नी दमयन्ती की साड़ी का आधा भाग काटना पड़ा था। पर अपने यजमान को यह बताने के बदले कि वह जुआ या ऐसे ही अन्य कुकर्मो को छोड़दें हमारे इन पण्डितजी का यह कहना है कि ''तू मूश्के नाज़ कर खूने दो जहान मेरी गर्दन पर'' अर्थात् आप जितना मर्ज़ी जुआ

खेलते जाएं ''शनि देवता पर चढ़ावा सब ठीक कर लेगा। यदि चढ़ावे के लिए कुछ नहीं है तो कम से कम अपना लंगोट ही दान करें और अपने तन को ढ़कने के लिए अपनी दमयन्ती की साड़ी का आधा हिस्सा काट लें ताकि साढ़े-सती पूरी चरितार्थ हो जाए!'' इसी प्रकार से ''ज्योतिष-शास्त्र की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में'' लोगों को और भी अन्धविश्वासी बनाने के लिए ऐसे ही ''पौराणिक'' आख्यान प्रकाशित होते रहते हैं कि किस प्रकार शनि देवता ने 'लोटे' या 'फूलदान' अथवा अन्य किसी ऐसी ही वस्तु में घुसकर अपना प्रभाव दिखाया। और जब उन पत्रिकाओं से उन पुराणों अथवा अन्य ग्रन्थों के नाम तथा सन्दर्भ पूछे जाते हैं तो उन ''कथाओं'' का कोई प्रमाण देना तो दूर रहा उन पत्रों के विषय में भी चुप्पी साधते हैं।

एक बात यह भी विचारणीय है कि यदि भगवान ने यह सुविधा भी दे रखी होती कि मनुष्य मरते समय अपने साथ यहां की नकदी भी ले जासकता है आगे परलोक में काम में लाने के लिए तो पता नहीं लोग कितने टन धनसंचय करके सुपरसानिक जेट द्वारा साथ ले जाने की सोचते, क्योंकि अगर धन की अथवा यश की लालसा का इस समय यह हाल है तो तब क्या होता? हमें यह अच्छी तरह ज्ञात है कि एक दिन हमने यहीं पर सब कुछ छोड़ कर यहाँ से चले जाना है और अगर कुछ हमारे साथ जायेगा तो वह केवल इस बात का पाप कि हम जनसाधारण को इन ग्रन्थों को प्रामाणिक बताकर मूर्ख बनाते हैं तथा सचमुच के भृगु, रावण या अरुण ने लिखा है ऐसा कहते हैं! मगर यह ही तो उस मायावी की माया है कि यह जानते हुए भी कि यह शरीर नश्वर है हम यह मानकर चलते हैं कि हम अमर हैं। अस्तु।

अतः केवल धनोपार्जन की दृष्टि से प्रकाशित ग्रन्थों पर आधारित फलित या उन ग्रन्थों में बताए गए उपाय सही होंगे, यह असम्भव है।

किसी भी ''वैदिक ज्योतिषी'' को किसी भी अयनांश पर कोई विश्वास नहीं है:- अतः आप से निवेदन है कि आप यही प्रश्न इन निरयण भक्तों से पूछें कि भला यह सारे के सारे अयनांश कैसे सही हो सकते हैं विशेषकर जबकि इन सारे पंचांगों में से जिन पर उनके फलित आधारित हैं लगभग ६५ प्रति-शत हज़ारों नहीं तो सेंकडों त्रुटियों से पूर्ण हैं।

अब अयनांश ''कुण्डली'' का विश्लेषण देखिए: डा० बी० वी० रमण अपने गुरु बी० सूर्यनारायणराव द्वारा प्रचलित अयनांश को पिछले पचास वर्षो से अेकले ढ़ोते आरहे हैं और उनका कथन है कि केवल उसी अयनांश पर आधारित उनकी भविष्यवाणियां सही सिद्ध हुई हैं। यह बात भी निस्सन्देह है कि उन्हें अपने तो क्या किसी भी अयनांश पर स्वयं भी बिल्कुल ही विश्वास नहीं है नहीं तो वह पोंगल/मकर संकान्ति सरकारी अयनांश वाले दिन नहीं मनाते और न ही वह हर पंचांग गोष्ठी में कहते कि उनके विचार से अयनांश रेवती तारे से माना जाना चाहिए और *सूर्य सिद्धान्त* के इस कथन को दोहराते रहते कि ''भगणं तु पौष्णान्तम्'' जिसका यह अभिप्राय निकाला जासकता है कि वह रैवत पक्ष अयनांश मानते हैं, जो उनके अपनाए हुए अयनांश से भी २.५ अंश कम है, लेकिन अपनी पत्रिका तथा संक्षिप्त पंचांगों में इन दोनों से ही भिन्न अयनांश लेते हैं। इसके अतिरिक्त उनकी पत्रिका मे छपने वाले लेखों में से ६५ प्रतिशत से अधिक लेख सरकारी अयनांश पर आधारित होते हैं और उनकी ही पत्रिका में छपे हुए प्रशंसा पत्रों के अनुसार उनका फल सही निकलता है अर्थात् डा० रमण अपने ही अयनांश को अंगूठा दिखाने वालों की प्रशंसा से सहमत हैं!

इसी प्रकार डा. रमण जिस ''आल इंडिया काउन्सिल आफ ऐस्ट्रॉलोजिकल सोसाइटी'' के संचालक-प्रवर्तक हैं उस का प्रत्येक सदस्य यद्यपि हर आयोजन पर उनकी जय-जयकार के नारे लगाता है तथापि जब अयनांश का प्रश्न उठता है तो वह सारे के सारे भक्त सरकारी अयनांश को ही फलित ज्योतिष के लिए सही मानते हैं। ऐसा नहीं है कि वास्तव में ही उनको उससे सही फलित मिलते हैं पर मजबूरी है सरकारी अयनांश से फलित सही सिद्ध करने की क्योंकि रमण-अयनांश वाला कोई पंचांग छपता ही नहीं है। यदि कल को कोई ऐसा पंचांग डा० रमण स्वयं प्रकाशित करालें तो उनके सारे के सारे भक्तों को उसको अपनाना पड़ेगा और तब उनको ही वही अयनांश''फलित ज्योतिष के लिए सबसे अधिक सही परिणाम देने वाला'' लगेगा।

सुप्रसिद्ध ''वैदिक ज्योतिषी'' प्रो. पी. एस. शास्त्री ने ''जैमिनी सूत्रम्'' के अनुवाद में तो स्वयं ही इन अयनांशों के थोथलेपन का चिट्ठा खोल के रख दिया है। उनका कहना है कि ''मैं 'लाहिरी अयनांश' को बिल्कुल नहीं मानता हूँ क्योंकि वह निराधार है अर्थात् न उसका कोई वैज्ञानिक आधार है और न ही शास्त्रीय। फिर भी जो मैं इस अनुवाद में उस अयनांश के अनुसार उदाहरण देरहा हूँ और उनको सही भी सिद्ध कर रहा हूँ वह मेरी मजबूरी है क्योंकि बहुमत उसी को मानता है।'' यह महोदय वास्तव में डा, रमण का अयनांश मानते हैं और यद्यपि प्रायः जो ग्रह रमण अयनांश से आत्मकारक होकर सर्वेसर्वा बन जाता है वही ग्रह 'लाहिरी अयनांश' से सबसे कम अंशों वाला होने के कारण बिल्कुल बेकार सा होजाता है तथापि इनको मजबूरी है अपनी अन्तरात्मा का गला घोंटकर लाहिरी अयनांश को सही साबित करने की। हम तो समझते थे कि इतना "आतंकवाद'' केवल प्राचीन कैथोलिक चर्च में ही हो सकता था जिसने गैलिलियो को अपने इस सिद्धान्त से कि "पृथिवी सूर्य के चारों ओर घूमती है'' नकारने के लिए मजबूर किया था। यहां तो भारतवर्ष में सभी को अपने मनपसन्द अयनांश के विरुद्ध भी किसी

अन्य अयनांश से सही भविष्यवाणियां देनी पड़ती हैं चाहे वह पंचांगकार हो या कोई अनुवादक! अक्टूबर १९९५ के ''ऐस्ट्रालोजिकल मैगज़ीन'' में इन प्रोफेसर महोदय ने श्री अर्जुन सिंह की कुण्डली का विवेचन किया था लाहिरी अयनांश से, ग्रह और दृष्टि संकलन लिए थें "पाश्चात्य'' अर्थात् "बृहस्पति जब यूरेनस के साथ ६० अंशों का कोण बनाता है इत्यादि'' और साथ में कहा है "बृहस्पति आत्मकारक है'' और फलित के लिए प्रयोग में लाई है वही भूकेन्द्रीय चन्द्र से निकाली गई विंशोत्तरी दशा-भुक्ति! सब को खुश किया है कहीं कोई नाराज़ न हो! "वैदिक ज्योतिष'' का कमाल!

यही हाल ''मणीराम के पंचांग'' अयनांश वालों का है। वह पंचांगकर्ता तो कहते हैं कि वह ''ग्रहलाघव के आधार पर बना है'' परन्तु ग्रहण आदि देते है दृक्-गणित के और भोगांश तो वास्तव में न दृक् के ही हैं और न "ग्रहलाघव'' के ही! फिर भी उसके अनुयायी "सम्मोहन'' अवस्था में यही कहते हैं कि ''उस पंचांग से तो फलित बिल्कुल ही सही निकलता है''।

इसी प्रकार *सूर्य सिद्धान्त* से बनने वाले पंचांगों का एक चमत्कार और भी है ---यद्यपि कहने को तो यह सब *सूर्य सिद्धान्त* के आधार पर ही बनते है पर इनके ग्रहस्पष्ट या अन्य चमत्कृतियां कभी एक दूसरे से मेल नहीं खाती हैं।--भगवान जाने कि यह जान बूझ के पंचांगों के साथ खिलवाड़ है या कि वर्षो से चली आरही भूल है, आप स्वयं ही निष्कर्ष निकालें। इन पंचांगों के अनुयायी "सम्मोहन अवस्था'' में यही कहते हैं कि "केवल काशी विश्व पंचांग से'' या ''अमुक पंचांग से'' ही फलित सही बैठता है''।

आजसे कोई सौ वर्ष पूर्व भारतवर्ष के ६५ प्रतिशत पंचांग इसी *सूर्य सिद्धान्त* के आधार पर बनते थे जिसके विषय में अब वही ६५ प्रतिशत पंचांगकार सहमत होगए हैं कि वह ग्रहगणित, ध्रुवांक, तब भी गलत थे और आज भी गलत हैं, परन्तु सभी ज्योतिषी "सम्मोहन'' की अवस्था में तब यही कहते थे कि ''उसपर आधारित फल तो शत-प्रतिशत सही हैं। उसी का अनुसरण करो नहीं तो 'व्याकुल हो जाओगे''!

जब यह "वैदिक ज्योतिषी'' स्वयं ही अपने अयनांश से सन्तुष्ट नहीं हैं तो वह अपने फलित से सन्तुष्ट होंगे यह भी असम्भव है चाहे वह यजमानों को मूर्ख बनाने के लिए कुछ भी कहते रहें।

"वैदिक ज्योतिषी''गलत ग्रहस्पष्ट से भी सही फल बताने का चमत्कार करते हैं:-

यह सब फलित ज्योतिष के ही चमत्कार हैं और भारतवर्ष तो क्या विश्वभर में ही चमत्कार को नमस्कार किया जाता है ! सबसे बडे चमत्कार तो पचास वर्षो से चली आ रही एक अति प्रसिद्ध पुस्तक में किए गए हैं जो एक सुप्रसिद्ध लेखक ज्योतिषी द्वारा लिखी गई है। इसमें विश्व के कोई एक सौ गण्य-मान्य व्यक्तियों की कुण्डलियों Notable Horoscopes का विवेचन किया गया है। इस पुस्तक में ईसा मसीह की जन्मकुण्डली का विवेचन भी किया गया है जिनका जन्म ईसा पूर्व ७वे वर्ष में २५ दिसम्बर को कहा गया है। इसी पुस्तक के अनुसार उस दिन अयनांश ५.५ अंश धन था और निरयण सूर्य २४८ अंश। इस बात का अनुमान लगाने के लिए कि सूर्य के भोगांश उस दिन २४८ कभी नहीं हो सकते है आवश्यक नहीं है कि आप खगोलविद्या में पारंगत ही हों क्योंकि यह एक नौसिखिया भी जानता है कि प्रति वर्ष २१ दिसम्बर के आसपास सायन मकर संकान्ति होती है अर्थात् उस दिन सायन सूर्य के भोगांश २७० होते हैं अर्थात् २५ दिसम्बर को यह भोगांश २७४ अंश होंगे। अब उनमें आप उस पुस्तक वाले अयनांश के लगभग ६ अंश जोड देंगे तो उस दिन का निरयण सूर्य होगा २७७ अथवा २७८ अंश अर्थात् इन अति प्रसिद्ध विद्वान महोदय ने तो उसको पूरे ३० अंश पीछे खसका दिया मानो यह भी कोई "वैदिक अयनांश'' है कि जब और जहां इच्छा हो खसका दिया! इन ''वैदिक ज्योतिष के प्रवर्तक'' लेखक महाशय के प्रति हमारा इतना सम्मान था कि पहले तो हम भी "सम्मोहन की सी अवस्था में'' यह समझे कि यह तो छपाने में कहीं गलती हुई होगी लेकिन विश्लेषण अवश्य ही ठीक-ठीक भाव और राशि के आधार पर किया होगा पर मज़ेदार चमत्कार तो यह निकला कि इन महाशय ने उस कुण्डली के फलित को भी यों कहकर सही बताया है कि "बुध चतुर्थ में सूर्य के साथ धनु राशि में है'' और नवांश कुण्डली में भी सूर्य को मिथुन नवांश में दिखाया है जबकि वास्तव में दोनों में से एक भी स्थिति नहीं है!

इन्हीं दिग्गज ने उसी पुस्तक में खगोलिकी का एक और चमत्कार भी किया है रामकृष्ण दालमिया की कुण्डली के विषय में। २० अंश ५६ कला के उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५५ कला पूर्व रेखांश पर ७ अप्रैल १८९३ को ६ बजे ३१ मि प्रातः, स्थानीय समय के अनुसार जन्मे दालमिया जी का सूर्य इनने मीन राशि में दशम भाव में दिखाया है और लग्न मिथुन में। एक नन्हे से शिशु को भी इतना तो ज्ञान होना ही चाहिए कि सूर्य केवल स्थानीय मध्यान्ह के समय ही "सिर पर'' अर्थात् दशम भाव में हो सकता है और क्योंकि भारतवर्ष में भाव को भाव मध्य माना जाता है भाव प्रारम्भ के बदले, भले ही वह भी अवैदिक क्यों न हो जैसा कि हम देखचुके हैं, तब भी सूर्य स्थानीय मध्यान्ह से एक-डेढ़ घंटे से अधिक पहले कभी भी दशम भाव में नहीं हो सकता है, ६ घंटा ३१ मि. स्थानीय समय पर तो कदापि नहीं। स्पष्ट ही है कि या तो लग्न गलत है या सूर्य के भोगांशों में कहीं गलती है, और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही है अर्थात् लग्न मिथुन राशि में न होकर वृष राशि के २६ अंश के लगभग है उन्हीं के उस दिन के २० अंश ५५ कला के विशेष अयनांश के अनुसार। यह कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि इस सारी की सारी कुण्डली का फलादेश ही गलत है क्योंकि जब लग्न और भावों की ही स्थिति गलत है तो उनके

स्वामी आदि ठीक भावों में होंगे यह असम्भव है पर वही ''चमत्कार को नमस्कार'' की ''सम्मोहन शक्ति'' देखिए कि इनके असंख्य चेलों व चम्चों में से एक ने भी यह बात नोट नहीं करी, वह भी एक आध दिन में नहीं बल्कि पूरे पचास वर्षों में, जब से यह पुस्तक छपी है और आजकल शायद बीसवें संस्करण में है---वैसी की वैसी गलत भाव स्पष्ट से सही फलित दर्शाती आई है!

प्रसिद्ध अर्थ-शास्त्री व दार्शनिक कार्ल मार्क्स का जन्म इन लेखक महाशय ने १५ मई १८१८ ई० को बताया है। पिछले शताब्दी में इन लेखक के विशेष अयनांश अनुसार भी वैशाखी ''अर्थात् निरयण मेष संक्रान्ति'' कभी भी ११ अप्रैल से पहले और १३ अप्रैल के बाद नहीं मनाई जा सकती थी अर्थात् निरयण सूर्य १४ मई के बाद कभी भी मेष राशि में नहीं हो सकता है अपितु वृष राशि में ही होगा परन्तु विडम्बना देखिये कि इन के हिसाब से १५ मई १८१८ को कार्ल मार्क्स का निरयण सूर्य मेष राशि के २४ अंश में दिखाया गया है। यहाँ भी हम ''सम्मोहन की अवस्था'' में यही समझने लगे कि कोइ ''प्रिन्टर्स डेविल'' printer's devil ही होगा परन्तु जब उसी पुस्तक में उसी कुण्डली के फलित के विषय में यह पंक्तियां देखीं : ''सप्तमेश सूर्य उच्च राशि में राहु और चन्द्रमा के साथ है'' और नवांश कुण्डली में भी वृश्चिक नवांश में देखा तो मेरा सम्मोहन भंग होगया और मन से एकदम आवाज़ आई "चमत्कार को नमस्कार'' क्योंकि उस दिन निरयण सूर्य वास्तव में कुम्भ लग्न वाली कुण्डली में न तो तृतीय भाव में ही हो सकता है और न मेष में ही अपितु चतुर्थ में वृषभ में! इस कुण्डली के तो वैसे सारे के सारे ग्रह ही गलत है, एक भी ठीक नहीं है।

यद्यपि इसी पुस्तक में खगोलिकी के और भी अनेक "असाधारण चमत्कार'' दिए हैं पर हम ने केवल उन का ही वर्णन किया है जो एक जनसाधारण भी किसी भी कुण्डली को हाथ में लेते हुए ही भांप सकता है! सबसे बड़ा चमत्कार यह है कि ''वैदिक ज्योतिषी'' ऐसे ही ''परम विद्वानों'' को "पंचांग संशोधन समितियों और सम्मेलनों'' का अध्यक्ष बनाते हैं, "सम्मोहन अवस्था'' में जो है!

यह रही इन "वैदिक ज्योतिषियों'' के गणित में ''पारंगत'' होने की गाथा और स्वाभाविक ही है कि वह सही फलित बताने में भी उतने ही "पारंगत'' होंगे जितने कि गणित में।

एक ही अयनांश और एक ही समय पर बनी गलत कुण्डलियों से भी सही फल!

१९९१-९२ का चान्द्र नव वर्ष १६ मार्च १९९१ को १३ घं ४० मि. पर, यद्यपि वास्तविक समय १३ घं ३६ मि ४२ से. था, प्रारम्भ हुआ था और दिल्ली के लिए उस समय का सायन लग्न बनता था कर्क राशि के २३ अंश ३३ कला २ विकला। क्योंकि डा० रमण का अयनांश उस दिन कोई २२ अंश १६ कला था अतः उनके हिसाब से नव वर्ष का निरयण लग्न कर्क राशि में होना स्वाभाविक ही था परन्तु सरकारी अयनांश २३ अंश ४४ कला १६ विकला था इस कारण से भारतवर्ष के ६६ प्रतिशत पंचांगों में तथा पत्रिकाओं में जो उस अयनांश तथा दृक्गणित से जन्मपत्रियां बनाने का दावा करते हैं, मिथुन लग्न होना चाहिए था। परन्तु विडम्बना देखिए उन ६६ प्रतिशत के ५० प्रतिशत पंचांगों तथा पत्रिकाओं में भी कर्क लग्न ही था यद्यपि ''वर्ष प्रवेश'' सब ने ही १३ घंटा ४० मिनट पर ही माना था! कारण केवल इतना ही हो सकता है कि इन पंचांगकारों को सही ढ़ंग से लग्न बनाने तक का गणित करना नहीं आता है या फिर उनकी "वैदिक'' लग्न सारणियां ही गलत हैं! सबसे बड़े चमत्कार की बात तो यह है कि १९९२ के अपने अपने पंचांगों व पत्रिकाओं में इन सभी सम्पादकों और पंचांगकारों ने "पिछले पंचांग/पत्रिका में दी गई 'सफल भविष्यवाणियों' की एक लम्बी चौड़ी सूची'' देदी लग्न चाहे कोई भी था और उसी के आधार पर लग्न या अन्य भावों के स्वामी कोई भी थे। "वैदिक ज्योतिष'' के अलावा और कहीं आप ने ऐसा चमत्कार देखा है भला! (इधर दिल्ली के एक ''सुप्रसिद्ध वैदिक ज्योतिष विद्यालय'' से निष्णात "स्नातक" जब सांपातिक काल आदि निकाल कर लग्न बनाने लगते हैं तो उनके मुंह से बरबस निकलता है corrections from page four ''पृष्ठ चार से शुद्धि करनी है''। जब उनसे पूछा गया कि यह काहेकी "करेक्शन'' है तो मेरा मुँह ऐसे देखने लगे जैसे मैंने महानास्तिकों का सा प्रश्न किया हो! भला कोई ऐसे पूछता है कि तुम्हारे गुरु ने इसकी कोई व्याख्या नहीं की क्या? इसको कहते हैं 'सम्मोहन की अवस्था में होना')

स्पष्ट ही है कि यह "वैदिक ज्योतिषी'' "सही फलित'' बताते समय भी "सम्मोहन अवस्था'' में ही होते हैं।

"रमण" या "लाहिरी" के काल्पनिक अयनांश वाले राशिचक्र में दिव्य अवतारों की जन्मपत्रियां बताकर निरयण ज्योतिषी स्वयं ही अपनी मिट्टी पलीद कर रहे हैं:

डा. बी. वी. रमण ने अपनी पुस्तक "Notable Horoscopes" (नोटेबल हार्स्कोप्स) पृष्ठ ३ की टिप्पणी में भगवान कृष्ण की जन्मपत्री बनाने के लिए उनके जन्मसमय व तिथि आदि निर्धारित करने के लिए जिन स्रोतों को प्रामाणिक माना है उनका वर्णन इन शब्दों में किया है "इस प्रकार प्राचीन भारत की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृतियों अर्थात् श्रीमद्भागवत्, श्रीविष्णुपुराण व हरिवंश में दिए गए तथ्यों को एकत्रित करके यह स्पष्ट रूप से कहा जासकता है कि भगवान कृष्ण का जन्म मध्यरात्रि के समय हुआ था..।" अब यहां पर एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि इन सभी "स्रोतों" में अर्थात्

श्रीमद्भागवत, श्रीविष्णुपुराण व हरिवंश में, जिनसे डा. रमण ने भगवान कृष्ण का जन्मसमय निर्धारित किया है केवल सायन राशिचक्र का ही वर्णन है और उन्हीं सायन राशियों को मेष आदि नाम दिए गए हैं तथा उनको ही ऋतुओं व अयनों और विषुव के साथ----यहां तक कि नक्षत्रों के साथ भी------जोड़ा गया है वह भी एक या दो बार नहीं अपितु बारम्बार-----जैसा कि हम इसी लेख में कई बार देख चुके हैं----पर डा. रमण ने जो पत्री बनाई (या सिरिल फागन से बनवाई) है और उसी पुस्तक में जिस कुण्डली से उन्होंने भगवान कृष्ण का "सही फलित भी बताया है" वह है रमण अयनांश वाले राशिचक्र के अनुसार! इसका यह अभिप्राय निकलता है कि भगवान कृष्ण का जन्म रमण राशिचक्र में हुआ था जबकि उन ही श्रीमद्भागवत् आदि ग्रन्थों के अनुसार उस प्रकार के किसी राशिचक्र का उस समय कहीं नाम व निशान तक नहीं था। यह विड़म्बना इस प्रकार स्पष्ट की जा सकती है: हम यह मान कर चलते हैं कि डा. रमण ने भगवान कृष्ण की जन्मतिथि ईसा पूर्व १८ जुलाई ३२२८ वर्ष में मथुरा में बिल्कुल सही निर्धारित की है पर समस्या यह है कि जिन ऋषि वाक्यों के आधारों पर डा. रमण ने वह जन्म समय निर्धारित किया है उन्हीं ऋषि वाक्यों के अनुसार उस समय आधुनिक गणित की परिपाटी से ---जिससे कि डा. रमण ने वह पत्रिया बनवाई हैं----सूर्य कर्क राशि के लगभग शून्य अंश, चन्द्रमा मीन राशि २७ अंश और लग्न मेष राशि के शून्य अंश होने चाहिए थे परन्तु डा. रमण ने वह सूर्य सिंह राशि के २० अंश तो चन्द्रमा वृषभ राशि के १७ अंश और लग्न वृष राशि के बीस अंश ---अर्थात् सारे के सारे ग्रह लगभग ५१ अंश आगे सरका दिए अपने अयनांश की धाक जमाने के लिए! *दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि इन को उन ऋषियों के वाक्यों को भी येन-केन-प्रकारेण तोड़-मरोड़ के अपना अयनांश सिद्ध करना है, उसके लिए सारे ही राशिचक्र को चाहे ५० अंश हिलाना पड़े या १०० अंश, वह हिलाके रखदेंगे!*

इसी प्रकार जब कोई "वैदिक ज्योतिषी" भगवान कृष्ण की जन्मकुण्डली लाहिरी-पाराशरी वाले लाहिरी अयनांश के अनुसार "बांचता है" तो वह यही मानकर चलता है कि उनका जन्म लाहिरी-राशिचक्र में हुआ था ---जबकि उस प्रकार का कोई राशिचक्र तब कदापि हो ही नहीं सकता हैं! क्या इसका यह अभिप्राय निकाला जासकता है कि यह "स्रोत" उनके लिए केवल तभी तक दिव्य हैं जबतक वह उनकी स्वार्थ परक व्याख्याओं का समर्थन करते हों? इस का यह भी अभिप्राय निकाला जासकता है कि इन ज्योतिषियों ने तो येन-केन-प्रकारेण रमण या लाहिरी आदि राशिचक्र को "वैदिक राशिचक्र" सिद्ध करना है चाहे इसके लिए उन्हें उन ही पूज्य ग्रन्थों की कुव्याखया करके अपनी आत्मा ही क्यों न बेचनी पड़े!

बिल्कुल यही स्थिति भगवान राम की जन्मकुण्डली के साथ भी है जो "श्रीवाल्मीकि रामायण", "अध्यात्म रामायण", यहां तक कि "श्रीरामचरितमानस" के अनुसार भी चैत्र मास में मेष राशि में सूर्य अर्थात् केवल सायन राशिचक्र के अनुसार ही है परन्तु यह "वैदिक ज्योतिषी" उनको भी लाहिरी और रमण आदि राशिचक्रों की परिधियों में घसीट रहे हैं। *यह "वैदिक ज्योतिषी" इन गलत राशिचक्रों द्वारा दिव्य विभूतियां का "सही फलित बतलाके" कबतक जनसाधारण के साथ खिलवाड़ करते रहेंगे? क्या इस स्वतंत्र भारत की जनता इतनी विवश है कि वह इनको ऐसा करने से रोक नहीं सकती है?*

प्राचीन जन्मकुण्डलियों को आधुनिक खगोलिकी के ग्रहस्पष्ट से सही फलित बताना असम्भव है: चलिए हम वास्तविक वैदिक ऋषियों की खिजलाहट की चिन्ता न करते हुए यह मान भी लेते हैं कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मजी ने राशिचक्र का निर्माण वास्तव में ही लाहिरी या रमण अयनांश के अनुसार ही किया है फिर भी आधुनिक खगोलिकी के ग्रहस्पष्ट से प्राचीन कुण्डलियों का फलित बताना हास्यास्पद ही है और कुछ भी नहीं। क्यों? भगवान कृष्ण की जन्मकालीन ग्रहों की तुलनात्मक तालिका में आप ग्रहों के आधुनिक खगोलिकी के अनुसार मध्यमभोग "पंचांग समय" और "विश्व समय" के अनुसार भिन्न-भिन्न पाएंगे। यह कोई रहस्य नहीं है परन्तु इससे तो इन "वैदिक ज्योतिषियों" द्वारा किया गया भगवान कृष्ण, भगवान बुद्ध, शंकराचार्य आदि प्राचीन विभूतियों की जन्मपत्रियों का विश्लेषण कितना सही है इसबात की पोल खुल जाती है। १६५४ ई. मे जब सिरिल फागन ने डा. बी. वी. रमण की "नोटेबल हॉर्स्कोप्स" पुस्तक के लिए जन्मकुण्डलियां आधुनिक खगोलिकी से बनाई थीं, उस समय तक किसी को भी, यहाँ तक कि स्वयं सिरिल फेगन को भी इस बात का ज्ञान नहीं था कि जो ग्रहस्पष्ट वह ईसा पूर्व १८ जोलाई ३२२८ की मथुरा के स्थानीय मध्यरात्रि के लिए निकाल रहे थे वह वास्तव में उस निर्धारित समय से २२ घटा ५४मिनट कम समय के थे। १६६० ईस्वी तक तो ब्राऊन की "ल्यूनर थ्योरी" तथा न्यूकाम्ब के "टेब्लस" आदि के मध्यमभोग विश्व समय अर्थात् ग्रीनविच समय के अनुसार माने जाते थे परन्तु तब यह पता चला कि विश्व समय तो कभी भी एकसार नहीं रहा है और इस कारण से पंचांग समय को "माणक समय" मानना पड़ा। इसका यह परिणाम निकला कि जो मध्यमभोग आदि उस समय तक विश्व समय परिमाण के अनुसार माने जाते थे वह सब के सब स्वतः ही पंचांग समय में परिवर्तित होगए। इस पंचांग समय का तथा ग्रीनविच समय का भविष्य में कब कितना अन्तर होगा यह ठीक ठीक बताना असम्भव है। इस विषय में केवलमात्र एक अनुमान लगाया जा सकता है। इसी प्रकार ईसा पूर्व ३२२२ में इन दो काल परिमाणों में कितना अन्तर था यह कहना असम्भव है। केवलमात्र इतना ही कहा जा सकता है कि एन.

सी. लाहिरी के "टेब्लस आफ दि सन" के अनुसार इन दोनों काल परिमाणों में अन्तर लगभग २१ घंटे धन अर्थात् + था जबकि मोरिसन के फार्मूले के अनुसार यह अन्तर +२२घटा ५४मिनट था। परिणमस्वरूप डा. रमण ने जिस ग्रहस्पष्ट के आधार से भगवान कृष्ण के जीवन की लीलाओं का ठीक-ठीक ज्योतिषीय वर्णन किया है वह कभी भी उनका जन्मकालीन ग्रहस्पष्ट नहीं था यदि यह भी माना जाए कि डा. रमण ने भगवान कृष्ण का जन्म समय बिल्कुल ठीक-ठीक निर्धारित किया है!

हम आगे निरयण पंचांगकार एन. सी. लाहिरी के अनुसार ही इन वर्षों के पंचांग काल परिमाण और ग्रीनविच काल परिमाण का अन्तर दे रहे हैं जिन वर्षों में जन्मे कुछ प्राचीन विभूतियों के जन्मकालीन ग्रहस्पष्ट के अनुसार डा. रमण ने उनकी जीवनकालीन घटनाओं का सही मेलान अपनी पुस्तक "नोटेब्ल हॉर्स्कोप्स" में किया है:

१) भगवान कृष्ण - ईसा पूर्व ३२२२ वर्ष : + २१ घंटा; २) गौतम बुद्ध - ईसा पर्व ६२३ वर्ष : +४घं ४२ मि; ३) अलक्षेन्द्र - ईसा पूर्व ३५६ वर्ष : +३घं ४० मि; ४) ऑगस्टस सीज़र - ईसा पूर्व ६३ वर्ष : २घ ४० मि; ५) आद्य शंकाराचार्य - ईसा पूर्व ४४ वर्ष : +२घ ३० मि; ६) ईसा मसीह - ईसा पूर्व ७ वर्ष : २घं ४० मि इसी प्रकार ईस्वी तीसरी शताब्दि और छठी शताब्दि के बीच इन दो कालपरिमाणों का पारस्परिक अन्तर कम से के एक घंटा है!

अब तो आप को कोई सन्देह नहीं रहगया होगा कि "वैदिक ज्योतिष" की जितनी भी यह "शत-प्रति-शत सही भविष्यवाणियां" हैं वह सब की सब एक घिनौने प्रकार का ढ़ोंग हैं! इसी प्रकार भगवान कृष्ण के विंशोत्तरी दशा-भुक्ति के फलित के विषय में भी एक पहेली है! यदि यह सच है कि "कलौ विंशोत्तरी मता" अर्थात् "कलियुग के प्राणियों के लिए विंशोत्तरी है" तो भगवान कृष्ण की जन्मकुण्डली पर कैसे लागू हो सकती है क्योंकि उनका जन्म तो द्वापर में हुआ था कलियुग में नहीं! और यदि यह माना जाता है कि विंशोत्तरी दशा सभी युगों के लिए सदाबहार दशा-भुक्ति है तो तथाकथित "पाराशरी" की ४५ प्रकार की दशा भुक्तियाँ क्यों देनी पड़ी। यदि किसी पाठक को इस पहेली का कोई उत्तर मिल जाए तो कृपया मुझे भी उससे अवगत कराएं!

"वैदिक ज्योतिष" द्वारा भविष्यवाणियां सही निकलने का "वैदिक ज्योतिषियों" द्वारा ही खण्डन: "वैदिक ज्योतिष" के एक प्रमुख स्तम्भ समझे जाने वाले सज्जन हैं जो दिल्ली में "इण्डियन काउन्सिल आफ ऐस्ट्रालोजिकल सोसाइटी" के कर्णधार माने जाते थे और जिनके बारे में "ऐस्ट्रालोजिकल मैगज़ीन" का सम्पादकगण प्रायः यह कहता रहा है कि डा. रमण के बाद सबसे अधिक सही भविष्यवाणियों की संख्या इनकी ही रही है। इनके असंख्य "वैदिक ज्योतिषी" साथी, सहयोगी, मित्र और चम्चे हर सभा-समिति में इनका परिचय इन शब्दों में कराते थे: "यह तो 'वैदिक ज्योतिष' ही खाते हैं, 'वैदिक ज्योतिष ही पीते हैं', यहां तक कि 'मूर्तिमान वैदिक ज्योतिष' ही हैं!" उन ही "मूर्तिमान वैदिक ज्योतिष" की एक कृति है "Nehru Dynasty" "नेहरू डाईनास्टी"। इस पुस्तक की समीक्षा मई १९९५ के Times of Astrology मैगज़ीन में करते हुए उसके सम्पादक, श्री आर, सन्थानम् ने पृष्ठ ३४ पर इन लेखक महोदय की "सफल भविष्यवाणियों" की ससन्दर्भ सूची गिनाई है, उनमें से कुछ यहाँ दे रहे हैं और साथ में उन्हीं सम्पादक के "उद्धरण" भी दे रहे हैं:

१. "१९९३ में नया कांग्रेस अध्यक्ष होगा "-- श्री नरसिंहराव अभी भी कांग्रेस अध्यक्ष हैं।
२. "६ मार्च १९९३ से जून १९९३ के बीच नरसिंहराव को प्रधान मंत्री पद से हटाया जाएगा"। गलत
३. "उत्तर प्रदेश के नवम्बर १९९३ के विधान सभा चुनावों में इतनी हिंसा होगी कि अनुमान लगाना भी कठिन है"। --- उत्तरप्रदेश के वह चुनाव आशातीत हिंसा रहित रहे।
६. "कर्नाटक विधान सभा चुनावों में किसी को बहुमत नहीं मिलेगा"। श्री देवेगौडा को मिल गया था।
८. "५ अप्रैल से जोलाई १९९४ के बीच ईराक में सद्दाम हुसैन की सरकार बदलेगी"। नहीं बदली।
१०."नवम्बर १९९३ से जनवरी १९९४ के बीच रूस के राष्ट्रपति यल्तसिन की हत्या की जाएगी"।गलत

"वैदिक ज्योतिष" के यह कर्णधारमहोदय भी अन्य "वैदिक ज्योतिषियों" की भान्ति ही भारतवर्ष में "शत-प्रति-शत सही भविष्यवाणियां" करके "वैदिक ज्योतिष" का "सिक्का जमाने" के लिए अमेरीका भी गए थे। विदेशों में उनकी "भविष्यवाणियों की आशातीत सफलता के विषय" में २३ मार्च १९९५ का चार पृष्ठों का एक लम्बा पत्र कैलिफोर्निया स्थित "दी माउंट शास्ता फाउंडेशन" के अध्यक्ष श्री स्टीफन क्वांग की ओर से प्रायः सभी भारतीय ज्योतिषियों को मिला है जिसमें से निम्नपंक्तियां अवलोकनीय है:

"आप ने अच्छी खासी रकमें लेकर जो भविष्यवाणियां यहां भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के लिए की हैं लोग अधिकतर उनसे असन्तुष्ट हैं और कई व्यकितयों ने अब मुझसे वह फीस जो उनने आप को दी थी, वापिस मांगी है क्योंकि आपके द्वारा की गई वह भविष्यवाणियां प्रायः गलत सिद्ध हुई हैं"।

वैसे यह "कर्णधार" महाशय वही "वैदिक ज्योतिषी" हैं जिन्होंने मेरे पिछले वर्षों के अयनांश के विषय में लेख इसलिए नहीं पढ़े थे कि इनके लिए तो वही "अयनांश सही है जो शत-प्रति-शत सही फलित देता हो। अयनांश पर लेख पढ़ना तो समय व्यर्थ गंवाना है"।

इनके अयनांश की ''शत-प्रति-शत सफलता'' के तो और भी अनेक नमूने हैं, जैसेः-' इनकी "सर्वाधिक सफल निरयण भविष्यवाणी" तो ७अप्रैल ६६ के "हिन्दुस्तान टाईम्स",मैगज़ीन भाग के पृष्ठ २ पर छपी थी जो इस प्रकार थी, "अगली केन्द्रसरकार भा. ज. पा और कांग्रेस के बीच गठबन्धन वाली सरकार होगी"!

वास्तव में अभी हाल में हुए लोकसभा चुनावों ने तो इन सब "वैदिक ज्योतिषियों" की ऐसी पोल खोल के रखदी कि इनको कभी गलती से भी अब इस निरयण ज्योतिष को हाथ तक नहीं लगाना चाहिए पर उर्दू भाषा के प्रसिद्ध कवि के शब्दों में "क़ाबा किस मुँह से जाओगे ग़ालिब। शर्म तुमको मगर नहीं आती"!

"वैदिक ज्योतिषियों" की इन ही चुनाव संबन्धी कुछ "सफल भविष्यवाणियों" के नमूने यह हैं: १)जनवरी १६६६ के एस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन के सम्पादकीय में पृष्ठ ५ पर डा. रमण की भविष्यवाणी थी कि "जनता दल की पत्री किल्कुल साधारण सी है।....वर्तमान दशा-भुक्ति से लगता है कि यह पार्टी केन्द्र में सरकार नहीं बना पाएगी"।

२) ७ अप्रैल १६६६ के दैनिक हिन्दुस्तान टाईम्स मैगज़ीन में ही एक ज्योतिषीजी ५वें पृष्ठ पर शायद यही सम्पादकीय पढ़कर कहरहे हैं कि "जनता दल तो सरकार न अकेले और न किसी पार्टी के साथा गठ-बन्धन में ही बना पाएगी" तो दूसरे ज्योतिषीजी उसी पृष्ठ पर कहते हैं कि "जयललिता के ग्रह बहुत बलवान है और वह बहुत दिनों तक राज्य चलाएंगी। उनके केन्द्र में आने के अच्छे ग्रहयोग हैं"!

२) २८ अप्रैल १६६६ के इसी दैनिक पत्र के मैगज़ीन भाग में भिन्न-भिन्न नेताओं के विषय में "वैदिक ज्योतिष" की भविष्यवाणियां तो बड़ी मज़ेदार हैः एक ही "प्रसिद्ध" ज्योतिषी ने तो "भावी प्रधानमंत्री" के संबन्ध में कई नेताओं के सुन्दर भविष्य का चित्रण इस प्रकार किया हैः १) "दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि अति-अधिक हेरा-फेरी और सौदेबाज़ी करके नरसिंहराव पुनः एक गठबन्धन सरकार के प्रधान मंत्री बन सकते हैं" पर आगे यही ज्योतिषीजी लिखते है २) "कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी कि यदि श्रीवाजपेयी अगली गठबन्धन सरकार के प्रधान मंत्री होगे"। फिर कुछ और आगे इन्हीं ज्योतिषीजी के शब्द हैं ३)"शरद्पवार का आगामी समय बहुत अच्छा है और वह राष्ट्रीय स्तर पर काफी महत्त्वपूर्ण रोल अदा करेंगे" और फिर कुछ और आगे यह लिखते हैं: ४)"क्योंकि इस समय माधवराव सिंधिया की दशा बहुत ही उत्कृष्ट है...यह आने वाले समय में अप्रत्याशित ऊँचाइयों को छू लेंगे"! स्पष्ट ही है कि यह सबके सब इन ज्योतिषीजी के अनुसार प्रधानमंत्री बनने वाले थे!

इसी प्रकार १ अप्रैल १६६६ से लेकर ५ मई १६६६ के दैनिक "जनसत्ता" में प्रतिदिन एक एक "प्रसिद्ध" "वैदिक ज्योतिषी" की चुनाव संबन्धी भविष्यवाणी छपती थी और यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा कि उन भविष्यवाणियों के अनुसार तो जितने ज्योतिषी वह भविष्यवाणियां करने वाले थे तो उतने ही उनने प्रधान मंत्री भी बनाए ....बिल्कुल अपने अपने मनपसन्द अयनांशों की भान्ति.... ४ अप्रैल ज्योतिषीजी ने वाजपेयीजी को बनाया तो ५ अप्रैल ज्योतिषी ने पुनः नरसिंहराव को प्रधानमंत्री बनाया। ११ अप्रैल ज्योतिषी ने जनतादल को सरकार बनाने के अयोग्य बनाया तो १२ अप्रैल ज्योतिषी ने किसी महिला को प्रधानमंत्री पद पर आसीन किया। १३ अप्रैल ज्योतिषी ने कांग्रेस की भूमिका गौण और भा. ज. पा. की भूमिका प्रमुख बताई तो १६ अप्रैल ज्योतिषी ने कांग्रस को सब से प्रमुखदल बनाया। १७ अप्रैल ज्योतिषीजी ने भी राव को ही बनाया पर १८ अप्रैल ज्योतिषी ने उनको ज़्यादा दिन चलने नहीं दिया। २३ अप्रैल ज्योतिषीजी ने कहा कि अगले पांच साल चैन से गुज़रेंगे तो २४ अप्रैल ज्योतिषीजी ने माधवराव सिंधिया को प्रधानमंत्री नियुक्त किया। २६ अप्रैल ज्योतिषी ने नरसिंह राव से सरकार तो बनवाई लेकिन साथ में उसको ज्यादा दिन चलने नहीं दिया और शायद इसीलिए २ मई ज्यातिषी ने सोनिया गांधी को उस पद पर बिठाया!

३० अप्रैल १६६६ के दैनिक नवभारत टाईम्स के अनुसार तो बेचारे लालूप्रसाद यादव जी ने अपने ज्योतिषीजी के परामर्श अनुसार विंध्यवासिनीदेवी की श्रृंगारपूजा व मंत्रजाप तक कराये पर लगता है कि उन उपायों में कहीं कुछ कमी रह गई!

प्रायः यह "वैदिक ज्योतिषी" सरकारी गवाहों की तरह "अपने ही बयानों से साफ मुकर भी जाते हैं"! उदाहरणार्थ जनवरी १६६६ के एस्ट्रोलॉजिकल मैगज़ीन में तो एक "वैदिक ज्योतिषी" ने मुरली मनोहर जोशी के बारे में यह शब्द कहे थे "बृहस्पति ७-१२-१६६५ को उनके ग्यारहवे भाव मे प्रवेश करेगा और वहीं एक वर्ष तक रहेगा। इसी अवधि में वह देश के राजप्रमुख होंगे और राष्ट्र को अत्यधिक शक्तिशाली बनाएंगे" अर्थात् कोई सन्देह नहीं था कि उनके अनुसार जोशीजी देश के प्रधानमंत्री बनेंगे परन्तु फिर उसी ज्योतिषीजी ने अप्रैल अंक की उसी पत्रिका में उसी पद पर एक साथ "अटल बिहारी वाजपेई, मुरली मनोहर जोशी तथा श्री एल,के अडवाणी को बिठा दिया" बिना किसी सफाई के कि आखिर जोशीजी के साथ उस पद पर औरों को भागीदार क्यों बनाया। "वैदिक ज्योतिष" की लाज रखने के लिए ही सही, इनको कम से कम जोशीजी की पत्री में कुछ तो त्रुटि दिखानी चाहिए थी जिस कारण से वह

गद्दी से उतारे जारहे थे पर भला इन "सर्वज्ञ वैदिक ज्योतिषियों" को कोई कुछ पूछने का दुस्साहस कैसे करसकता है!

जून १६६६ के ऐस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन मे पृष्ठ ५२६ पर जब एक पाठक ने यह पूछा कि एक वैदिक ज्योतिषी लेखक ने वाजपेयीजी की पत्री का विश्लेषण २५-१२-१६२४ की कन्या लग्न वाली पत्री के अनुसार किया है और दूसरे ने २५-१२-१६२६ की वृश्चिक लग्न की पत्री के अनुसार ---पूरे दो वर्षो का अन्तर--- और इससे पाठक भ्रमित हो जाते हैं तो संपादक महोदय ने दो टूक उत्तर दिया कि पत्रियां सही होने की तो हम कोई गारण्टी नहीं देसकते हैं पर उनके विश्लेषण का तकनीकी महत्त्व अवश्य है *अर्थात् गलत पत्री से सही फल कैसे बताया जाए यह सिखाने के लिए वह जन्मपत्रियां बिल्कुल ठीक हैं!*

१ मई १६६६ के "जनसत्ता" में ही "भविष्यवाणी का सुरक्षित व्यापार" शीर्षक संपादकीय में इन भविष्यवाणियों की पोल यों खोली गई है "...आजकल चुनाव सबन्धी भविष्यवाणियां करने वाले ज्योतिषी भी बढ़ते ही जारहे हैं, जैसे हर चुनाव में उम्मीदवारों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। ज़्यादा ज्योतिषियों के होने का फायदा यह है कि ज़्यादा भविष्यवणियां होंगी, उनमें से कोई न कोई तो सच होगी ही!"

अतः यह आवश्यक नहीं कि जो ''वैदिक ज्योतिषी'' अपने ''मनपसन्द अयनांश'' के अनुसार फलित सही होने की डींगे मारते हैं वह सच ही बोल रहे हैं, जैसा कि हमने अभी देखा।

वैसे भी ''वैदिक ज्योतिष की दुकानों'' के अधिकतर आचार्य विशेषतः प्राचार्य केवल कलकत्ते से प्रकाशित होने वाली एक अंग्रेज़ी ''ऐफमेरिस'' ही प्रयोग में लाते है केवल इसलिए कि उसमें सहस्रों नहीं तो सैंकडों गल्तियां हैं और *भला वह ''वैदिक ज्योतिषी'' किस खेत की मूली है जो गलत आंकडों से ही सही फल न बताए, ऊपर बताए गए ''नोटेबल हार्स्कोप्स'' या अन्य पत्रियों की भान्ति!*

''ज्योतिष सम्राट'' तथा ''वराहमिहिर'' आदि उपाधियों की वास्तविकताः पहले कहे हुए २३ मार्च १६६५ के उसी पत्र में इन ही स्टीफन क्वांग महोदय का उन्हीं "मूर्तिमान वैदिक ज्योतिष" के विषय में उनका कथन है ''आपने अपनी धाक जमाने के लिए जो अयोग्य 'ज्योतिषियों' को भी बड़ी-बड़ी उपा- धियां दीं हैं वह इस देश के मापदण्डों के अनुसार बिल्कुल गलत है''। कहने के तात्पर्य यह कि यह उपा- धियां योग्यता के लिए कम तो निजी प्रभावक्षेत्र बढ़ाने के लिए अधिक दीजाती है!

अतः इन ''उपाधियों'' वाले ''वैदिक ज्योतिषियों'' द्वारा अपनाए गए अयनांश में वास्तव में ही सही भविष्यवाणियां करने की क्षमता हो यह आवश्यक नहीं है।

न स्वयं डा. रमण को न उनकी सुपुत्री को अपनी ही निरयण भविष्यवाणियों के सही निकलने की आशा है पर वह दूसरों से अपेक्षा रखते हैं कि उन की भविष्यवाणियों पर विश्वास किया जाए! प्रतिवर्ष की भान्ति पिछले वर्ष भी जनवरी १६६५ के ''ऐस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन'' में डा. बी. वी. रमण के सम्पादकीय लेख में देश-विदेशों के वर्ष भर के भविष्य का चित्रण था। श्री नरसिंहराव के विषय में पृष्ठ ५ पर उनका कथन था ''प्रधान मंत्री की कुण्डली में मंगल की महादशा में चन्द्रमा की अन्तदर्शा फरवरी १६६५ से प्रारम्भ हो रही है। इसको दशाच्छिद्र कहा जाता है। उसके बाद---सितम्बर/अक्टूबर से-----राहु की महादशा लग जाएगी। राहु ज्वलनशील स्वभाव का ग्रह है, वह द्वितीय मारक स्थान में बैठा है और तीसरे और आठवें भाव के स्वामी मंगल के नक्षत्र में है। प्रधानमंत्री को अपने स्वास्थ्य तथा व्यक्तित्व के बारे में बहुत ही सावधानी रखनी चाहिए। ग्रह केवल संकेत करते हैं। मंगल ने विपरीतराजयोग कारक होने से प्रधानमंत्री को देश का सर्वोच्च पद दे दिया। प्रायः वह विपरीतराजयोगकारक ग्रह जब उनकी दशा समाप्त हो रही हो या होने वाली हो उस राष्ट्र या सरकार के प्रमुख से उस राजयोग को छीन लेते हैं जो उन्होंने उसको दिया था, जबतक कि जन्मपत्री में अन्य कोई संकट निवारक योगादि न हों'' पृष्ठ १६१ पर उन्होंने आगे लिखा था "लोकसभा के मध्यावधि चुनाव सारे के सारे देश में हिंसा से व्याप्त होंगे। किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिलने की सम्भावना नहीं है''।

इन पंक्तियों से तो यही स्पष्ट होता है कि डा. रमण के ''वैदिक ज्योतिष'' के अनुसार नरसिंहराव सरकार बीच में ही टूट जानी थी और मध्यावधि चुनाव होने थे जिनमें अत्यधिक हिंसा होनी थी और किसी भी पार्टी को बहुमत मिलने की सम्भावना नहीं थी''।

अब उनकी सुपुत्री श्रीमती गायत्री देवी वासुदेव, जो कि उस पत्रिका की सहसम्पादक भी हैं, नरसिंहराव सरकार के विषय में क्या कहा था वह भी सुनिए। मई १६६५ के अपने सम्पादकीय में पृष्ठ ४०५ पर उनका कथन था ''हम लगातार कई वर्षो से सही प्रयत्न तथा सही उपायों पर ज़ोर देते आए हैं। सरकारों का बनना या स्थिर रहना भी उपायों के क्षेत्र से बाहर नहीं है। लगता है कि यह बात उन लोगों के मस्तिष्क में बैठ गई है जो देश के कर्णधार हैं और हमें *विश्वस्त सूत्रों से पता लगा है कि देश के हित में समय-अनुभूत और सही उपाय किये गये हैं।* अतः सरकार अपनी अवधि पूरी कर सकती है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि उन्होंने उपाय कितने सही ढ़ंग से किए हैं''। कहने के तात्पर्य यह कि ''तू मुश्के नाज़ कर खूने दो जहान मेरी गर्दन पर'' अर्थात् आप उचित उपाय करते जाइए और कुर्सी पर टिके रहिए चाहे आप उसके योग्य हैं या नहीं! इससे एक बात और भी स्पष्ट होती है कि जो भविष्यवाणी ''वैदिक ज्योतिषी'' आज कर रहे हैं तो कल भी वह ''विपरीत परिस्थितियों'' में भी उन पर दृढ़ रहेंगे

इसकी कोई गारण्टी नहीं है। इससे एक बात और भी सपष्ट होती है कि तीन विकल्पों में से अर्थात् १) नरसिंहराव सरकार बीच में ही टूट कर मध्यावधि चुनाव हुए होते, २)नरसिंहराव सरकार अपने पॉच वर्ष पूरे करती, या फिर ३)उनको कोई शारीरिक कष्ट पहुँचा होता---इन तीनों विकल्पों में से जो भी सही निकला उसी को अगले अक में उछाला गया और उसी के प्रशंसा पत्र भी प्रकाशित किए गए! साथ हीएक तरफ से तो वह स्वयं ही कह रही थीं कि "विश्वस्त सूत्रों से पता लगा है कि समय-अनुभूत और सही उपाय किए गए हैं...अतः नरसिंहराव सरकार पूरी अवधि तक टिकी रहेगी" और दूसरी ओर से उनका कथन था कि "नरसिंहराव सरकार पूरी अवधि तक टिके रहना इस बान पर रिर्भर करता है कि उनने किस हद तक उपाय सही ढ़ंग से किए/कराए हैं"। इस बात का पता लगाने के लिए कि वह ऐसी गोलमोल बातें क्यों कह रही थीं किसी शर्लाक होल्मस की आवश्यकता नहीं है! यदि नरसिंहराव सरकार बीच में ही गिरी होती तो वह कह सकती थीं "उपाय ठीा से नहीं किए होंगे" अर्थात् विश्वसनीय सूत्र गलत थे।

फिर उधर अक्टूबर १९९५ के सम्पादकीय में डा. रमण ने पृष्ठ ७९६ पर लिखा था "अक्टूबर १९९५ का यह ग्रहण प्रधान मन्त्री के लिए सरकार व पार्टी का पुरिया होने के नाते अग्नि परीक्षा की भान्ति होगा। ग्रहों का ऐसा योग प्रायः नेतृत्व में परिवर्तन दर्शाता है"। लगता है ग्रहण के ड़र से "शास्त्रानुभूत उपायों ने" भी काम करने से हड़ताल कर दी थी ! लगता है बाद में वेतनमान बढ़ाये जाने पर पुनः काम करना प्रारम्भ किया हो! *वाह रे निरयण ज्योतिष तेरी सही भविष्यवाणियों की विड़म्बना!*

निरयण ज्योतिष का असली नाम कुछ और होना चाहिए: इस निरयण ज्योतिष में न केवल दर्जन भर अयनांशों को उदरसात् करने की क्षमता है अपितु यह कम से कम एक दर्जन अंश कुण्डलिया को, दर्जन भर अष्टकवर्ग चक्रों को, आधा दर्जन दशापद्धतियों को भी स्वाहा कर सकता है। देखिए कैसे। आप जब भी कभी किसी विद्वान से जन्मपत्री बनवाएंगे तो उसमें न केवल जन्मकुण्डली होगी अपितु उसमें कम से कम चन्द्रकुण्डली, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश तथा त्रिंशांश की कुण्डलियां भी साथ होंगी अंगरक्षकों की भान्ति! फिर अष्टकवर्ग के बिना कोई जन्मपत्री पूरी मानी ही नहीं जाती है। अब अगर वह बहुत उच्च कोटि का विद्वान होगा तो अवश्य ही ग्रहों की नक्षत्र तथा उपनक्षत्रों की स्थिति भी देदेगा। फिर अगर वह उससे भी उच्च कोटि का ज्योतिषी होगा तो कालचक्र दशा भी साथ देदेगा। इसी प्रकार यह भी सम्भव है कि जैमिनी कथित कारकांश कुण्डली भी देदेगा। इन सबका प्रयोग आपका भविष्य बताने के लिए किया जाएगा। यदि कोई ग्रह कुण्डली में कमज़ोर है पर चन्द्र कुण्डली में बलवान है तो चिन्ता की कोई बात नहीं क्योंकि "लग्नं च होरा शशिभ च विन्द्यात्''। अब यदि दोनों में ही कमज़ोर है तो भी नवांश में बलवान होने से मामला ठीक हो जाएगा। यदि इन तीनों में ही हालत खराब है तो उस विशेष विभाग की कुण्डली देखी जाएगी जैसे व्यवसाय के लिए दशमांश। यदि कहीं से भी बात नहीं बनती है तो अष्टकवर्ग तो है ही है। कोई भी ग्रह चाहे कितना ही निकम्मा क्यों न हो पर यदि अष्टकवर्ग में अधिक बिन्दु हैं तो वह सब ठीक कर लेता है। अगर वहाँ भी बात न बने तो फिर देखिए कि वह ग्रह किस नक्षत्र में है---यहां कहीं नक्षत्र के वास्तविक मध्यमभोगांश मत देखिएगा, केवल यह देखिए कि वह ''वैदिक ज्योतिष'' के कौन स काल्पनिक नक्षत्र में है। अगर उस नक्षत्र का स्वामी ग्रह बलवान है तो आपके तो वारे न्यारे होगए। अब यदि कहीं भी कोई उम्मीद नहीं है तब भी घबराने की कोई बात नहीं, केवल भूतपर्व प्रधानमंत्री की तरह कोई उपाय करलीजिए, सब कुण्डलियां ठीक हो जाएंगी!

जैसा कि सभी पाठक जानते ही है भारतवर्ष में एक अत्यन्त ही लोकप्रिय खाना है खिचड़ी। यह वास्तव में ही यथानाम तथा गुण है। अतः क्यों न हम इस निरयण ज्योतिष का नाम भी ''खिचड़ी ज्योतिष'' ही रखलें? आपकी सम्मति की प्रतीक्षा रहेगी!

''वैदिक ज्योतिष'' की कोई भविष्यवाणी यदि सही निकलती है तो वह केवल संयोगमात्र है या ''देश-काल'' की सूझ-बूझ। उसके पीछे कोई वैज्ञानिक या वैदिक आधार नहीं है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की प्रधान मंत्री बनने से पहले अपने लिए की गई भविष्यवाणी थी कि "if elected I will be a disaster Prime Minister" अर्थात् यदि मुझे प्रधान मंत्री बनाया गया तो मैं देश के लिए घातक सिद्ध होऊँगा -- उनकी यह भविष्यवाणी शतप्रतिशत सही निकली। इसी प्रकार दो वर्ष पूर्व खुशवन्तसिंह ने हिन्दुस्तान टाईम्स के अपने साप्ताहिक कालम में लिखा था कि यदि नरसिंहराव को पार्टी के अध्यक्ष पद से यथाशीघ्र नहीं हटाया गया तो वह न केवल स्वयं अगली बार प्रधान मंत्री नहीं बन पाएंगे अपितु वह पार्टी के लिए भी घातक सिद्ध होंगे। यह ाविष्यवाणी भी बिल्कुल सही सिद्ध हुई।इसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र से अनभिज्ञ तथा उसमें विश्वास न रखने वाले व्यक्तियों की भी सैंकडों ऐसी ही "भविष्यवाणियां'' दैनिक जीवन में प्रायः सही निकलती ही रहती है। कहने के तात्पर्य यह कि अयनांशों के इतने बड़े भण्ड़ार में प्रत्येक अयनांश से यदि कुछ भविष्यवाणियां सही निकलती भी हैं तो वह केवल संयोग मात्र ही है अथवा उनका सही निकलने का आधार अयनांश न होकर उस ''वैदिक ज्योतिषी'' की अधिक राजनैतिक सूझबूझ तथा व्यवहारकुशलता, जिसको ''ज्योतिष शास्त्रों'' में ''देशकाल ज्ञान'' कहा जाता है। उसके सही होने के पीछे कोई शास्त्रीय या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

सांख्यकी statistics के आधार पर निरयण ज्योतिष की भविष्यवाणियां कितनी सफल? किसी भी विषय में "उत्तीर्ण" होने के लिए उसके परीक्षार्थी को एक निश्चित प्रतिशत अंक प्राप्त करने होते हैं जो गणित जैसे विषय में किसी किसी विद्यार्थी के शत प्रतिशत तक हो सकते है। वैसे भी किसी भी विषय में कम से कम पचास प्रतिशत अंक तो होने ही चाहिएं जिसके आधार पर यह कहा जा सकता हो कि वह छात्र उस विषय में यदि उत्तीर्ण नहीं हुआ तो फेल भी नहीं हुआ। स्वयं ज्योतिर्विदों का कहना है कि किसी भी ज्योतिषी की भविष्यवाणियों की अधिकाधिक सफलता ८० प्रतिशत होसकती है, उससे अधिक कदापि नहीं। प्रायः सभी पत्रिकाओं में प्रारम्भ में ही निम्न श्लोक या इससे मिलते जुलते अर्थ वाला कोई अन्य श्लोक होता है:

फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्ता तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना।।

"ज्योतिर्विद ग्रहों की गति द्वारा केवल इंगित मात्र कर सकते हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है। वैसे तो जगत्पिता परमात्मा के सिवा यह कोई भी ठीक-ठीक नहीं कह सकता है कि क्या होगा"।

यह कथन जहां ज्योतिषियों की "विनम्रता" तथा "सत्यवादिता" दिखाता है वहीं उन्हें भविष्यवाणियां सफल न होने पर किसी सीमा तक कानूनी पचड़े से भी बचा सकता है। अस्तु। यह कथन भी यही सिद्ध करता है कि किसी भी ज्योतिषी को कभी भी शतप्रतिशत सफलता मिलने की आशा नहीं होती है। अतः यदि हम यह मानकर भी चलें कि सभी ज्योतिषियों को ८० प्रतिशत सफलता मिलती है और केवल दो ही अयनांश-----सरकारी और रमण को मान कर चलें----रैवतपक्ष. कृष्णमूर्ति, सिरिल फागन आदि को छोड़कर भी तो भी इसका यही अभिप्राय है कि प्रत्येक अयनांश की सफलता ४० प्रतिशत से अधिक नहीं है। वैसे भी दोनों ही अयनांश कभी भी एक साथ सही नहीं होसकते हैं!

यह तो कोई सम्मानजनक "स्कोर" नहीं हुआ! यह तो बिल्कुल राजनीतिक नारों की भान्ति हुआ कि "हमें तो देश की अर्थव्यवस्था के साथ खिलवाड़ करके सारे देशवासियों को विदेशियों का कर्ज़दार बनाने का बहुमत मिला है" जबकि वास्तविक स्थिति इस प्रकार है: किसी भी चुनाव में ७० प्रतिशत से अधिक मतदाता कभी भी भाग नहीं लेते हैं और यदि हम यह मानकर भी चलें कि चुनावों में कभी हेरा फेरी नहीं हुई और यह भी मानकर चलें कि केवल दो ही पार्टियां चुनाव लड़ रही हैं और बहुमत में आने वाली पार्टी को ६० प्रतिशत वोट भी मिले हैं तब भी वह ७० प्रतिशत का ६० प्रतिशत वास्तव में ४२ प्रतिशत ही रहा अर्थात् चाहे वह नेतागण हो या निरयण ज्योतिषी उन्हें----देशवासियों को---- जनसाधारण को-----विदेशियों का------अवैदिक और अशास्त्रीय अयनांशों तथा निरयण फलितज्योतिष आदि का------ऋणग्रस्त करने का कोई अधिकार नहीं है।

इसके विपरीत यदि आप सायन ज्योतिर्वेत्ताओं की संख्या लेते हैं तो निश्चय ही वह निरयण ज्योतिषियों से बहुत अधिक है क्योंकि अयनांश की बीमारी केवल भारतवर्ष में ही फैली हुई है और विदेशों में अगर इसका थोडा बहुत विकास है भी तो वह फैलना भी "वैदिक ज्योतिषियों" के "प्रयत्नों" से बिल्कुल ही बन्द होगा जैसा कि हम अभी-अभी देख चुके हैं। अतः सारे विश्व के सायन ज्योतिषियों की संख्या निरयण ज्योतिर्वेत्ताओं की अपेक्षा कई गुणा अधिक है। यदि हम यह मानकर भी चलते हैं कि उनकी भविष्यवाणियां भी निरयण ज्योतिषियों की तरह ८० प्रतिशत ही सही हैं तो भी क्योंकि उनमें अयनांश केवल एक ही है अर्थात् शून्य, अतः उनके अंक बटने के बदले एक ही पद्धति को मिलेंगे। *इससे तो निर्विवाद रूप से यही सिद्ध होता है कि सायन पद्धति हर प्रकार से विजयी है --- कारण केवल इतना ही है कि वह ही वास्तव में वैदिक आधार पर टिकी है अन्यथा उसकी इतनी सफलता कभी भी नहीं हो सकती थी।*

सारे प्रमाण सायन ज्योतिष की भविष्यवाणियों को ही सही सिद्ध करते है: यहां एक बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि विदेशों में "काठ की हाण्डी अधिक बार आग पर नहीं चढ़ाई जा सकती है" क्योंकि जैसा हम ने ऊपर देख लिया वहां आप की भविष्यवाणियां असफल रहने पर आपसे फीस वापिस मांगी जा सकती है और साथ ही आपको कठघरे में भी खडा किया जा सकता है क्योंकि यह तो हम भारतवासी ही हैं जिनको "वैदिक ज्योतिष" के नाम पर कोई भी व्यक्ति चाहे वह स्वदेशी हो या विदेशी, बेवकूफ बना सकता है! अतः इन निरयण भक्तों को विवश होकर यही स्वीकार करना पड़ेगा कि वास्तव में ही सायन पद्धति से भविष्यवाणियां अधिक सही निकलती है निरयण की अपेक्षा---और प्रत्यक्षे प्रमाणं किम्? जैसा कि इस पंचांग के प्राक्कथन में हम कह आए हैं इन पंक्तियों के लेखक को भी ३ सितम्बर १६६५ को "एक्सप्रैस स्टार टैलर" की ओर से १६६३ के लिए भारत तथा अन्य राष्ट्रों के विषय में सही भविष्यवाणियां करने के लिए "नास्त्रदामस एवार्ड" मिला था। कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि वह भविष्यवाणियां सायन अर्थात् वास्तविक वैदिक पद्धति से ही की गई थीं! इसी प्रकार १६६६ के इसी पंचांग के अंग्रेज़ी संस्करण में प्रकाशित सायन राशिचक्र और दिनवर्ष पद्धति पर आधारित भविष्यवाणियां तो अभी तक शत प्रतिशत ही सही निकली हैं, जो स्वयं में एक चौंका देने वाली बात है।

निरयण गणित व फलित भूकेन्द्रीय ग्रहस्पष्ट से कदापि सही नहीं हो सकता है:

ऊपर जितने भी तर्क और प्रमाण हमने निरयण ज्योतिष के सही होने के विरोध में दिए हैं यदि

हम एक बार फिर "अक्ल का गला घोंट कर" उन सबको तिलांजलि भी देदें और अपनी अहम्मन्यता या दुराग्रह के कारण उनसे मुंह मोड़ भी लें तब भी हमें एक ऐसे सत्य से झूझना ही पड़ेगा जिसको हम न उगल सकते हैं और न निगल सकते हैं और वह है "क्षैतिज परमलम्बन संस्कार" equatorial horizontal parallax !

जब से भारतवर्ष में दृश्यगणित से पंचांग बनने लगे हैं हम आंखें बन्द करके "जहाज़ी" या "नाविक पंचांग" अथवा अन्य किसी विदेशी पंचांग से नकल करके तथा उनमें यथेष्ट अयनांश रूपी मुण्डन संस्कार करके अपने पंचांगों में ग्रहस्पष्ट देते हैं और उन ही के आधार पर तिथि, नक्षत्र आदि भी देते हैं। इसी बात को अंग्रज़ी में निरयण "ऐफिमेरिस" के अगुआ "लाहिरी एफिमेरिस" वाले पिछले पचास वर्षों से अपने पंचांग में पृष्ठ ३/५ पर दोहराते आए हैं कि "इस ऐफिमेरिस में दिए जाने वाले ग्रहस्पष्ट पश्चिमी पंचांगों में से अयनांश कम करके निकाले गए हैं।" -- यह अलग बात है कि नकल करते समय भी किसी "एफिमेरिस" में सहस्त्रों नहीं तो सैण्कडों त्रुटियां रहती हैं और वह "आज भी प्रयत्नशील हैं कि वह त्रुटियां न रहें"! आजकल के "परीक्षार्थी" भी तो ठीक से नकल तक नहीं कर पाते है पर प्रायः उनको ही प्रथम श्रेणी में "पास" किया जाता है! अस्तु। आप कोई भी पंचांग किसी भी भाषा में उठाकर देखिए उसमें लिखा होगा "अखिल भारतोपयोगी" जिसका यही अभिप्राय होना चाहिए है कि वह सारे भारतवर्ष के ही उपयोग में लाने योग्य हैं परन्तु साथ में यह भी लिखा होगा कि "यह पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बना है" अथवा "बम्बई" के अक्षांश पर आदि आदि परन्तु वास्तविक स्थिति से शायद ही कोई पंचांग अवगत कराएगा कि यह सब के सब पंचांग हैं "भूकेन्द्रीय" अर्थात् उनका गणित किसी स्थान विशेष के लिए न होकर पृथिवी पिण्ड के मध्य के लिए किया गया है --*श्रीकृष्ण विश्व पंचांग* ही एक अपवाद रहा है जो लगातार १९८४ से ही स्पष्ट घोषणा करता रहा है कि यह पंचांग भारत के किसी स्थान विशेष के अक्षांश पर नहीं अपितु भूकेन्द्रीय ग्रहस्पष्ट से बना है। राम जाने यह अन्य पंचांगकर्ता इस विषय में चुप क्यों हैं!

प्राचीन भारत में जो उज्जयिनी को इतना महत्तव दिया गया था उसका एक कारण यह भी था कि वह भारत का "भूकेन्द्र" है अर्थात् भारत का "मध्य" और इसी कारण सारे के सारे ज्योतिर्ग्रन्थ इसीको "लंका" मानकर चलते थे। भूकेन्द्र और उज्जयिनी के भिन्न भिन्न अक्षांशों व रेखांशों तथा समुद्रतल से ऊँचाई आदि पर बनाए गए भोगांशों में यह अन्तर सूर्य के लिए अधिकाधिक ८ विकलाएं और अन्य ग्रहों के लिए ६० विकलाएं हो सकता है परन्तु जैसा आप इस वर्ष के इस "श्रीकृष्ण विश्व पंचांग" में देख रहे होंगे चन्द्रमा में यह अन्तर एक अंश अर्थात् ६० कलाओं तक होसकता है! कहने का अभिप्राय यह हुआ कि यदि मेरी जन्म राशि "भूकेन्द्रीय" चन्द्रस्पष्ट के अनुसार वृषभ राशि के २६ अंश है तो वह वास्तव में भारतवर्ष में जन्म होने के कारण मिथुन के शून्य अंश भी हो सकती है और यदि "भूकेन्द्रीय चन्द्रमा" मिथुन में एक अंश है तो वह वास्तव में वृष राशि में ही अन्तिम अंशों में भी हो सकता है। *इससे तो यह बात भी स्वतः ही सिद्ध हो जाती है कि इस "भूकेन्द्रीय चन्द्रमा" से निकाले गए तिथि, नक्षत्र, योग और करण आदि भी भारतवर्ष के कर्मकाण्ड तथा धार्मिक संस्कारों के लिए बिल्कुल ही निरर्थक हैं।*

चलिए अपने "वैदिक ज्योतिषी" भाइयों की प्रसन्नता के लिए हम यह भी मान लेते हैं कि पाराशर मुनि ने कोई पाराशरी लिखी भी थी और वह वही पाराशरी है जिसमे वास्तविक वैदिक अर्थात् सायन ग्रहस्पष्ट यां *सूर्य सिद्धान्त* के ग्रहस्पष्ट के बदले केवल यवनों द्वारा साधित ग्रहस्पष्ट और वह भी केवल "लाहिरी" अयनांश से ही सही फलित मिलता है क्योंकि पाराशर मुनि ने भी "भृगु संहिता" वाले भृगुजी की भान्ति अपनी त्रिकाल दृष्टि से यह सहस्रों वर्ष पूर्व ही देख लिया था कि "लाहिरी" जो अयनांश अपनाएंगे केवल वही सही होगा अतः उन्होने भी इसी हिसाब से अपनी "पाराशरियों" का निर्माण किया था -- बिल्कुल वैसे ही जैसे कोई गलत माप का कफ़न मिलने पर उसके माप के अनुसार किसी अन्य शव को ढूंढ़ा जाए। फिर भी यह "फलित सही होने" की समस्या और भी गम्भीर हो जाती है क्योंकि इन "पाराशरियों" के निरयण फलितज्योतिष में तो दशाभुक्ति ही कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुम् समर्थ है और वह दशाभुक्ति निकाली जाती है चन्द्रस्पष्ट से और वह चन्द्रस्पष्ट है भूकेन्द्रीय अर्थात् "भारतकेन्द्रीय" से एक अंश तक आगे-पीछे तो अब यदि यह तब भी यह कहते हैं कि "पाराशरी" दशाभुक्ति के परिणाम सही हैं तो यह "झूठ ही बोल रहे हैं और झूठ के सिवा कुछ नहीं बोल रहे हैं" क्योंकि *जब जन्मकालीन चन्द्रस्पष्ट ही ठीक नहीं है तो दशा-भुक्ति का "भुक्त-भोग्य" कहां से ठीक होगा और उस गलत भुक्त-भोग्य वाली दशा के फल कहां से सही होंगे!*

उदाहरण के लिए भारतवर्ष की ही जन्मकुण्डली लेते हैं। उसका जन्मकालीन "लाहिरी पाराशरी" चन्द्रमा कर्क राशि में ३ अंश ५६ कला है, पर यह है भूकेन्द्रीय ही और इसी चन्द्रमा के हिसाब से उसके जन्म समय शनि महादशा के १८ वर्ष ० मास २७ दिन शेष थे जिसका यह अभिप्राय है कि १२ सितम्बर १९९५ से १२ नवम्बर १९९६ तक इस कुण्डली में शुक्र महादशा में मंगल का अन्तर है। अतः अभी अभी सम्पन्न चुनावों के विषय में सभी "वैदिक ज्योतिषी" यही अटकल-पच्चू लगाए थे कि मंगल सप्तम स्थान का स्वामी -- मारकेश -- होकर दूसरे भाव --- मारक स्थान -- में बैठा है और महादशाकारक शुक्र से द्विर्द्वादश का योग बना रहा है अतः इन चुनावों में अत्यधिक हिंसा होगी और किसी नेता की हत्या

भी हो सकती है। आइए अब वास्तविकता देखते हैं। यदि यह मान भी लिया जाए कि विंशोत्तरी दशा-भुक्ति ही सर्वे-सर्वा है तो देखिए "भारतवर्ष के जन्मस्थान" अर्थात् दिल्ली के अक्षांश, रेखांश व समुद्रतट से ऊँचाई के अनुसार अर्थात् भूपृष्ठीय "लाहिरी अयनांश" चन्द्रमा है कर्क राशि के ४ अंश २३ कला --- भूकेन्द्रीय से पूरा २३ कलाओं का अन्तर। इससे यही अभिप्राय निकलता है कि वास्तव में जन्म समय "भारतवर्ष" की शनि महादशा के केवल १७ वर्ष ६ मास शेष थे। इस प्रकार से इस कुण्डली में शुक्र-महादशा में मंगल का अन्तर १५ अप्रैल १९६५ को ही समाप्त हुआ और तब से १५ अप्रैल १९६८ तक राहु का अन्तर रहेगा; जो कि लग्न भाव में है अतः लग्नेश की राशि में और महादशा कारक लग्नेश से ग्यारहवें स्थान में है। इस में तो फिर मंगल अन्तर्दशा के बिल्कुल विपरीत फल होने चाहिए! आश्चर्य तो यह है कि हम आजतक अपनी मातृभूमि का भी इसी गलत दशा-भुक्ति से सही फलित बताते आए हैं!

मुझे नहीं लगता कि "गणिताचार्य" तथा "गणितकलानिधि" उपाधियां धारण करने वाले एन. सी. लाहिरी को यह भूकेन्द्रीय और भूपृष्ठीय ग्रहस्पष्ट विशेषतः चन्द्रस्पष्ट का अन्तर ज्ञात नहीं रहा होगा परन्तु क्योंकि जिन पश्चिमी पंचांगों से वह अपना "एफिमेरिस" और बांगला पंचांग बनाते थे वह तो केवल भूकेन्द्रीय चन्द्रस्पष्ट आदि ही देते थे अतः यथार्थ बात कहने के बदले चुप्पी साधना ही अच्छा समझा होगा! यही हाल शायद आजकल के "शास्त्रीय" पंचांगकारों का भी है क्योंकि यदि "गणकमार्तण्ड" और "गणकभास्कर" आदि उपाधियां होने के बावजूद भी उनको इस अन्तर का ज्ञान नहीं है तो वह उपाधियां प्राप्त करने का लाभ ही क्यां और यदि ज्ञान है तो फिर यह प्रश्न स्वाभाविक ही है कि उन विद्वानों ने इस यथार्थ को जनसाधारण के सामने क्यों नहीं रखा! मैं नही मानता कि सभी विद्वान इतने गिर गए हैं कि धनलोलुपता के कारण या फिर इस डर से कि पंचांगों की बिक्री कम न हो जाए वह चुप रहे होगे।

इस शास्त्रार्थ से तो यही निष्कर्ष निकलता है कि यह "वैदिक ज्योतिषी" आजतक जो भी भविष्यवाणियां करते आए हैं या जो आजकल भी कर रहे हैं, वह सबकी सब किसी न किसी दशा-भुक्ति के माध्यम से होती हैं चाहे वह विंशोत्तरी हो या अष्टोत्तरी या योगिनी या फिर नेपाल की त्रिभोन दशा ही हो। और उन दशा-भुक्तियों का भुक्त-भोग्य निकाला जाता है जन्मकालीन चन्द्रस्पष्ट से और वह होता है जन्मस्थान के बदले भूकेन्द्रीय अर्थात् एक अंश तक आगे पीछे अतः अशास्त्रीय और अवैज्ञानिक। अतः वह फलित कदापि कदापि सही नहीं हो सकता है!

पाठकों से करबद्ध प्रार्थना कि पत्री मेलापक के चक्कर में पड़कर मूर्ख न बनें: वैसे तो यह "वैदिक ज्योतिषी" पत्री-मिलाने के चक्कर में डालकर पीछे कुछ शताब्दियों से ही जनसाधारण को मूर्ख बनाते आए हैं लेकिन आजकल तो इसका और भी अधिक बोल-बाला है। मेरे सामने ही कम से कम आधी दर्जन अधेड उम्र की महिलाएं ऐसी हैं जो अभी तक इसलिए अविवाहित हैं कि जो भी योग्य वर उनको मिले उनमें से कोई तो ऐसा था जो "एक ही नाडी वाला था" तो कोई ऐसा कि "वह मार्जार योनि का था" तो लडकी मूषक! "मंगली" होने का भूत तो लोगो के सिर पर ऐसा सवार हो गया है कि वह शायद आयकर वालों से भी उतना नहीं डरते होंगे जितना कि मंगली "वर" या "वधू" से।

मेरी इन तमाम "वैदिक ज्योतिषियों" के सामने यह चुनौती है कि मुझे "मानव धर्मशास्त्र" अर्थात् मनुसमृति या रामायण, महाभारत, शिवपुराण, श्रीमद्भागवत् या अन्य किसी भी धार्मिक ग्रन्थ से एक भी उद्धरण देदें जिसमें "जन्मपत्री मिला कर विवाह करने का विधान" हो। "मनुस्मृति" तथा अन्य धर्मशास्त्रों में आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन है जैसे आर्ष, गान्धर्व, ब्राह्म, राक्षस, पैशाच आदि पर किसी में भी पत्री जैसे किसी प्रेत-पिशाच का कोई नाममात्र भी नहीं है, मंगली तो दूर रहा। इन शास्त्रों में तो स्पष्ट कहा गया है कि वर-वधू के कुल, स्वास्थ्य, नाम, गुण तथा रंग-रूप आदि का अवश्य विचार करना चाहिए पर जन्मनक्षत्र या राशि मेलापक आदि का तो कहीं कोई निर्देश नहीं है। कहते हैं राजा दशरथ की तीन सौ से अधिक रानियां थीं तो क्या उन सबसे उनकी पत्री मिलाई गई थी? इसी प्रकार से धृतराष्ट्र की पत्री गान्धारी से मिलाई गई, इसका पूरे महाभारत में कही कोई वर्णन नहीं है। भगवान राम के विषय में तो कहाजा सकता है कि उनने सीता को स्वयंवर में जीता था अतः पत्री मिलाने की कोई आवश्यकता नहीं थी परन्तु जो लक्षमण, भरत और शत्रुघ्न के विवाह सीता के ही चचेरी-मसेरी बहनों से किया गया उनमें भी तो पत्री मिलाने का कहीं कोई आभास मात्र भी नहीं है। लगता है कि यदि वास्तविक वैदिक ऋषि भी पत्रियां मिलाके विवाह करने लगे होते तो वह भी आजतक पत्री न मिलनेसे अविवाहित ही बैठे होते! *यह तो रही धर्मशास्त्र की बात और हम यह देख ही चुके हैं कि समान विभाग वाला नक्षत्रचक्र केवल काल्पनिक है और कुछ भी नही* अतः खगोलिकी के बदले अब "वैदिक ज्योतिष" से इसका विश्लेषण करते हैं:

जैसा कि "धर्मशास्त्र सम्मत" *काशी विश्वपंचांग* में कहा गया है यह "वैदिक ज्योतिषी" अभी तक यही निर्णय नहीं कर पाए हैं कि वास्तव में कौन सा अयनांश शास्त्रीय है तो अतः यदि आप किसी रिश्ते से वैसे हर प्रकार से सन्तुष्ट हैं पर पत्री मिलाए बिना विवाह नहीं करना चाहते तो आप किसी ऐसे "वैदिक ज्योतिषी" से पत्री मिलवाइए जो कोई ऐसा अयनांश अपनाता हो जिसके अनुसार वर-वधू के गण, नाड़ी आदि मिलते हो। मुझे पूरा विश्वास है कि आपको कोई न कोई ऐसा "वैदिक ज्योतिषी" अवश्य मिलेगा जो आप के सब विघ्न दूर करदेगा। वैसे हम यह देख ही चुके है कि जिस चन्द्रस्पष्ट के आधार पर यह गण, योनि, नाडी आदि का निर्णय करते है वह ही भूकेन्द्रीय होने के कारण शास्त्रसम्मत नहीं है तो यह

यह भी मान लिया जाए कि वह जो अयनांश अपना रहे हैं वही वास्तव में वैदिक है तो भी उनसे मिलाई गई पत्रियां केसे सही मिलेंगी यह तो वही बता सकते हैं।

"वैदिक ज्योतिषी" "राजयोग वाले मुहूर्तो" में प्राकृतिक समय से पूर्व आप्रेशन द्वारा बच्चों का जन्म कराके जघन्य अपराध व महापाप कर रहे हैं:

विवाह के बाद बच्चों की चिन्ता स्वाभाविक ही है। ६ जुलाई १६६६ के "पंजाब केसरी" में यह खबर छपी थी कि सरकारी अस्पतालों द्वारा प्राकृतिक समय से पूर्व जन्म न कराने पर अब जनसाधारण इन "वैकिद ज्योतिषियों" के चक्कर में पड़कर प्राईवेट अस्पतालों में "राजयोग वाले मुहूर्तो" में अपने बच्चों का जन्म आप्रेशन द्वारा करा रहे हैं जिससे न केवल बच्चे अपितु माता का भी स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और कई बार जीवन भी संकट में पड़ जाता है। १६६४ के अपने पंचांग में हमने स्पष्ट किया था कि धर्मशास्त्रों में भीष्मपितामह का प्राणत्याग के लिए "शुभ मुहूर्त" की प्रतीक्षा का वर्णन अवश्य है पर "शुभ मुहूर्त मे जन्म कराने" का वर्णन कहीं नहीं है अतः अपना परलोक सुधारने के लिए इन ज्योतिषियों को किसी "राजयोग वाले" मुहूर्त में इस नश्वर संसार को "जल-समाधि","अग्नि समाधि" या फिर "पटरी समाधि" द्वारा त्यागना चाहिए पर आजतक कोई "वामदेव" या "वराहमिहिर" साहस नहीं बटोर पाया ऐसा करने के लिए क्योंकि इन सब को ज्ञात है कि वह दूसरों को ठग रहे हैं, मूर्ख बना रहे हैं, धन के लालच में। *क्योंकि यह ज्योतिषी इन मुहूर्तो के चयन करने या अन्य भविष्यवाणिया करने के लिए अच्छी खासी रकमें लेते हैं अतः इन से वह भविष्यवाणियां लिखित में लेनी चाहिएं और साथ में उन "राजयोग वाले मुहूर्तो" में आप्रेशन द्वारा जन्म कराने वाले बच्चे का भी भविष्य लिखाना चाहिए। उनको यह भी स्पष्ट कीजिए कि यदि वह भविष्यवाणियां सही नहीं निकलीं तो आप उन्हें अदालत में ले जाएंगे हर्जाना मांगने के लिए - फिर देखिए उनकी हालत, कैसे दुम दबा कर भागते हैं!*

''वैदिक ज्योतिषी'' राष्ट्रनेताओं को भी गलत गणित से ''सही'' परामर्श देते हैं!

आइए अब ''भेदिनी ज्योतिष'' देखते है। ''श्रीकृष्ण विश्वश्पंचांग'' को छोड़कर भारत तो क्या विश्व भर में ही कभी कोई पंचांग या ''ऐफिमीरिस'' शायद ही यह लिखता है कि उनमें दिया हुआ ''आस्पेक्टेरियन'' अर्थात् दृष्टि संकलन ''भूकेन्द्रीय'' या सूर्यकेन्द्रीय है । आश्चर्य तो यह है कि १६८४ से ही हम स्पष्ट घोषणा करते आए हैं कि ''यह भूकेन्द्रीय दृष्टि संकलन है'' परन्तु आजतक कभी किसी ने इस विषय में यह नहीं पूछा कि इसका अभिप्राय क्या है! अस्तु। इसी भूकेन्द्रीय सूर्य व चन्द्रमा के पारस्परिक दृष्टि संकलन को हम तिथि तथा करण आदि की संज्ञा देते है जबकि यह बिल्कुल गलत है। कैसे? देखिए। १६६६ का ही ''चैत्री नववर्षारम्भ'' ले लीजिए। भूकेन्द्रीय चन्द्रस्पष्ट से यह आरम्भ हुआ १६ मार्च १६६६ को १६घंटा १५मि भा. मा. समय से क्योंकि उस भूकेन्द्रयि चन्द्र व सूर्य की युति निरयण मीन राशि में हुई। उस क्षण पर भारत की राजधानी दिल्ली में, जिसको ''केन्द्र'' बनाकर ''वैदिक ज्योतिषी'' भारत के ''सुन्दर'' भविष्य पर ''विहंगम दृष्टिपात'' करते हैं----सरकारी निरयण लग्न था सिंह राशि के ६ अंश और भूकेन्द्रीय अर्थात् पृथिवी-पिण्ड-केन्द्रीय सरकारी निरयण चन्द्रमा था मीन रशि के ५ अंश १६ कला जिस के आधार से सभी ''सुप्रसिद्ध'' तथा ''अप्रसिद्ध'' ''वैदिक ज्योतिषियों'' ने ''भारत के भविष्य की विवेचना की''। परन्तु उस समय भूपृष्ठीय सरकारी निरयण चन्द्रमा दिल्ली के लिए था मीन राशि के ५ अंश ५३ कला अर्थात् भूकेन्द्रीय से ३४ कला अधिक। क्योकि भूपृष्ठीय चन्द्रमा की गति २४ घंटे तो क्या प्रति घंटा भी एक सी नहीं रहती है अतः हमें कम्प्यूटर द्वारा उस दिन दिल्ली के भूपृष्ठीय चन्द्रमा और सूर्य की युति अर्थात् वास्तविक भूपृष्ठीय अमावस्या अलग से ही निकाली जो १ घंटा ३ मिनट पहले अर्थात् सायं ३बजे १२ मिनट भा. स्टै. टाईम पर हुई। उस समय दिल्ली में वास्तव में सरकारी निरयण सिंह लग्न के ६ अंश नहीं अपितु कर्क लग्न के २३ अंश उदय हो रहे थे। क्योंकि तिथियों की गणना सूर्य चन्द्रमा की पारस्परिक दूरी पर अवलम्बित है अतः इसमें सायन या निरयण से कोई अन्तर नहीं पड़ता है। आप अयनांश चाहे कोई भी लीजिए परन्तु उस समय अर्थात् १५घंटा १२ मि पर निरयण सिंह लग्न कदापि नहीं हो सकता है। अब आप कुछ दिनों में ही उन सभी पंचांगों तथा पत्रिकाओं के आगामी वार्षिक अंकों में उसी गलत सिंह लग्न तथा चन्द्र स्पष्ट पर आधारित उनके ''पिछले वर्ष के पंचांग/पत्रिका में की गई सफल भविष्यवाणियों की'' एक लम्बी-चौड़ी सूची और उन ''सही भविष्यवाणियों के चमत्कारों'' की सराहना करने वाले ''विज्ञ'' पाठकों के अनेक पत्र भी पाएंगे जो उन्होंने ''वैदिक ज्योतिष'' ग्रन्थों के ही आधार से की थी! इसी ''नववर्ष'' की गलत ''आकाशीय काउंसिल'' के अनुसार ही वह देश के नेताओं को भविष्य के विषय में सही चेतावनियां देने का भी दावा करते है। यही हाल भिन्न-भिन्न देशों तो क्या राज्यों तथा मासिक भविष्यवाणियों क़ा भी है। है ना ''वैदिक ज्योतिष'' का कमाल का भी कमाल!

''वैदिक ज्योतिषी'' ''तेज़ी-मदा'' तथा ''शेयर बाज़ार'' से भी खिलवाड़ करते हैं:

''एक ही रात में कखपति से लखपति बनने'' के चक्कर में आजकल प्रायः प्रत्येक व्यक्ति ''वैदिक ज्योतिषियों'' के चक्कर लगाता रहता है कि किस ''शेयर का दाम कब बढ़ेगा'' या फिर व्यापारी पंचांगों तथा अन्य पुस्तकों से यह अटकल-पच्चू लगाते रहते हैं कि तिलहन के दाम बढ़ने वाले हैं या कि दलहण के! शायद ही कोई ऐसा पंचांग या ऐसी पत्रिका है जिसमें इस विषय पर प्रति वर्ष लेख न छपते हों। इन लेखों में एक ओर से तो ''पिछली सही भविष्यवाणियों'' की लम्बी चौड़ी सूची छपी होती है तो दूसरी ओर यह भी चेतावनी होती है कि यदि उन लेखों में सुझाई गई वस्तुओं में धन लगाने से किसी को कोई हानि होगी तो वह लेखक या पंचांग आदि उसके लिए बिल्कुल उत्तरदायी नहीं होंगे पर हां कुछ

लेखक यह साथ में अवश्य लिखते हैं कि यदि किसी व्यापारी को उन लेखों/परामर्श से कुछ लाभ हो तो यह उन व्यापारियों का नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि वह कुछ लाभांश उन परामर्श दाताओं को अवश्य देवें --- भले ही वह आयकर वालों का न दें! आइए अब इस विषय का भी थोड़ा बहुत विश्लेषण करते हैं:

प्रायः तेज़ी-मंदे का विचार भिन्न-भिन्न ग्रहों का भिन्न भिन्न राशियों व नक्षत्रों में प्रवेश या स्थिति तथा उनके पारस्परिक अंशात्मक योगादि के अनुसार किया जाता है। अब चाहे वह *बृहत्संहिता* हो या *अर्घमार्तण्ड* यह तो स्वतः ही सिद्ध है कि उन ग्रन्थकारों ने वह राशि/नक्षत्र आदि स्थिति के अनुसार फलित तो सिद्धान्त ग्रन्थों विशेषतः *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार ही लिखा होगा न कि आधुनिक खगोलिकी से।

जैसा कि आप इस पंचांग में पृष्ठ ५ पर दिए गए ध्रुवांकों में देखेंगे १-१-१९६७ को *सूर्य सिद्धान्त* तथा आधुनिक खगोलिकी के मध्यमभोगों में यह अन्तर १५ से लेकर २६ अंशों तक का है ---और यदि हम यह मान कर भी चलते हैं कि *सूर्य सिद्धान्त* में ध्रुवांक निरयण हैं सायन नहीं तब भी यह अन्तर कुछ कम नहीं है----तो भला आप ही बताइए कि ग्रहों का वह राशिचार आदि जिसको ''आर्षग्रन्थों'' के अनुसार फल देना चाहिए था वह यवनों द्वारा साधित राशि/नक्षत्रचार आदि के अनुसार फल कैसे दे सकता है? इससे तो यही सिद्ध होता है कि यदि वास्तव में ही कोई अनुमान सही निकलता है तो वह संयोग ही है और कुछ नहीं --- और ऐसा संयोग सदा ही होता रहेगा ऐसे सयोग की संयोग कम ही है! अतः सावधान! विशेषतः इसलिए कि आप हानि होने पर "कंज़्यूमर कोर्ट" तक में नहीं जा सकते हैं!

यह सब कटुसत्य हम यहां विवश होकर दे रहे हैं ---और विश्वास मानिए कि यह सब लिखते हुए हमें अत्यधिक खेद भी हो रहा है ---- परन्तु क्योंकि ''निरयण वैदिक ज्योतिष'' की इतनी गहरी सम्मोहन अवस्था से deep hypnosis *से जनसाधारण को बाहर निकालने का ओर कोई उपाय है ही नहीं वगैर* shock treatment *'' शाक ट्रीट्मेंट्'' के!---यह मैं निजी अनुभव के आधार पर बिना किसी संकोच के कह सकता हूँ। और इससे पहले कि कोई विदेशी खगोलशास्त्री हमें इस सब ''गलत ग्रहगणित से सही फलित बताने के लिए'' आड़े हाथों ले ले हमें स्वयं इस शोचनीय स्थिति पर विचार करना चाहिए।*

सूर्य सिद्धान्त में कौन से ''संस्कार'' करने का प्रस्ताव पारित हुआ? इधर पीछे अप्रैल १९६४ में हुई पंचांग समिति ने यह प्रस्ताव पारित किये है कि पंचांग के सारे अंग जैसे तिथि. नक्षत्र आदि *सूर्य सिद्धान्त* में निर्धारित मूल सिद्धान्तों पर ही बनने चाहिए परन्तु उसके सूर्य. चन्द्रमा, राहु तथा अन्य ग्रहों आदि के ध्रुवांकों में ऐसे ''बीज संस्कार'' किए जाएं कि उनसे प्राप्त भोगांश आदि आधुनकितम दृक्गणित के साथ पूर्णरूप से मेल खाएं। साथ ही यह प्रस्ताव भी पारित किया गया कि ''चित्रापक्ष'' अयनांश ही लिया जाए और अयनांश की गति प्रतिवर्ष ५०.३ विकला मानी जाए और पंचांगों में कलि अहर्गण अवश्य ही होने चाहिएं। आइए अब इन विद्वानों द्वारा पारित इन प्रस्तावों का विश्लेषण करते हैं:

सूर्य सिद्धान्त के सारे के सारे गणित का यह आधार है कि ''कलियुगारम्भ'' के समय सभी ग्रहों के ''मध्यम भोग'' शून्य थे और कहा जाता है कि प्रथम आर्यभट्ट ने इसी के आधार पर इनकी दैनिक गतियों के द्वारा यह निश्चय किया था कि उनकी २३वीं वर्षगांठ के समय कलियुग के ३६०० वर्ष बीत चुके थे। तब से आजतक यही कहा जारहा है कि ''कलियुग ईसा पूर्व ३१०२ वर्ष में १८ फरवरी को उज्जयनी की स्थानीय अर्द्धरात्रि के समय प्रारम्भ हुआ''। कम्प्यूटर पर *सूर्य सिद्धान्त* के आंकड़े लेकर गणित करके हमने पाया कि वास्तव में ही चन्द्र मन्दोच्च को छोडकर सभी ग्रहों के उस समय के मध्यम भोग शून्य अंशों के थे और चन्द्र मन्दोच्च ६० अंश का था तो राहु यद्यपि १८० अंश था तो केतु ० अंश पर ही था। पर कम्प्यूटर पर ही इन तत्कालीन मध्यम भोगों की आधुनिक खगोलिकी के अनुसार वास्तविक स्थिति देख कर हम आश्चर्य-चकित रह गए कि इतना अन्तर तो असम्भव है अतः हमें सन्देह हुआ कि शायद हम ही कहीं गलती कर रहे हैं। हमने उनका मेलान बर्जस द्वारा अनूदित *सूर्य सिद्धान्त* में दिए गए आंकड़ों के साथ किया जो उन ने लगभग १८५० ई. में वाशिंगटन स्थित प्रोफेसर विनलाक, सूपरिनटेन्डेन्ट, अमेरिकन एफेमेरिस तथा नाटिकल आफिस से गणित करवाए थे। उन आंकड़ों और आधुनिक खगोलिकी के आधार पर प्राप्त किए हमारे आंकडों में केवल राहु में ४० कलाओं तक का अन्तर पाया और शेष सभी ग्रहों के भोगांशों में से किसी में भी २० कलाओं से अधिक अन्तर नहीं पाया। लगभग वैसे ही आंकडे कैलेण्डर रिफार्म कमीटी के रिपोर्ट के पृष्ठ २५३ में भी दिए गए हैं जिनको प्रो. पी. सी. सेनगुप्ता द्वारा लिखित ''एनशन्ट इण्डियन क्रानालोजी नामक'' ग्रन्थ से लिया गया है। उस राहु और हमारे द्वारा गणित किये गये राहु में केवल ६ विकलाओं का अन्तर है और अन्य ग्रहों के आंकडे भी लगभग बर्जस जैसे ही हैं चन्द्रमा का छोड कर जिसमें कोई दस अंशों तक का अन्तर हैं। इसका कारण यही हो सकता है कि उनके वह आंकडे "पंचांग समय" के अन्तर से अपरिचित होने के कारण भिन्न हैं। हम नीचे ''कलि आरम्भ'' के समय की इन आंकड़ों की एक तुलनात्मक तालिका दे रहे हैं:। उस समय आर्यभट्ट के समय अर्थात् ४९६ ई. से मध्यम अयनांश ४९अंश ३३ कला और सरकारी अर्थात् "चित्रा अयनांश" ४६ अंश ३४ कला ५८विकला था। यह दोनों ही अयनांश सायन से निरयण बनाने के लिए उस समय सायन भोगांशों में जोड़ने थे घटाने नहीं।

पिछले वर्ष के हिन्दी पंचांग में हमने आर्यभट्ट अयनांश के अनुसार निरयण ग्रहस्पष्ट भी दिए थे परन्तु पाठकों ने हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित कराया कि इस की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि

पंचांग समिति तो लाहिरी अयनांश पर ही लट्टू हुई है जिसको उन्होंने चित्रापक्ष नाम दिया है। पाठकों का यह भी आग्रह था कि इन आंकड़ों में भी पंचाग समय और ग्रीनविच समय के अनुसार सूर्यसिद्धान्त के मध्यम भोगों के साथ तुलनात्मक अन्तर स्पष्ट किया जाए।इस बार हम ऐसा ही कर रहे हैं।

उस समय अर्थात् ईसा पूर्व ३१०२ वर्ष में इन दोनों काल परिमाणों में एन. सी. लाहिरी के अनुसार अन्तर था कोई २१ घंटे तो मौरिसन के अनुसार यह अन्तर कोई २२ घंटे था।

पारित प्रस्ताव के अनुसार क्योंकि *सूर्य सिद्धान्त* से प्राप्त आधुनिक अर्थात् ''स्पष्ट भोगांशों'' अर्थात् जिनमें लम्बन, धूनन आदि सब प्रकार के संस्कार किए गए हों उन भोगांशों के साथ ही यह पूरी तरह मेल खाने चाहिए अतः हमने अन्तिम कोष्ठक में वह भोगांश भी दिए हैं और वह भी सरकारी अयनांश वाले क्योंकि पंचांग समिति इसी पर मोहित है यद्यपि इस नाम की अथवा ''चित्रापक्ष'' नाम की कोई बीमारी ''कलियुग आरम्भ'' के समय भारतवर्ष में नहीं फैली थी! हमारे यह दृक् भोगांश भी जून १९६५ के ऐस्ट्रालोजिकल मैगज़ीन में छपे कामाडोर एस. के. चेटर्जी के ''दृ भोगांशों''के साथ पूरी तरह मेल खाते हैं केवल चन्द्रमा और शनि को छोड़कर। जैसा हम अभी कह आए हैं हमारे द्वारा गणित किया गया मध्यम शनि भी बर्जस द्वारा दिए गए शनि से केवल ६ कलाओं के अन्तर पर है और बृहस्पति तथा अन्य ग्रहों में अधिकाधिक २० से ३० कलाओं तक का अन्तर होसकता है इससे अधिक नहीं। इसी कोष्ठक में मध्यम राहु के बदले स्पष्ट अर्थात् ट्रू राहु के भोगांश दिए गए हैं और वह भी कमाडोर चक्रवर्ती के भोगांशों के साथ मेल खाते हैं। चन्द्रमा का अन्तर क्योंकि १ अंश है अतः लगता है कमाडोर चैटर्जी ने मोरिसन वाला पंचांग समयान्तर लिया है तब हमारे और उनके चन्द्रसपष्ट में भी कोई अन्तर नहीं है।

एन. सी. लाहिरी के ''टेब्लस आफ दि सन'' में उस दिन १७/१८ फरवरी ३१०२ ईसा पूर्व का मध्यम सूर्य ३०१अंश ४० कला है और ट्रू निरयण सूर्य ३५० अंश १७ कला---अयनांश उन्होंने भी ४६ अंश ३४कला ५६ विकला लिया है, केवल एक विकला का अन्तर---जो हमारे मध्यम भोगांश तथा स्पष्ट भोगांशों से पूरी तरह मिलता है। ध्यान रहे कि *सूर्य सिद्धान्त* के मध्यम अंश लंकोदय अर्थात् उज्जयिनी के हैं जबकि आधुनिक खगोलिकी के सारे के सारे भोगांश तथा स्पष्टांश सूर्यकेन्द्रीय/भूकेन्द्रीय हैं। क्योंकि जो प्रस्ताव पारित हुआ है उसमें यही कहा गया है कि ''बीज संस्कार'' इस प्रकार होने चाहिएं कि ''भोगांश आकाशीय दृक् स्थितियों के साथ मेल खाने चाहिएं'' तो अतः यही लगता है कि ''वैदिक ज्योतिषी'' अब *सूर्य सिद्धान्त* तथा अन्य भारतीय सिद्धान्त ग्रन्थों में उक्त लंकोदय के बदले भूकेन्द्रीय पर ही तैयार हो गए है। यह भी हो सकता है कि इन विद्वानों को इस बात का पता भी नहीं होगा कि लंकोदय और भूकेन्द्रीय ग्रहस्पष्ट में चन्दमा में एक अंश तक का अन्तर हो सकता है और अन्य ग्रहों में एक कला तक।

ग्रह	सूर्य सिद्ध. मध्यम भोग.	आधुनिक सा. मध्यम भोग.	सरकारी म. भोगांश	सरकारी पं. स. अन्तर	स्पष्ट सर. निरयण भो	वि.स. म सायन	वि.स. स्प. सायन	वि. स. सायन से अन्तर
	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क
सूर्य	00 00	301 42	348 17	11 43	350 18	302 26	304 26	+10 53
चन्द्रमा	00 00	298 00	344 35	15 25	349 16	312 48	315 12	- 0 37
बुध	00 00	267 56	314 31	45 29	334 33	271 45	289 48	+41 40
शुक्र	00 00	334 47	381 22	21 23	02 48	336 103	17 23	-22 45
मंगल	00 00	290 05	336 29	23 31	347 02	290 28	301 05	+22 57
बृहस्प.	00 00	318 15	04 50	04 50	03 56	318 43	317 53	+5 18
शनि	00 00	281 45	32 21	31 39	325 53	282 26	277 00	+30 59
राहु	180 00	147 20	193 55	-13 55	192 24	147 17	145 49	-13 52

अब क्योंकि *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार लगभग सभी ग्रहों के ध्रुवाक ही शून्य हैं तो इसका यही अभिप्राय हुआ कि आप उनसे चाहे स्पष्ट भोगांश निकालें या और कोई वह सब भी शून्य ही होंगे। वैसे तो हमें *सूर्य सिद्धान्त* के इन ध्रुवांकों को सायन ही मानना चाहिए क्योंकि उस समय जब सारे के सारे ग्रहों के भोगांश ही शून्य थे तो अयनांश कहां से होगा विशेषकर जब स्वयं सूर्य सिद्धान्तकार ---प्रक्षिप्त श्लोकों के अनुसार भी ----यह मानते हैं कि प्रत्येक युग आरम्भ के समय अयनांश शून्य हो जाता है, पर फिर भी निरयणवादियों की सन्तुष्टि के लिए हम आधुनिक खगोलिकी के तथाकथित निरयण मध्यमभोग भी देरहे है। इन ध्रुवांकों पर विचार करने से यह भी स्पष्ट होता है कि सरकारी स्पष्ट भोगांशों से इन ग्रहों का अन्तर शुक्र में न्यूनतम हैं, केवल ३ अंश के लगभग तो सूर्य में कोई दस अंश है तो शनि में कोई ३२ अंश।

वैसे किसी भी समझदार व्यक्ति के मन में यह प्रश्न उठसकता है कि यदि "सूर्य सिद्धान्त" के मूलांक ही गलत हैं जो आज से ५००० वर्ष पूर्वकालीन बतलाये जाते हैं और जिनके बारे में कहाजाता है कि बीच-बीच में बीज संस्कार होते रहे हैं --- तो भला यह "वैदिक ज्योतिषी" यह ढींगें कैसे मारते रहे कि हमारे पूर्वज तो इन ध्रुवांकों से शत-प्रति-शत सही फल बताते रहे हैं! शत-प्रति-शत तो क्या इन आंकड़ों से तो एक प्रति-शत सही फलित की भी आशा नहीं की जासकती है।

अब बीज संस्कार का अर्थ तो यही हुआ ना कि मूल संस्कार अर्थात् चाहे कैसे भी हो यह मूलांक सरकारी मूलांकों के साथ मिलने चाहिएं। परन्तु जब भी कलकत्ता के खगोल विज्ञान केन्द्र से कोई भी सूचना मांगते हैं तो उनका टका सा उत्तर मिलता है कि अभी आंकडे तैयार नहीं है क्योंकि उन बेचारों की कोई अपनी उपज तो है नहीं, सब का सब विदेशी वेधशालाओं से दान में मिलता है, बेचारा भारत गरीब देश जो है। *वैसे इस मामले में भारत को गरीब रखने का श्रेय अधिकतर इन ''वैदिक ज्योतिषियों'' को ही जाता है क्योंकि खगोल विज्ञान के आंकडे जब सिद्धान्त ग्रन्थों के विरुद्ध जाते हैं-----यद्यपि वह सिद्धान्त ग्रन्थ स्वयं एक दूसरे से मेल नहीं खाते है-------तो यह बहुत खीज जाते हैं इसी कारण से आजतक इन्होंने कभी इस बात का प्रयत्न नहीं किया कि खगोलिकी के क्षेत्र में भी नवीन खोज की जाए। यह तो केवल फलित ज्योतिष के लिए ही नए नए पेंतरे ढूढ़ते रहते हैं। अस्तु।*

तो चलिए कोई समस्या नहीं, विदेशी मूलांकों के साथ ही उनका मेलान करेंगे और बिल्कुल वही मूलांक ''कलियुग के प्रारम्भ'' के लेंगे। अब फिर एक और समस्या है। *सूर्य सिद्धान्त* की दैनिक ग्रहगतियों में और १.१.१९९५ की आधुनिक खगोलिकी की ग्रहगतियों में यद्यपि ०.२ विकलाओं से भी कम अन्तर था परन्तु इसमें भी दो समस्याएं हैं: एक तो यह कि यही कम अन्तर भी ५००० वर्षों में अति महत्त्वपूर्ण बन जाता है। उदाहरणार्थ सूर्य को ही लेते हैं: *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार इसकी दैनिक गति है ३५४८.१९९५९० विकला और आधुनिक खगोलिकी के अनुसार १.१.१९९५ को सूर्य की दैनिक गति थी ३५४८.३३०४९९ विकला अर्थात् *सूर्य सिद्धान्त* से केवल ०.१९०९३९ विकला अधिक। परन्तु ईसा पूर्व १.१.२१०० से ईस्वी १.१.१९९५ तक यही अन्तर बनजाएगा:- 0.160936 X((3101 + 1995) x 365.25) = 299552.429 विकला अर्थात् ८३ अंश १२ कला ३२ विकला। अतः यदि हम *सूर्य सिद्धान्त* के मूल आंकड़े बदल भी लें तो हमें उनकी गति भी बदलनी पड़ेगी अर्थात् वह आंकडे भी विदेशी वेधशालाओं से भिक्षा में मांगनें पड़ेंगे। चलिए यहां भी कोई समस्या नहीं है एक ही बार में भीख मांग कर हमेशा के लिए आत्मनिर्भर तो हो जाएंगे। परन्तु मामला तब भी नहीं सुलझेगा क्योंकि जैसा हम बार बार कहते आए हैं वह विदेशी वेधशालाएं तो अपनी दैनिक गति के आंकडे हर १० से लेकर ४० दिनों के अन्तराल पर देते हैं क्योंकि वह गतियां एक वर्ष भी एक जैसी नहीं रहती हैं तो ५००० वर्षों में कहां से रहेंगी? यदि हम ''धर्म'' को बचाने के लिए प्रति वर्ष भीख मांगते भी रहेंगे तब भी यह प्रश्न उठता है कि हमें क्योंकि निरयण भोगांश ही चाहिएं तो अयनांश के लिए हमें चित्रा तारे के शुद्ध भोगांश कहां से मिलेंगे? यहां यह समझ नहीं आता कि क्या यह ''पंचांग समिति'' वास्तव में ही चित्रा तारे से १८० अंशों की दूरी से कोई नया अयनांश निकालना चाहती है या इनका मतलब सरकारी अयनांश से ही है जिसको इन्हें मजबूरी में चित्रा अयनांश कहना पडता है यद्यपि २.७.१९९५ का सरकारी मध्यम अयनांश चित्रा तारे के मध्यम भोग के १८० अंशों से ५६ विकला कम है। क्योंकि यह ''चित्रा अयनांश'' की बात कर रहे हैं और साथ में अयनांश की वार्षिक गति ५०.३ विकला भी कहते हैं तो इसका यह भी अर्थ हुआ कि वह स्पष्ट भोगांशों से भी मध्यम अयनांश ही घटाऐगें क्योंकि स्फुट अयनांश की वार्षिक गति तो यह कभी हो ही नहीं सकती है, या फिर इस प्रकार की अनर्गल बातें यह इस लिए कर रहे हैं कि इनको इन सब बारीकियों का कोई ज्ञान ही नहीं है बस केवल प्रस्ताव पारित कराने हैं? परन्तु जो भी प्रस्ताव पारित करेंगे उन सब के आंकड़े हमें विदेशी यवन वेधशालाओं से ही तो लेने पड़ेंगे ।

इस प्रस्ताव से यह भी स्वतः सिद्ध होता है कि इन्हें अब *सूर्य सिद्धान्त* के रेवत्यन्त भगण पर भी कोई भरोसा नहीं है और न ही उस ग्रन्थ के अयनांश की वार्षिक गति पर जो ५०.३ विकलाओं के बदले ५४ विकलाएं प्रति वर्ष हैं। सब से बड़ी बात तो यह है कि इन्होंने उसके अयन दोलन सिद्धान्त को ''राम नाम सत है'' कहकर अयनचलन सिद्धान्त का भी उसमें ''बीज संस्कार'' करना पड़ेगा!

अरे हां क्रान्ति साम्य तथा ग्रह युद्ध आदि निकालने के लिए तो क्रान्ति और क्रान्ति के लिए शर भी निकालने होंगे। तो क्या यह वह भी निरयण से ही निकालेंगे क्योंकि *सूर्य सिद्धान्त* में तो यह कहीं नहीं कहा गया है कि उसके लिए सायन भोगांश चाहिएं और हमारे ''वैदिक ज्योतिषी'' तो कहते हैं कि उसमें निरयण भोगांश दिए हैं अतः उसी से निकालेंगे या फिर इसके लिए भी ''बीज संस्कार'' ही कर लेंगे क्योंकि निरयण से निकालने पर तो वह ''आकाशीय स्थिति'' से मेल नहीं खाएंगे? और फिर कुछेक संस्कार तो रह ही गए! आधुनिक खगोलिकी के अनुसार तो दृक्तुल्य निकालने के लिए चन्द्रमा में कोई १४०० संस्कार करने पडते हैं तो शेष ग्रहों में भी ऐसे ही सैंकड़ों संस्कार हैं जिनकी तुलना में *सूर्य सिद्धान्त* में आधे से भी कम संस्कार हैं। तो क्या यह मूल आंकड़े विदेशी वेधशालाओं से लेकर यह संस्कार उनमें स्वयं करलेंगे या इसमें भी उनकी ही सहायता लेंगे? स्वावलम्बी होने के लिए तो हमें स्वयं ही यह करना पड़ेगा। तो वह कैसे करें। चलिए इसके लिए कम्प्यूटर से सहायता लेते हैं, विदेशियों ने बनाया है तो क्या हुआ अब हम स्वयं प्रयोग कर सकते हैं!

रह गई अब कलि अहर्गण की बात। यह ठीक है कि यह ''वैदिक ज्योतिषी'' लोग आंकड़ों के लिए परमुखापेक्षी होगए हैं परन्तु उसका थोड़े यह मतलब है कि हम अपनी प्राचीन परम्पराओं को बिल्कुल ही तिलांजलि देंगे चाहे वह ठीक हों या गलत। सो कलियुग माने बिना तो हम काम करेंगे ही नहीं। पर यहां भी एक मुसीबत खड़ी हो जाती है: हम तो यह धारणा लेकर चले थे कि ईसा पूर्व १७/१८ फरवरी

३१०२ को ''कलियुग' के आरम्भ होने के यही लक्षण हैं कि उस दिन *सूर्य सिद्धान्त* के अनुसार सभी ग्रहों के मध्यम भोगांश शून्य थे पर अब जब यह *सूर्य सिद्धान्त* में वह ''मूल आंकड़े'' बदलने के लिए तैयार हो गए है तो इसका तो यही अभिप्राय हुआ कि इनको ''कलियुगारम्भ'' तिथि को भी बदलना पड़ेगा क्योंकि वास्तव में उस दिन सभी तो क्या किसी भी ग्रह के मध्यम भोगांश शून्य नहीं थे तो फिर उस समय शून्य भोगांशों के आधार पर कलियुग का आरम्भ कैसे माना जा सकता है? और यह समस्या तो और भी जटिल हो जाती है क्योंकि पिछले पाच तो क्या दस/बीस हज़ार वर्षो में भी कभी सभी ग्रहों के मध्यमभोगांश एक साथ शून्य नहीं थे अतः इससे तो यही मतलब निकलता है कि कलियुग अभी आरम्भ ही नहीं हुआ! अब क्योंकि *सूर्य सिद्धान्त* के मूल आंकड़े भी हम शून्य मानने को तैय्यार नहीं हैं अतः सूर्य सिद्धान्तीय कलियुग तो हम उसको कह नहीं सकते हैं इसलिए क्यों न यह तथाकथित ''वैदिक ज्योतिषी'' लोग आपस में यह निश्चय करलेते हैं कि उसका वास्तविक नाम तो होगा ''वैदिक ज्योतिषियों का कलियुग'' पर पंचांगों में जैसे केवल ''कलिअहर्गण'' छपता आया है वैसे ही छपता रहेगा।

भई सभी ग्रहों के इतने सारे संस्कार अर्थात् १: मूलांक संस्कार, २: दैनिक गति संस्कार, ३: लंकोदय के बदले भूकेन्द्रीय संस्कार, ४: अयनांश संस्कार, ५: अयनांश गति संस्कार, ६: क्रान्ति संस्कार, ७: तारकाओं के मध्यम भोगों में संस्कार, ८: कलिअहर्गण संस्कार, ९: राशिमान संस्कार और फिर १०: दृक् कर्म संस्कार, ११. अयन दोलन के बदले अयन-चलन संस्कार आदि करने से तो आजकल के प्रचलित *सूर्य सिद्धान्त* का अन्तिम संस्कार ही हो जाएगा!

सबसे अधिक हंसाने वाली बात तो यह है कि *सूर्य सिद्धान्त* में ''विदेशी ग्रहों'' यूरेनस, नेप्चून तथा प्लूटो का नामो-निशान तक नहीं है और भारतवर्ष के सारे के सारे दृक् पंचांग ---यहां तक कि एस्ट्रालोजिकल मैगज़ीन तक यह ग्रह देते हैं। *सूर्य सिद्धान्त* से इन ग्रहों के भोगांश निकालने के लिए तो एक ही संस्कार हो सकता है ''गर्भाधान संस्कार''!

तो हम संक्षेप में पारित प्रस्ताव को यों दोहरा सकते हैं: ''सूर्य सिद्धान्त में गर्भाधान से लेकर अन्तिम संस्कार तक सारे के सारे ही संस्कार होने चाहिएं।''

सौर व चन्द्र मासों में तथा तारकाओं के मध्यम-भोगांशो में संस्कार क्यों नहीं? जैसा हम पीछे कई बार कह आए हैं चाहे हम और किसी चमत्कृति में संस्कार करें या नहीं परन्तु हमें शास्त्रों की आज्ञा के अनुसार गलत चान्द्र मासों तथा सौर मासों को प्रत्यक्ष दृश्यमान ऋतुचक्र के साथ मिलाने के लिए उनमें अवश्य बीज संस्कार करना चाहिए। यदि हम यह संस्कार उनमें शीघ्रातिशीघ्र नहीं करेंगे तो हम शास्त्रों की आज्ञाओं का उल्लंघन करके महापातकी बन जाएंगे जिससे हम परलोक में नरकगामी तो होंगे ही और भारतवर्ष की धर्मप्राण जनता को गलत तिथियों में व्रत-त्योहार मनवाने के भी उत्तरदायी होंगे। और यह भी होसकता है कि कल वह जनता इस बात पर विद्रोह करके इन ''बीज संस्कार के ठेकेदारों'' का ही नियत समय से पहले ही ''अन्तिम संस्कार'' करलेगी। अतः शुभस्य शीघ्रम्!

यही बात नक्षत्रों के मध्यम भोगांशों के बारे में भी है। आखिर कबतक यह काल्पनिक अश्विनी, भरणी आदि से जी बहलाते रहेंगे। अब यह थोड़े ही कोई दूध पीते बच्चे रह गए हैं जो थाली में प्रतिबिम्बित चन्द्रमा को ''चन्दा मामा'' समझकर उसको गोदी में बिठाके उसके साथ खेलते रहेंगे। क्यों न इस नक्षत्र मण्डल को भी वास्तविक तारकाओं के ही भोगांश देकर कृतकार्य होजाए?

एक ''महासंस्कार'' क्यों नहीं? भारतवर्ष में अभीतक असंख्य पंचांग समितियां बैठ चुकी हैं और उनमें असंख्य प्रस्ताव पारित हो चुके हैं और एक-आध को छोड़कर सभी प्रस्तावों का हाल सरकारी कमीटियों के रिपोर्टों जैसा हुआ है --- धूल खाते रहे है। इसका सबसे बड़ा कारण यही रहा है कि कोई भी ''वैदिक ज्योतिषी'' अपने ''मनपसन्द अयनांश'' को छोड़ने को तैयार नहीं हुआ। अतः यदि हम यह मान भी लें कि प्राचीन खगोलिकी के सारे के सारे सिद्धान्त ''निरयण'' राशिचक्र पर ही आधारित हैं तो भी उन ही शास्त्रों की आज्ञा के अनुसार उनको दृश्य चमत्कृतियों से मेल कराने के लिए उनमें ''बीज संस्कार'' करना अनिवार्य है। और जैसा कि ''काशी विश्व पंचांग'' के सम्पादकों का कहना है ''यह अयनांश कोई दृक् चमत्कृति तो है नहीं'' अतः *क्यों न हम एक ही बार में एक ही ''महा संस्कार करके'' इस झंझट से सदा के लिए मुक्ति पाएं और वह ''महासंस्कार'' है सब अयनांशों को समाप्त करके सायन वैदिक राशि-चक्र को अपनाना।*

फलितज्योतिष में ''बीज संस्कार'' क्यों नहीं? अब जब ''संस्कार'' हो ही रहे हैं तो यह भी विचारणीय बात है कि जब सारे के सारे ''वैदिक ज्योतिषी'' इस बात पर सहमत हैं कि भारतवर्ष में खगोलिकी के प्राचीन सिद्धान्तों में समय समय पर ''बीज संस्कार'' होते रहे हैं --- किसी भी ग्रन्थ को या सिद्धान्त को अपौरुषेय नहीं माना गया-----और आज भी उनमें ''संस्कारों'' की आवश्यकता है-----तो इसका यही अभिप्राय निकलता है कि सब भारतीय ज्योतिषी उन सिद्धान्तों पर आधारित फलित ज्योतिष के सिद्धान्तों में भी ''बीज संस्कार'' करने के लिए तैयार हैं अन्तर केवल इतना ही है कि हमारा ध्यान आजतक किसी ने इस ओर आकर्षित ही नहीं किया। यदि हम यह मानकर चलें कि ''बीज संस्कार'' तो

केवल गणित पर ही लागू होते हैं फलित पर नहीं तो उसका यह अभिप्राय हुआ कि बाप तो बेटे को गलत गणित सिखाता रहा है और बेटा जो भी प्रश्न हल करता है उसका उत्तर सही माना जाता है भले ही गणित की सारी की सारी प्रकिया ही गलत हो। *इसको संस्कृत भाषा में वदतो व्याघात न्याय कहते हैं अर्थात् कोई अपने मुँह से यह कहे कि मैं तो जन्म से ही गूगा हूँ तो वह असत्य बोल रहा है क्योकि गूगा होता तो बोल ही नहीं सकता था और यदि गलत आकड़ों के फलित सही है तो आंकड़े गलत नहीं हो सकते हैं और उनमें किसी भी संस्कार की कोई आवश्यकता नहीं है।*

''निरयण'' का जन्म, अस्तित्व तथा विलय-----सब सायन पर ही निर्भर है:-

अब जैसा हम देख ही चुके हैं कि चाहे हम किसी भी सिद्धान्त ग्रन्थ में कोई भी संस्कार क्यों न करलें हमारी गति सायन के बिना नहीं है क्योंकि निरयण बनाने के लिए भी हमें पहले सायन ही चाहिएं, फिर कान्ति शर निकालने के लिए भी सायन चाहिए, फिर दैनिक पंचांगों में दिया जाने वाला सांपातिक काल निकालने के लिए भी सूर्य के सायन भोगांश चाहिए, और यहां तक कि *सूर्य सिद्धान्त* में दिया गया लंकोदय राशिमान जो है वह भी सायन है और हमें भी तो वही राशिमान चाहिए! भीष्मपितामह के प्राणत्याग वाला उत्तरायण निकालने के लिए तो सायन चाहिए ही चाहिए।

जनता जनार्दन ही सर्वोपरि है: १६६२-६३ के ''श्री मार्त्तण्ड पंचांगम्'' के पृष्ठ ५२ पर एक पाठक श्री देवशर्मा, ध्यानपुर, गुरुदासपुर का एक प्रश्न छपा था जो इस प्रकार है ''विक्रमाब्द २०४८ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांगम्' में आपका गवेषणात्मक लेख 'अशुद्ध वर्षमान के प्रयोग से भारतीय राशिचक्र का विचलन' देखा। पन्द्रह शताब्दियों में राशियों के मूलबिन्दु साढ़ेतीन अंश पूर्व की ओर खिसक गए और इसके संशोधन के लिए लोकमान्य तिलक का रेवत्यन्त मत, जिसे आपने भी शतप्रतिशत यथार्थ एवं तर्क संगत माना है, निस्संदेह समीचीन है। जब संशोधन करने ही लगे तो फिर त्रुटि को आधार क्यों माना जाए? क्यों न रेवत्यन्त तारा को ही मेषारम्भ माना जाए? सौर संक्रान्ति में होने वाले तीन दिनों के अन्तर का विषय भी जनता को समझाया जा सकता है। इस विषय में पादरी ग्रेगरी का संशोधन ध्यान देने योग्य है, जिसके अनुसार उसने १५८२ ई. के ४ अक्तूबर से अगले दिन १५ अक्तूबर की तिथि घोषित की थी। पहले तो जन साधारण आन्दोलित हुआ। लोग रोते हुए सड़कों पर आए, खोए हुए दस दिनों की मांग करने लगे। परन्तु समझाने पर यथार्थ उनकी समझ में बैठ गया और संशोधन सफल हुआ!''

हमारा यह विश्लेषण पढ़कर तो पाठकगण भी इसी निष्कर्ष पर पहुँच गए होंगे कि हमें अब वास्तव में ही सौर संक्रान्तियां निरयण के बदले सायन मनानी चाहिएं और मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसा करने पर भारतवर्ष में कोई भी व्यक्ति पागलों की तरह सड़कों पर आकर ''खोए हुए २३ दिनों की मांग'' नहीं करेगा। पर इसमें जो थोड़ी बहुत कठिनाइयां हो सकती हैं वह जनसाधारण से न होकर किसी और दिशा से होंगी। कौन सी दिशा से यह उसी पंचांग के सम्पादक डा. शक्तिधर शर्मा के ही शब्दों में ऊपर दिए गए प्रश्न के उत्तर में उसी पंचांग के पृष्ठ ५२/५३ पर सुनिए: ''यह ठीक है कि जनसाधारण को भी इस त्रुटि के बारे में यथाकथंचित् समझाकर मेषारम्भ बिन्दु को पुनः पौष्णान्त बिन्दु पर ही लाया जा सकता था। लेकिन विद्वानों में अपने एक बार घोषित मत को छोड़ने को आत्माभिमान आड़े आते देखा गया है। यही बात इस प्रसंग में हुई है। केतकर आदि कुछ विद्वानों ने एक बार चित्रापक्ष का समर्थन कर दिया और उसी पक्ष के कुछ ऐसे ग्रन्थ भी बना दिए जिनसे पंचांग निर्माण होने लगा। यह कदम उठाकर उन्हें पीछे हटने में कुछ आत्महानि भी प्रतीत होने लगी। जनता उस मार्ग को सहज ही अपना लेती है जिसमें कम से कम प्रतिरोध हो। जनता की इस मनोवैज्ञानिक निर्बलता का लाभ चित्रापक्ष वालों ने उठा लिया।'' ऋतुचक्र के विषय में उसी पृष्ठ पर दिए गए इन्हीं निर्भीक् सम्पादक के उद्गार भी सुनिए ''हमारे राशिचक्रारम्भ बिन्दु का यह ३.५ अंशों का विचलन हमारे क्रान्तिवृत के निरयण आरम्भ बिन्दु की दृष्टि से है। *लेकिन ऋतुओं के सापेक्ष हमारे वैशाखादि मासों के प्रारम्भ दिनों में लगभग १५०० वर्षों के इस विगत युग में २३/२४ दिनों का अन्तर पड़ गया है जिससे हमारे सभी पर्व इन दिनों अपनी मूल ऋतुओं से लगभग २३/२४ दिन आगे खिसक गए हैं और उनका अपनी मूल ऋतुओं से अन्तर उत्तरोत्तर धीरे धीरे बढ़ता जा रहा है। इस भयावह अन्तर का संशोधन हमारे भारतीय पंचांगों की सर्वापरि समस्या है, ३.५ दिन की समस्या तो इस के सम्मुख नगण्य है। ऋतुओं का उपचीयमान यह अन्तर अयनचलन के कारण है।''*

स्पष्ट ही है कि निरयण से सायन की ओर आने में कुछेक विद्वानों की अहम्मन्यता को ठेस पहुँच सकती है परन्तु मुझे यह भी पूरा विश्वास है कि हमारी इस ऋषिभूमि भारत में किसी भी सच्चे विद्वान को इतनी अहम्मन्यता कभी नहीं होगी कि वह जानबूझ कर शताब्दियों से चले आरहे अधर्म को अपने अहंकार के कारण बढ़ावा देता रहेगा। जिन केतकर का ऊपर नाम आया है उन ही के बारे में यह सर्वविदित है कि पहले उनने अपनी *ज्योतिर्गणितम्* की पुस्तक रेवत्यन्त अयनांश के आधार पर लिखी और प्रकाशित कराई थी परन्तु उनके सुपुत्र ने उनके उस समय अधिक जनमान्य अयनांश अर्थात् तथाकथित चित्रापक्ष के अनुसार पुनर्मुद्रण करवाया था। यह बात उन्होंने अपनी पुस्तक के उस संस्करण में स्वीकार की थी कि उनका रेवत्यन्त अयनांश अशुद्ध था अतः वह उसके बदले ''चित्रापक्ष'' मान रहे है। इसी प्रकार से

सूर्य सिद्धान्त तथा करण ग्रन्थों के आधार पर बनने वाले पंचांगकारों को जब आधुनिक दृक्गणित से पंचांग बनाने को कहा गया तो पहले तो अधिकतर पंचांगकारों ने उसका विरोध किया परन्तु शनैः शनैः जब वास्तविकता उनकी समझ में आई तो उनने यथार्थ को स्वीकार करलिया और परिणामस्वरूप आज की तिथि में ६५ प्रतिशत से अधिक पंचांग दृक् गणित से ही बनते है। ठीक ऐसी ही बात ''पाश्चात्य ग्रहों'' यूरेनस, नेप्चून तथा प्लूटो के विषय में हुई। पहले तो भारतीय पंचांगकार और भारतीय फलित ज्योतिषी भी इन ग्रहों को विदेशी समझकर इनका बहिष्कार करते थे पर अब इन को प्रजापति, वरुण और यम नाम देकर अपनी संस्कृति का एक अंग बना लिया है यहां तक कि ऐस्ट्रॉलोजिकल मैगज़ीन भी अपने मासिक पंचांग में इनके दैनिक भोगांश देता है --- वह भी सायन नहीं अपितु रमण अयनांश वाले। यानी इन ''विदेशियों का भी मुण्डन संस्कार हो ही गया''!

पुनश्च, जितनी भी पंचांग सुधार समितियां या सम्मेलन हुए हैं या होते हैं उनका मूल ध्येय ही यही होता है कि ''असतो मा सद् गमय'' अर्थात् यदि हम आजतक कोई गलत आंकड़े या परिपाटी अपनाते रहे है तो उसमें सुधार किया जाए.....वह भी कोई ऊपरी सुधार नहीं अपितु "बीज संस्कार" अर्थात् यदि मूल आंकड़े अशुद्ध हैं तो उन मूल आंकडों को ही बदला जाए। अतः हमें तो सबसे अधिक आशा सचमुच के विद्वानों से ही है कि वह वास्तव में ही क्षीर-नीर विवेक द्वारा दूध का दूध और पानी का पानी करके वास्तविक वैदिक ज्योतिष अर्थात् सायन का झंडा गाड़ देंगे।

साथ ही साथ भगवान वसिष्ठ के यह शब्द तो भारत के सच्चे विद्वानों को सदैव ही प्रेरणा देते रहे हैं: यो युक्तियुक्तमवमत्य विमूढ़बुद्धिः कष्टाग्रहो भवति तं विदुरज्ञमेव।। उत्पत्ति प्रकरण ७/४ "जो विद्वान होने के बावजूद भी युक्तियों द्वारा समझाई गई बात की अवहेलना करके अपने पूर्वाग्रहों पर ही दृढ़ रहता है वह तो वास्तव में मूर्ख ही है!"। मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसे "मूर्ख विद्वान" बहुत कम होंगे।

यद्यपि यह भी कुछ-कुछ सही है कि "जनता उस मार्ग को अपनाती है जिसमें विरोध बहुत कम हो" परन्तु इस युग की जनता अब अत्यधिक जागरूक होगई है और कोई भी नवीन विचारधारा चाहे प्रारम्भ में कितनी ही अटपटी क्यों न लगती हो परन्तु यदि सही ढ़ंग से समझाई जाए तो जनता स्वयं ही उसी ओर प्रवृत्त हो जाती है। अतः मुझे वास्तव में सभी से यही आशा है और अपेक्षा भी कि वह किसी भी मूल्य पर सत्य से विमुख नहीं होगे। एक बात और भी है: अंग्रेज़ी में एक कहावत है कि "आप कुछ व्यक्तियों का तो सदा के लिए ही मूर्ख बना सकते हैं, सारी जनता को भी बेवकूफ बना सकते हैं.....केवल कुछ समय के लिए। आप सारी जनता को हमेशा के लिए कभी मूर्ख नहीं बना सकते हैं।" लगभग सारे का सारा भारत अभीतक निरयण राशिचक्र की मूर्खता में उलझा हुआ था, इस लेख में दिए गए तथ्यों को आत्मसात् करने के बाद भी वह ऐसे ही मूर्ख बना रहेगा यह नितान्त असम्भव है।

पंचागकारों के लिए भी निरयण की अपेक्षा सायन पंचांग बनाना आसान है: इस नये सायन राशिचक्र को अपनाने से स्वयं पंचांगकारों को भी सुविधा है क्योंकि इस समय भारतवर्ष में ७० प्रतिशत पंचांग विदेशों में प्रकाशित सायन पंचांगों में दिए भोगांशों में से अयनांश घटाकर बनते हैं भले ही वह भोगांश सही हों या नहीं। पंचांगकार इस घटाने बढ़ाने के झंझट से भी बच जाएंगे। सूर्य की सायन संक्रान्ति तो हर ठेठ निरयण पंचांगकर्त्ता आज भी देता है। उधर महाराष्ट्र में बहुत सारे पंचांग चन्द्रमा को छोड़कर अन्य सब ग्रहों के सायन रशिसंक्रमण का समय देते हैं। इसके अतिरिक्त हमने तो आजतक ऐसा कोई भी निरयण पंचांग नहीं देखा----सूर्यसिद्धान्तीय पंचांगों को छोड़कर!------जो सूर्य की दैनिक क्रान्ति और चन्द्रमा के दैनिक शर और क्रान्ति तथा अन्य शेष ग्रहों के सप्ताह में कम से कम एक बार के क्रान्ति-शर न देता हो। निरयण भोगांशों के साथ साथ यह शर-क्रान्ति की सायन चमत्कृतियां देना लगता तो बड़ा अटपटा है पर मजबूरी है क्योंकि इसके बिना तो गति नहीं है, न चर खण्ड निकाल सकते हैं, न ग्रहों के उदयास्त काल और न ही ग्रह युद्ध अथवा क्रान्तिसाम्य आदि की स्थितियां।

आप यदि कोई भी निरयण पंचांग उठाकर देखेंगे तो उसमें वैधृति/व्यतीपात महापात अवश्य पाएंगे। यह तथाकथित "पाश्चात्य पद्धति" का क्रान्ति साम्य ही है और कुछ नहीं और "सूर्य सिद्धान्त" में इसका एक पूरा अध्याय है। इसी प्रकार भारत में अंग्रेज़ी भाषा में निरयण पंचांग का प्रचार-प्रसार जहां स्वर्गीय एन. सी. लाहिरी ने प्रारम्भ किया था वहीं उन निरयण पंचांगों में "पाश्चात्य पद्धति" का "ऑस्पेक्टेरियन" अर्थात् दृष्टि संकलन देना भी उसी से प्रारम्भ हुआ। अब यदि यह "अंशात्मक योग" यवनों की पद्धति का ही अंग है तो पता नहीं उसने फिर भारतवासियों को धर्मभ्रष्ट क्यों किया! इसी प्रकार महाराष्ट्र में प्रकाशित होने वाला "जन्मभूमि पंचांग" भी निरयण होते हुए भी यह सायन दृष्टि संकलन पिछले कई दशकों से दे रहा है।

"तीन लोक से न्यारी काशी" को भारत में "निरयण ज्योतिष" का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण केन्द्र माना जाता है। इस "पाश्चात्य दृष्टि संकलन" के विषय में वहीं से प्रकाशित होने वाले एक निरयण पंचांग के सम्पादक के विचार सुनिए जो उन्हीं के १९९५ के पंचांग से दिए जारहे हैं: "ज्योतिष का यह अति महत्त्वपूर्ण और उपयोगी विषय सन १९९९ ईस्वी में छापना आरम्भ किया गया था। तब से बराबर इसकी प्रशंसा में पाठकों के पत्र आ रहे हैं। तालिका में हर नेष्ट काल के योग के साथ उन राशियों एवं

लग्नरशियों के अंक भी दिए हैं जिन पर उक्त नेष्ट काल का तीव्र प्रभाव पड़ेगा। इन राशियों से प्रभावित व्यक्तियों के निजी फल के अलावा मेदिनी एवं व्यापारिक ज्योतिष एवं सट्टा, रेस लाटरी व अंक विज्ञान की दृष्टि से भी इन राश्यंकों का अत्यधिक महत्त्व है।" अर्थात् जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसपर इन "नेष्ट कालों" का प्रभाव नहीं होता हो। और यह "नेष्ट काल" हैं क्या? यह वह समय है जब चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र; चन्द्र-सूर्य प्रतियुति; चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य; चन्द्र-शनि केन्द्र तथा चन्द्र-शनि षडाष्टक; चन्द्र-सूर्य क्रान्तिसाम्य तथा चन्द्र-शनि प्रतियुति आदि योग बनते हैं जिनको कि "वैदिक ज्योतिषी" तथाकथित पाश्चात्य पद्धति के योग मानते हैं। यह अलग बात है कि काशी के उस पंचांग में भी भारत के अन्य पंचांगों की ही भान्ति घटी-पल में तिथि-नक्षत्र आदि का समाप्ति काल दिखाने के लिए काशी का सूर्योदय प्रयोग में लाया जाता है पर वह सब तिथि, नक्षत्र आदि का समाप्ति काल कलकत्ते के खगोल विज्ञान केन्द्र से लिया हुआ लगता है और वह होता है भूकेन्द्रीय ही ....काशी केन्द्रीय नहीं!

वैसे भी उसी काशीजी से प्रकाशित होने वाला "सूर्य सिद्धान्तीय" पंचांग तो "धर्मप्राण जनता" के लिए कलकत्ते के ही खगोल विज्ञान केन्द्र के दैनिक सायन ग्रहस्पष्ट पहले से ही देता रहा है!

कहने का तात्पर्य यह कि आधे से अधिक सायन चमत्कृतियां तो हर निरयण पंचांगकार को वैसे ही न चाहते हुए भी देनी पड़ती हैं तो शतप्रतिशत सायन पंचांग बनाने में तो उनको निरयण सायन की खिचंड़ी के बदले केवल सब कुछ सायन ही सायन देना होगा। यूरेनस, नेप्चून और प्लूटो तो वास्तव में सायन पद्धति के ग्रह हैं ही जो मरता क्या न करता वाली कहावत के अनुसार निरयण पचांग कर्ताओं को उन ग्रहों की भी निरयण स्थितियां ही देनी पड़ती हैं अतः उनके सायन भोगांश देने में शर्म कैसी! तिथि और करणो का समाप्ति काल तो एक ही जैसा रहेगा चाहे भोगांश सायन हों या निरयण। केवल नक्षत्रों और योगों के समाप्ति काल की समस्या हो सकती है जो इस समय पंचांगकार या तो एक दूसरे से नकल करते हैं या कलकत्ते से मंगवाते हैं। वैसे भी क्योंकि ग्रहों के सायन मान तो होंगे ही होंगे तो सायन नक्षत्रों और योगों का समाप्ति काल निकालने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। सायन नक्षत्रों और योगों का समाप्ति काल बनाने में तब भी यदि किसी पंचांगकार को समस्या हो तो वह हमसे सम्पर्क कर सकता है और जहां तक होसकेगा हम उसकी सहायता करेंगे। व्रत-त्यौहार भी निरयण की अपेक्षा सायन आधार पर निकालना अधिक सुगम है।

फलित ज्योतिषियों को भी सायन रशिचक्र व दिनवर्ष पद्धति द्वारा फलित कहने से अधिक आर्थिक लाभ होगा: क्योंकि ६६ प्रतिशत फलित-ज्योतिषी केवल इसलिए फलित कहते हैं कि उनको यशप्राप्ति के साथ साथ आर्थिक लाभ भी हो और इसी कारण से उनको दर्जन भर अंश कुण्डलियां, अष्टकवर्ग चक्र तथा विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी व कालचक्र आदि दशा पद्धतियों के साथ माथा-पच्ची करनी पड़ती है कि उनका फलित कम से कम ८० प्रतिशत सही निकले। अब क्योंकि निरयण ज्योतिष वैदिक तो दूर रहा पौराणिक भी नहीं है और न इसका कोई वैज्ञानिक आधार ही है अतः इससे ८० प्रतिशत भविष्यवाणियां सही निकलना असम्भव ही है और असम्भव को सम्भव बनाने का प्रयत्न करते रहना मूर्खों का काम है सचमुच के वैदिक ज्योतिषियों का नहीं। इसके विपरीत करोड़ों विदेशी ज्योतिषियों तथा लाखों भारतीय ज्योतिषियों का भी ---- चाहे वह जनसाधारण के सामने यह बात मानें या नहीं ------- यही अनुभव है कि सायन राशिचक्र तथा "सेकण्डरी प्रोग्रेशन" पर आधारित फलित अधिक सही निकलता है, इसलिए इस पद्धति को अपनाने से तो इन फलित-ज्योतिषियों को भी अधिक आर्थिक लाभ होगा। इस दृष्टि से भी उनको यथाशीघ्र इस पद्धति को अपनाना चाहिए। यहां इस बात को दोहराना परमावश्यक है कि सायन राशिचक्र व दिन-वर्ष पद्धति से भविष्यवाणियां सही निकलने का केवल एक ही कारण है कि वह वास्तव में ही वैदिक पद्धतियां हैं, और कुछ नहीं।

सायन पद्धति से फलित कहने में फलित-ज्योतिषियों को कठिनाई भी नहीं है: निरयण ग्रहस्पष्ट से जो आजतक फलित बताते आए हैं उनके लिए तो बिल्कुल ही समस्या नहीं है। वह उन निरयण टेवों वा जन्मपत्रियों में अयनांश जोड़कर सायन स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं। जिनके पास हमारे पिछले वर्षो के पंचांग हैं वह उनसे सीधे सायन जन्मपत्रियां बना सकते हैं। Secondary Progression "सेकण्डरी प्रोग्रेशन" अर्थात् दिन वर्ष पद्धति के लिए तो वह इष्ट वर्ष के किसी भी पंचांग को ले सकते हैं और यदि वह निरयण हैं तो उनमें अयनांश जोड़कर सायन भोगांश बना सकते हैं। वास्तव में ही सायन फलित ज्योतिष निरयण से अधिक सुगम और सुरुचिपूर्ण है। आवश्यकता है केवल थोड़े से अभ्यास की। प्रश्न शास्त्र के लिए तो केवल सायन दृष्टि संकलन ही काम में लाया जाता है। एक बात और भी है। सायन ग्रहस्पष्ट से जन्मपत्री बनाते व देखते समय यूरेनस, नेप्चून व प्लूटो को मत भूलिएगा। यह ग्रह अन्तरिक्ष युग के परिचायक हैं और इनका फलित में बहुत महत्त्व है।

जब आप इस प्रकार वास्तविक "वैदिक ज्योतिष" में डुबकी लगाएंगे और इनसे निकाले फलित के परिणामों की तुलना "अवैदिक निरयण ज्योतिष" से करेंगे तो आप स्वयं ही ज़मीन-आसमान का अन्तर देखेंगे। मैं इसके अतिरिक्त और क्या कह सकता हूँ।

जनसाधारण तो पहले ही सायन पद्धति से परिचित है: रह गई अब फलित ज्योतिष के विषय में जनसाधारण की बात। वह तो आज भी अपना राशि फल सायन सूर्य राशियों के अनुसार ही प्रति सप्ताह समाचार पत्रों में पढ़ते ही है। भारतवर्ष में "सन साइन्स'' नामक सायन ज्योतिष की पुस्तक की जितनी प्रतियां जनसाधारण ने खरीदी होंगी उतनी प्रतियां अन्य किसी भी ''वैदिक ज्योतिष'' पुस्तक की खरीदी होंगी यह असम्भव है। विश्वास न हो तो किसी भी पुस्तक विकेता से पूछिए। अतः जब एक फलित ज्योतिषी जनसाधारण को मंगल दशा के बदले मंगल का प्रोग्रेशन बताएगा तो उनको समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

इस समय भी भारत में बहुत सारे फलित ज्योतिषी सायन पद्धति अपना रहे है। कुछेक प्रसिद्ध नाम हैं १.श्री लच्छमन दास मदान. २: डा. एन. वी. राजगोपालन, ३: प्रो. पी. एस. शास्त्री आदि। इसी प्रकार "निरयण पत्रिकाओं'' में भी प्रायः सायन ज्योतिष के लेख छपते रहते है। महाराष्ट्र में तो भारतीय विद्याभवन सायन ज्योतिष ही सिखाता है तथा वहाँ के ८० प्रतिशत से अधिक फलित ज्योतिषी सायन पद्धति से ही फलित बताते है। यही हाल उधर आन्ध्र प्रदेश का भी है। कहने के तात्पर्य यह कि सायन पद्धति को अपनाने में भारत को कोई कठिनाई नहीं होगी क्योंकि यहां की शतप्रतिशत जनता तो किसी न किसी रूप में इसको अपना ही चुकी है कहीं २० प्रतिशत तो कहीं ५० प्रतिशत तो कहीं शत प्रतिशत अर्थात् सायन ज्योतिष वास्तव में पहले से ही सार्वभौम है क्योंकि यह वेदों पर आधारित है। तथाकथित निरयण वैदिक ज्योतिष किसी भी अन्य देश के जनसाधारण के लिए कोई मतलब नहीं रखता है -- न दैनिक जीवन में, न फलित में, यहां तक कि तिथिपत्रे, कैलेण्डर,के लिए भी यह वहां बिल्कुल बेकार है।

'वैदिक ज्योतिष'' का यह विश्लेषण यद्यपि बहुत लम्बा हो चुका है तथापि प्रयत्न यही किया गया है कि इस विषय में साधारण पाठक भी उतनी ही रुचि लेले जितना कि एक दक्ष-हस्त विद्वान। इसीलिए इस विश्लेषण की शैली भी वैसी ही रखी गई है कि भारतीय धर्मशास्त्र अथवा ज्योतिष शास्त्र का किंचित्-मात्र ज्ञान रखने वाला भी इस पर विचार करसके ताकि यह विषय केवल कुछेक व्यक्तियों की ही बपौती न रहकर प्रत्येक पाठक को हृदयंगम् होजाए। क्योंकि इस लेख से यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होगया कि "निरयण ज्योतिष" का वास्तव में वैदक ज्योतिष होने का शतप्रतिशत तो क्या एक प्रतिशत भी प्रमाण नहीं है अतः आप अपने क्षीर-नीर-विवेक का प्रयोग करके श्रीयोगवासिष्ठ २/८/३ की इस उक्ति को चरितार्थ करें: अपि पौरुषमादेयं शास्त्रं चेद्युक्ति बोधकम। अन्यत्त्वार्षमपि त्याज्यं भाव्यं न्यायैकसेविना।।

''यदि कोई शास्त्र किसी व्यक्ति विशेष ने नहीं अपितु एक साधरण मानव ने ही लिखा हो परन्तु उसमेंयुक्तियों द्वारा हर बात समझाई गई हो तो उसको ग्रहण करना चाहिए पर यदि कोई ग्रन्थ किसी ऋषि ने भी लिखा हो परन्तु युक्तियों से हीन हो तो उसको भी त्याग देना चाहिए,केवल न्यायसंगत बात का ही पक्ष लेना चाहिए'' **अतः श्री मदनमोहन मालवीय तथा श्री बालगंगाधर तिलक यदि आज जीवित होते तो वह भी इन तथ्यों के सामने अवश्य अपनी धारणाएं बदलते।**

इसलिए इतना सब कुछ सुनने/पढ़ने के पश्चात् भी यदि कोई ''विद्वान'' या ''वैदिक ज्योतिषी'' तब भी किसी को सच्चाई से मुँह मोड़ने के लिए कहे तो पाठकों को उसका पूर्ण विरोध करना होगा क्योंकि अन्ततः''सत्यमेव जयते''--''सत्य की ही विजय होती है''; अतः सायन ज्योतिष ही वैदिक ज्योतिष है इस सत्य की तो विजय होगी ही होगी।

यदि आप अभी भी यह सोच रहे हैं कि इस लेख के प्रारम्भ में जो उद्धरण दिया गया है वह किस के उद्गार हैं तो सुनिए, वह सुप्रसिद्ध भारतीय खगोलशास्त्री जयन्त नार्लेकर के हैं!

यह ''वैदिक ज्योतिषी'' प्रायः यह कहते हैं कि ''विज्ञान का कोई भरोसा नहीं है क्योंकि यह जो आंकड़े आज ध्रुवांकों के रूप में देता है कल उनको बदलता है यह कहकर कि 'यह विज्ञान की नवीन खोज है' जबकि प्राचीन ऋषियों का कथन अटल है''। विज्ञान पर यह आरोप उतना ही सही है जितना हमारे सिद्धान्त ग्रन्थों पर क्योंकि ''बीज संस्कार'' का अर्थ ही है "नवीन खोज के अनुसार ध्रुवांकों को अपनाना'' अर्थात् इसका भी यही अभिप्राय है "कि अब हमें अपने पूर्वाचार्यो के ध्रुवांकों पर विश्वास नहीं रहा अतः हमें आधुनिक विज्ञान के अनुसार आंकडे चाहिएं''--भले ही वह यवनों द्वारा ही क्यों न प्रतिपादित हों ---अन्यथा डा. रमण भगवान कृष्ण, गौतम बुद्ध तथा जगद्गुरु शंकराचार्य तक की कुण्डली *सूर्य सिद्धान्त* के बदले सिरिल फागन से नहीं बनवाते! इससे तो यही सिद्ध होता है कि जो विज्ञान का सिद्धान्त है वही सिद्धान्त "सिद्धान्त ग्रन्थों'' का भी है और क्योंकि हम यह मान कर चलते हैं कि हमारे "सिद्धान्त ग्रन्थ'' वैदिक ऋषियों ने ही बनाए हैं तो यही तथ्य सामने आता है कि वास्तविक वैज्ञानिक ही वास्तविक ऋषि हैं और वास्तविक ऋषि ही वास्तविक वैज्ञानिक क्योंकि दोनों का ही लक्ष्य है सत्य की खोज। वास्तविक वैदिक ज्योतिष का भी यही वास्तविक लक्ष्य है कि ''तेजसा सोम्य शुंगेन सन्मूलमन्विच्छ सन्मूलाः सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः सदायतनाः सत् प्रतिष्ठाः'' और एतदर्थ "अन्यो वाचो विमुंचथ वाग्विगलापनं हि तत्''। उस ''सत्य'' को जान लेने पर तोः ''एक ही सफ़ में खडे हैं दोनों, वह और महमूद अयाज़।न कोई बन्दा रहा न कोई बन्दा नवाज़'' अर्थात् ''ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति'' यहां तक कि ''ज्ञानी तु आत्मैव मे मतम्''!

ॐ तत् सत् ब्रह्यार्पणमस्तु

PLANETARY INGRESS INTO SIGNS (RASHIS) IN 1997

IST, GEOCENTRIC — भूकेन्द्रीय, भा. मानक समय

VEDIC (SAYANA)					सायन
SUN(Ravi)				Ravi	रवि
Mo	Dt	H	M	SIGN	राशि
नाम	ता	घं	मि	SIGN	राशि
1	20	6	12	Aqua	कुम्भ
2	18	20	22	Pisc	मीन
3	20	19	25	Ari	मेष
4	20	6	33	Taur	वृषभ
5	21	5	48	Gemi	मिथुन
5	21	13	50	Canc	कर्क
7	23	0	45	Leo	सिंह
8	23	7	49	Virgo	कन्या
9	23	5	26	Libra	तुला
10	23	14	45	Scor	वृश्चिक
11	22	12	18	Sagi	धनु
12	22	1	37	Capr	मकर
MERCURY				BUDHA	बुध
2	9	11	23	Aqua	कुम्भ
2	28	9	24	Pisc	मीन
3	16	9	43	Aries	मेष
4	1	19	16	Tauru	वृषभ
5	5	7	25	R d Ar	मेष
5	12	15	50	Taur	वृषभ
5	9	4	55	Gemin	मिथुन
6	24	2	11	Canc	कर्क
7	8	10	58	Leo	सिंह
7	27	6	12	Virgo	कन्या
10	2	11	8	Libra	तुला
10	19	17	38	Scor	वृश्चिक
11	7	23	12	Sagit	धनु
12	1	0	45	Capri	मकर
12	13	23	30	R Sagg	व धनु
VENUS				SHUKRA	शुक्र
1	10	11	2	Capri	मकर
2	3	9	58	Aquar	कुम्भ
2	27	9	31	Pisce	मीन
3	23	10	56	Aries	मेष
4	16	15	13	Tauru	वृषभ
5	10	22	50	Gemin	मिथुन
6	4	9	48	Canc	कर्क
6	29	0	8	Leo	सिंह
7	23	18	46	Virgo	कन्या
8	17	20	1	Libra	तुला
9	12	7	47	Scorp	वृश्चिक
10	8	13	55	Sagit	धनु
11	5	14	20	Capri	मकर
12	12	10	11	Aquar	कुम्भ
MARS				MANGA	मंगल
1	3	13	41	Libra	तुला
3	9	1	19	R Vir	व कन्या
5	19	14	0	Libra	तुला
8	14	14	12	Scorp	वृश्चिक
9	29	3	52	Sagit	धनु
11	9	11	3	Capri	मकर
12	18	12	7	Aquar	कुम्भ
JUPITER				GURU	गुरु
1	21	20	43	Aquar	कुम्भ
SATURN				SHANI	शनैश्चर

in Aries throughout

शनि वर्ष भर मेष मे ही रहेगा

HERSCHEL	URAUS	यूरेनस

in Aquarius throughout

हर्शल वर्षभर कुम्भ मे रहेगा

Neptune remains in Capri & Pluto in Sagi.

SIDEREAL					अवैदिक निरयण
SUN				RAVI	रवि
Mo	Dt	H	M	SIGN	राशि
नाम	ता	घं	मि	SIGN	राशि
1	14	4	28	Makar	मकर
2	12	17	25	Kumbha	कुम्भ
3	14	14	18	Mina	मीन
4	13	22	51	Mesha	मेष
5	14	19	45	Vrisha	वृषभ
6	15	2	26	Mithun	मिथुन
7	16	13	21	Karkat	कर्क
8	16	21	45	Simha	सिंह
9	16	21	41	Kanya	कन्या
10	17	9	37	Tula	तुला
11	16	9	25	Vrisch	वृश्चिक
12	16	0	3	Dhanus	धनु
MERCURY				BUDHA	बुध
2	5	1	26	Makar	मकर
2	24	18	25	Kumbha	कुम्भ
3	13	6	31	Mina	मीन
3	28	19	58	Mesha	मेष
6	5	11	53	Vrisha	वृषभ
6	21	6	2	Mithun	मिथुन
7	5	6	59	Karkat	कर्क
7	22	17	13	Simha	सिंह
9	29	0	13	Kanya	कन्या
10	16	0	42	Tula	तुला
11	3	20	26	Vrisch	वृश्चिक
11	25	4	36	Dhanus	धनु
12	18	17	6	R Vri.	व वृश्चि
VENUS				SHUKRA	शुक्र
1	5	12	29	Dhanus	धनु
1	29	11	28	Makar	मकर
2	22	10	46	Kumbha	कुम्भ
3	18	11	43	Mina	मीन
4	11	15	23	Mesha	मेष
5	5	22	20	Vrisha	वृषभ
5	30	8	37	Mithun	मिथुन
6	23	22	12	Karkat	कर्क
7	18	15	50	Simha	सिंह
8	12	15	30	Kanya	कन्या
9	7	0	43	Tula	तुला
10	3	2	3	Vrisch	वृश्चिक
10	30	13	47	Dhanus	धनु
12	2	10	15	Makar	मकर
MANGAL				MARS	मंगल
3	25	4	6	R d Si	व सिंह
6	3	20	18	Kanya	कन्या
8	4	8	4	Tula	तुला
9	20	5	15	Vrisch	वृश्चिक
11	1	4	43	Dhanus	धनु
12	10	14	2	Makar	मकर

Jupiter stays in Capri. & Saturn in Pisces

वर्ष भर गुरु मकर व शनि मीन मे

Mean Rahu		मध्यम राहु	
6	24	14	21	Simha	सिंह
True Rahu		स्पष्ट राहु	
6	20	2	37	Simha	सिंह

Uranus & Neptune remain in Makar; and Pluto in Vrischika throughout

यूरेनस व नेप्चून वर्षभर मकर में और प्लूटो वृश्चिक में ही रहेंगे

1997 ई में ग्रहों और अवैदिक निरयण राशिचक्र

HELIOCENTRIC, ET — सूर्यकेन्द्रीय, सायन, पंचाग समय

TROPICAL				SAYANA	सायन
MERCURY				BUDHA	बुध
Mo	Dt	H	M	SIGN	राशि
नाम	ता	घं	मि	SIGN	राशि
1	5	2	26	Leo	सिंह
1	10	15	48	Virgo	कन्या
1	17	9	30	Libra	तुला
1	25	19	20	Scor	वृश्चिक
2	4	21	36	Sagi	धनु
2	15	18	23	Capr	मकर
2	25	23	6	Aqua	कुम्भ
3	6	13	49	Pisc	मीन
3	13	13	31	Arie	मेष
3	19	8	3	Tauru	वृषभ
3	24	9	8	Gemin	मिथुन
3	29	3	32	Cance	कर्क
4	3	1	42	Leo	सिंह
4	8	15	4	Virgo	कन्या
4	15	8	45	Libra	तुला
4	23	18	35	Scorp	वृश्चिक
5	3	20	51	Sagi	धनु
5	14	17	38	Capri	मकर
5	24	22	20	Aquar	कुम्भ
6	2	13	4	Pisce	मीन
6	9	12	46	Arie	मेष
6	15	7	18	Tauru	वृषभ
6	20	8	23	Gemin	मिथुन
6	25	2	47	Cance	कर्क
6	30	0	57	Leo	सिंह
7	5	14	19	Virgo	कन्या
7	12	8	0	Libra	तुला
7	20	17	49	Scorp	वृश्चिक
7	30	20	5	Sagit	धनु
8	10	16	52	Capri	मकर
8	20	21	35	Aquar	कुम्भ
8	29	12	19	Pisce	मीन
9	5	12	1	Aries	मेष
9	11	6	33	Tauru	वृषभ
9	16	7	38	Gemin	मिथुन
9	21	2	2	Cance	कर्क
9	26	0	12	Leo	सिंह
10	1	13	33	Virgo	कन्या
10	8	7	14	Libra	तुला
10	16	17	4	Scorp	वृश्चिक
10	26	19	19	Sagit	धनु
11	6	16	6	Capri	मकर
11	16	20	49	Aquar	कुम्भ
11	25	11	33	Pisce	मीन
12	2	11	16	Aries	मेष
12	8	5	48	Tauru	वृषभ
12	13	6	52	Gemin	मिथुन
12	18	1	17	Cance	कर्क
12	22	23	26	Leo	सिंह
12	28	12	47	Virgo	कन्या

Sayna True Rahu (Node) enters Virgo on Jan.25 '97 at 5-13 a.m. IST & Mean Node on Feb. 27, at 22h 15 mts IST

सायन स्पष्ट राहु २५-१-१९९७ को ५घंटा १३ मि पर तो मध्यम राहु २७ फरवरी को २२घंटा १५ मि पर कन्या राशि में प्रवेश करेगा

TROPICAL				SAYAN	सायन
VENUS				SHUKRA	शुक्र
Mo	Dt	H	M	SIGN	राशि
नाम	दिन	घं	मि	SIGN	राशि
1	8	18	8	Sagit	धनु
1	27	15	35	Capri	मकर
2	15	14	48	Aquar	कुम्भ
3	6	13	55	Pisce	मीन
3	25	11	37	Arie	मेष
4	13	7	18	Tauru	वृषभ
5	2	0	40	Gemin	मिथुन
5	20	15	30	Cance	कर्क
6	8	3	55	Leo	सिंह
6	26	14	58	Virgo	कन्या
7	15	2	34	Libra	तुला
8	3	16	48	Scorp	वृश्चिक
8	21	10	50	Sagi	धनु
9	9	8	17	Capri	मकर
9	28	7	29	Aquar	कुम्भ
10	17	6	36	Pisce	मीन
11	5	4	17	Aries	मेष
11	23	23	57	Tauru	वृषभ
12	12	17	19	Gemin	मिथुन
12	31	8	8	Canc	कर्क
PRITHVI				EARTH	पृथिवी
1	20	0	41	Leo	सिंह
2	18	14	51	Virgo	कन्या
3	20	13	54	Libra	तुला
4	20	1	2	Scorp	वृश्चिक
5	21	0	17	Sagit	धनु
6	21	8	19	Capri	मकर
7	22	19	14	Aquar	कुम्भ
8	23	2	18	Pisce	मीन
9	22	23	55	Aries	मेष
10	23	9	14	Tauru	वृषभ
11	22	6	47	Gemin	मिथु
12	21	20	7	Cance	कर्क
MARS				MANGA	मंगल
1	15	5	34	Virgo	कन्या
3	24	14	42	Libra	तुला
5	29	5	11	Scorp	वृश्चिक
7	28	17	10	Sagit	धनु
9	21	16	1	Capri	मकर
11	11	3	18	Aquar	कुम्भ
JUPITER				GURU	बृहस्पति
1	25	4	47	Aquar	कुम्भ
SATURN				SHANI	शनैश्चर

In Aries throughout

Uranus& Neptune remain in Heliocentric Capricorn & Pluto remains in Sagittarius during the whole year.

सूर्यकेन्द्रीय हर्शल व नेप्चून वर्ष भर मकर में व प्लूटो धनु मे ही रहेंगे

Nirayana signs are not found in any Veda so these are "non-vedic"!

ग्रहों का निरयण राशियों में संचार केवल जनसाधरण की परम्परागत सन्तुष्टि के लिए देरहे हैं यद्यपि सभी वेदों तथा धर्मशास्त्रों मे केवल सायन राशिचक्र का ही वर्णन है। इसीलिए हमने इसको अवैदिक राशि-चक्र कहा है।

NONVEDIC NAKSHATRA INGRESS, IST

Mo	Dt	H	M	No	Na	नक्ष
मा	ता	घं	मि	सं	नक्ष	नक्ष
SUN						रवि
1	10	21	58	21	UA	उषा
1	24	0	16	22	Sh	श्रव
2	6	3	25	23	Dh	धनि
2	19	7	53	24	Sh	शत
3	4	14	15	25	PB	पूभ
3	17	22	38	26	UB	उभ
3	31	9	34	27	Re	रे
4	13	22	51	1	As	अशि
4	27	14	46	2	Bh	भ
5	11	8	54	3	Kr	कृ
5	25	5	12	4	Ro	रो
6	8	3	2	5	Mr	मृ
6	22	2	6	6	Ar	आ
7	6	1	39	7	Pu	पुन
7	20	1	12	8	Pu	पुष्य
8	3	0	5	9	As	श्ले
8	16	21	45	10	Ma	मघा
8	30	17	44	11	PP	पूफ
9	13	11	32	12	UP	उफ
9	27	3	6	13	Ha	हस्त
10	10	16	1	14	Ch	चि
10	24	2	36	15	Sv	स्व
11	6	10	39	16	Vi	वि
11	19	16	46	17	An	अनु
12	2	21	1	18	Jy	ज्ये
12	16	0	3	19	Mu	मूल
12	29	2	16	20	PA	पूष
SATURN						शनि
4	2	1	1	1	UB	उभ
MEAN RAHU						म. रा
8	26	12	3	11	PP	पूफ
MEAN KETHU						म.के
4	22	16	42	25	PB	पूभ
TRUE RAHU						स्प. रा
7	31	21	47	11	PP	पूफ
TRUE KETU						स्प. के
5	12	1	47	25	PB	पूभ
URANUS						यूरेनस
1	10	21	40	22	Sh	श्रव

Mo	Dt	H	M	No	Na	नक्ष
मा	ता	घं	मि	सं	नक्ष	नक्ष
MERCURY						बुध
1	5	19	46	R	Mu	मूल
1	21	15	59	20	PA	पूष
2	2	13	28	21	UA	उष
2	12	2	7	22	Sh	श्रव
2	20	17	4	23	Dh	ध
2	28	16	3	24	Sh	शत
3	8	1	12	25	PB	पुभ
3	14	23	13	26	UB	उभ
3	21	16	12	27	Re	रे
3	28	19	58	1	As	अशि
4	8	10	21	2	Bh	भ
4	22	17	9	R	As	अशि
5	23	14	51	2	Bh	भ
6	3	7	57	3	Kr	कृ
6	11	8	4	4	Ro	रो
6	18	2	43	5	Mr	मृ
6	24	7	30	6	Ar	आ
6	30	10	55	7	Pu	पुन
7	6	23	31	8	Pu	पुष
7	14	6	9	9	As	श्ले
7	22	17	13	10	Ma	मघ
8	2	10	15	11	PP	पूफ
9	1	22	6	R	Ma	मघ
9	18	1	42	11	PP	पूफ
9	27	2	28	12	UP	उफ
10	4	14	10	13	Ha	ह
10	12	3	6	14	Ch	चि
10	20	0	49	15	Sv	स्व
10	28	8	31	16	Vi	वि
11	6	1	31	17	An	अनु
11	15	4	24	18	Jy	ज्ये
11	25	4	36	19	Mu	मूल
12	18	17	6	R	Jy	ज्ये
JUPITER बृहस्पति गुरु						
2	7	3	49	22	Sh	श्रव
4	14	0	42	23	Dh	ध
8	8	14	29	R	Sh	श्रव
12	5	1	26	23	Dh	ध

1997में ग्रहों का अवैदिक निरयण नक्षत्र प्रवेश

Mo	Dt	H	M	No	Na	नक्ष
मास	ता	घं	मि	सं	नक्ष	नक्ष
VENUS						शुक्र
1	5	12	29	19	Mu	मूल
1	16	4	3	20	PA	पूष
1	26	19	35	21	UA	उषा
2	6	11	7	22	Sh	श्रव
2	17	2	48	23	Dh	ध
2	27	18	49	24	Sh	शत
3	10	11	9	25	PB	पुभ
3	21	3	59	26	UB	उभ
3	31	21	24	27	Re	रेव
4	11	15	23	1	As	अ
4	22	10	3	2	Bh	भ
5	3	5	24	3	Kr	कृ
5	14	1	22	4	Ro	रो
5	24	22	3	5	Mr	मृ
6	4	19	20	6	Ar	आ
6	15	17	15	7	Pu	पुन
6	26	15	57	8	Pu	पु
7	7	15	25	9	As	श्ले
7	18	15	50	10	Ma	मघा
7	29	17	29	11	PP	पूफ
8	9	20	29	12	UP	उफ
8	21	1	18	13	Ha	ह
9	1	8	17	14	Ch	चि
9	12	17	54	15	Sv	स्व
9	24	7	8	16	Vi	वि
10	6	1	3	17	An	अनु
10	18	1	53	18	Jy	ज्ये
10	30	13	47	19	Mu	मूल
11	12	21	5	20	PA	पूष
11	28	0	22	21	UA	उषा
12	24	20	7	22	Sh	श्रव
12	29	9	49	R	UA	उषा

Being imaginary, ingress etc. of planets into Abhijit is not being given from this year as it is totally unrelated to the actual longitude.

Mo	Dt	H	M	No	Na	नक्ष
मास	ता	घं	मि	सं	नक्ष	नक्ष
MARS						मंगल
1	17	23	15	13	Ha	ह
2	24	8	51	R	UB	उभ
4	3	20	36	R	PB	पूभ
5	24	0	53	12	UB	उभ
6	28	0	11	13	Ha	ह
7	23	17	35	14	Ch	चि
8	15	9	15	15	Sv	स्व
9	5	7	30	16	Vi	वि
9	25	1	38	17	An	अनु
10	13	23	1	18	Jy	ज्ये
11	1	4	43	19	Mu	मू
11	18	22	18	20	PA	पूष
12	6	6	57	21	UA	उष
12	23	9	30	22	Sh	श्रव

Neptune remains in Uttarashada & Pluto in Anuradha during the entire year

नेप्चून सारा वर्ष उत्तरषाढा व प्लूटो अनुराधा में ही रहेंगे।

These Nakshatras are imaginary divisions of 13d 20 mts each and have nothing to do with the actual Nakshatras of these names. In Vedic and Pauranic times even these were linked to tropical zodiac but some predictive astrologers dislike it.

13अं 20कला का यह नक्षत्र विभाजन काल्पनिक है वैदिक और पौराणिक युग में यह भी अवैदिक निरयण के बदले सायन राशिचक्र से ही जुड़ा था पर कुछ फलित ज्योतिषी यह नहीं चाहते है।

RETRORGRESSION OF PLANETS IN 1997

ग्रहों का वक्री-मार्गी 1997 ईस्वी में

Planet	ग्रह		Re. on वक्री तिथि	I.S.T घ. मा. स	Direct मार्गी तिथि	IST. मानक
Mercur	बुध		24/12/96	1/15	13/1/97	2/11
			15/04/97	5/30	8/5/97	23/35
			18/08/97	1/18	10/09/97	7/12
			7/12/97	22/25	27/12	17/9
Venus	शुक्र		27/12/97	02/50	6/2/98	2/56
Mars	मंगल		6/02/97	6/08	28/4/97	0/39
Jupiter	गुरु		10/06/97	5/55	8/10/97	10/08
Saturn	शनि		1/08/97	22/26	16/12/97	15/57
Uranus	यूरेनस		13/05/97	09/43	14/10/97	16/19
Neptun	नेप्चून		2/05/97	4/59	9/10/97	6/59
Pluto	प्लूटो		8/03/97	18/24	13/08/97	14/9

You may find differences upto 15 minutes in these timings as compared to Rashtriya Panchanga or other publications based on that data but we have checked our calculations and find the timings exactly the same as that of other international observatorie

आप ऊपर दी गई तालिका में राष्ट्रीय पंचांग अथवा उस पर आधारित अन्य पंचांगों से तुलना करने पर कहीं-कहीं 15 मिनट तक का अन्तर पाएंगे परन्तु हमारे दिए गए आंकड़े पूर्णतया शुद्ध हैं और अन्तर्राष्ट्रीय वेधशालाओं के समय से पूरी तरह मेल खाते हैं।

HELIACAL RISING & SETTING OF PLANETS IN 1997

1997 ईस्वी में ग्रहों का लोप/दर्शन

Planet ग्रह	Sets अस्त	E/W दिशा	E/W दिशा	Rises	East/Wes दिशा	E/W दिशा
Mercury बुध	27/12	W	पश्चिम	7/1/97	पूर्व	East
	19/2	E	पूर्व	21/3/97	पश्चिम	West
	18/4	W	पश्चिम	7/5/97	पूर्व	East
	15/6	E	पूर्व	5/7/97	पश्चिम	West
	19/8	W	पश्चिम	7/9/97	पूर्व	East
	1/10	E	पूर्व	6/11/97	पश्चिम	West
	11/12		पश्चिम	22/12	पूर्व	East
Venus शुक्र	23/2	E	पूर्व	26/4	पश्चिम	West
	23/2	E	पश्चिम	26/4	पूर्व	East
Mars	- -	-	- -	- - -	--	--
Jupiter बृहस्पति	8/1/97	W	पश्चिम	2/2/97	पश्चिम	West
	8/1/97	W	पश्चिम	13/2/97	पश्चिम	West
Saturn	17/3/97	W	पश्चिम	22/4/97	पूर्व	East

The above dates are for Central Station of India and may differ by several days in respect of other places due to differences in latitudes etc. Besides risings/settings, the planets, especially Venus and Jupiter suffer from "old age" & "infancy" for a few days before setting and after rising respectively.

नोट: उदयास्त की ऊपर दी गई तिथियें केन्द्रस्थल भारत के लिए हैं व अक्षांश भेद से अन्य स्थानों के लिए इनमें कई दिनों का अन्तर होसकता है।इसके अतिरिक्त यह ग्रह, विशेषत: गुरु और शुक्र, अस्त और उदय होने से पहले और उदय होने के पश्चात् कई दिनों तक क्रमश: "वार्धक्य" और "बालत्व" के दोष के कारण शुभ कार्यों के लिए वर्ज्य रहते हैं।

TABLES OF CONSTANTS FOR SOLAR RETURNS

वर्षफल बनाने के लिए ध्रुवांक कोष्ठक

	sidere.	निरयण (अवैदिक)		Tropica	सायन (वैदिक)	
PY	weekda	Hours	minutes	weekday	Hours	Mits
वर्ष	वार	घंटा	मिनट	वार	घंटा	मिनट
1	1	6	9.2	1	5	48.8
2	2	12	18.3	2	11	37.5
3	3	18	27.5	3	17	26.3
4	5	0	36.6	4	23	15.1
5	6	6	45.8	6	5	3.8
6	0	12	55	7	10	52.6
7	1	19	4.1	1	16	41.3
8	3	1	13.3	2	22	30.1
9	4	7	22.5	4	4	18.8
10	5	13	31.6	5	10	7.6
20	4	3	3.3	3	20	15.2
30	2	16	34.9	2	6	22.8
40	1	6	6.5	7	16	30.4
50	6	19	38.1	6	2	37.9
60	5	9	9.7	4	12	45.6
70	3	22	41.3	2	22	53.2
80	2	12	12.9	1	9	0.7
90	1	1	44.6	6	19	8.3
100	6	15	16.2	5	5	15.9
110	5	4	47.8	3	15	23.5

Actual SR canbe ±12mts वर्षप्रमें 12 मि अन्तर हो सकता है

CHRONOLOGICAL ERAS IN 1997

1997 के संवत्सर

No. क्रम	ERA संवत्सर	Place प्रचलित	YEAR वर्ष	BEGINS आरम्भ	ERA संवत्सर	TYPE प्रचलन
1	Chrisia	Greg	1997	1/1/97	ईस्वी	ग्रेगोरियन
2	Shaka	Rasht	1919	22/3/97	शक	राष्ट्रीय
3	Vikram	J.K.Pb	2054	8/4/97	विक्रम	जक,पंज.
4	Vikram	Guja.	2054	1/11/97	विक्रम	गुजरात
5	Vikram	Oriss	2054	13/4/97	विक्रम	उड़ीसा
6	Tamil	Lunar	11	8/4/97	तमिल	चान्द्र
7	Tamil	Solar	11	14/4/97	तमिल	सौर
8	Bengali	Beng	1404	14/4/97	बंगाली	बंगाल
9	Kollam	Keral	1173	17/8/97	कौलम	केरल
10	Islamic	Hejir	1418	9/5/97	मुस्लिम	हिजरी
11	Parsi	Farva	1367	22/8/97	पारसी	फर्वदीन
12	Budha	Baud	2541	22/5/97	बुद्धनिर्वाण	बौद्ध
13	Mahavi	Jain	2524	31/10	महावीरनिर्वा.	जैन
14	Kaliyugimagi.		5098	15/4/97	कलियुग	कल्पना
15	Saptar.	Kash.	5013	8/4/97	सप्तर्षि	कश्मीर
16	Barhas	N.I.	25	5/9/97	बार्हस्पत्य	उत्तर भा
17	Shaka	Lunar	1919	8/4/97	शाका	चान्द्र
18	Shaka	Solar	1919	13/4/97	शक	सौर

The dates of most of the above era are as related to sidereal (Nirayana) transits of the sun or Geocentric instead of topocentric New Moons etc. which are anything but Vedic. These dates have been given only for the sake of so called conformity with the tradition and nothing else.

ऊपर दी गई नववर्षों की प्रारम्भ तिथियां निरयण सौर संक्रान्तियों व भूपृष्ठीय के बदले भूकेन्द्रीय अमान्त आदि के आधार पर दी गई है जो नितान्त अवैदिक हैं। यह केवल परम्परा निभाने के लिए दी जारही हैं जब कि वास्तव में केवल सायन संक्रान्तियों के आधार पर ही नववर्षों तथा संवत्सरों का निर्णय होना चाहिए क्योंकि केवल वही धर्मशास्त्र सम्मत है।

सन १९९७ ईस्वी के मुख्य व्रत त्यौहार तथा अवकाश आदि (पूरा विवरण कृपया पचाग मे देखे)

ईस्वी सन १९९७ प्रा बुध जन १
वकुल व यक्ष अमा गुरु जन ६
रमज़ान (रोज़ा) प्रा शनि जन ११
अवैदिक निरयण लोहडी जन १२
अवैदिक निरयण मकर संक्रा,मकरादि स्नान,माघबिहू मंग जन १४
(वास्तविक वैदिक मकर सं. तथा उत्तरायण प्रतिवर्ष२१/२२ दिसंबर को होते हैं जब सूर्य सायन मकर राशि में प्रवेश करता है)
गुरु गोविन्द सिंह ज.बुध जन १५
पुष्याभिषेक,नेताजी ज.गुरु जन२३
गणतंत्र दिवस रवि जन २६
म. गांधी पुण्य तिथि गुरु जन ३०
विवेकानन्द ज;साहिब ७ जन ३१
शिव १४ (कश्);शबे कद्र फर ६
मौनी व तै अमा. शुक्र फर ७
ईद-उल-फितर रवि फर ६
गौरी ३; तिल व वरद ४ फर १०
श्री व वसन्त पंचमी मंग फर ११
गुरु रविदास जय. शनि फर २२
सीता ज.;होराष्टमी (कश्) मार्च २
महाशिवरात्रि (कश्) गुरु मार्च ६
महाशिवरात्रि शुक्र मार्च ७
शिव १४ (कश्मीर) शुक्र मार्च ७
वैदिक(सायन) मेष संक्रा.; वसन्त सम्पात,महाविषुव दिवस मार्च २१ (आज ही के दिन असली वैदिक वैशाखी व सौर नववर्ष है। हमारे धर्मशास्त्रों व सूर्यसिद्धान्तमें जिस मेष संक्रान्ति व विषुव मे व्रत व दान की महिमा का बखान है यह वही दिन है। प्रमाणस्वरूप आज ही के दिन सब विश्व में दिनरात बराबर होते हैं जो किसी रमण/ लाहिरी सं. में कभी नहीं होते)
होलिका दहन रवि मार्च २३
होली,दुलेहड़ी,ड़ोलयात्रा मार्च २४
गुड फ्राईडे शुक्र मार्च २८
पापमोचनी ११ गुरु अप्रैल ३
वासन्ती नवरात्र;गुडी पडवा; चेती चन्द; उगाडी मंगल अप्रैल ८
गणगौरी व आन्दोलन ३ अप्रैल१०
श्री व लक्ष्मी ५ शनि अप्रैल १२
अवैदिक निरयण वैशाखी अप्रै १३
अवैदिक मेषादि व मेष सं.; वहाग बिहू, शिलहेम्बा सोम अप्रैल १४
अम्बेडकर जयन्ती सो अप्रैल १४
महा ८ व अन्नपूर्णा ९ अप्रैल १५
मेला बाहूफोर्ट (जम्मू) अप्रैल १५
श्रीरामनवमी बुध अप्रैल १६

ईद-उज़-जुहा(बकरीद) अप्रैल १८
श्रीमहावरी जयन्ती रवि अप्रैल २०
बाबु केहरसिंह ज. बुध अप्रैल २३
शिवाजी जयन्ती गुरु मई ८
अक्षय ३;केदारबद्री यात्रा मई ६
मुहर्रम ताज़िया रवि मई १८
बुद्ध पूर्णिमा गुरु मई २२
अपरा व भद्रकाली ११ जून १
वटसावित्री अमा. गुरु जून ५
रम्भ ३; प्रताप ज. रवि जून ८
गुरुअर्जुन देव श.दिवस जून ६
क्षीर भवानी यात्रा शुक्र जून १३
गगा दशहरा रवि जून १५
निर्जला ११ सोम जून १६
वटसावित्री,देवस्नान १५ जून २०
गुरुहरगोविन्द सिंह ज. जून २१
वैदिक दक्षिणायन दिवस जून २१ (आजही के दिन दिनमान सबसे अधिक होता हे जो वैदिक कर्क संक्रा. व दक्षिणयन का लक्षण है)
जगन्नाथ रथ यात्रा रवि जुला ६
कुमार षष्ठी शुक्र जुला ११
शहीदी दिवस(कश्) रवि जुला १३
मेला शारिका भगवती जुला १४
पुनर्यात्रा मंग जुला १५
हरिशायिनी ११ बुध जुला १६
ईदे-मेलाद-उल-नबी शु जुला १८
मेला ज्वालामुखी शनि जुला १६
गुरु व व्यास पूर्णिमा रवि जु २०
हरियाली, चितऊ ३० रवि अग ३
मधुस्रवा ३; तीज बुध अग ६
नाग पंचमी शुक्र अग ८
स्वतंत्रता दिवस शुक्र अग १५
ऋक उपाकर्म रवि अग १७
रक्षा बन्धन;श्रीअमरनाथ यात्रा;श्रावणी कर्म;यजरुपाकर्म सो अग१८
पारसी नववर्ष शुक्र अग २२
जन्माष्टमी (स्मार्त) रवि अग २४
जन्माष्टमी (वैष्णव) सोम अग २५
गोकुलाष्टमी सोम अग २५
रपतपित्,सोमवती दर्भ ३० सित १
हरितालिका गौरी ३ शुक्र सित ५
गणेश,विनायक,वरद ४ श सि ६
मेला पात (जम्मू) सित ७ - ६
दूर्वा व राधाष्टमी बुध सित १०
पार्श्वपरिवर्तिनी ११ शनि सित १३
ओणम, थिरु ओणम रवि सि १४
श्रीवामन जयन्ती रवि सित १४
अनन्त १४ सोम सित १५
श्राद्धपक्ष प्रा;पूर्णिमा श्राद्ध सि १६
साहिब सप्तमी (कश्) मंग सि २३

जलविषुव दिवस मंगल सि २३ (आजही के दिन वैदिक तुला स. है।इसका प्रमाण यह है कि आज फिर दिन-रात एक समान हैं जो किसी निरयण सं. में नहीं होते हैं तुला का अर्थ ही है एक समान! जो किसी निरयण तुला राशि में कभी भी नहीं हो सकता है!)
महालया;सर्वपित्र अमा. अक्टू १
गान्धी जयन्ती गुरु अक्टू २
शारदीय नवरात्रारम्भ अक्टू २
दुर्गापूजा प्र;दुर्गा ७ बुध अक्टू ८
दुर्गाष्टमी; महाष्टमी गुरु अक्टू ९
महानवमी;आयुधपूजा शुक्र अ. १०
दशहरा;विजय १० शनि अक्टू ११
भरत मिलाप रवि अक्टू १२
शरत् १५;वाल्मीकि ज. गु अ. १६
करुआ चौथ;दशरथ ४ सो अ २०
अहोई व काराष्टमी गु अक्टू २३
धन तेरस मंगल अक्टू २८
दीपावली;नरक १४;हनुमज्जयन्ती; काली पूजा;लक्ष्मी पूजा; महावीर निर्वाण दिवस गुरु अक्टू ३०
बलि पू;गोवर्धन;अन्नकूट अक्टू ३१
भाई दूज;यम २ रवि नवंबर २
छठ (बिहार) गुरु नवंबर ६
देव प्रबोधिनी ११ मंग नवंबर ११
वैकुण्ठ १४ गुरु नवंबर १३
पुष्कर यात्रा; गुरुनानक जयन्ती; नेहरू ज.;बालदिवस शु नवं १४
गुरुतेगबहादुर शहीदी दि. दिस ४
मोक्षदा ११; गीता ज. बु. दि. १०
दत्तात्रेय जयन्ती शनि दिस १३
शबे बारात मंगल दिस १६
वैदिक उत्तरायण दिवस दिस २२ (आजही के दिन वास्तविक मकर सं. व उत्तरायण है जिसके लिए भीष्मपितामह ने प्रतीक्षा की थी। प्रमाण स्वरूप आज का दिन सबसे छोटा है जो किसी निरयण सं में नहीं होता है अतः कुछ फलित ज्योतिषी जो यह कहरहे हैं कि कोई और लाहिरी या रमण अयनांश वाली मकर संक्रान्ति वैदिक सं. है वह झूठ बोल रहे हैं और झूठ के सिवा कुछ नहीं बोल रहे हैं। उन्होंने वेदों का केवल नाम सुनाहे उनका अध्ययन नहीं किया है।उनका बहिष्कार करना चाहिए
क्रिसमस गुरु दिस २५
सोम. यक्ष,वकुल ३० सो दिस २६

भविष्य के गर्भ में भारत के लिए क्या निहित है?

कहीं हम भूल न जाएं!

अतः यदि इन चेतावनियों की ओर यथाशीघ्र---शीघ्रातिशीघ्र-------ध्यान नहीं दिया गया तो विश्व का कोई प्राणी, या यों कहिए कि इस विश्व की कोई भी शक्ति, भारतववर्ष को अधकाधिक २००२ ईस्वी तक टुकडे होने से---तहस नहस होने से--------नहीं बचा पाएगी। कहा जाता है कि प्लूटो ग्रह का स्वभाव भगवान शंकर की भान्ति है जो संहारकर्ता होने के साथ-साथ उसी पहली सृष्टि के अवशिष्ट अवयवों से एक नई सृष्टि की रचना भी करते हैं, अतः यह भी सम्भव है कि उस अवधि के पश्चात् भारत का नवनिर्माण अर्थात् अभ्युदय होगा परन्तु उसके लिए जो कीमत हमें चुकानी होगी वह मानवमात्र की कल्पना से भी परे है क्योंकि तब तक तो हमारे पैरों के नीचे से सारी की सारी धरती खिसक गई होगी।

१९६१ के "श्रीकृष्ण यूनिवर्सल पंचांग" के पृष्ठ १६ से उद्धृत

नाधर्मश्चरितो राजन् सद्यः फलति गौरिव । मूलानि च प्रशाखाश्च दहन् समधिगच्छति।।
पापेन कर्मणा वित्तं लब्ध्वा पापः प्रहृष्यति । स वर्धमानः स्तेयेन पापः पापे प्रसज्जति।।
न धर्मोस्तीतिमन्वानः शुचीनवहसन्निव । अश्रद्धानश्चभवेद् विनाशमुपगच्छति।।

महाभारत शान्तिपर्व १०२/१७.२०

"हे राजन्! पृथिवी में तो बीज बोने के पश्चात् कुछ ही मासों में फल आदि उपजता है परन्तु पापकर्म वैसे शीघ्र फल देने वाला नहीं होता है। किन्तु (अन्ततोगत्वा) वह अधर्म उस व्यक्ति की जड़ों व शाखाओं को पूरी तरह जला डालता है अर्थात् उसके पूर्वजों व सन्तति को नष्ट करता है। पापकर्मों द्वारा धन जमा करने पर वह पापी प्रसन्नता से फूले नहीं समाता है और ज्यों-ज्यों चोरी करने से उसका धन बढ़ता जाता है त्यों त्यों वह अधिक पाप करने लगता है। इस प्रकार उसको पूर्ण विश्वास हो जाता है कि धर्म नाम की कोई वस्तु है ही नहीं और वह पुण्यकर्म करने वालों पर हंसता है। परन्तु शीघ्र ही यमदूत उसको क्रूरता व निर्दयता से ले जाते हैं।".....महाभारत शान्तिपर्व १०२/१७.२०

"कहीं हम भूल न जाएं!" शीर्षक वाली पंक्तियां हमने मई १९६१ में राजीव गांधी की हत्या से कुछ मास पूर्व सितम्बर १९६० में अपने १९६१ के पंचांग में लिखी थीं। हम यह निर्विवाद रूप से कह सकते हैं कि १९६१ से "विश्व के इस सबसे बड़े लोकतन्त्र" भारत में एक ऐसा "युग" चलता रहा है जिस युग की शासन प्रणाली को ''घूसखोरों की सरकार, घूसखोरों द्वारा सरकार और घूसखोरों के लिए सरकार'' कहा जा सकता है। इस तथ्य का आधार यह है कि भूतपूर्व सरकार ने स्वय ही अपने मंत्रियों व अन्य नेताओं व कर्मचारियों आदि पर हवाला व अन्य काण्डों में अदालत में शिकायतें दर्ज करवाई। इसी प्रकार जिस संख्या में इस समय की तथा भूतपूर्व सरकार के नेताओं व उनके रिश्तेदारों और उनके अधीनस्थ कर्मचारियों के नाम पुलिस थानों और न्यायालयों में आपराधिक शिकायतें दर्ज हैं और की जा रही हैं, तो कुछ समय बाद इस शासन प्रणाली को ''अपरधियों द्वारा सरकार, अपराधियों की सरकार व अपराधियों के लिए सरकार'' (जिन अपराधों में 'धोखाधड़ी', 'जाली दस्तखत करना या करवाना' तथा 'विदित आय के स्रोतों से अधिक धन का होना' आदि सब प्रकार के अपराध शामिल हैं) कहा जाएगा। इस प्रकार जब नेताओं व उनके रिश्तेदारों और उनके अधीनस्थ कर्मचारियों को येन-केन-प्रकारेण अपनी बेगुनाही साबित करने में ही सारा समय व्यतीत हो जाएगा तो उनके पास मातृभूमि की सुरक्षा के प्रति ध्यान देने का समय ही नहीं होगा। सम्भव है कि नेताओं की इस दुर्दशा का लाभ कुछ असामाजिक व देशद्रोही तत्व उठा लेंगे, अतः इस लेखक की आशंकाएं पूरी होती दीख रही हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ और अकाट्य प्रमाण भी हैं जिनके कारण लेखक की इन आशंकाओं का यह ''मध्यावधि विश्लेषण'' आवश्यक हो रहा है:-

१) ३१ मई १९९६ के हिन्दुस्तान टाईम्स में ''भारत अपने बचाव की तैयारी में पिछड़ रहा है'' शीर्षक से ''इन्सटिट्यूट आफ डिफेन्स ऐण्ड स्ट्रैटजिक स्टडीज़'' लन्दन और वाशिंगटन द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के कुछ उद्धरण छपे थे जिनमें चेतावनी दी गई थी कि, ''भारत पहले ही अपने बचाव की तैयरी में बेहद पिछड़ चुका है।...अतः भारत की सुरक्षा को विदेशी सैनिक शक्तियों का ज़बर्दस्त खतरा बना हुआ है ओर वह चारों ओर से घिरा हुआ है''।

२) ''यूनाटिड फ्रन्ट'' सरकार ने भी इस वर्ष के रक्षा बजट में भी कटौती की है जो देश की सुरक्षा के लिए घातक सिद्ध हो सकती है।

३) सेना के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों में ---विशेषतः राजनीति में-----कखपति से लखपति बनते देखकर व आतंकवादियों को सरकार द्वारा विशेष सुविधाएं किन्तु तथाकथित गलत सुरक्षा कर्मचारियों को मानव आयोग द्वारा सज़ाएं देखकर कोई भी नौजवान सैनिक नहीं बनना चाहता है। यह भी हो सकता है कि ''ड़ाकूरानी'' को भावी प्रधानमंत्री घोषित करते देखकर किसी नौजवान में देश को बचाने की लालसा न हो क्योंकि कुछ समय पहले देश को ऐसे ही तत्वों से बचाने के लिए सेना का प्रयोग किया गया था।

४) यह भी एक सर्वविदित ''रहस्य'' है कि प्रत्येक नवजात शिशु से लेकर वृद्ध व्यक्ति तक कुछ हज़ार

रुपयों का ऋण है---वास्तव में यह राशि कितनी है, यह किसी को ज्ञात नहीं है----क्योंकि देश पर विदेशी व स्वदेशी ऋणदाताओं का खरबों रुपए का ऋण चढ़ा हुआ है।

५) जब एक ओर से तो एक राज्य विशेष के सरकारी कर्मचारी इसलिए भूखे मर रहे हों कि उन्हें सरकारी खज़ाने में पैसे न होने के कारण कई महीनों से वेतन नहीं मिला पर दूसरी ओर से उसी राज्य के ''पालतू पशुओं'' के ''चारे'' के लिए अरबों रुपए खर्च हो रहा हो तो आशंकाओं को सही होते देखकर चिन्तित होना स्वाभाविक ही है।

६) १६-८-१९६६ के हिन्दुस्तान टाईम्स के अनुसार जब वर्तमान योजना आयोग के सचिव-सदस्य जो कुछ समय पहले देश के वित्तसचिव भी थे, यह पूर्वचेतावनी दें कि ''इस समय देश के सभी राज्यों पर इतना ऋण है जो कि वह चुकता नहीं कर सकते हैं। ...केन्द्रसरकार की भी शीघ्र ही यही स्थिति होने वाली है। अतः न तो राज्य सरकार और न केन्द्र सरकार ही अपनी संपत्ति की रक्षा कर सकेंगे, न लोगों को सेवा दे पाएंगे और न ही किसी कार्य में और पूंजी निवेश कर सकेंगे, चाहे वह कितनी ही अनिवार्य और महत्वपूर्ण क्यों न हों''.. तो कोई आश्चर्य नहीं कि आशंकाएं पूरी होते देख कर मन विचलित हो जाए।

७) जब एक १२५ वर्ष पुरानी विशालकाय पार्टी को उसके ''अध्यक्ष'' तथा उनके ''चम्चे नेताओं'' के "अथक प्रयत्नों" द्वारा मात्र पाँच वर्षो की अवधि में ही छिन्न-भिन्न किया गया हो तो कोई आश्चर्य नहीं है कि ऐसे नेता कल अपनी मातृभूमि को भी ऐसी ही सज़ा क्यों न दें केवल इसलिए कि उसने ऐसे मातृ व पितृ-घाती ''दैत्यों'' को जन्म देने का अपराध किया है। *दीवार पर लिखे अक्षरों का न पढ़ना तो अन्धेपन का प्रमाण देना ही है। अतः यह विवेचन!*

अब प्रश्न यह उठता है कि मैं आज से छः वर्ष पूर्व इन निष्कर्षों पर कैसे पहुँचा था?

इस लेख द्वारा हम इन निष्कर्षों के पीछे कारण तथा प्रणाली दर्शाएंगे जो पाठकों को जन्मपत्रियां सायन राशिचक्र तथा दिनवर्ष पद्धति द्वारा विश्लेषण करने के लिए एक उदाहरण हो सकता है। हम यह भी आशा करते हैं-----यद्यपि ऐसी आशा करना व्यर्थ ही है---कि हमारे देश के ''नेता'' इन पूर्वचेतावनियों की ओर ध्यान देंगे तथा समय रहते हुए कुछ वास्तविक ''उपाय'' करेंगे बजाय इसके कि वह उस ऊपर वाले को भी अपनी पाप की कमाई का चढ़ावा चढ़ाकर उससे यह आशा करें कि वह उन्हें इन कुर्सियों में कम-से-कम अर्द्ध-स्थायी तो बनाएं।

सबसे पहले जन्मपत्री चाहिए। नीचे हम स्वतंत्र भारत के जन्मकालीन अर्थात् १५ अगस्त १९४७ के मध्यरात्रि (भा. स्टै. टा.) के दिल्ली के लिए सायन ग्रहस्पष्ट--राशि, अंश, कला--व ''प्लेसीडियन'' भावस्पष्ट दे रहे हैं:- सूर्य : सिंह २१-६; चन्द्र : कर्क २७-८; बुध : सिंह ६-४८; शुक्र : सिंह १५-४२; मंगल : कर्क ०-३५; गुरु : वृश्चिक १६-०; शनि : सिंह १३-३७; हर्शलः मिथुन २५-११; नेप्चूनः तुला ८-५१; प्लूटोः सिंह १३-१५; राहुः वृष २८-१२

भाव : लग्न : मिथुन ०-५३; धन : मिथुन २६-१६; सहज : कर्क १६-४१; सुख : सिंह १४-३५; पुत्र : कन्या १४-४४; रिपु : तुला २१-४६; जाया : धनु ०-५३; मृत्यु : धनु २६-२६; धर्म : मकर १६-४१; मान : कुम्भ १४-३५; लाभ : मीन १४-४४; व्यय : मेष २१-४६

किसी ''जातक'' की वर्तमान स्थिति का अनुमान लगाने से पहले उस की मूल जन्मपत्रिका के प्रत्येक पहलू पर विचार करना परमावश्यक है क्योंकि केवल जन्मांग से ही यह पता लग सकता है कि ''क्या होने वाला है'' और दिनवर्ष पद्धति (Secondary Progressions) से यह पता लगता है कि वह जो होने वाला है, वह कब होगा। जो बात मूल जन्मपत्रिका में होने को नहीं है वह कभी भी घटित नहीं हो सकती है चाहे ''प्रोग्रेशन्स'' कितने ही प्रबल क्यों न हों।

सायन पद्धति में भावस्पष्ट भाव का आरम्भ माना जाता है, मध्य नहीं और जब कोई भी ग्रह उस भावस्पष्ट के छः अंशों तक आगे पीछे होता है, भले ही वह ग्रह पिछले भाव में ही क्यों न हो, उस ग्रह की उस भाव स्पष्ट से युति मानी जाती है। इसके अतिरिक्त ग्रहों का जो परस्पर अन्तर होता है या ग्रहों का लग्न-दशम-चतुर्थ-सप्तम आदि से जो अन्तर होता है, उसका भी बहुत महत्व है। यह पारस्परिक अन्तर जब ३० अथवा ४५ अंशों के अपवर्त्य (multiple) होते हैं अर्थात् जब यह अन्तर इन अंकों से विभाजित हो सकते हैं तो उन कोणों को ''दृष्टि'' या aspects कहते हैं। ६० और १२० अंशों के यह पारस्परिक कोण ''मृदु'' माने जाते हैं जबकि ४५, ९०, १३५ व १८० अंशों के कोण ''क्लिष्ट'' समझे जाते हैं। शून्य अंशों का पारस्परिक कोण ''युति'' कहलाता है और यदि यह ''युति'' दो शुभ ग्रहों की हो तो शुभ अन्यथा अशुभ विशेषकर यदि दोनों ही पापग्रह हों। यह पारस्परिक कोण सदा ही ३० या ४५ अंशों से पूरी तरह विभाज्य नहीं होते है अतः यदि जन्मकुण्डली में इनमें कुछ अंश अधिक या कम हों तो भी यही माना जाता है कि यह कोण बन रहे हैं। इस अन्तर को "परिधि" (orb) कहा जाता है। ''प्रोग्रेशन्स'' में यह ''परिधि'' अधिकाधिक एक अंश आगे या पीछे तक मानी जाती है। जब कोई कोण परिपक्वता की ओर बढ़ रहा हो तो उसको ''आरोही'' (applying) कहा जाता है और जब वह कोण पूरा बनके पृथकता की ओर बढ़ता है तो उसको ''अवरोही'' (separating) कहते हैं। प्रोग्रेशन अर्थात् ''दिनवर्ष पद्धति'' में आरोही कोण उत्तेजक अथवा प्रेरक माने जाते है और अवरोही कोण शिथिल।

मेदिनी ज्योतिष में योगताराओं की युति वा प्रतियुति अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है यद्यपि वैयक्तिक जन्मपत्रियों में उनका इतना अधिक महत्व नहीं है। इन योगताराओं के ''स्वतंत्र भारत'' के जन्मकालीन मध्यमभोग इस प्रकार निकाले जा सकते हैं:- इनके वर्तमान मध्यमभोगों में से प्रतिवर्ष लगभग ५०.२ विकलाओं की गति से अर्थात् (१९६७–१९४७) = ५० गुणा ५०.२ विकलाएं अर्थात् लगभग ४२ कलाएं घटाएं। यहां यह दोहराने की आवश्यकता नहीं होगी कि यह मध्यमभोग सायन हैं और इनका उन्हीं से मिलते-जुलते नामों वाले समान नक्षत्र विभाग से कोई सम्बन्ध नहीं है।

हमने अपने पंचांग के पिछले अंकों व ''ऐक्सप्रेस स्टार टैलर'' में प्रकाशित कुछ लेखों में इस जन्मांग की विशद विवेचना की है। स्थानाभाव के कारण हम उतनी विशद विवेचना यहां तो नहीं कर पाएंगे पर कुछ प्रमुख विशेषताएं यहां वर्णन करना आवश्यक है। यह विशेषताएं इस प्रकार हैः- सर्वप्रथम इस जन्मपत्री का जन्मलग्न "द्विस्वभाव राशि" मिथुन है, वह भी शैशव काल में अर्थात् एक अंश से भी कम। एक ओर से इसके साथ राहु की युति है तो दूसरी ओर से कृत्तिका योगतारे की। अतः यह इस समूचे देश व इसके नेताओं की अनिश्चित अवस्था व किंकर्त्तव्यविमूढ़ता दिखलाता है।

इसी प्रकार शुक्र, शनि, प्लूटो व सूर्य की युति पूर्णतया वर्तमान कालीन ''यूनाइटिड फ्रन्ट'' सरकार की भान्ति है जिसमें बिल्कुल ही विसंगत तत्व आपस में एक दूसरे के साथ श्लिष्ट हुए हैं---महाराजा सूर्य कामिनी शुक्र के साथ क्रीडारत हैं परन्तु अनुशासन प्रिय व एक एक मिनट का हिसाब रखने वाले शनि की देखरेख साथ में है, और इन सबका ही एक अन्तर्द्वन्द्व है क्योंकि आत्मघाती ''माफिया सरदार'' प्लूटो भी साथ में विराजमान हैं। जब इस प्रकार के परस्पर विरोधी घटक आपस में चतुर्थ भाव के साथ, जिसको कि जातक की ''नींव'' माना जाता है---सम्मिश्रित हो जाते हैं तो यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह ''कीटाणु'' उसी मज्जा को चट कर जाएंगे जो इनका पालन पोषण कर रही है---ठीक वही स्थिति जो कांग्रेस (आई) के साथ हुई। अब यदि इस ''चोरों और सिपाहियो के संगठन'' को किसी ग्रह से कुछ ''मृदु'' कोणों का सहारा मिला होता तो यह सब अपनी अपनी डफली बजाने के बदले शायद अपनी सारी ''पूंजी'' एकत्रित करके ''नींव'' को मज़बूत बनाने में लग जाते, परन्तु यहां भी दुर्भाग्य देखिए कि एक ओर से तो यह ''समुदाय'' मंगल के साथ ४५ अंशों का कोण बना रहा है तो दूसरी ओर से बृहस्पति के साथ ६० अंशों का। क्योंकि यह सब युतियां ''शाही'' राशि ''सिंह'' में हो रही है जो कि ''लोकतन्त्र'' की वृत्तियों के बिल्कुल विपरीत है अतः वह आग में घी का काम कर रही है। जब यह राशि क्रूर ग्रहों से आक्रान्त होती है तो इस से प्रभावित व्यक्तियों का यह स्वभाव बनता है कि हितकारी किन्तु कटु वचन सुनने के लिए तो यह कानों में रूई डाल देते हैं परन्तु जब इनके चाटुकार इनकी प्रशंसा करने लगते हैं कि ''आप तो स्वयं भगवान यादव के ही अवतार हैं'' तो इनको हर्ष से रोमांच होजाता है भले ही यह वास्तव में कुर्सी के लिए अपने पिता तक को कारागार में डालने वाले कुलपांसन कंस ही क्यों न हों! एक बात और भी है। यदि कोई ग्रह किसी एक भाव से युति करता है तो स्वाभाविक ही है कि वह ग्रह उसके भाव से १८० अंशों के अन्तर वाले भाव से प्रतियुति करेगा। अतः यह सब ''समुदाय'' यहां पर क्योंकि चतुर्थ भाव से युति कर रहा है अतः यही समुदाय अपने पूरे ज़ोर-शोर से दशम अर्थात् राज्य व मान के द्योतक भाव के साथ प्रतियुति कर रहा है!

प्रतियुति ''विरोध'' का ही पर्यायवाचक है और क्योंकि किसी लोकतन्त्र में चतुर्थ और दशम अन्योन्याश्रित होते हैं---जनसमूह ''नेताओं'' को जन्म देते हैं जो बाद में ''शासक'' बन कर जनसमूह के लिए ही जोंक बन जाते हैं और उन्हीं करदाताओं की सम्पत्ति को निजी शक्ति, लाभ और उत्कर्ष के लिए फूंक कर फिर ''जनसमुदाय'' में सम्मिलित होते है----केवल इतना ही अन्तर होता है कि तब उनको उसी जनसाधारण से ''सुरक्षा'' के लिए परम सुरक्षा Z Plus category की व्यवस्था चाहिए होती है।

हम यहां इस तथ्य की भी अवहेलना नहीं कर सकते हैं कि यह प्लूटो-शनि-शुक्र-रवि युति चतुर्थ भाव अर्थात् जनसमुदाय के साथ ही हो रही है जिसका यह अभिप्राय है कि सारे का सारा जनसमूह ही यह सब "तत्व" स्वयं ही है जो हमने इन नेताओं के लिए बताए। हैं। यहां प्लूटो की चतुर्थ भाव से युति उस ''तांत्रिक'' या ''भविष्यवक्ता'' की द्योतक है जो वास्तव में जाने अनजाने में माफिया का सदस्य है क्योंकि प्लूटो भूमिगत माफिया का भी कारक है---जो ''राजाओं'' को ''फतवा'' देता है कि वह अपने कलुषित धन से देवताओं को चढ़ावा चढ़ाकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें, जिससे वह यही सिद्ध करना चाहते हैं कि उन "तांत्रिकों" और उन "राजाओं" की नज़र में वह देवता भी उस पाप की कमाई के उतने ही लोभी हैं जितने कि वह तांत्रिक और "राजा"! इसी प्रकार यहां पर शनि और प्लूटो की युति उस पुलिस दारोगा या वकील का द्योतक हैं जो येन-केन-प्रकारेण एक हत्यारे को फांसी के फन्दे से छुड़ाने में प्रयत्नशील हैं जबकि उनको उसके जघन्य अपराध के विषय में पूरी जानकारी है। वह ऐसा केवल इस लिए कर रहे हैं कि उनको आगे उन्नति का अवसर या चुनाव के लिए टिकट या फिर लाखों की घूस मिल रही है। इस युति में शुक्र उस "उच्चकुल की महिला" को दर्शाता है जो सहर्ष पुंश्चली बनने को तैयार है यदि ऐसा करने से उसका "सामाजिक स्तर" कुछ ऊंचा होता हो।सूर्य जब इस परिधि में सम्मिलित होता है तो यही दर्शाता है कि ''उच्चतम अधिकारी'' की इसमें मौन स्वीकृति है---केवल इसलिए कि उसको इससे कलुषित सम्पत्ति की प्राप्ति होगी---क्योंकि धनभाव में मंगल अपनी नीच राशि कर्क से ४५ अंश का कोण बना रहा है---और यह ''राजा'' और ''प्रजा'' इसमें धर्म और ईश्वर को भी साथ में घसीट रहे हैं---क्योंकि आजतक किसी भी भ्रष्टाचारी ने अपने को नास्तिक नहीं बताया अपितु जो जितना ऊंचे दर्जे का घूसखोर होता है वह उतना ही अधिक पाखंडी भी! इस बात का द्योतक इन युति कारक ग्रहों का धर्म के कारक बृहस्पति से ६० अंशों का कोण है। इस प्रकार से ''घिरा हुआ चतुर्थ भाव'' उस जनसाधारण को दर्शाता है जो बिक्री-कर या आय-कर बचा-बचा कर सरकार को (जो कि जन-साधारण से ही बनी है!) ठगता है और अपने उस धन को विदेशी खातों में जमा करता है!

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक कार्ल जंग के शब्दों में "क्योंकि इस प्रकार की सर्वव्यापिनी प्रवृत्ति एक वैयक्तिक डगमगाहट न हो कर सामूहिक डगमगाहट है अतः महाभारत के जो श्लोक इस लेख के प्रारम्भ में दिए गए हैं वह साधारण तथा असाधारण, दोनों ही प्रकार की जनता पर लागू होते हैं। भले ही इस समय वह इन चेतावनियों की ओर ध्यान न दें परन्तु उन्हें देर सवेर में उसका प्रायश्चित करना ही पड़ेगा।

हां हो सकता है तब बहुत देर हो चुकी हो।

भारत के धनभाव में केवल एक ग्रह विराजमान है, नीच राशि में मंगल जो कि चारों खाने चित गिरा हुआ है क्योंकि एक ओर से तो उस मंगल के साथ शनि-शुक्र-सूर्य-प्लूटो-चतुर्थ भाव ४५ अंशों का कोण बना रहे हैं तो दूसरी ओर दशमभाव १३५ अंशों का और साथ में शत्रु (षष्ट) भाव से गुरू महाराज के साथ भी १३५ अंशो का कोण बन रहा है। द्वितीय भाव का स्वामी बुध नेप्चून के साथ ६० अंशों का कोण बना रहा है और क्योंकि नेप्चून अस्पष्टता, ''माया'' और मृगतृष्णा के लिए सर्वप्रसिद्ध है अतः कोई आश्चर्य नहीं है कि हमारे नेतागण खरबों रुपए की उधार की राशि देश की निजी संपत्ति कह कर जनता के सामने रख रहे है।

इस प्रकार से हमारी जन्मपत्रिका को मूलतः कुछ विशेष बलवान नहीं कहा जा सकता है, न तो शारीरिक (लग्न की) दृष्टि से न सामाजिक या शासन (दशम भाव) की दृष्टि से न आर्थिक (धनभाव) की दृष्टि से और यहां तक कि इसकी नींव (चतुर्थ भाव) भी बिल्कुल मज़बूत नहीं है।

आइए अब दिन वर्ष पद्धति के अनुसार इसका विश्लेषण करते हैं। यह सिद्धान्त कि जन्म लेने के पश्चात् प्रत्येक सायन सौर दिवस एक वर्ष का प्रतिनिधित्व करता है, दिन-वर्ष पद्धति कहलाता है। क्योंकि हमें यहां सुदूर भविष्य में अर्थात् २००२-२००३ में झांकना है अतः हमें यहां पर विवक्षित वर्ष से जन्म वर्ष घटाने हैं अर्थात (२००२–१६४७) = ५५ वर्ष। वर्षों की इसी संख्या को उतने ही दिनों में परिवर्तित करना है और फिर उस संख्या को जन्म दिवस में जोडना है अतः १५ अगस्त १६४७ + ५५ दिन = ६ अक्टूबर १६४७। अतः जब हम ६ अक्टूबर १६४७ की भा. स्टै. टा. की अर्द्धरात्रि की ग्रह स्थिति की गणना करेंगे तो वही स्वतंत्र भारत के लिए १५ अगस्त २००२ ईस्वी के ''प्रोग्रेशन'' होंगे।

प्रायः किसी क्षणविशेष का ग्रहस्पष्ट निकालना एक श्रमसाध्य कार्य होता है क्योंकि पंचांगों में ग्रहस्पष्ट प्रायः प्रातः ५-३० का दिया होता है। क्योंकि हमें ज्ञात है कि एक वर्ष = एक दिन के तो इससे हमें यह भी ज्ञात होता है कि १ घंटा = ३६५.२५ ÷ २४ दिन अर्थात् लगभग १५.२२ दिन। अतः क्योंकि यहां पर भा. मा. स. की अर्द्धरात्रि १५ अगस्त की द्योतक है तो प्रातः ५-३० का अभिप्राय हुआ (५-३० –०-०) =५-३० X १५.२२ = लगभग ८४ दिवस। अतः अक्टूबर ६, १६४७ की प्रातः ५-३० की ग्रहस्थिति द्योतक है १५ अगस्त २००२ + ८४ दिवस = नवम्बर ७, २००२ ई.। इस विश्वसमय मध्यरात्रि मापक को **Adjusted Calendar Date** अर्थात् ''सुविधानुसार परिवर्तित तारीख'' कहा जाता है।

प्रायः दशमभाव को ''सूर्य स्पष्ट'' द्वारा ''प्रोग्रेस'' किया जाता है। इस विधि में प्रोग्रेस्ट सूर्य स्पष्ट में से जन्मकालीन सूर्य स्पष्ट घटाया जाता है और जो दोनों का अन्तर होता है उसको जन्मकालीन दशमस्पष्ट में जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार से ''प्रोग्रस्ट दशमभाव'' ज्ञात किया जाता है। कभी कभी इसका साधन ''प्रोग्रेस्ट'' तिथि व समय के लिए बिल्कुल वैसे ही किया जाता है जैसे जन्मकालीन दशम निकाला जाता है अन्तर केवल इतना ही है कि उस समय सांपातिक काल प्रोग्रेस्ट समय व तिथि के लिए निकाला जाता है। यह विधि सत्य के अधिक निकट है परन्तु अन्तर यह है कि वेदों में तो एक सायन सौर दिवस को वर्ष का प्रतीक माना गया है जबकि पंचांगों का ग्रहस्पष्ट व सांपातिक काल एक काल्पनिक सावन सौर दिवस **mean fictitious sun** के अनुसार होता है। इन दोनों प्रकार के दिवस मानों में अन्तर ६० दिवस-वर्षो के अन्तराल में कोई बीस मिनटो तक का हो सकता है। क्योंकि शीघ्रतम गतिशील चन्द्रस्पष्ट में भी इतनी अवधि में अधिकाधिक १० कलाओं का अन्तर होसकता है अतः प्रोग्रेस्ट ग्रहगणित के लिए तो यह सावन दिन अनुसार सांपातिक काल ठीक ही हैं परन्तु ''प्रोग्रस्ट'' दशमभाव में यह अन्तर पांच अंशों तक का हो सकता है जिसका यह अभिप्राय हुआ कि कोई भी घटना प्रत्याशित समय से ५ वर्ष आगे पीछे हो सकती है। क्योंकि लग्न भी दशमस्पष्ट के साथ ही जुड़ा है अतः उसमें भी ऐसे ही कई वर्षों का अन्तर रहेगा। इसी बात को राबर्ट डे ल्यूस ने अपनी पुस्तक ''कम्प्लीट मेथड आफ प्रेडिक्शन्स'' में विस्तार से समझाया है। यद्यपि वह इस बात को समझ नहीं पाए हैं कि इस प्रकार के प्रोग्रेशन्स की सफलता के पीछे यह रहस्य है कि वेदों के अनुसार केवल ''एक सायन सौर दिवस (न कि सावन सौर दिवस) एक वर्ष के समान है'' पर उन्होंने खगोलिकी के काफी प्रमाण दिए हैं कि किस प्रकार से वास्तव में सायन सौर दिवस ही सावन दिवस की अपेक्षा अधिक युक्तिसंगत है। उन्होंने इस प्रकार से दशम स्पष्ट को प्रोगेस करने का नाम "दृक् सांपातिक काल से दशमभाव का प्रोग्रशन" रखा है परन्तु हमारे विचार से इसका अधिक उपयुक्त नाम "वेलान्तर युक्त सांपतिक काल से दशमभाव को प्रोग्रेस करना" है।

सबसे सुगम और उत्तम रीति यह है कि प्रोग्रस्ट दशमस्पष्ट का सांपातिक काल आदि बिल्कुल उसी प्रकार से निकाला जाए जैसे जन्म समय के लिए निकाला जाता है। उदाहरण वाली पत्री अर्थात् भारतवर्ष की प्रोग्रस्ट तिथि के लिए हमें यहां यह ६ अक्टूबर १६४७ की भा. स्टै. टा. की मध्यरात्रि के लिए दिल्ली के लिए सांपातिक काल ज्ञात करना है और यह बनता है ०घं. ४५मि. २से.। क्योंकि आजकल पंचांगों में प्रायः वेलान्तर नहीं छपा होता है अतः हमें यह अलग से निकालना होगा। यहां भी सर्वसुगम रीति यह है कि वर्तमान वर्ष अर्थात् १६६७ के पंचांग से इसका साधन किया जाए। इसके अनुसार १५ अगस्त १६६७ को स्पष्ट मध्यान्ह था १२घं ४मि २६से जिसका यह अभिप्राय हुआ कि उस दिन {(१२-४-२६)–(१२-०-०)} = +४मि २६से वेलान्तर था। अतः जन्मकालीन संशोधित सांपातिक काल होगा {(२१-८-१२)+(०-४-२६)} = २१घ १२मि ४३से.....(क)

६ अक्टूबर १६६७ को स्पष्ट मध्यान्ह है ११घं ४७मि १६से अतः उस दिन का वेलान्तर है :
{(११-४७-१६)–(१२-०-०)} = –१२मि ४१से। प्रोग्रेस्ट तिथि अर्थात् ६ अक्टूबर १६४७ को भा.स्टै.टा. मध्यरात्रि को दिल्ली के लिए सांपातिक काल था ०घं ४५मि २ से। अतः संशोधित सांपातिक काल होगा

{(०-४५-२)+(−१२मि ४१से)} = ०घं ३२मि २१से.....(ख)
(क) को (ख) में से घटाने से लब्ध है : {(०-३२-२१)−(२१-१२-३२)} =−२०-४०-११ क्योंकि यह ० से कम है अतः इसमें २४घंटे जोड़ने होंगे तो लब्ध होगा : {−(२०-४०-११)+(२४-०-०)}=३घं १६मि ४६से.....(ग)
असंशोधित जन्मकालीन सांपातिक काल में (ग) जोड़ने से प्राप्त होगा :
{(२१घं ८मि १२से+(३घं १६मि ४६से)}=२४घं २८मि १ से अर्थात् ०घं २८मि १से। यह १५ अगस्त २००२ ई॰ के लिए प्रोग्रेस्ट सांपातिक काल है। (क्योंकि यहां १६४७ के बदले १६६७ का वेलान्तर लिया गया है, यह हो सकता है कि इन दोनों वेलान्तरों में दस सेकण्ड तक का अन्तर हो परन्तु २० मिनटों के सांपातिक काल के अन्तर की अपेक्षा यह बिल्कुल ही नगण्य है)।

इस सांपातिक काल से १५ अगस्त २००२ई के लिए प्रोग्रेस्ट दशम स्पष्ट मेष राशि के ७अंश ४०कला होगा और तदनुसार दिल्ली का प्रोग्रेस्ट लग्न होगा कर्क राशि के १८अंश २३ कला। ६ नवम्बर २००२ ई. को अन्य प्रोग्रेस्ट इस प्रकार होंगे : सूर्य : तुला १४-५१; चन्द्र : ५-३२; बुध : वृश्चिक ६-१६; शुक्र : तुला २४-१८; मंगल : सिंह ४-३१; गुरु : वृश्चिक २६-५६; शनि : सिंह १६-५४; हर्शल (व) : मिथुन २६-६; नेप्चून : तुला १०-४३; प्लूटो : सिंह १४-३७; राहु : वृष २५-१५; {१५ अगस्त २००३ ई. के लिए प्रोग्रेस्ट दशम होगा मेष ८-३६ और तदनुसार लग्न : कर्क १६-१०}।

प्रोग्रेस्ट (और यहां तक कि जातक)के विषय में भी सर्वप्रथम और सबसे आवश्यक बात यह ध्यान में रखने योग्य है कि "पोग्रेशन" केवल इंगित मात्र होते हैं और इनकी परिभाषा कई प्रकार से की जा सकती है जो कि उनकी व्याख्या करने वाले के अनुभव और अध्ययन आदि पर निर्भर करता है। हर एक ग्रहयोग का केवल एक ही अभिप्राय है जो मेरी समझ में आया है, यह असम्भव है क्योंकि हो सकता है कि उसी इंगित का कोई और अभिप्राय हो जो मेरी समझ में नहीं आया हो। उदाहरणार्थ सूर्य और शुक्र का कोई भी पारस्परिक प्रोग्रेशन "आत्मा" और "प्रेम" का द्योतक हो सकता है अतः होसकता है कि ऐसे प्रोगेशन में आप को "मन का मीत" मिल जाए। अब यदि इन दोनों ग्रहों में से कोई दशमभाव में हो तो यह भी हो सकता है कि "मन का मीत" मिलने के बदले आपको कोई अच्छी नौकरी मिल जाए। यदि इनका पारस्परिक प्रोग्रेशन कोण क्लिष्ट है तो यह भी हो सकता है कि वह व्यक्ति उस समय किसी "वैश्यालय" का चक्कर लगा ले। यदि दोनों में से काई ग्रह पंचमस्थ है और अन्य ग्रहों से पीड़ित है तो इस का यह भी अभिप्रयाय हो सकता है कि जो शेयर आपके पास हैं उनका अवमूल्यन हो और आप की अत्याधिक आर्थिक हानि हो। एक बात निश्चित है कि जब भी कभी दो पाप ग्रहों के बीच प्रोग्रेस्ट में पारस्परिक कोण क्लिष्ट हों तो उनका इंगित इस बात की ओर है कि शारीरिक या आर्थिक या चारित्रिक या "राजदरबार" के क्षेत्र में कोई क्षति पहुँचने वाली है। यह भी हो सकता है कि वह किसी एक क्षेत्र में ही हो या दो में या सब में ही।

दूसरी बात ध्यान में रखने वाली यह है कि एक अच्छे प्रोग्रेशन द्वारा "क्लिष्ट" प्रोग्रेशन का उन्मूलन नहीं होता है अपितु यह दोनों अपना प्रभाव दिखाते है। कभी अच्छे फल के बाद हानि होती है तो कभी ठीक इसके विपरीत होता है।

प्रोग्रस्ट देखते हुए एक बात और ध्यान मे रखने वाली यह भी है कि क्या कोई धीमी गति वाला ग्रह जैसे वृहस्पति, शनि, हर्शल, नेप्चून या प्लूटो जन्मकालीन ग्रहों से विशेषतः लग्न या दशम से किसी कोण से एक अंश की परिधि में है क्योंकि कभी कभी यह पचास-साठ वर्षो या इससे भी अधिक समय के लिए--यहां तक कि सारे जीवन के लिए ही, एक अंश की परिधि में रहते है और उस सारी अवधि को अपने प्रभाव से प्रभावित करते रहते हैं। अतः इनको background aspects अर्थात् परिपेक्ष के कोण कहा जाता है। यदि इन में से कोई कोण क्लिष्ट हो तो वह उतने सारे समय के लिए मानो सुलगती हुई चिंगारी हैं जो अवसर पाते ही भडक उठ सकती है। प्लूटो सब ग्रहों की अपेक्षा धीमी गति वाला ग्रह है और इसी के अनुपात में कभी कभी कोई और ग्रह जो वक्री या मार्गी होने वाला होता है इतनी ही धीमी गति वाला हो सकता है। यहां भी एक बात ध्यान में रखने योग्य है कि यदि प्रोग्रेस्ट में पारस्परिक कोण बनाने वाले दो ग्रह जन्मसमय भी परस्पर कोई कोण बना रहे थे तो जन्मकालीन कोण का प्रभाव ही अत्यधिक बलवान रहेगा। उदहरणार्थ, यदि जन्मसमय दो ग्रहों का पारस्पारिक कोण क्लिष्ट रहा हो और प्रोग्रस्ट में वह ६० या १२० अशों का भी कोण बना रहे हैं तो प्रायः वह प्रोग्रेशन सब्ज़ बाग दिखाकर अन्ततः छलावा ही सिद्ध होते हैं। इसके विपरीत यदि दो ग्रह प्रोग्रेस्ट में कोई क्लिष्ट कोण भी बना रहे हैं परन्तु जन्मसमय उन्हीं दो ग्रहो का पारस्परिक कोण शुभ था तो संभव है कि काफी दौड़-धूप के पश्चात् वह मनोवांछित फल की प्राप्ति कराले। यदि दो ग्रहों का जन्मकालीन पारस्परिक कोण भी मृदु हो और प्रोग्रस्ट में भी शुभ कोण बना रहे हों तो संभवतः अकस्मात् ही इष्ट वस्तु की प्राप्ति होगी। और यदि किन्हीं दो ग्रहों का पारस्परिक जन्मकालीन कोण भी "क्लिष्ट" हो और वही प्रोग्रेस्ट में भी "क्लिष्ट" कोण बना रहे हों तो अत्यधिक संभावना है कि वह समय दर दर की ठोकरे दिला दे --- विशेषतः यदि ऐसा कोण बनाने वाले ग्रह क्रूर हों जैसे मंगल व शनि!

१) अपनी मातृभूमि के उदाहरण वाली जन्मपत्री में हम यह देख रहे हैं कि प्लूटो, जो कि जन्मांग में ही लगभग सभी ग्रहों के साथ "क्लिष्ट कोण" बना रहा है, २००२/२००३ ईस्वी में चतुर्थ भाव के साथ पूर्ण युति और दशम के साथ प्रतियुति में होगा। इस प्रकार यह ग्रह अपने सम्पर्क में आने वाले हर क्षेत्र को विषाक्त कर देता है (प्लूटो नैसर्गिक राशिचक्र में 'वृश्चिक' का स्वामी है, और इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "बिच्छू"!)। क्योंकि यही प्लूटो उस समय धनभावस्थ मंगल के साथ ४४/४५ अंशों का भी कोण बना रहा होगा अतः यह सम्भव है कि जिन "कर्ज़दारों" को हमारे "नेताओं" ने अपनी आत्मा के साथ साथ अपनी मातृभूमि की भी बेचा होगा वही उस समय अपना "सुरक्षित धन" वापस मांगलें।

२) दूसरा धीमी गति वाला ग्रह नेप्चून उस समय बारहवें भाव में स्थित मध्यम राहु से १३५ अंशों का कोण बना रहा होगा। यह हमारी अपने देश के शत्रुओं (छठें भाव) के प्रति यह गलत आभास का परिचायक है कि "वह तो दुर्बल हैं ओर हम उनका सामना करने के लिए पूर्णतया सक्षम हैं"।

३) दशमस्पष्ट का सह-स्वामी शनि उस समय भी प्रोग्रेस्ट में जन्मकालीन बृहस्पति के साथ ६० अंशों के कोण की परिधि में होगा।

४) सूर्य जन्मकालीन शुक्र के साथ ६० अंशों का कोण बनाएगा। यद्यपि यह बहुत ही अनुकूल कोण माना जाता है किन्तु जन्मांग में इन दोनों ग्रहों की परस्पर युति है और यह दोनों ग्रह ही अन्य ग्रहों के साथ अत्यधिक "क्लिष्ट" कोण बना रहे हैं जो इस बात का द्योतक है कि इन की जो मौलिक दुर्बलताएं व न्यूनताएं हैं वह उस समय के "शासकों" (सूर्य) की चरित्रहीनता को दर्शाती हैं जो जनसाधारण को (सूर्य चतुर्थ का स्वामी है) अपनी उच्छृंखलता का अनुकरण करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। इस प्रकार वह समय देश के चारित्रिक दीवालिएपन की ओर इंगित करता है।

५) सूर्य लग्न के साथ ४५ अंशों का कोण बनाएगा। क्योंकि सूर्य चतुर्थ अर्थात् जनसमूहों का स्वामी है और क्योंकि लग्न भी देश की जनता का ही द्योतक है अतः ऐसा लगता है कि सारे का सारा देश ही कुछ आत्मघाती कदम उठाएगा।

६) बुध जो कि लग्न का स्वामी है, उस समय दशमभाव के सह-स्वामी सनकी स्वभाव व स्वतंत्रता के प्रतीक यूरेनस के साथ १३५ अंशों का कोण बनाएगा---होसकता है कि भारतवर्ष का प्रत्येक मुहल्ला उस समय तक "अन्तिम आज़ादी" अर्थात् अराजकता के कगार पर पहुंच चुका होगा!

७) "राजनर्तकी" शुक्र (क्योंकि शुक्र जन्मांग में अत्यधिक पीड़ित अवस्था मे है) सनकी प्रकृति वाले दशमस्पष्ट के स्वामी हर्शल के साथ १२० अंशों का कोण बनाएगा। लगता है "शासक वर्ग" उस समय अपनी रखेलों का भी वैसे ही प्रदर्शन करेगा जैसे कि पाप की कमाई से विदेशों में खरीदे गए आभूषणों की!

८)इन ही सब इंगितों में जब आप उस समय के प्रोग्रेस्ट चन्द्रमा के नवम्बर २००२ इस्वी में बुध की युति के साथ प्रारम्भ होकर शनि, प्लूटो, शुक्र, चतुर्थ के साथ युति का भी आकलन करेंगे तो स्पष्ट ही है कि हमारे सिरों पर एक तबाही ही आने वाली है जो हमारे "शासकों" द्वारा लाई जाएगी (क्योंकि चन्द्रमा दशम के साथ प्रतियुति कर रहा होगा) जिन "निकम्मे शासकों" को स्वयं "जनता" ने ही शासक बनाया होगा (क्योंकि चन्द्रमा चतुर्थ के साथ युति कर रहा होगा)

९) देश के सम्मान व शासकवर्ग का द्योतक प्रोग्रेस्ट दशमस्पष्ट उस समय प्रोग्रेस्ट नेप्चून के साथ जो कि "लोमड़ी की भान्ति" मक्कारी का द्योतक है, १८० अंशों का कोण बनाएगा। इस प्रकार इस दुष्चक्र की परिणति जनसमुदाय (प्रोग्रेस्ट चतुर्थभाव की नेप्चून के साथ युति) व "शासकवर्ग" (प्रोग्रेस्ट दशम नेप्चून के साथ प्रतियुति कर रहा होगा) पर छलावे और कपट की पराकाष्ठा में होगी।

१०) सूर्य प्रोग्रेस्ट प्लूटो के साथ ६० अंशों का कोण बनाएगा। क्योंकि यह दोनों ग्रह जन्मांग में पूर्ण युति में हैं अतः यह ऊपर से लाभदायक दीखने वाला कोण वास्तव में एक मीठे ज़हर की भान्ति होगा। (क्या देश में उस समय केवल माफिया का ही राज्य होगा, क्योंकि प्लूटो माफिया का द्योतक है और सूर्य शासक वर्ग का!)

११) इतने सारे उत्पातसूचक प्रतीकों की तुलना में आशा की एकमात्र किरण केवल यह दिख रही है कि उस समय बृहस्पति जन्मकालीन चन्द्रमा से १२० अंशों का कोण बना रहा होगा। जन्मांग में बृहस्पति छठे भाव में होने के कारण विशेष बलशाली स्थिति में नहीं है और इसी प्रकार चन्द्रमा भी तृतीय भाव में होने के कारण निर्बल ही है। इसके अतिरिक्त गुरु उस समय प्रोग्रेस्ट में जन्मकालीन मध्यम राहु के साथ १८० अंशों का कोण बना रहा होगा। अतः यह प्रोग्रेशन उपर्युक्त स्थितियों से कुछ छुटकारा दिलाएगा ऐसी आशा कम ही है।

१२) सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि Alcoyne अर्थात् "कृत्तिका" योगतारा के मध्यमभोगांश आजकल ५६अंश ५७ कला है अतः इस "तारे" ने लग्न के साथ विनाशकारी युति पहले ही एक अंश की परिधि में प्रारम्भ की है। इसी प्रकार Alpha Cancri अर्थात् "आश्लेषा" नामक "क्रूर" योगतारा के मध्यमभोग आजकल १३३अंश ३६ कला है अतः यह तारा उस समय प्लूटो-शनि के साथ पूर्ण युति कर रहा होगा और चतुर्थ भाव के साथ युति और दशमस्पष्ट के साथ प्रतियुति में एक अंश की परिधि में होगा। यह इस बात को दर्शाता है कि जनसमुदाय (चतुर्थ भाव) व "शासकवर्ग" (दशमस्पष्ट) दोनों ही देशद्रोही गतिविधियों में लगे होंगे।

इन घातक संकेतों के परिणामों का सारभूत उल्लेख करते हुए हम इस रिस्ते हुए नासूर को नहीं भूल सकते हैं कि हमारे देश के नपुंसक व दृष्टिहीन नेताओं के ही कारण हम अपनी मातृभूमि के एक बहुत बड़े भाग से हाथ धो बैठे हैं, जिसको कि हम बड़े गर्व से "पाकिस्तान द्वारा अधिकृत कश्मीर" कहते हैं! इसी प्रकार देश के इन्हीं "कर्णधारों" ने इसी मातृभूमि का एक और भाग एक और "पड़ोसी "को दान में दिया है -- हमारे नेतागण वह सारी सम्पत्ति दान करने में किसी दानवीर से कम नहीं है जो उनकी निजी सम्पत्ति नहीं है। अब वही "कर्णधार" इसी मातृभूमि की महान परम्पराओं की दुहाई देते हुए कहते हैं कि "दान में दी हुई सम्पत्ति वापस मांगना पाप है" जबकि वह इस कथन से वास्तव में अपनी नपुंसकता का ही प्रदर्शन कर रहे हैं।

तो क्या हमारा देश भी भूतपूर्व रशिया (रूस) की भान्ति अलगाववादी अलग-अलग गुटों की दैत्यकाय अहम्भावनाओं का शिकार होकर छोटे छोटे टुकड़ों का एक समूह बनने जारहा है? क्योंकि जितने अधिक "स्वतंत्र देश" होंगे उतने ही अधिक उन देशों के "स्वतंत्र शासक" भी हो सकते हैं और

जिस प्रकार से आजकल प्रत्येक "नेता" "देश का प्रधान मंत्री" या "राष्ट्रपति" बनने के सपने संजो रहा है उसका एकमात्र यही उपाय दीखता है कि देश के प्रत्येक मुहल्ले को "स्वतंत्र देश" घोषित किया जाए और ऐसे "प्रत्येक देश" का एक निजी संविधान हो ताकि हमारे इस समय के नेतागण अपने अपने टुकड़े के "सार्वभौम स्वतंत्र शासक" कहला सकें। लगता है आजकल जिस प्रकार से "क्षेत्रीय पार्टियों" को प्रोत्साहित किया जारहा है वह वास्तव में इसी बात का अग्रदूत है।

ऐसे "एकछत्र शासकों" को उस समय केवल इस बात की चिन्ता करनी होगी कि उनके पड़ोसी अन्य "एकछत्र शासक" उनपर आक्रमण न करलें जैसे "सिकन्दराबाद द्वारा हैदराबाद पर आक्रमण" या "करोल बाग ने कनाट प्लेस पर बम्बारी की"-----जो सब वास्तव में इस समय भी किसी न किसी बहाने से हो ही रहा है! हो सकता है कि किसी "भ्राताश्री" द्वारा युद्ध में लथेड़े जाने के पश्चात् शेष जीवित रहने वाले कुछ लोग आपस में पुनः एक हो जाएंगे और शायद तभी यह उक्ति चरितार्थ होगी कि "....भगवान शंकर की भान्ति प्लूटो उसी पहली सृष्टि के अवशिष्ट अवयवों से एक नई सृष्टि की रचना भी करते हैं, अतः यह भी सम्भव है कि उस अवधि के पश्चात् भारत का नवनिर्माण अर्थात् अभ्युदय होगा"।

हम केवल यही कर सकते हैं कि इससे पहले कि हम पूरी तरह नष्ट हो जाएं, भगवान हमें सद्बुद्धि दे दे कि हम भस्मासुर जैसे आत्मघाती अहंकारों व स्वार्थों को छोड़कर "बहुजन हिताय" एक होजाएं क्योंकि "बहुजन" ही नहीं रहेंगे तो "व्यक्ति" और "वैयक्तिकता" कहां रहेगी?

"गायत्री मंत्र" के "धियो यो नः प्रचोदयात्" शब्दों का अक्षरशः अर्थ है कि "वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सही रास्ते पर ले आए"। अतः उसी परमपिता से यह प्रार्थना है कि वह "हमें दर-दर की ठोकरें खिलाए बिना ही हमारी अक्ल को सही रास्ते पर ले आए"! तथास्तु!

सायन लग्नारम्भ काल जानने की सुगम रीति यों है:- उदाहरणार्थ बम्बई का १५ अगस्त १९६७ का सायन वृषभ लग्नारम्भ काल ज्ञात करना है। इस दिन का स्थानीय मध्यरात्रि का सांपातिक काल इसी पंचांग के अगस्त मास के "अवैदिक निरयण ग्रह स्पष्ट" वाले पृष्ठ पर २१घं ३२मि ५१से. दिया है। इसी पंचांग मे दी गई "सायन दशम स्पष्ट तथा भारत के प्रमुख स्थानों की लग्न स्पष्टार्थ सारिणी" में बम्बई कालम के ठीक नीचे और मेष लग्न के २९अंश ५० कला के ठीक सामने १९घं ३५मि ५से. सांपातिक काल दिया है। अतः त्रैराशिक विधि से सायन वृषभ राशि के ०अंश ० कला के लिए सांपातिक काल १९घं ३५मि ३८से. बनेगा। इसमें से मध्यरात्रि का स्थानीय सांपातिक काल घटाने से {(१९घं ३५मि ३८से)−(२१घं ३२मि ५१से)}= −१घं ५७मि १३से प्राप्त होगा। क्योंकि यह शून्य अंश से कम है इसमें २४ घंटे जोड़ने से यह २२घं २मि ४८से. बनेगा। यह बम्बई का उस दिन का वृषभ लग्नारम्भ का अनुमानित स्थानीय समय है। जैसा कि आप जानते ही हैं,स्थानीय समय से सांपातिक काल बनाने के लिए उसमें प्रति घंटा ६.६ सेकण्ड के हिसाब से जोड़ने होते हैं। अब क्योंकि यहां सांपातिक काल से स्थानीय समय निकालना है अतः यह शुद्धि जोड़ने के बदले घटानी होगी। यह शुद्धि २२घं २मि ४८से. के लिए होगी ३मि ३८से और परिष्कृत स्थानीय समय होगा २१घं ५६मि १०से.। क्योंकि बम्बई का स्थानीय समय भारतीय स्टै. समय से ३८मि ४०से. कम है अतः इस स्थानीय समय को भा. स्टै. टा. में बदलने के लिए उसमें यह अवधि जोड़नी होगी, घटानी नहीं। अतः बम्बई में १५ अगस्त १९६७ को सायन वृषभ लग्नारम्भ काल होगा {(२१घं ५६मि १०से.)+(०घं ३८मि ४०से)}=२२घं ३७मि ५०से. अर्थात् सायं १०बजे ३७मि ५०से भा. स्टै. टा.। केन्द्रस्थल भारत तथा बम्बई के सांपातिक काल का अन्तर है +६से वह घटाने से यह स्टै. टा. होगा १०घं ३७मि ४४से. सायं। इसी विधि से इस वर्ष के सांपातिक काल से किसी भी गत या आगामी वर्ष के किसी भी दिन, किसी भी सायन लग्न का आरम्भ काल ज्ञात हो सकते हैं जिसमें अधिकतम अन्तर ३ मिनटों का होगा।

जनवरी १९६७,शक सं १९१८, वि.सं २०५३,पौष कृष्ण ७ से माघ कृ 7तक, उत्तरायण, दक्षिण गोल , शिशिर ऋतु

(पौष कृष्ण पक्ष) तिथि आदि समा.काल भा. स्टै. टा श सौ

जन	वार	ति	घ	मि	नक्ष	घ	मि	यो	घ	मि	कर	घ	मि	पौ	पौ
१	बुध	स	१८	१८	उफ	५५	३६	सौ	८	२६	बव	१८	१८	१९	१८
२	गुरु	अ	२०	२	ह	१७	५४	शो	८	५३	बा	७	१५	१२	१६
३	शु	नव	२०	५६	चि	१६	२६	अ	८	४५	तै	८	३७	१३	२०
४	श	दश	२१	४	स्वा	२०	८	सुक	७	५६	व	६	८	१४	२१
५	रवि	एक	२०	१५	वि	१६	५८	धृ	६	३२	बव	८	४७	१५	२२
"	"	..	..	..	..	..	..	शू	२८	२३	बा	२०	१५	"	"
६	सो	द्वा	१८	३६	अनु	१८	५६	गंड	२५	३६	कौ	७	३२	१६	२३
७	मंग	त्र	१६	१३	ज्ये	१७	१६	वृ	२२	१७	व	१६	१३	१७	२४
८	बुध	चतु	१३	१६	मूल	१५	०	ध्रुव	१८	३२	श	१३	१६	१८	२५
९	गुरु	अम	६	५६	पूष	१२	२२	व्या	१४	३०	ना	६	५६	१६	२६

विक्रम स० २०५३ पौष शुक्ल पक्ष

१०	शु	प्र	६	२३	उष	६	३३	हर्ष	१०	२०	बव	६	२३	२०	२७
"	"	द्वि	२६	४६	..	..	..	..	..	..	बा	१६	३६	"	"
११	श	तृ	२३	२५	श्रव	६	४५	वज्र	६	११	तै	१३	७	२१	२८
"	"	..	..	..	ध	२८	८	सि	२६	११	गर	२३	२५	"	"
१२	रवि	चतु	२०	२०	शत	२५	५१	व्य	२२	२८	व	६	५०	२२	२६
१३	सो	पच	१७	४१	पूभ	२४	३	वरी	१६	७	बा	१७	४१	२३	मा
१४	मंग	ष	१५	३४	उभ	२२	४८	परि	१६	१२	तै	१५	३४	२४	२
१५	बुध	स	१४	४	रेव	२२	८	शि	१३	४५	व	१४	४	२५	३
१६	गुरु	अ	१३	१०	अश्	२२	५	सि	११	४८	बव	१३	१०	२६	४
१७	शु	नव	१२	५२	भर	२२	३५	सा	१०	१६	कौ	१२	५२	२७	५
१८	श	दश	१३	६	कृ	२३	३६	शुभ	६	१५	गर	१३	६	२८	६
१९	रवि	एक	१३	५१	रो	२५	४	शुक्र	८	३५	वि	१३	५१	२९	७
२०	सो	द्वा	१५	२	मृ	२६	५५	ब्रह्म	८	१५	बा	१५	२	३०	८
२१	मंग	त्र	१६	३५	आ	२६	७	ऐंद्र	८	१४	तै	१६	३५	मा	६
२२	बुध	चतु	१८	२६	पुन	--	--	वैधृ	८	२८	व	१८	२६	२	१०
२३	गुरु	पू	२०	४१	पुन	७	३८	विष्ट	८	५६	वि	७	३३	३	११

विक्रम स० २०५३ माघ (मुख्य पौष) कृष्ण पक्ष

२४	शु	प्र	२३	८	पु	१०	२४	प्री	६	३६	बा	६	५२	४	१२
२५	श	द्वि	२५	४६	श्ले	१३	२३	आ	१०	२६	तै	१२	२५	५	१३
२६	रवि	तृ	२८	२८	मघ	१६	२६	सौ	११	२३	व	१५	७	६	१४
२७	सो	चतु	-	-	पूफ	१६	३५	शो	१२	२२	बव	१७	४८	७	१५
२८	मंग	चतु	७	७	उफ	२२	३३	अ	१३	१५	बा	७	७	८	१६
२९	बुध	पच	६	३१	ह	२५	६	सुक	१३	५५	तै	६	३१	६	१७
३०	गुरु	ष	११	२८	चि	२७	१४	धृ	१४	१४	व	११	२८	१०	१८
३१	शु	स	१२	४८	स्व	२८	३७	शूल	१४	४	बव	१२	४८	११	१९

ति	व्रत-पर्व-त्योहार आदि (भा. स्टै. टाईम में)
१	ई.नववर्ष १९६७ प्रा, जुलियन अहर्गण २४५०४५०; कलि अहर्गण १८६१९८४; स्फुट परमाक्रान्ति २३अ२६क १३वि; धूनन संस्कार+१.४वि; सरकारी अयनाश २३अ ४८क ५६वि
२	अष्टक श्राद्ध
४	पार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)
५	सफला एकादशी
६	एपिफैनी (ईसाई)
६	वकुल व यक्ष अमावस्या
११	रमज़ान (रोज़ा) प्रारम्भ
१२	लोहड़ी (पंजाब व जम्मू-कश्मीर आदि)
१३	सरकारी भोगी (द. भा)
१४	४-२८ सूर्यकी अवैदिक निरयण मकर संक्रान्ति--- पुण्यकाल १४ को ही; वेदो व अन्य धर्म-शास्त्रों के अनुसार सूर्य की केवल सायन मकर संक्रान्ति ही असली मकर संक्रान्ति है जो प्रति वर्ष २१/२२ दिसम्बर को होती है।अवैदिक मकरादि स्नान,तिल व शिशिर सं. व्रत; पोंगल (द.भा.);माघी (हि. प्र); सरकारी मकर संकान्ति बंगाल;माघ बिहू (असम)
१५	गुरु गोविन्द सिंह ज. ;मत्तु पोंगल;कणुवु (द.भा)
१६	पुत्रदा एकादशी
२०	६-१३सूर्य की सायन (वास्तविक) वैदिक कुम्भ सं.; वैदिकमास तपस्या प्रा.
२१	रा. माघ मास प्रा.
२३	पौषी पूर्णिमा; माघ स्नान प्रारम्भ; पुष्याभिषेक यात्रा नेताजी जयन्ती; तई पूसम (द. भा)
२६	गणतंत्र दिवस
२७	सकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी
२८	लाला लाजपतराय जयन्ती
३०	महात्मा गांधी पुण्यतिथि
३१	स्व.विवेकानन्द ज.;साहिब ७; शहादते हज़रत अली

स्थानीय समय में				दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.				वैदिक सायन राशि चार				निरयण चन्द्र चार				ग्रहो का अवैदिक निरयण चार				
अं. स्पष्ट मध्यान्ह				में सूर्योदय				व सूर्यास्त				ति	घं	मि	राशि	ति	घं	मि	ग्रह	राशि
ति	घ	मि	से	घ	मि	से	घ	मि	से	३	१३	४१	मंग तुला	३	६	४६	तुला	५	१२	२६	शुक्र	धनु
०	१२	३	४	७	१८	०	१७	३०	३०	१०	११	२	शुक्र मकर	५	१४	५	वृश्चि	१४	४	२८	सूर्य	मकर
२	१२	४	०	७	१८	३०	१७	३१	५४	२०	६	१२	सूर्य कुम्भ	७	१७	१६	धनु	२६	११	२८	शुक्र	मकर
४	१२	४	५६	७	१८	५३	१७	३३	१६	२१	२०	४३	गुरु कुम्भ	६	१७	४०	मकर	अवैदिक काल्पनिक नक्षत्र चार				
६	१२	५	४६	७	१९	१७	१७	३४	४६	२५	५	१३	रप रा क	११	१७	२४	कुम्भ	५	१६	४६	बुध	व मूल
८	१२	६	४१	७	१९	२२	१७	३६	२०					१३	१८	२७	मीन	५	१२	२६	शुक्र	मूल
१०	१२	७	३१	७	१९	२८	१७	३७	५६					१५	२२	८	मेष	१०	२१	४०	हर्शल	श्रवण
१२	१२	८	१६	७	१९	२७	१७	३६	२७	वैदिक सायन चन्द्र संचार				१८	४	४७	वृषभ	१०	२१	५८	सूर्य	उषा
१४	१२	६	४	७	१९	२१	१७	४१	८	१	८	१	तुला	२०	१३	५७	मिथु	१६	४	३	शुक्र	पूषा
१६	१२	६	४६	७	१६	१३	१७	४२	४७	३	१८	३१	वृश्चिक	२३	०	५६	कर्क	१७	२३	१५	मंगल	हस्त
१८	१२	१०	२५	७	१८	४८	१७	४४	२६	६	०	५६	धनु	२५	१३	२३	सिंह	२१	१५	५६	बुध	पूषा
२०	१२	११	२	७	१८	२४	१७	४६	१२	८	३	२४	मकर	२८	२	२१	कन्या	२४	०	१६	सूर्य	श्रवण
२२	१२	११	३५	७	१७	५४	१७	४७	४८	१०	३	३०	कुम्भ	३०	१४	१६	तुला	२६	१६	३५	शुक्र	उषा
२४	१२	१२	६	७	१७	१०	१७	४६	३२	१२	३	२१	मीन									
२६	१२	१२	३३	७	१६	२२	१७	५१	१४	१४	४	५२	मेष	वक्री/मार्गी				सरकारी अयनांश				
२८	१२	१२	५७	७	१५	३३	१७	५२	५१	१६	६	११	वृषभ	१३	२	११	बु व	९:२३.४८.५६; ७:२३-४८-५७				
३०	१२	१३	१८	७	१४	३६	१७	५४	३३	१८	१६	२३	मिथुन					११:२३-४८-५८;२०:२३-४८-५६;				
अवैदिक निरयण चान्द्र स्थितियां आदि										२१	१	५६	कर्क					२४:२३-४६-०				
१-६-४७:शून्य द क्रा;१-१२-५३:शू उ शर										२३	१३	२०	सिंह	८-२-३६;अधिकतम क्रा १८द२५; ८-७-५:अधिकतम								
शर ५दर; ६-६-५६:अमान्त चन्द्र ८.२५.८;										२६	१	५६	कन्या	१०-१४-१३ चन्द्र निकटतम;१४-४-१०: शून्य उ क्रा;								
१४-६-५३ शून्य उ शर; २१.१.३५ अधिक. क्रा										२८	१४	५१	तुला	१८उ२२; २१.३.२५:अधिक. शर ५द४; २३-२०-४१:								
पूर्णिमान्त चन्द्र ३.६.५१; २५.२२.१:चन्द्र अति										३१	२	१७	वृश्चिक	दूर; २८-१४-५२ शून्य उ शर;२८-१४-५८ शू द क्रा								

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टे. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT म.रा.सा.का Hr m se	SUN सूर्य - रवि Si d m se रा अं क वि	DEC. क्रान्ति d m अं क	GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र Si d m se रा अं क वि	LAT. शर d m अं क	DEC. क्रान्ति d m अं क	DELHI MOO दिल्ली चन्द्र Si d m se रा अं क वि	LAT. शर d m अं क'	DEC. क्रान्ति d m अं क'	MERCURY बुध Si d m se रा अं क वि
ति	वार	घ मि से									
1	We	6 41 50	8 16 47 31	23S 0	5 4 55 22	0S20	0N12	5 5 6 15	0S44	0N14	8 19 17 27
2	Th	6 45 46	8 17 48 40	22S55	5 16 59 44	0N44	3S36	5 17 20 2	0N21	4S 6	8 17 56 41
3	Fr	6 49 43	8 18 49 50	22 50	5 29 20 21	1N48	7S20	5 29 49 38	1 24	7 53	8 16 35 15
4	Sa	6 53 40	8 19 50 60	22 44	6 12 2 32	2 47	10 50	6 12 40 5	2 24	11 25	8 15 15 48
5	Su	6 57 36	8 20 52 10	22 37	6 25 10 49	3 40	13 56	6 25 55 26	3 16	14 31	8 14 0 45
6	Mo	7 1 33	8 21 53 21	22 30	7 8 48 6	4 23	16 23	7 9 37 58	3 57	16 58	8 12 52 8
7	Tu	7 5 29	8 22 54 31	22 23	7 22 54 46	4 51	17 57	7 23 47 29	4 24	18 29	8 11 51 32
8	We	7 9 26	8 23 55 42	22 15	8 7 28 2	5 2	18 24	8 8 20 36	4 33	18 52	8 11 0 3
9	Th	7 13 22	8 24 56 52	22 7	8 22 21 44	4 52	17 37	8 23 10 48	4 22	18 2	8 10 18 19
10	Fr	7 17 19	8 25 58 2	21 58	9 7 26 54	4 22	15 36	9 8 9 13	3 51	15 58	8 9 46 34
11	Sa	7 21 15	8 26 59 12	21 49	9 22 33 17	3 34	12 31	9 23 6 8	3 3	12 52	8 9 24 44
12	Su	7 25 12	8 28 0 22	21 40	10 7 31 9	2 32	8 38	10 7 52 43	2 0	8 60	8 9 12 28
13	Mo	7 29 8	8 29 1 31	21 30	10 22 12 52	1 20	4 17	10 22 22 22	0 49	4 42	8 9 9 18
14	Tu	7 33 5	9 0 2 39	21 19	11 6 33 46	0 4	0N13	11 6 31 19	0 25	0N15	8 9 14 38
15	We	7 37 2	9 1 3 47	21 9	11 20 32 5	1S10	4S35	11 20 18 29	1S38	4S 4	8 9 27 50
16	Th	7 40 58	9 2 4 54	20 57	0 4 8 17	2S18	8 36	0 3 44 52	2 45	8 2	8 9 48 15
17	Fr	7 44 55	9 3 5 60	20 46	0 17 24 21	3 16	12 5	0 16 52 44	3 44	11 29	8 10 15 14
18	Sa	7 48 51	9 4 7 5	20 34	1 0 22 55	4 4	14 53	0 29 44 53	4 31	14 17	8 10 48 13
19	Su	7 52 48	9 5 8 9	20 22	1 13 6 44	4 38	16 54	1 12 24 8	5 6	16 20	8 11 26 35
20	Mo	7 56 44	9 6 9 13	20 9	1 25 38 12	4 58	18 4	1 24 52 55	5 27	17 32	8 12 9 50
21	Tu	8 0 41	9 7 10 16	19 56	2 7 59 18	5 4	18 22	2 7 13 10	5 34	17 53	8 12 57 29
22	We	8 4 38	9 8 11 18	19 42	2 20 11 32	4 56	17 48	2 19 26 21	5 26	17 22	8 13 49 7
23	Th	8 8 34	9 9 12 19	19 28	3 2 16 7	4 34	16 26	3 1 33 31	5 6	16 3	8 14 44 19
24	Fr	8 12 31	9 10 13 19	19 14	3 14 14 11	4 1	14 22	3 13 35 38	4 33	14 1	8 15 42 46
25	Sa	8 16 27	9 11 14 19	19 0	3 26 6 58	3 17	11 43	3 25 33 45	3 50	11 22	8 16 44 8
26	Su	8 20 24	9 12 15 18	18 45	4 7 56 9	2 25	8 36	4 7 29 21	2 58	8 15	8 17 48 10
27	Mo	8 24 20	9 13 16 16	18 29	4 19 43 58	1 26	5 8	4 19 24 26	1 59	4 46	8 18 54 37
28	Tu	8 28 17	9 14 17 13	18 14	5 1 33 22	0 24	1 28	5 1 21 44	0 56	1 3	8 20 3 16
29	We	8 32 13	9 15 18 10	17 58	5 13 27 59	0N40	2S16	5 13 24 43	0N 8	2S45	8 21 13 56
30	Th	8 36 10	9 16 19 6	17S42	5 25 32 7	1S44	5S58	5 25 37 31	1N12	6 30	8 22 26 27
31	Fr	8 40 6	9 17 20 2	17S25	6 7 50 34	2N44	9S30	6 8 4 42	2N12	10S 4	8 23 40 42

Dt	VENUS शुक्र Si d m se रा अं क' वि''	MARS मंगल Si d m se रा अं क' वि''	JUPITER Makar गुरु मकर में रा अं क' वि''	SATUR Mina शनि मीन अं क' वि''	URANU Makar हर्शल मकर अं क' वि''	NEPTU Makar नेप्चू मकर अं क' वि''	PLUTO Vrischik प्लूटो वृश्चिक अं क' वि''	M RAHU Kanya मध्यम राहु अं क' वि''	T RAHU स्पष्ट राहु कन्या अं क' वि''
1	7 24 37 52	5 5 25 20	9 1 21 13	7 31 12	9 27 14	3 0 46	10 34 11	9 14 25	8 37 20
2	7 25 52 56	5 5 45 9	9 1 35 6	7 34 15	9 30 33	3 2 59	10 36 11	9 11 14	8 37 17
3	7 27 7 60	5 6 4 35	9 1 48 60	7 37 24	9 33 53	3 5 12	10 38 10	9 8 3	8 37 10
4	7 28 23 5	5 6 23 37	9 2 2 56	7 40 39	9 37 15	3 7 25	10 40 8	9 4 52	8 35 18
5	7 29 38 10	5 6 42 15	9 2 16 53	7 43 59	9 40 37	3 9 39	10 42 4	9 1 41	8 31 5
6	8 0 53 17	5 7 0 28	9 2 30 51	7 47 25	9 44 0	3 11 53	10 44 0	8 58 31	8 24 10
7	8 2 8 23	5 7 18 15	9 2 44 51	7 50 57	9 47 24	3 14 8	10 45 54	8 55 20	8 13 49
8	8 3 23 30	5 7 35 37	9 2 58 52	7 54 35	9 50 49	3 16 23	10 47 47	8 52 9	8 2 48
9	8 4 38 37	5 7 52 31	9 3 12 54	7 58 18	9 54 14	3 18 38	10 49 38	8 48 58	7 52 16
10	8 5 53 45	5 8 8 59	9 3 26 56	8 2 6	9 57 40	3 20 54	10 51 28	8 45 48	7 41 32
11	8 7 8 53	5 8 24 59	9 3 40 60	8 6 0	10 1 7	3 23 9	10 53 16	8 42 37	7 31 45
12	8 8 24 1	5 8 40 31	9 3 55 5	8 10 0	10 4 35	3 25 26	10 55 4	8 39 26	7 25 38
13	8 9 39 9	5 8 55 34	9 4 9 10	8 14 5	10 8 3	3 27 42	10 56 49	8 36 15	7 23 20
14	8 10 54 17	5 9 10 8	9 4 23 15	8 18 15	10 11 32	3 29 58	10 58 33	8 33 5	7 22 20
15	8 12 9 25	5 9 24 11	9 4 37 21	8 22 30	10 15 1	3 32 15	11 0 15	8 29 54	7 22 28
16	8 13 24 34	5 9 37 44	9 4 51 28	8 26 51	10 18 30	3 34 31	11 1 56	8 26 43	7 23 3
17	8 14 39 42	5 9 50 47	9 5 5 35	8 31 16	10 21 60	3 36 48	11 3 36	8 23 32	7 22 13
18	8 15 54 50	5 10 3 17	9 5 19 42	8 35 46	10 25 30	3 39 5	11 5 14	8 20 21	7 19 14
19	8 17 9 58	5 10 15 15	9 5 33 49	8 40 22	10 29 0	3 41 21	11 6 50	8 17 11	7 13 33
20	8 18 25 6	5 10 26 41	9 5 47 56	8 45 2	10 32 31	3 43 38	11 8 24	8 13 60	7 5 12
21	8 19 40 14	5 10 37 33	9 6 2 4	8 49 47	10 36 2	3 45 54	11 9 59	8 10 49	6 53 41
22	8 20 55 22	5 10 47 51	9 6 16 11	8 54 36	10 39 33	3 48 10	11 11 28	8 7 38	6 43 0
23	8 22 10 31	5 10 57 34	9 6 30 18	8 59 31	10 43 4	3 50 27	11 12 58	8 4 28	6 31 8
24	8 23 25 39	5 11 6 42	9 6 44 25	9 4 30	10 46 35	3 52 43	11 14 26	8 1 17	6 20 12
25	8 24 40 47	5 11 15 14	9 6 58 31	9 9 33	10 50 6	3 54 58	11 15 52	7 58 6	6 11 5
26	8 25 55 55	5 11 23 9	9 7 12 38	9 14 41	10 53 37	3 57 14	11 17 18	7 54 55	6 4 23
27	8 27 11 3	5 11 30 27	9 7 26 43	9 19 54	10 57 8	3 59 29	11 18 40	7 51 45	6 0 18
28	8 28 26 12	5 11 37 6	9 7 40 49	9 25 10	11 0 39	4 1 44	11 20 1	7 48 34	6 58 39
29	8 29 41 20	5 11 43 7	9 7 54 54	9 30 31	11 4 10	4 3 59	11 21 20	7 45 23	6 58 50
30	9 0 56 29	5 11 48 27	9 8 8 58	9 35 56	11 7 41	4 6 13	11 22 37	7 42 12	6 0 3
31	9 2 11 37	5 11 53 8	9 8 23 1	9 41 26	11 11 12	4 8 28	11 23 53	7 39 1	6 1 20

फरवरी 1997, शक सं 1918, वि. सं 2053, माघ कृष्ण 8 से फाल्गुन कृ. 6 तक, उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु

फर	वार	ति (माघ कृष्ण पक्ष)	घं	मि	नक्ष	घं	मि	यो	घं	मि	कर	घं	मि	मा	मा
१श		अ	१३	२१	वि	२६	१२	गंड	१३	१८	कौ	१३	२१	१२	२०
२रवि		नव	१३	२	अनु	२८	५६	वृ	१४	५३	गर	१३	२	१३	२१
३सो		दश	११	५२	ज्ये	२७	५२	ध्रुव	६	४६	वि	११	५२	१४	२२
४मंग		एक	६	५३	मूल	२६	४	व्या	७	२	बा	६	५३	१५	२३
"	"	..	..	..	..	..	..	हर्ष	२७	४३	कौ	२०	३३	"	"
५बुध		द्वा	७	१३	पूष	२३	४१	वज्र	२३	५५	तै	७	१३	१६	२४
"	"	त्र	२८	०	..	..	..	..	..	..	गर	१७	३६	"	"
६गुरु		चतु	२४	२४	उष	२०	५३	सि	१६	४८	वि	१४	१४	१७	२५
७शु		अम	२०	३६	श्रव	१७	५२	व्य	१५	२६	चतु	१०	३१	१८	२६
विक्रम सवत् २०५३ माघ शुक्ल पक्ष															
८श		प्र	१६	४८	ध	१४	४६	वरी	११	७	किं	६	४२	१६	२७
९रवि		द्वि	१३	११	शत	११	५५	परि	६	५२	कौ	१३	११	२०	२८
"	"	..	..	..	..	..	..	शि	२६	५०	तै	२३	३२	"	"
१०सो		तृ	६	५३	पूभ	६	२१	सि	२३	१०	गर	६	५३	२१	२६
११मंग		चतु	७	४	उभ	७	१५	सा	१६	५८	वि	७	४	२२	३०
"	"	पच	२८	५२	रेव	२६	४६	..	..	..	बव	१८	४०	"	"
१२बुध		ष	२७	२१	अ	२८	५८	शुभ	१७	१७	कौ	१६	१	२३	फा
१३गुरु		स	२६	३४	भर	२८	५३	शुक्र	१५	११	गर	१४	५२	२४	२
१४शु		अ	२६	३२	क	२६	३१	ब्रह्म	१३	४०	वि	१४	२७	२५	३
१५श		नव	२७	११	रो	-	-	ऐं	१२	४३	बा	१४	४५	२६	४
१६रवि		दश	२८	२६	रो	६	४८	वैधृ	१२	१६	तै	१५	४३	२७	५
१७सो		एक	-	-	मृग	८	३६	विष्	१२	१५	व	१७	१४	२८	६
१८मंग		एक	६	११	आ	१०	५६	प्री	१२	३५	वि	६	११	२६	७
१९बुध		द्वा	८	१६	पुन	१३	३६	आ	१३	१२	बा	८	१६	३०	८
२०गुरु		त्र	१०	४४	पुष्य	१६	३३	सौ	१३	५६	तै	१०	४४	फा	६
२१शु		चतु	१३	१८	श्ले	१६	३५	शो	१४	५३	व	१३	१८	२	१०
२२श		पू	१५	५७	मघ	२२	४०	अ	१५	५१	बव	१५	५७	३	११
विक्रम सवत् २०५३ फाल्गुन (मुख्य माघ) कृष्ण पक्ष															
२३रवि		प्र	१८	३३	पूफ	२५	४१	सुक	१६	४६	कौ	१८	३३	४	१२
२४सो		द्वि	२१	१	उफ	२८	३३	धृ	१७	३७	तै	७	४८	५	१३
२५मंग		तृ	२३	१५	ह	-	-	शूल	१८	१७	व	१०	१०	६	१४
२६बुध		चतु	२५	७	ह	७	१०	गंड	१८	४२	बव	१२	१३	७	१५
२७गुरु		पच	२६	२६	चि	६	२३	वृ	१८	४६	कौ	१३	५१	८	१६
२८शु		ष	२७	१६	स्वा	११	७	ध्रुव	१८	२५	गर	१४	५६	६	१७

ति	व्रत-पर्व-त्योहार आदि (भा. स्टै. टा में)
१	जुलियन अहर्गण :२४५०४८१; कलि अहर्गण : १८६२०१५; स्फुट परमाक्रान्ति २३अं २६क १३वि; बूनन संस्कार+१.६ वि.;सरकारी अयनांश २३-४६-०
३	षटतिला एकादशी (स्मार्त)
४	षटतिला एकादश (वैष्णव)
५	मेरु त्रयोदशी (जैन)
६	रटन्ती कालिका पूजा;शबे-कद्र(मु);शिव चतु. (कश)
७	मौनी व तै अमावस्या; मकरवावू (केरल); महोदय योग; जुमत-उल-विदा (मु)
६	ईद-उल-फितर
१०	वरद, तिल व कुन्द चतुर्थी
११	श्री व वसन्त पंचमी;गणेश पूजा(बं);सरस्वती पूजा
१२	१७-२५सूर्य की अवैदिक सरकारी निरयण कुम्भ संक्रान्ति; ऐश बुधवार (ईसाई)
१३	रथ सप्तमी व आरोग्य सप्तमी; विधान सप्तमी
१४	भीष्माष्टमी
१७	जया एकादशी (स्मार्त);मैमी एकादशी (बंगाल)
१८	२०-२२ सूर्य की सायन वास्तविक वैदिक मीन संक्रान्ति; वैदिक मधुमास व वसन्त ऋतु प्रारम्भ; कश्मीर की वास्तविक वैदिक सोन्त थाली आज ही है क्योंकि आज ही वास्तविक सोन्त अर्थात् वसन्त प्रारम्भ होता है
२०	रा.फाल्गुन प्रा;रेगिस्तान मेल(राजस्थान)३ दिन तक
२२	गुरु रविदास जयन्ती;माघस्नान स्माप्त;माघ पूर्णिमा
	मसि माघम (द. भा.)
२६	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

स्थानीय समय में दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.

अं.	स्पष्ट मध्यान्ह			में सूर्योदय			व सूर्यास्त		
ति	घं	मि	सै	घं	मि	सै	घं	मि	सै
१	१२	१३	३५	७	१३	३१	१७	५६	११
३	१२	१३	५०	७	१२	२५	१७	५७	५०
५	१२	१४	१	७	११	११	१७	५६	३२
७	१२	१४	६	७	६	५३	१८	१	१
६	१२	१४	१४	७	८	२७	१८	२	३१
११	१२	१४	१६	७	६	५७	१८	४	१२
१३	१२	१४	१४	७	५	१३	१८	५	४३
१५	१२	१४	१०	७	३	४३	१८	७	१३
१७	१२	१४	३	७	२	०	१८	८	४४
१६	१२	१३	५२	७	०	१२	१८	१०	१२
२१	१२	१३	३६	६	५८	२३	१८	११	३७
२३	१२	१३	२४	६	५६	२६	१८	१२	५५
२५	१२	१३	६	६	५४	३४	१८	१४	२०
२७	१२	१२	४५	६	५२	३४	१८	१५	३८

निरयण चान्द्र स्थितियां आदि भा. स्टै. स.

४-१३-३८:अधिकतम शर ५उ६;

४-१४-२४ अधिकतम क्रा १८द१७;८-३-३६: अमान्त चन्द्र स्पः ६-२५-४; ८-२-३ चन्द्र अति निकट; १०-१२-४२ शून्य उत्तर शर;

१०-१४-२० शून्य उ क्रा;१७-६-७ अधिकतम शर ५द१३;१७-८-६ अधिकतम क्रा १८उ१३;२१-२२.२१: चन्द्र अति दूर;

२२-१५-५७:पूर्णिमान्त चन्द्र स्पष्टः ४-१०-२;२४-१८-१८: शून्य द शर; २४-२१-३४ शून्य द क्रा

वैदिक सायन राशि चार			
ति	घं	मि	ग्रह रा
३	६	५८	शुक्र कुम्भ
६	११	२३	बुध कुम्भ
१८	२०	२२	सूर्य मीन
२७	२२	१५	म.रा कन्या
२७	६	३१	शुक्र मीन
२८	६	२४	बुध मीन
वैदिक सायन चन्द्र चार			
२	१०	१६	धनु
४	१४	१३	मकर
६	१४	५१	कुम्भ
८	१४	४	मीन
१०	१४	०	मेष
१२	१६	२७	वृषभ
१४	२२	२४	मिथुन
१७	७	४३	कर्क
१६	१६	२३	सिंह
२२	८	८	कन्या
२४	२०	५३	तुला
२७	८	२६	वृश्चिक

निरयण चन्द्र चार			
ति	घं	मि	राशि
१	२३	८	वृश्चि
४	३	५२	धनु
६	५	१	मकर
८	४	२०	कुम्भ
१०	३	५७	मीन
१२	५	४६	मेष
१४	१०	५८	वृषभ
१६	१६	४०	मिथुन
१६	६	५७	कर्क
२१	१६	३५	सिंह
२४	८	२५	कन्या
२६	२०	२०	तुला
सरकारी अयनांश			
४:२३.४६.१; ६:२३.			
४६.२; १६:२३.४६.३			
वक्री /मार्गी			
६	६	८	बुध व

ग्रहोका अवैदिक निरयण चार				
ति	घं	मि	ग्रह	राशि
५	१	२६	बुध	मकर
१२	१७	२५	सूर्य	कुम्भ
२२	१०	४६	शुक्र	कुम्भ
२४	१८	२५	बुध	कुम्भ
अवैदिक काल्पनिक नक्षत्रचार				
२	१३	२८	बुध	उषा
६	३	२५	सूर्य	धनि
६	११	७	शुक्र	श्रवण
७	३	४६	गुरु	श्रवण
१२	२	७	बुध	श्रवण
१७	२	४८	शुक्र	धनि
१६	७	५३	सूर्य	शतभि
२०	१७	४	बुध	धनि
२४	८	५१	व मंग	उफा
२७	१८	४६	शुक्र	शतभि.
२८	१६	३	बुध	शतभि.

FEBRUARY फरवरी 1997 श्रीकृष्ण यूनिवर्सल विश्व पंचांग

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT म.स.सा.का	SUN सूर्य - रवि				DEC. क्रान्ति		GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र				LAT. शर		DEC. क्रान्ति		DELHI MOO दिल्ली चन्द्र				LAT. शर		DEC. क्रान्ति		MERCURY बुध			
		Hr	m	se	Si	d	m	se	d	m	Si	d	m	se	d	m	d	m	Si	d	m	se	d	m	d	m	Si	d	m	se
ति	वार	घं	मि	से	रा	अं	क	वि	अं	क	रा	अं	क	वि	अं	क	अं	क	रा	अं	क	वि	अं०	क'	अं०	क'	रा	अं	क	वि
1	Sa	8	44	3	9	18	20	57	17S	8	6	20	28	18	3N	37	12S	40	6	20	50	59	3N	5	13S	17	8	24	56	31
2	Su	8	47	60	9	19	21	51	16	51	7	3	29	59	4	21	15	19	7	4	0	42	3	49	15	58	8	26	13	50
3	Mo	8	51	56	9	20	22	44	16	34	7	16	59	19	5	53	17	14	7	17	37	5	4	19	17	53	8	27	32	31
4	Tu	8	55	53	9	21	23	36	16	16	8	0	58	13	5	8	18	12	8	1	41	28	4	33	18	49	8	28	52	30
5	We	8	59	49	9	22	24	27	15	58	8	15	25	51	5	5	18	3	8	16	12	24	4	28	18	36	9	0	13	44
6	Th	9	3	46	9	23	25	18	15	40	9	0	18	8	4	42	16	40	9	1	5	15	4	3	17	10	9	1	36	7
7	Fr	9	7	42	9	24	26	7	15	21	9	15	27	37	3	58	14	6	9	16	12	15	3	18	14	33	9	2	59	38
8	Sa	9	11	39	9	25	26	55	15	2	10	0	44	22	2	57	10	33	10	1	23	34	2	17	10	58	9	4	24	12
9	Su	9	15	36	9	26	27	41	14	43	10	15	57	36	1	44	6	18	10	16	28	56	1	4	6	43	9	5	49	48
10	Mo	9	19	32	9	27	28	26	14	24	11	0	57	28	0	24	1	42	11	1	19	18	0	15	2	10	9	7	16	24
11	Tu	9	23	29	9	28	29	10	14	4	11	15	36	36	0S	56	2N	53	11	15	48	12	1S	34	2N	23	9	8	43	57
12	We	9	27	25	9	29	29	52	13	44	11	29	50	40	2	10	7	11	11	29	52	5	2	46	6	37	9	10	12	28
13	Th	9	31	22	10	0	30	33	13	24	0	13	38	17	3	14	10	57	0	13	30	11	3	50	10	20	9	11	41	54
14	Fr	9	35	18	10	1	31	12	13	4	0	27	0	27	4	5	14	1	0	26	43	53	4	40	13	23	9	13	12	15
15	Sa	9	39	15	10	2	31	49	12	44	1	9	59	43	4	43	16	17	1	9	35	56	5	17	15	39	9	14	43	30
16	Su	9	43	11	10	3	32	25	12	23	1	22	39	26	5	5	17	41	1	22	9	49	5	40	17	4	9	16	15	40
17	Mo	9	47	8	10	4	32	58	12	2	2	5	3	13	5	13	18	13	2	4	29	11	5	48	17	38	9	17	48	45
18	Tu	9	51	4	10	5	33	30	11	41	2	17	14	35	5	6	17	54	2	16	37	32	5	42	17	21	9	19	22	43
19	We	9	55	1	10	6	34	1	11	20	2	29	16	41	4	46	16	46	2	28	38	1	5	23	16	16	9	20	57	36
20	Th	9	58	58	10	7	34	29	10	58	3	11	12	18	4	13	14	55	3	10	33	20	4	51	14	27	9	22	33	24
21	Fr	10	2	54	10	8	34	56	10	37	3	23	3	45	3	30	12	26	3	22	25	49	4	8	12	1	9	24	10	8
22	Sa	10	6	51	10	9	35	21	10	15	4	4	53	7	2	38	9	27	4	4	17	27	3	17	9	3	9	25	47	47
23	Su	10	10	47	10	10	35	44	9	53	4	16	42	19	1	39	6	6	4	16	10	4	2	18	5	42	9	27	26	23
24	Mo	10	14	44	10	11	36	6	9	31	4	28	33	20	0	35	2	29	4	28	5	33	1	14	2	5	9	29	5	57
25	Tu	10	18	40	10	12	36	26	9	9	5	10	28	18	0N	31	1S	14	5	10	5	57	0	8	1S	41	10	0	46	28
26	We	10	22	37	10	13	36	45	8	46	5	22	29	44	1	36	4	57	5	22	13	37	0N	57	5	26	10	2	27	59
27	Th	10	26	34	10	14	37	2	8	24	6	4	40	32	2	37	8	29	6	4	31	20	1	59	9	2	10	4	10	30
28	Fr	10	30	30	10	15	37	17	8S	1	6	17	3	58	3N	33	11S	43	6	17	2	14	2	54	12S	19	10	5	54	2
29	Sa	10	34	27	10	16	37	32	7	39	6	29	43	36	4	19	14	29	6	29	49	40	3	40	15	8	10	7	38	35
30	Su	10	38	23	10	17	37	44	7	16	7	12	43	0	4	53	16	35	7	12	56	58	4	14	17	16	10	9	24	10
31	Mo	10	42	20	10	18	37	55	6S	53	7	26	5	19	5N	13	17S	51	7	26	26	55	4N	33	18S	32	10	11	10	49

Dt	VENUS शुक्र					MARS मंगल					JUPITER Makar गुरु मकर में					SATUR Mina शनि मीन					URANU Makar हर्शल मकर					NEPTU Makar नेप्चू मकर					PLUTO Vrischik प्लूटो वृश्चिक					M RAHU Kanya मध्यम राहु कन्या					T RAHU स्पष्ट राहु
	Si	d	m	se		Si	d	m	se		Si	d	m	se		Si	d	m	se		Si	d	m	se		Si	d	m	se		Si	d	m	se		Si	d	m	se		
ति	रा	अं०	क'	वि''		रा	अं०	क'	वि''		रा	अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''			अं०	क'	वि''			अं०	क'	वि''			अं०	क'	वि''			अं०	क'	वि''			
1	9	3	26	46		5	11	57	6		9	8	37	4		9	46	60			11	14	42			4	10	41			11	25	7			7	35	51		6	1	43
2	9	4	41	54		5	12	0	23		9	8	51	6		9	52	37			11	18	12			4	12	54			11	26	19			7	32	40		6	0	26
3	9	5	57	3		5	12	2	58		9	9	5	7		9	58	19			11	21	41			4	15	7			11	27	29			7	29	29		5	56	31
4	9	7	12	11		5	12	4	49		9	9	19	7		10	4	4			11	25	10			4	17	19			11	28	37			7	26	18		5	51	37
5	9	8	27	19		5	12	5	57		9	9	33	5		10	9	54			11	28	39			4	19	31			11	29	43			7	23	8		5	46	22
6	9	9	42	27		5	12	6	20		9	9	47	3		10	15	47			11	32	7			4	21	42			11	30	47			7	19	57		5	38	36
7	9	10	57	35		5	12	5	58		9	10	0	59		10	21	44			11	35	35			4	23	52			11	31	49			7	16	46		5	33	13
8	9	12	12	42		5	12	4	51		9	10	14	53		10	27	44			11	39	2			4	26	2			11	32	50			7	13	35		5	28	3
9	9	13	27	49		5	12	2	58		9	10	28	47		10	33	48			11	42	28			4	28	11			11	33	48			7	10	24		5	23	41
10	9	14	42	56		5	12	0	19		9	10	42	38		10	39	56			11	45	54			4	30	19			11	34	43			7	7	14		5	23	14
11	9	15	58	2		5	11	56	55		9	10	56	28		10	46	7			11	49	19			4	32	27			11	35	37			7	4	3		5	23	28
12	9	17	13	7		5	11	52	43		9	11	10	16		10	52	21			11	52	43			4	34	34			11	36	30			7	0	52		5	23	45
13	9	18	28	12		5	11	47	45		9	11	24	3		10	58	38			11	56	6			4	36	40			11	37	20			6	57	41		5	26	17
14	9	19	43	17		5	11	41	60		9	11	37	47		11	4	59			11	59	28			4	38	45			11	38	8			6	54	31		5	27	18
15	9	20	58	21		5	11	35	28		9	11	51	29		11	11	23			12	2	50			4	40	50			11	38	54			6	51	20		5	27	9
16	9	22	13	24		5	11	28	10		9	12	5	9		11	17	50			12	6	10			4	42	53			11	39	38			6	48	9		5	25	28
17	9	23	28	27		5	11	20	5		9	12	18	47		11	24	19			12	9	30			4	44	56			11	40	20			6	44	58		5	22	19
18	9	24	43	29		5	11	11	13		9	12	32	23		11	30	52			12	12	49			4	46	57			11	41	0			6	41	48		5	17	54
19	9	25	58	31		5	11	1	35		9	12	45	57		11	37	28			12	16	6			4	48	59			11	41	38			6	38	37		5	12	44
20	9	27	13	32		5	10	51	10		9	12	59	28		11	44	6			12	19	23			4	50	58			11	42	14			6	35	26		5	7	25
21	9	28	28	33		5	10	39	59		9	13	12	56		11	50	47			12	22	38			4	52	57			11	42	48			6	32	15		5	1	32
22	9	29	43	33		5	10	28	3		9	13	26	22		11	57	30			12	25	52			4	54	55			11	43	19			6	29	4		4	57	34
23	10	0	58	32		5	10	15	22		9	13	39	46		12	4	16			12	29	5			4	56	51			11	43	49			6	25	54		4	54	51
24	10	2	13	31		5	10	1	56		9	13	53	6		12	11	4			12	32	16			4	58	47			11	44	16			6	22	43		4	54	26
25	10	3	28	29		5	9	47	46		9	14	6	24		12	17	55			12	35	26			5	0	41			11	44	42			6	19	32		4	54	26
26	10	4	43	27		5	9	32	53		9	14	19	40		12	24	48			12	38	35			5	2	34			11	45	5			6	16	21		4	55	23
27	10	5	58	25		5	9	17	17		9	14	32	52		12	31	44			12	41	43			5	4	26			11	45	26			6	13	11		4	55	56
28	10	7	13	22		5	9	1	0		9	14	46	1		12	38	41			12	44	49			5	6	17			11	45	45			6	9	60		4	57	36
29	10	8	28	18		5	8	44	3		9	14	59	7		12	45	41			12	47	53			5	8	7			11	46	1			6	6	49		4	59	58
30	10	9	43	15		5	8	26	26		9	15	12	10		12	52	43			12	50	56			5	9	55			11	46	15			6	3	38		4	59	41
31	10	10	58	10		5	8	8	12		9	15	25	10		12	59	47			12	53	58			5	11	43			11	46	29			6	0	28		4	59	36

मार्च 1997, शक 1918/19, वि.सं 2053, फा. कृष्ण 7 से चैत्र कृ. 7 तक, उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु

(फा० कृष्ण पक्ष)तिथि आदि समा. काल भा.स्टे.टा													शक	सौर
मा. वार	ति	घ	मि	नक्ष	घ	मि	यो	घ	मि	कर	घ	मि	फा	फा
१श	स	२७	२१	वि	१२	१४	व्या	१७	३३	वि	१५	२३	१७	१८
२रवि	अ	२६	४३	अनु	१२	४०	हर्ष	१६	८	बा	१५	७	११	१६
३सो	नव	२५	२१	ज्ये	१२	२३	वज्र	१४	६	तै	१४	७	१२	२०
४मग	दश	२३	१८	मूल	११	२४	सि	११	३५	व	१२	२४	१३	२१
५बुध	एक	२०	३६	पूष	६	४७	व्य	८	३१	बव	१०	३	१४	२२
''''	..	..	..	..	..	..	वरी	२८	५६	बा	२०	३६	"	"
६गुरु	द्वा	१७	३१	उष	७	३७	परि	२५	७	कौ	७	८	१५	२३
७शु	त्र	१४	३	श्रव	२६	२	शि	२१	१	व	१४	३	१६	२४
''''	..	..	..	घ	२६	१३	..	..	..	वि	२४	१४	"	"
८श	चतु	१०	२५	शत	२३	१६	सि	१६	४८	शकु	१०	२५	१७	२५
६रवि	अम	६	४५	पूभ	२०	२६	सा	१२	३७	ना	६	४५	१८	२६
''''	प्र	२७	१४	..	..	..	..	..	..	किं	१७	०	"	"
विक्रम स० २०५३ फाल्गुन शुक्ल पक्ष														
१०सो	द्वि	२४	२	उभ	१७	५६	शुभ	८	३७	बा	१३	३५	१६	२७
''''	..	..	..	..	..	..	शुक्र	२८	५३	कौ	२४	२	"	"
११मग	त	२१	१७	रेव	१५	४८	ब्रह्म	२५	३५	तै	१०	३६	२०	२८
१२बुध	चतु	१६	६	अश	१४	१४	ऐद्र	२२	४७	व	८	८	२१	२६
१३गुरु	पच	१७	४४	भर	१३	२१	वैधृ	२०	३३	बा	१७	४४	२२	३०
१४शु	ष०	१७	५	कृ	१३	१३	वि	१८	५८	तै	१७	५	२३	चै
१५श	स	१७	१४	रो	१३	५३	प्री	१७	५६	व	१७	१४	२४	२
१६रवि	अ	१८	६	मृ	१५	१७	आ	१७	३६	बव	१८	६	२५	३
१७सो	नव	१६	४४	आ	१७	२०	सौ	१७	४४	बा	६	५१	२६	४
१८मग	दश	२१	५०	पुन	१६	५५	शो	१८	१७	तै	८	४४	२७	५
१६बुध	एक	२४	१८	पु	२२	५०	अ	१६	६	व	११	१	२८	६
२०गुरु	द्वा	२६	५५	श्ले	२५	५५	सुक	२०	४	बव	१३	३५	२६	७
२१शु	त्र	२६	३३	मघ	२६	१	धृ	२१	५	कौ	१६	१४	३०	८
२२शा	चतु	-	-	पूफ	-	-	शूल	२२	१	गर	१८	४८	चै	६
२३रवि	चतु	८	२	पूफ	७	५६	गड	२२	४७	व	८	२	२	१०
२४सो	पू	१०	१५	उफ	१०	४३	वृ	२३	२०	बव	१०	१५	३	११
विक्रम स० २०५३ चैत्र (मुख्य फाल्गुन) कृष्ण पक्ष														
२५मग	प्र	१२	६	ह	१३	७	ध्रुव	२३	३७	कौ	१२	६	४	१२
२६बुध	द्वि	१३	३८	चि	१५	८	व्या	२३	३४	गर	१३	३८	५	१३
२७गुरु	तृ	१४	४१	स्वा	१६	४४	हर्ष	२३	१०	वि	१४	४१	६	१४
२८शु	चतु	१५	१५	वि	१७	५२	वज्र	२२	२४	बा	१५	१५	७	१५
२६श	पच	१५	१८	अनु	१८	३०	सि	२१	१३	तै	१५	१८	८	१६
३०रवि	ष	१४	५०	ज्ये	१८	३७	व्य	१६	३८	व	१४	५०	६	१७
३१सो	स	१३	५०	मूल	१८	१२	वरी	१७	३८	बव	१३	५०	१०	१८

ति	व्रत-पर्व-त्योहार आदि (भा.स्टे.टा)
१	जुलियन अहर्गण : २४५०५०६; कलि अहर्गण :
	१८६२०४३;स्फुट परमा. २३अं २६क १४वि; घूनन
	संस्कार स्पष्ट +०.८वि;सरकारी अयनांश:२३-४६-३
२	शाक/वैकष्टाष्टक;जानकी जन्म;होराष्टमी (कश्मीर
४	स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती
५	विजया एकादशी व्रत (स्मार्त)
६	महाशिवरात्रि (कश्मीर)
७	महाशिवरात्रि;शिवरात्रि (द.भा);शिव चतुर्दशी (कश)
६	४घं ४७मि से ६घं १ मि तक पूर्ण सूर्य ग्रहण। यह
	ग्रहण भारत मे कहीं कहीं दृश्य जिसका विवरण
	कृपया ग्रहणों वाले पृष्ठ में देखें
१०	स्वामी रामकृष्ण परमहंस जयन्ती
१४	१४-१८ सूर्य की अवैदिक सरकारी निरयण मीन
	संक्रान्ति; अवैदिक सोन्त थाली (कश्मीर);
	अवैदिक (काल्पनिक) खरमास प्रारम्भ
१६	होलाष्टक प्रारम्भ
१६	आमलकी एकादशी व्रत (स्मार्त)
२०	१६-२५सूर्य की सायन (वास्तविक वैदिक) मेष सं.;
	वास्तविक धार्मिक व वैदिक वैशाखी; वैदिक मास
	माधव प्रा.; सूर्य की उत्तर क्रान्ति व उत्तर गोल
	प्रा.;दिन-रात्रि समान--वास्तविक सार्वभौम वैदिक
	नववर्ष प्रारम्भ होने का यही लक्षण है जो अन्य
	किसी लाहिरी, रमण या अंग्रेज़ी नववर्ष वाले दिन
	नही होता है इसीलिए इसको वासन्तिक सम्पात
	कहते हैं।पुण्यकाल २१ को है। महाविषुव दिवस
२१	जमशेदजी नौरोज़ (पारसी)
२२	राष्ट्रीय चैत्र व शक संवत १६१६ प्रारम्भ
२३	होलिका दहन; चौमासी चौदस (जैन)
२४	होली,दुलेहडी,ड़ोलयात्रा। २५: होला; वसन्तोत्सव
२८	गुड़ फ्राइडे (ईसाई)
३०	ईस्टर सन्ड़े (ईसाई)

स्थानीय समय में				दिल्ली का भा. स्टे. टाइ.						वैदिक सायन राशि चार				निरयण चन्द्रचार				ग्रहो का अवैदिक निरयण चार				
अं.	स्पष्ट मध्यान्ह			में सूर्योदय			व सूर्यास्त			ति	घं	मि	ग्रह रा	ति	घं	मि	राशि	ति	घं	मि	ग्रह	राशि
ति	घं	मि	से	घुं	मि	से	घं	मि	से	६	१	१६	व मं कन्या	१	६	१	वृश्चि	१३	६	३१	बुध	मीन
१	१२	१२	२३	६	५०	२७	१८	१६	५७	१६	६	४३	बुध मेष	३	१२	२३	धनु	१४	१४	१८	सूर्य	मीन
३	१२	११	५६	६	४८	२१	१८	१८	१५	२०	१६	२५	सूर्य मेष	५	१५	१७	मकर	१८	११	४३	शुक्र	मीन
५	१२	११	५३	६	४६	१४	१८	१६	३४	२३	१०	·५६	शुक्र मेष	७	१५	३६	कुम्भ	२५	४	६	व म	ह सिंह
७	१२	११	५	६	४४	२	१८	२०	४६					६	१५	११	मीन	२८	१६	५८	बुध	मेष
६	१२	१०	३६	६	४१	४६	१८	२२	२	वैदिक सायन चन्द्र चार				११	१५	४८	मेष	अवैदिक काल्पनिक नक्षत्र चार				
११	१२	१०	५	६	३६	३७	१८	२३	१४	१	१७	३१	धनु	१३	१६	१५	वृषभ	४	१४	१५	सूर्य	पूभा
१३	१२	६	३३	६	३७	१८	१८	२४	२४	३	२३	७	मकर	१६	२	२६	मिथुन	८.	१	१२	बुध	पूभा
१५	१२	६	०	६	३५	०	१८	२५	३६	६	१	२४	कुम्भ	१८	१३	१४	कर्क	१०	११	६	शुक्र	पूभा
१७	१२	८	२६	६	३२	४७	१८	२६	४६	८	१	२७	मीन	२१	१	५५	सिंह	१४	२३	१३	बुध	उभा
१६	१२	७	५१	६	३०	२६	१८	२७	५५	१०	१	३	मेष	२३	१४	४१	कन्या	१७	२२	३८	सूर्य	उभा
२१	१२	७	१५	६	२८	४	१८	२६	२	१२	२	८	वृषभ	२६	२	१०	तुला	२१	३	५६	शुक्र	उभा
२३	१२	६	३६	६	२५	४६	१८	३०	१४	१४	६	१६	मिथुन	२८	११	३७	वृश्चि	२१	१६	१२	बुध	रेवती
२५	१२	६	२	६	२३	२६	१८	३१	१६	१६	१४	२१	कर्क	३०	१८	३७	धनु	२८	१६	५८	बुध	अश्वि
२७	१२	५	२६	६	२१	५	१८	३२	२५	१६	१	३६	सिंह	वक्री/मार्गी				३१	६	३४	सूर्य	रेवती
२६	१२	४	५०	६	१८	४८	१८	३३	३०	२१	१४	२६	कन्या	८	१८	२४	प्लू व	३१	२१	२४	शुक्र	रेवती
३१	१२	४	१३	६	१६	३०	१८	३४	३६	२४	३	५	तुला	सरकारी अयनाश								
अवैदिक चान्द्र स्थितिया आदि भा मा स										२६	१४	११	वृश्चिक	४:२३.४६.४;								
३-२१-५:अधिकतम शर ५उ१७; ३.२३.४३:										२८	२३	६	धनु	१६:२३.४६.५;				अधि. क्राः १८द१०; ८-१४-२४:				
चन्द्र अति निकट;६.६.४५: सूर्य ग्रहण चन्द्र										३१	५	३७	मकर	३१:२३.४६.६				स्पष्ट १०-२४-४२; ६.२२.५६:				

शून्य उ शर; १०-१-३६ शू उ क्रा; १६-११-७ अधि. शर:५द१८; १६-१५-२ अधि. क्रा १८उ८; २१-४-५६:चन्द्र अति दूर;२४-०-३५:

शु द शर; २४-३-४६ शू द क्रा ;२४-१०-१५ च ग्र पूर्णि. चन्द्र ५.६.४६;३१.३.१५ अधि. शर ५उ१७;३१.६.१७ अधिक. क्रा १८द६

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः 5घं 30 मि भा.स्टै. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT	SUN	DEC.	GEO.MOON	LAT.	DEC.	DELHI MOO	LAT.	DEC.	MERCURY
		म.रा.सा.का	सूर्य - रवि	क्रान्ति	भूकेन्द्रीय चन्द्र	शर	क्रान्ति	दिल्ली चन्द्र	शर	क्रान्ति	बुध
		Hr m se	Si d m se	d m	Si d m se	d m	d m	Si d m se	d m	d m	Si d m se
ति	वार	घं मि से	रा अं क वि	अं क	रा अं क वि	अं क	अं क	रा अं क वि	अं क'	अं क'	रा अं क वि
1	Sa	10 34 27	10 16 37 32	7S39	6 29 43 36	4N19	14S29	6 29 49 40	3N40	15S 8	10 7 38 35
2	Su	10 38 23	10 17 37 44	7N16	7 12 43 0	4N53	16N35	7 12 56 58	4 14	17N16	10 9 24 10
3	Mo	10 42 20	10 18 37 55	6 53	7 26 5 19	5 13	17 51	7 26 26 55	4 33	18 32	10 11 10 49
4	Tu	10 46 16	10 19 38 5	6 30	8 9 52 39	5 16	18 8	8 10 21 16	4 35	18 48	10 12 58 31
5	We	10 50 13	10 20 38 13	6 7	8 24 5 29	4 59	17 18	8 24 39 56	4 17	17 55	10 14 47 18
6	Th	10 54 9	10 21 38 19	5 43	9 8 41 55	4 24	15 19	9 9 20 30	3 40	15 53	10 16 37 8
7	Fr	10 58 6	10 22 38 24	5 20	9 23 37 21	3 30	12 17	9 24 17 51	2 44	12 48	10 18 28 2
8	Sa	11 2 2	10 23 38 27	4 57	10 8 44 34	2 20	8 23	10 9 24 30	1 34	8 52	10 20 20 1
9	Su	11 5 59	10 24 38 28	4 33	10 23 54 34	1 1	3 55	10 24 31 26	0 15	4 23	10 22 13 2
10	Mo	11 9 56	10 25 38 28	4 10	11 8 57 46	0S23	0N46	11 9 29 24	1S 8	0N17	10 24 7 5
11	Tu	11 13 52	10 26 38 25	3 46	11 23 45 33	1 43	5N19	11 24 10 18	2 27	4N47	10 26 2 7
12	We	11 17 49	10 27 38 20	3 23	0 8 11 20	2 55	9 26	0 8 28 17	3 38	8 52	10 27 58 6
13	Th	11 21 45	10 28 38 13	2 59	0 22 11 14	3 54	12 54	0 22 20 4	4 35	12 16	10 29 54 58
14	Fr	11 25 42	10 29 38 4	2 35	1 5 44 6	4 38	15 32	1 5 44 59	5 18	14 53	11 1 52 38
15	Sa	11 29 38	11 0 37 53	2 12	1 18 50 59	5 6	17 16	1 18 44 28	5 45	16 36	11 3 51 1
16	Su	11 33 35	11 1 37 39	1 48	2 1 34 39	5 17	18 4	2 1 21 28	5 57	17 25	11 5 49 58
17	Mo	11 37 32	11 2 37 24	1 24	2 13 58 52	5 14	17 59	2 13 39 52	5 53	17 21	11 7 49 21
18	Tu	11 41 28	11 3 37 5	1 1	2 26 7 51	4 57	17 4	2 25 43 59	5 36	16 28	11 9 48 60
19	We	11 45 25	11 4 36 45	0 37	3 8 5 58	4 26	15 24	3 7 38 8	5 7	14 51	11 11 48 41
20	Th	11 49 21	11 5 36 22	0 13	3 19 57 19	3 45	13 6	3 19 26 30	4 26	12 35	11 13 48 12
21	Fr	11 53 18	11 6 35 58	0N10	4 1 45 40	2 54	10 15	4 1 12 51	3 36	9 47	11 15 47 14
22	Sa	11 57 14	11 7 35 30	0S33	4 13 34 20	1 56	6 60	4 13 0 30	2 38	6 34	11 17 45 31
23	Su	12 1 11	11 8 35 1	0 57	4 25 26 6	0 53	3 27	4 24 52 20	1 35	3 1	11 19 42 42
24	Mo	12 5 7	11 9 34 30	1 20	5 7 23 23	0N14	0S16	5 6 50 44	0 29	0S42	11 21 38 24
25	Tu	12 9 4	11 10 33 57	1 44	5 19 28 11	1S20	4S 1	5 18 57 46	0S37	4S29	11 23 32 15
26	We	12 13 0	11 11 33 22	2 8	6 1 42 15	2 23	7 39	6 1 15 10	1N41	8 8	11 25 23 49
27	Th	12 16 57	11 12 32 44	2 31	6 14 7 12	3 21	10 59	6 13 44 32	2 39	11 32	11 27 12 41
28	Fr	12 20 54	11 13 32 5	2 55	6 26 44 36	4 10	13 52	6 26 27 22	3 28	14 29	11 28 58 26
29	Sa	12 24 50	11 14 31 25	3 18	7 9 36 2	4 47	16 8	7 9 25 6	4 5	16 48	0 0 40 38
30	Su	12 28 47	11 15 30 42	3S41	7 22 43 3	5 10	17 37	7 22 39 11	4 28	18 18	0 2 18 54
31	Mo	12 32 43	11 16 29 58	4N 5	8 6 7 6	5N17	18S 9	8 6 10 46	4N35	18S52	0 3 52 50

Dt	VENUS	MARS	JUPITER	SATUR	URANU	NEPTU	PLUTO	M RAHU	T RAHU
	Si d m se	Si d m se	Makar	Mina	Makar	Makar	Vrischik	Kanya	स्पष्ट राहु
	शुक्र	मंगल	गुरु मकर में	शनि मीन	हर्शल मकर	नेप्चू मकर	प्लूटो वृश्चिक	मध्यम राहु	कन्या
ति	रा अं क' वि''	रा अं क' वि''	रा अं क' वि''	अं क' वि''	अं क' वि''	अं क' वि''	अं क' वि''	अं क' वि''	अं क' वि''
1	10 8 28 18	5 8 44 3	9 14 59 7	12 45 41	12 47 53	5 8 7	11 46 1	6 6 49	4 59 58
2	10 9 43 15	5 8 26 26	9 15 12 10	12 52 43	12 50 56	5 9 55	11 46 15	6 3 38	4 59 41
3	10 10 58 10	5 8 8 12	9 15 25 10	12 59 47	12 53 58	5 11 43	11 46 29	6 0 28	4 59 36
4	10 12 13 5	5 7 49 21	9 15 38 6	13 6 53	12 56 58	5 13 29	11 46 39	5 57 17	4 59 45
5	10 13 27 60	5 7 29 56	9 15 50 59	13 14 0	12 59 56	5 15 13	11 46 48	5 54 6	4 58 20
6	10 14 42 54	5 7 9 58	9 16 3 49	13 21 10	13 2 53	5 16 56	11 46 54	5 50 55	4 55 40
7	10 15 57 47	5 6 49 29	9 16 16 34	13 28 21	13 5 48	5 18 38	11 46 59	5 47 44	4 55 7
8	10 17 12 39	5 6 28 31	9 16 29 17	13 35 34	13 8 42	5 20 19	11 46 59	5 44 34	4 53 57
9	10 18 27 31	5 6 7 6	9 16 41 55	13 42 48	13 11 33	5 21 58	11 47 0	5 41 23	4 53 21
10	10 19 42 23	5 5 45 17	9 16 54 29	13 50 5	13 14 23	5 23 36	11 46 59	5 38 12	4 53 19
11	10 20 57 13	5 5 23 7	9 17 6 60	13 57 22	13 17 11	5 25 12	11 46 54	5 35 1	4 53 44
12	10 22 12 2	5 5 0 36	9 17 19 26	14 4 41	13 19 57	5 26 46	11 46 49	5 31 51	4 54 24
13	10 23 26 51	5 4 37 49	9 17 31 48	14 12 1	13 22 41	5 28 19	11 46 40	5 28 40	4 55 7
14	10 24 41 38	5 4 14 48	9 17 44 5	14 19 22	13 25 23	5 29 51	11 46 29	5 25 29	4 54 40
15	10 25 56 25	5 3 51 35	9 17 56 18	14 26 45	13 28 3	5 31 21	11 46 18	5 22 18	4 55 59
16	10 27 11 10	5 3 28 13	9 18 8 27	14 34 8	13 30 41	5 32 49	11 46 3	5 19 7	4 56 4
17	10 28 25 55	5 3 4 45	9 18 20 31	14 41 33	13 33 17	5 34 16	11 45 46	5 15 57	4 55 58
18	10 29 40 38	5 2 41 13	9 18 32 31	14 48 58	13 35 51	5 35 42	11 45 29	5 12 46	4 55 47
19	11 0 55 21	5 2 17 41	9 18 44 26	14 56 24	13 38 22	5 37 5	11 45 8	5 9 35	4 54 40
20	11 2 10 2	5 1 54 11	9 18 56 16	15 3 51	13 40 52	5 38 27	11 44 45	5 6 24	4 54 39
21	11 3 24 43	5 1 30 45	9 19 8 1	15 11 19	13 43 19	5 39 47	11 44 21	5 3 14	4 54 46
22	11 4 39 22	5 1 7 26	9 19 19 41	15 18 47	13 45 45	5 41 6	11 43 54	5 0 3	4 55 58
23	11 5 54 1	5 0 44 17	9 19 31 16	15 26 16	13 48 8	5 42 23	11 43 26	4 56 52	4 56 11
24	11 7 8 38	5 0 21 20	9 19 42 46	15 33 45	13 50 28	5 43 38	11 42 46	4 53 41	4 56 16
25	11 8 23 15	4 29 58 37	9 19 54 11	15 41 15	13 52 47	5 44 52	11 42 24	4 50 31	4 56 7
26	11 9 37 51	4 29 36 12	9 20 5 31	15 48 46	13 55 3	5 46 4	11 41 50	4 47 20	4 55 38
27	11 10 52 25	4 29 14 5	9 20 16 45	15 56 16	13 57 17	5 47 14	11 41 14	4 44 9	4 53 50
28	11 12 6 59	4 28 52 21	9 20 27 54	16 3 47	13 59 28	5 48 22	11 40 36	4 40 58	4 52 46
29	11 13 21 33	4 28 31 0	9 20 38 57	16 11 19	14 1 37	5 49 29	11 39 56	4 37 47	4 51 35
30	11 14 36 5	4 28 10 5	9 20 49 55	16 18 50	14 3 44	5 50 34	11 39 15	4 34 37	4 50 32
31	11 15 50 37	4 27 49 39	9 21 0 47	16 26 21	14 5 48	5 51 37	11 38 31	4 31 26	4 50 49

अप्रैल 1997, शक 1919, वि. सं. 2053/4,चैत्र कृष्ण 8 से वैशाख कृ. 8 तक, उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु

(चैत्र कृष्ण पक्ष) तिथि आदि समा. काल भा.स्टै.टा. घं. मि

अप्र	वार	ति	घ	मि	नक्ष	घ	मि	यो	घ	मि	कर	घ	मि	चै	चै
९	मंग	अ	१२	१६	पूषा	१७	१८	परि	१५	१२	कौ	१२	१६	११	१६
२	बुध	नव	१०	१८	उषा	१५	५५	शिव	१२	२४	गर	१०	१८	१२	२०
३	गुरु	दश	७	५२	श्रव	१४	७	सि	६	१४	वि	७	५२	१३	२१
"	"	एक	२६	४	..	..	..	..	..	..	बा	२६	४	"	"
४	शु	द्वा	२६	९	धनि	१२	०	सा	५	४८	कौ	१५	३५	१४	२२
"	"	..	..	..	..	..	..	शुभ	२६	६	तै	२६	९	"	"
५	श	त्रय	२२	४६	शत	६	३६	शुक्र	२२	२३	गर	१२	२६	१५	२३
६	रवि	चतु	१६	३७	पूभा	७	१३	ब्रह्म	१८	३७	वि	६	१३	१६	२४
"	"	..	..	..	उभा	२८	४६	..	..	..	शकु	१६	३७	"	"
७	सो	अम	१६	३२	रेव	२६	३७	ऐंद्र	१४	५७	चतु	६	३	१७	२५

विक्रम सवत् २०५४ चैत्र शुक्ल पक्ष

८	मंग	प्र	१३	४४	अश्व	२४	४७	वैधृ	११	३०	बव	१३	४४	१८	२६
९	बुध	द्वि	११	२२	भर	२३	२६	विष्	८	२३	कौ	११	२२	१६	२७
१०	गुरु	तृ	६	३३	कृ	२२	४२	प्री	५	४३	गर	६	३३	२०	२८
"	"	..	..	..	..	..	..	आयु	२७	३५	..	..	..	"	"
११	शु	चतु	८	२५	रो	२२	४२	सौ	२६	३	वि	८	२५	२१	२६
१२	श	पच	८	३	मृ	२३	२८	शो	२५	६	बा	८	३	२२	३०
१३	रवि	ष	८	२८	आ	२५	०	अति	२४	५०	तै	८	२८	२३	वै
१४	सो	स	६	३६	पुन	२७	१२	सुक	२५	४	व	६	३६	२४	२
१५	मंग	अ	११	२६	पुष्य	-	-	धृ	२५	४३	बव	११	२६	२५	३
१६	बुध	नव	१३	४८	पुष्य	५	५५	शूल	२६	३६	कौ	१३	४८	२६	४
१७	गुरु	दश	१६	२१	श्ले	८	५६	गड	२७	४१	गर	१६	२१	२७	५
१८	शु	एक	१८	५७	मघा	१२	३	वृ	२८	४१	वि	१८	५७	२८	६
१९	श	द्वा	२१	२१	पूफ	१५	२	ध्रुव	२६	२६	बव	८	१०	२६	७
२०	रवि	त्रय	२३	२४	उफ	१७	४३	व्या	-	-	कौ	१०	२५	३०	८
२१	सो	चतु	२४	५६	हस्त	१६	५८	व्या	५	५६	गर	१२	१४	वै	६
२२	मंग	पू	२६	४	चि	२१	४५	हर्ष	६	७	वि	१३	३५	२	१०

विक्रम सवत् २०५४ वैशाख (मुख्य चैत्र) कृष्ण पक्ष

२३	बुध	प्र	२६	३७	स्वा	२३	१	वज्र	५	५२	बा	१४	२४	३	११
"	"	..	..	..	..	..	..	सि	२६	१२	कौ	२६	३७	"	"
२४	गुरु	द्वि	२६	४१	वि	२३	४८	व्य	२८	१०	तै	१४	४२	४	१२
२५	शु	तृ	२६	१७	अनु	२४	८	वरी	२६	४६	व	१४	३१	५	१३
२६	श	चतु	२५	२६	ज्ये	२४	४	परि	२५	४	बव	१३	५५	६	१४
२७	रवि	पच	२४	२०	मूल	२३	३६	शिव	२३	३	कौ	१२	५७	७	१५
२८	सो	ष	२२	५१	पूषा	२२	५५	सि	२०	४८	गर	११	३७	८	१६
२९	मंग	स	२१	६	उषा	२१	५४	सा	१८	१६	वि	१०	०	६	१७
३०	बुध	अ	१६	५	श्रव	२०	३८	शुभ	१५	३७	बा	८	७	१०	१८

ति	व्रत-पर्व-त्योहार आदि; (भा. स्टै. टा)
१	जुलि.अहर्गण २४५०५४०;कलि अहर्गण: १८६२०७४
	स्फुट परमा.२३अं २६क १४ वि;घूनन संस्कार स्पष्ट
	-०.८ वि;सरकारी अयनां.२३-४६-६;शीतला अष्टमी
३	पापमोचनी एकादशी (स्मार्त)
५	शनि प्रदोष व्रत; महावारुणी पर्व
७	सोमवती अमावस्या; चान्द्र संवत्सर समाप्त
८	चान्द्र विकृति नाम विक्रम संवत्सर २०५४ प्रा.;
	चैत्री नवरात्र प्रा.; गुड़ी पड़वा; चेती चन्द; उगाड़ी
६	मत्स्य जयन्ती
१०	गणगौरी व आन्दोलन तृतीया; सरहुल (बिहार)
१२	श्री पंचमी; लक्ष्मी पंचमी
१३	निरयण मेष सं.२२घं ५१ मि;वैदिक मेष संक्रान्ति
	२१ मार्च को थी; अवैदिक वैशाखी (पंज., दिल्ली
	आदि);अवैदिक सौर विक्रम सं.२०५४ प्रा.;अवैदिक
	खरमास समाप्त; अवैदिक निरयण सौर वैशाख
१४	अवैदिक वैशाखादि(बंगाल) बंगाली सं. १४०४ प्रा.;
	अवैदिक बहाग बिहू (असम);चड़क पूजा (बंगाल);
	अवैदिक चैरोबा (मणिपुर);अवैदिक विषुव (केरल);
	बी.आर.अम्बेडकर जयन्ती;अवैदिक मेषादि (तमिल;
	वासन्ती दुर्गा पूजा प्रारम्भ; महासप्तमी
१५	वासन्ती महाष्टमी;भवानी उत्पत्ति; मेला बाहुफोर्ट
	(जम्मू); अशोकाष्टमी
१६	श्रीरामनवमी
१८	ईद-उज़-जुहा (बकरीद);कामदा ११; दोलोत्सव
१९	श्रीवामन द्वादशी; मदन द्वादशी
२०	६-३३ सूर्य की सायन (वास्तविक वैदिक) वृषभ
	संक्रान्ति; वैदिक मास शुक्र प्रारम्भ; ग्रीष्मर्तु प्रा.;
	महावीर जयन्ती (जैन); अनंग त्रयोदशी
२१	रा. वैशाख प्रा.
२२	श्री हनुमज्जयन्ती;चैत्री पूर्णिमा; ओली समाप्त(जैन)
२३	बाबू कुँवर सिंह जयन्ती (बिहार)

स्थानीय समय में दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.

अं.	स्पष्ट मध्या			में सूर्योदय			व सूर्यास्त		
ति	घं	मि	से	घं	मि	से	घं	मि	से
२	१२	३	३८	६	१४	१३	१८	३५	४१
४	१२	३	३	६	११	५५	१८	३६	४७
६	१२	२	२८	६	६	४४	१८	३७	५५
८	१२	१	५५	६	७	२६	१८	३६	४
१०	१२	१	२२	६	५	९५	१८	४०	६
१२	१२	०	५०	६	३	४	१८	४१	१५
१४	१२	०	२०	६	०	५८	१८	४२	२३
१६	११	५६	५१	५	५८	५२	१८	४३	३२
१८	११	५६	२३	५	५६	४७	१८	४४	४०
२०	११	५८	५७	५	५४	४७	१८	४५	४६
२२	११	५८	३२	५	५२	४८	१८	४६	५७
२४	११	५८	१०	५	५०	४८	१८	४८	६
२६	११	५७	४६	५	४६	१	१८	४६	१७
२८	११	५७	३०	५	४७	८	१८	५०	२६
३०	११	५७	१३	५	४५	२७	१८	५१	४०

वैदिक सायन राशि चार

ति	घं	मि	ग्रह	रा
१	१६	१६	बुध	वृष
१६	१५	१३	शुक्र	वृष
२०	६	३३	सूर्य	वृष

वैदिक सायन चन्द्र चार

२	६	२८	कुम्भ
४	११	४६	मीन
६	११	४६	मेष
८	१२	५१	वृषभ
१०	१५	५८	मिथुन
१२	२२	३५	कर्क
१५	८	५२	सिंह
१७	२१	३०	कन्या
२०	१०	६	तुला
२२	२०	४८	वृश्चिक
२५	५	२	धनु
२७	११	२	मकर
२६	१५	२०	कुम्भ

निरयण चन्द्रचार

ति	घं	मि	राशि
१	२२	५६	मकर
४	१	६	कुम्भ
६	१	५०	मीन
८	२	३७	मेष
१०	५	११	वृषभ
१२	१०	५६	मिथुन
१४	२०	३५	कर्क
१७	८	५६	सिंह
१९	२१	४३	कन्या
२२	८	५६	तुला
२४	१७	३८	वृश्चि
२७	०	४	धनु
२९	४	४१	मकर
वक्री/मार्गी			
१५	५	३०	बुध व
२८	०	३६	म मा
सरकारी अयनाश			

ग्रहो का अवैदिक निरयण चार

ति	घं	मि	ग्रह	राशि
११	१५	२३	शुक्र	मेष
१३	२२	५१	सूर्य	मेष
अवैदिक नक्षत्र चार				
२	१	१	शनि	पूभा
३	२०	३६	मंगल	व पूफ
८	१०	२१	बुध	भर
११	१५	२३	शुक्र	अश्वि
१३	२२	५१	सूर्य	अश्विन
१४	०	४२	गुरु	धनि
२२	१०	३	शुक्र	भरणी
२२	१६	४२	म केतु	पूभा
२२	१७	६	बुध	व अश
२७	१४	४६	सूर्य	भरणी

अवैदिक निरयण चान्द्र स्थितियां, भा.मा.स.

५.२२.१२:चन्द्र अति निकट;६.६.४४:शून्य उ शर;६.१२.२२:शू उ क्रा.;
७.१६.३२:अमान्त चन्द्र स्पष्ट११.२३.५१; १२.१६.४३अधि. शर ५द१५;
१२.२३.२१:अधि. क्रा.१८उ११; १७.२०.५०:चन्द्र अति दूर; २०.७.११ शून्य द शर; २०.१०.५३ : शून्य द क्रा;
२३.२.३:पूर्णिमान्त चन्द्र स्पष्ट ६.८.५६; २७.७.३४ अधिक. शर ५उ११; २७.१२.०: अधि. क्रा १८द१६;

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT म.रा.सा.का			SUN सूर्य - रवि				DEC. क्रान्ति		GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र				LAT. शर		DEC. क्रान्ति		DELHI MOO दिल्ली चन्द्र				LAT. शर		DEC. क्रान्ति		MERCURY बुध			
		Hr	m	se	Si	d	m	se	d	m	Si	d	m	se	d	m	d	m	Si	d	m	se	d	m	d	m	Si	d	m	se
ति	वार	घं	मि	से	रा	अं	क	वि	अं	क	रा	अं	क	वि	अं	क	अं	क	रा	अं	क	वि	अंश	कला	अंश	कला	रा	अं	क	वि
1	Tu	12	36	40	11	17	29	12	4N	28	8	19	49	14	5N	6	17S	39	8	20	0	37	4Ω	23	18S	21	0	5	22	4
2	We	12	40	36	11	18	28	24	4	51	9	3	49	49	4Ω	38	16Ω	6	9	4	8	42	3M	53	16	45	0	6	46	16
3	Th	12	44	33	11	19	27	34	5	14	9	18	8	2	3	51	13	30	9	18	33	43	3	6	14	7	0	8	5	10
4	Fr	12	48	30	11	20	26	43	5	37	10	2	41	34	2	49	10	2	10	3	12	53	2	3	10	35	0	9	18	27
5	Sa	12	52	26	11	21	25	49	6	0	10	17	26	21	1	35	5	52	10	18	1	37	0	48	6	23	0	10	25	55
6	Su	12	56	23	11	22	24	54	6	23	11	2	16	35	0	15	1	20	11	2	53	46	0	33	1	49	0	11	27	20
7	Mo	13	0	19	11	23	23	57	6	45	11	17	5	13	1S	7	3N	17	11	17	42	10	1S	54	2N	48	0	12	22	33
8	Tu	13	4	16	11	24	22	58	7	8	0	1	44	50	2Ω	23	7M	40	0	2	19	26	3Ω	9	7M	9	0	13	11	25
9	We	13	8	12	11	25	21	57	7	30	0	16	8	33	3	29	11	30	0	16	39	3	4	14	10	57	0	13	53	48
10	Th	13	12	9	11	26	20	53	7	52	1	0	11	5	4	20	14	35	1	0	36	8	5	3	13	58	0	14	29	38
11	Fr	13	16	5	11	27	19	48	8	15	1	13	49	15	4	54	16	44	1	14	7	60	5	37	16	6	0	14	58	52
12	Sa	13	20	2	11	28	18	40	8	37	1	27	2	11	5	12	17	56	1	27	14	12	5	53	17	16	0	15	21	30
13	Su	13	23	58	11	29	17	30	8	58	2	9	51	6	5	14	18	10	2	9	56	18	5	54	17	30	0	15	37	31
14	Mo	13	27	55	0	0	16	18	9	20	2	22	18	54	5	0	17	30	2	22	17	28	5	40	16	51	0	15	47	3
15	Tu	13	31	52	0	1	15	4	9	42	3	4	29	36	4	33	16	2	3	4	21	52	5	13	15	25	0	15	50	11
16	We	13	35	48	0	2	13	47	10	3	3	16	27	53	3	55	13	53	3	16	14	16	4	35	13	19	0	15	47	7
17	Th	13	39	45	0	3	12	28	10	24	3	28	18	40	3	7	11	11	3	27	59	41	3	47	10	39	0	15	38	6
18	Fr	13	43	41	0	4	11	7	10	45	4	10	6	48	2	11	8	2	4	9	43	0	2	52	7	32	0	15	23	27
19	Sa	13	47	38	0	5	9	44	11	6	4	21	56	45	1	10	4	33	4	21	28	49	1	51	4	5	0	15	3	33
20	Su	13	51	34	0	6	8	18	11	27	5	3	52	32	0	5	0	51	5	3	21	14	0	47	0	25	0	14	38	50
21	Mo	13	55	31	0	7	6	51	11	47	5	15	57	26	1N	1	2S	56	5	15	23	40	0N	19	3S	22	0	14	9	52
22	Tu	13	59	28	0	8	5	21	12	8	5	28	13	59	2	5	6Ω	39	5	27	38	50	1	23	7Ω	6	0	13	37	12
23	We	14	3	24	0	9	3	50	12	28	6	10	43	51	3	4	10	9	6	10	8	33	2	22	10	37	0	13	1	32
24	Th	14	7	21	0	10	2	17	12	48	6	23	27	53	3	55	13	14	6	22	53	49	3	13	13	45	0	12	23	32
25	Fr	14	11	17	0	11	0	42	13	7	7	6	26	11	4	35	15	44	7	5	54	50	3	53	16	18	0	11	43	56
26	Sa	14	15	14	0	11	59	5	13	27	7	19	38	16	5	1	17	26	7	19	11	11	4	19	18	4	0	11	3	29
27	Su	14	19	10	0	12	57	26	13	46	8	3	3	18	5	11	18	14	8	2	41	56	4	29	18	54	0	10	22	56
28	Mo	14	23	7	0	13	55	46	14	5	8	16	40	21	5	3	17	59	8	16	25	57	4	22	18	41	0	9	43	1
29	Tu	14	27	3	0	14	54	5	14	24	9	0	28	27	4	39	16	41	9	0	22	3	3	57	17	23	0	9	4	25
30	We	14	30	60	0	15	52	22	14N	43	9	14	26	44	3N	57	14Ω	23	9	14	28	56	3N	15	15Ω	3	0	8	27	47
31	Th	14	34	56	0	16	50	37	15S	1	9	28	34	14	3S	1	11S	12	9	28	45	14	2S	18	11S	49	0	7	53	41

Dt	VENUS शुक्र					MARS मंगल					JUPITER गुरु मकर में				SATUR शनि मीन				URANU हर्शल मकर				NEPTU नेप्चू मकर				PLUTO प्लूटो वृश्चिक				M RAHU मध्यम राहु				T RAHU स्पष्ट राहु			
	Si	d	m	se		Si	d	m	se		Si	d	m	se	Si	d	m	se	Si	d	m	se	Si	d	m	se	Si	d	m	se	Si	d	m	se	Si	d	m	se
ति	रा	अं	क	वि		रा	अं	क	वि		रा	अं	क	वि	अं	क	वि		अं	क	वि		अं	क	वि		अं	क	वि		अं	क	वि		अं	क	वि	
1	11	17	5	7		4	27	29	42		9	21	11	33	16	33	53		14	7	50		5	52	38		11	37	46		4	28	15		4	50	18	
2	11	18	19	37		4	27	10	18		9	21	22	13	16	41	24		14	9	49		5	53	37		11	37	0		4	25	4		4	50	36	
3	11	19	34	6		4	26	51	27		9	21	32	47	16	48	56		14	11	45		5	54	35		11	36	11		4	21	54		4	51	24	
4	11	20	48	34		4	26	33	12		9	21	43	15	16	56	27		14	13	39		5	55	30		11	35	20		4	18	43		4	52	18	
5	11	22	3	1		4	26	15	34		9	21	53	36	17	3	58		14	15	31		5	56	24		11	34	28		4	15	32		4	53	13	
6	11	23	17	27		4	25	58	35		9	22	3	52	17	11	28		14	17	20		5	57	16		11	33	35		4	12	21		4	53	36	
7	11	24	31	53		4	25	42	17		9	22	14	0	17	18	59		14	19	6		5	58	5		11	32	39		4	9	11		4	53	12	
8	11	25	46	17		4	25	26	40		9	22	24	3	17	26	28		14	20	49		5	58	53		11	31	41		4	5	60		4	51	54	
9	11	27	0	40		4	25	11	46		9	22	33	58	17	33	58		14	22	30		5	59	40		11	30	42		4	2	49		4	49	48	
10	11	28	15	2		4	24	57	35		9	22	43	47	17	41	26		14	24	8		6	0	24		11	29	42		3	59	38		4	47	0	
11	11	29	29	23		4	24	44	10		9	22	53	28	17	48	54		14	25	43		6	1	6		11	28	40		3	56	27		4	44	0	
12	0	0	43	43		4	24	31	30		9	23	3	3	17	56	21		14	27	16		6	1	46		11	27	36		3	53	17		4	41	6	
13	0	1	58	1		4	24	19	36		9	23	12	31	18	3	48		14	28	46		6	2	24		11	26	31		3	50	6		4	38	54	
14	0	3	12	19		4	24	8	29		9	23	21	51	18	11	13		14	30	13		6	3	1		11	25	25		3	46	55		4	37	27	
15	0	4	26	35		4	23	58	8		9	23	31	4	18	18	38		14	31	37		6	3	35		11	24	17		3	43	44		4	37	12	
16	0	5	40	50		4	23	48	36		9	23	40	10	18	26	1		14	32	59		6	4	8		11	23	8		3	40	34		4	37	54	
17	0	6	55	4		4	23	39	50		9	23	49	9	18	33	24		14	34	17		6	4	38		11	21	57		3	37	23		4	39	18	
18	0	8	9	17		4	23	31	52		9	23	57	60	18	40	45		14	35	33		6	5	7		11	20	45		3	34	12		4	41	0	
19	0	9	23	28		4	23	24	42		9	24	6	43	18	48	5		14	36	46		6	5	33		11	19	31		3	31	1		4	42	26	
20	0	10	37	38		4	23	18	19		9	24	15	19	18	55	24		14	37	56		6	5	58		11	18	17		3	27	50		4	43	12	
21	0	11	51	47		4	23	12	43		9	24	23	47	19	2	42		14	39	3		6	6	20		11	17	1		3	24	40		4	42	42	
22	0	13	5	55		4	23	7	55		9	24	32	7	19	9	58		14	40	7		6	6	41		11	15	44		3	21	29		4	40	42	
23	0	14	20	2		4	23	3	53		9	24	40	19	19	17	13		14	41	8		6	6	60		11	14	26		3	18	18		4	37	6	
24	0	15	34	7		4	23	0	37		9	24	48	23	19	24	26		14	42	7		6	7	16		11	13	5		3	15	7		4	32	0	
25	0	16	48	12		4	22	58	8		9	24	56	18	19	31	38		14	43	2		6	7	31		11	11	44		3	11	57		4	26	6	
26	0	18	2	16		4	22	56	24		9	25	4	6	19	38	48		14	43	55		6	7	44		11	10	22		3	8	46		4	19	54	
27	0	19	16	18		4	22	55	25		9	25	11	45	19	45	57		14	44	45		6	7	54		11	8	59		3	5	35		4	14	18	
28	0	20	30	20		4	22	55	12		9	25	19	16	19	53	4		14	45	31		6	8	3		11	7	35		3	2	24		4	9	54	
29	0	21	44	21		4	22	55	43		9	25	26	38	20	0	9		14	46	15		6	8	10		11	6	10		2	59	14		4	7	11	
30	0	22	58	21		4	22	56	58		9	25	33	52	20	7	12		14	46	56		6	8	15		11	4	44		2	56	3		4	6	11	
31	0	24	12	20		4	22	58	57		9	25	40	57	20	14	13		14	47	34		6	8	18		11	3	16		2	52	52		4	6	32	

मई 1997,शक 1919,वि. सं. 2054, वैशाख कृष्ण 9 से ज्ये कृष्ण 10 तक, उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

(वै० कृष्ण पक्ष)		तिथि		आदि		समा.		काल		भा.स्टै.टा.				शक	सौर
मई	वार	ति	घं	मि	नक्ष	घं	मि	यो	घं	मि	कर	घं	मि	वै	वै
१	गुरु	नव	१६	५२	ध	१६	६	शुक्र	१२	४५	तै	६	०	११	१६
२	शु	दश	१४	२७	शत	१७	३०	ब्रह्म	६	४३	वि	१४	२७	१२	२०
३	श	एक	११	५६	पूभ	१५	४५	ऐंद्र	६	३५	बा	११	५६	१३	२१
'''	''	..	..	..	..	..	..	वैधृ	२७	२४	..	..	..	''	''
४	रवि	द्वा	६	२१	उभा	१३	५७	विष्	२४	१३	तै	६	२१	१४	२२
५	सो	त्र	६	४६	रेव.	१२	१२	प्री	२१	७	व	६	४६	१५	२३
'''	''	चतु	२८	२५	..	..	..	..	..	..	श	२८	२५	''	''
६	मग	अम	२६	१७	अश	१०	३८	आ	१८	१२	चतु	१५	१६	१६	२४
विक्रम सवत् २०५४ वैशाख शुक्ल पक्ष															
७	बुध	प्र	२४	३२	भर	६	२२	सौ	१५	३४	किं	१३	२१	१७	२५
८	गुरु	द्वि	२३	१८	कृ	८	३२	शो	१३	१६	बा	११	५१	१८	२६
९	शु	तृ	२२	४२	रो	८	१५	अति	११	३३	तै	१०	५५	१९	२७
१०	श	चतु	२२	४८	मृ	८	३७	सुक	१०	१८	व	१०	४०	२०	२८
११	रवि	पच	२३	३८	आ	६	४१	धृ	६	३८	बव	११	७	२१	२९
१२	सो	ष	२५	६	पुन	११	२८	शूल	६	३१	कौ	१२	१८	२२	३०
१३	मग	स	२७	१४	पु	१३	५१	गड	६	५५	गर	१४	७	२३	३१
१४	बुध	अ	-	-	श्ले	१६	४१	वृ	१०	४१	वि	१६	२४	२४	ज्ये
१५	गुरु	अ	५	४०	मघ	१६	४६	ध्रुव	११	४१	बव	५	४०	२५	२
१६	शु	नव	८	१३	पूफ	२२	४८	व्या	१२	४४	कौ	८	१३	२६	३
१७	श	दश	१०	३७	उफ	२५	३५	हर्ष	१३	३७	गर	१०	३७	२७	४
१८	रवि	एक	१२	३८	ह	२७	५४	वज्र	१४	१३	वि	१२	३८	२८	५
१९	सो	द्वा	१४	६	चि	-	-	सि	१४	२३	बा	१४	६	२९	६
२०	मग	त्रय	१४	५७	चि	५	३७	व्य	१४	४	तै	१४	५७	३०	७
२१	बुध	चतु	१५	६	स्वा	६	४३	वरी	१३	१४	व	१५	६	३१	८
२२	गुरु	पू	१४	४३	वि	७	१२	परि	११	५५	बव	१४	४३	ज्ये	९
विक्रम सवत् २०५४ ज्येष्ठ (मुख्य वैशाख) कृष्ण पक्ष															
२३	शु	प्र	१३	४६	अनु	७	७	शि	१०	११	कौ	१३	४६	२	१०
२४	श	द्वि	१२	२४	ज्ये	६	३६	सि	८	४	गर	१२	२४	३	११
२५	रवि	तृ	१०	४२	मूल	५	४३	सा	५	४१	वि	१०	४२	४	१२
'''	''	..	..	.	पूष	२८	३६	शुभ	२७	६	..	..	..	''	''
२६	सो	चतु	८	४६	उष	२७	२०	शुक्र	२४	२४	बा	८	४६	५	१३
२७	मग	पच	६	४२	श्रव	२६	०	ब्रह्म	२१	३७	तै	६	४२	६	१४
'''	''	ष	२८	३५	..	..	..	..	..	..	..	..	..	''	''
२८	बुध	स	२६	२६	ध	२४	३८	ऐंद्र	१८	४६	वि	१५	३०	७	१५
२९	गुरु	अ	२४	१७	शत	२३	१६	वै	१६	१	बा	१३	२१	८	१६
३०	शु	नव	२२	११	पूभ	२१	५७	वि	१३	१४	तै	११	१४	९	१७
३१	श	दश	२०	६	उभा	२०	४१	प्री	१०	३०	व	६	६	१०	१८

ति	व्रत-पर्व-त्योहार आदि (भा.स्टै.टा)
१	जुलि.अहर्गण २४५०५७०;कलि अहर्गण १८६२१०४; स्फुट परमा. २३अं २९क १३वि;धूनन संस्कार स्पष्ट -२.०वि;सरकारी अयनांशः २३-४९-६;मई दिवस
३	वरूथिनी एकादशी
७	देव दामोदर तिथि (असम)
८	शिवाजी जयन्ती; रवीन्द्र ज.(बंगाली कैलेण्डर से)
९	अक्षय तृतीया; परशुराम जयन्ती; मोहोरम; हिजरी सन १४१८ प्रारम्भ (मु);केदार बद्री यात्रा
११	आदि शंकराचार्य जयन्ती; रामानुजाचार्य ज (द.भा)
१२	श्रीरामानुजाचार्य ज. (द. भा.)
१३	जाहु सप्तमी; गंगोत्पति
१४	१६-४६ सूर्य की अवैदिक निरयण वृषभ संक्रान्ति
१५	सीता नवमी
१८	मोहिनी एकादशी; मुहर्रम (ताज़िया)
१९	परशुराम द्वादशी
२०	नृसिंह चतुर्दशी
२१	५-४८ सूर्य की सायन (वास्तविक वैदिक) मिथुन संक्रान्ति; वैदिक मास शुचि प्रारम्भ; उड़ीसा की असली रजस संक्रा. आज ही है १४ जून को नहीं
२२	बुद्ध पूर्णिमा; बुद्ध निर्वाण सं० २५४१ प्रा; वैशाख स्नान समाप्त; कूर्म जयन्ती; रा. ज्येष्ठ प्रारम्भ
२९	त्रिलोचनाष्टमी (बंगाल)

स्थानीय समय में				दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.						वैदिक सायन राशि चार				निरयण चन्द्र चार				ग्रहो का अवैदिक निरयण चार				
अं.	स्पष्ट मध्यान्ह			में सूर्योदय			व सूर्यास्त			ति	घं	मि	ग्रह राशि	ति	घं	मि	राशि	ति	घं	मि	ग्रह	राशि
ति	घं	मि	से	घं	मि	से	घं	मि	से	५	७	२५	यु व ही मे	१	७	५५	कुम्भ	५	२२	२०	शुक्र	वृषभ
२	११	५६	५६	५	४३	३५	१८	५३	१	१०	२२	५०	शुक्र मिथुन	३	१०	१२	मीन	१४	१६	४६	सूर्य	वृषभ
४	११	५६	४७	५	४१	५६	१८	५४	१३	१२	१५	५०	बुध वृषभ	५	१२	१३	मेष	३०	८	३७	शुक्र	मिथुन
६	११	५६	३७	५	४०	२३	१८	५५	२५	२१	५	४८	सूर्य मिथुन	७	१५	७	वृषभ					
८	११	५६	२६	५	३८	५५	१८	५६	३६	वैदिक सायन चन्द्र चार				६	२०	२१	मिथु	अवैदिक काल्पनिक नक्षत्र चार				
१०	११	५६	२३	५	३७	३१	१८	५७	५०	९	१८	२०	मीन	१२	४	५७	कर्क	३	५	२४	शुक्र	कृति
१२	११	५६	२०	५	३६	१४	१८	५९	४	३	२०	२६	मेष	१४	१६	४१	सिंह	११	८	५४	सूर्य	कृति
१४	११	५६	१९	५	३४	५६	१९	०	१६	५	२२	३५	वृषभ	१७	५	३२	कन्या	१२	१	४७	रप के	पूभा
१६	११	५६	२०	५	३३	५१	१९	१	२८	८	१	५१	मिथुन	१९	१६	५०	तुला	१४	१	२२	शुक्र	रोहि
१८	११	५६	२४	५	३२	४५	१९	२	३९	१०	७	४३	कर्क	२२	१	८	वृश्चि	२३	१४	५१	बुध	भरणी
२०	११	५६	२९	५	३१	४७	१९	३	४९	१२	१७	३	सिंह	२४	६	३६	धनु	२४	०	५३	मग	उफा
२२	११	५६	३७	५	३०	५३	१९	४	५८	१५	५	१३	कन्या	२६	१०	१८	मकर	२४	२२	३	शुक्र	मृग
२४	११	५६	४७	५	३०	६	१९	६	६	१७	१७	५७	तुला	२८	१३	१६	कुम्भ	२५	५	१२	सूर्य	रोहि
२६	११	५६	५६	५	२६	१८	१९	७	१२	२०	४	४१	वृश्चिक	३०	१६	१६	मीन					
२८	११	५७	१२	५	२८	४३	१९	८	१७	२२	१२	२०	धनु	वक्री/मार्गी				सरकारी अयनांश				
३०	११	५७	२८	५	२८	८	१९	९	२२	२४	१७	२१	मकर	२	४	५९	ने व	९:२३.४९.१०; १७:				
अवैदिक निरयण चान्द्र स्थितियां आदि,भा.मा.स.										२६	२०	५०	कुम्भ	८	२३	३५	बु मा	२३.४९.११; २४:२३.४९.१२;				
३.१६.३६: चन्द्र अति निकट; ३.१७.५:										२८	२३	४८	मीन	१३	९	४३	यू व	३१:२३.४९.१३				
शू द शर;३.२१.२२ शू. उ क्रा.; ७.२.१७:										३१	२	४८	मेष									

अमान्त चन्द्र स्पष्ट ०.२२.३२; १०.२.५२ अधिकतम शर ५द७; १०.७.३:अधिकतम क्रा. १८उ२०;
१५.१५.३६ चन्द्र अति दूर; १७.१२.३: शून्य द शर; १७.१६.२८:शून्य द क्रा; २२.१४.४३:पूर्णिमान्त चन्द्र स्पष्ट ७.७.३०;२४.१०.५६:
अधिकतम शर ५उ३; २४.१६.४: अधिकतम क्रा.१८द२४;२६.१२.२८:चन्द्र अति निकट; ३०.१६.४८ शू उ शर; ३१.४.३५ शून्य उ क्रा

MAY मई 1997 श्रीकृष्ण यूनिवर्सल विश्व पंचाग

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT म.रा.सा.का Hr	m	se	SUN सूर्य - रवि Si	d	m	se	DEC. क्रान्ति d	m	GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र Si	d	m	se	LAT. शर d	m	DEC. क्रान्ति d	m	DELHI MOO दिल्ली चन्द्र Si	d	m	se	LAT. शर d	m	DEC. क्रान्ति d	m	MERCURY बुध Si	d	m	se
ति	वार	घं	मि	से	रा	अं	क	वि	अं	क	रा	अं	क	वि	अं	क	अं	क	रा	अं	क	वि	अं०	क'	अं०	क'	रा	अं	क	वि
1	Th	14	34	56	0	16	50	37	15N	1	9	28	34	14	3N	1	11S	12	9	28	45	14	2N	18	11S	49	0	7	53	41
2	Fr	14	38	53	0	17	48	51	15	19	10	12	49	42	1	53	7	19	10	13	9	8	1	9	7	53	0	7	22	40
3	Sa	14	42	50	0	18	47	4	15	37	10	27	11	11	0	38	2	59	10	27	38	11	0	7	3	30	0	6	55	9
4	Su	14	46	46	0	19	45	15	15	54	11	11	35	47	0S	40	1N	32	11	12	8	56	1S	25	1N	4	0	6	31	31
5	Mo	14	50	43	0	20	43	24	16	12	11	25	59	33	1	55	5	58	11	26	37	2	2	40	5	31	0	6	12	3
6	Tu	14	54	39	0	21	41	32	16	29	0	10	17	38	3	3	10	1	0	10	57	22	3	47	9	33	0	5	56	58
7	We	14	58	36	0	22	39	39	16	45	0	24	24	52	3	58	13	27	0	25	4	41	4	40	12	57	0	5	46	27
8	Th	15	2	32	0	23	37	43	17	2	1	8	16	24	4	37	16	3	1	8	54	16	5	19	15	30	0	5	40	35
9	Fr	15	6	29	0	24	35	46	17	18	1	21	48	31	5	1	17	41	1	22	22	42	5	40	17	5	0	5	39	24
10	Sa	15	10	26	0	25	33	48	17	34	2	4	59	8	5	7	18	19	2	5	28	16	5	45	17	41	0	5	42	55
11	Su	15	14	22	0	26	31	47	17	50	2	17	48	2	4	58	17	59	2	18	11	10	5	35	17	21	0	5	51	6
12	Mo	15	18	19	0	27	29	45	18	5	3	0	16	51	4	34	16	47	3	0	33	22	5	10	16	9	0	6	3	53
13	Tu	15	22	15	0	28	27	41	18	20	3	12	28	40	3	59	14	51	3	12	38	14	4	35	14	14	0	6	21	10
14	We	15	26	12	0	29	25	35	18	35	3	24	27	44	3	13	12	17	3	24	30	11	3	49	11	42	0	6	42	52
15	Th	15	30	8	1	0	23	27	18	49	4	6	18	58	2	20	9	15	4	6	14	20	2	56	8	42	0	7	8	52
16	Fr	15	34	5	1	1	21	18	19	3	4	18	7	40	1	20	5	50	4	17	56	2	1	57	5	21	0	7	39	2
17	Sa	15	38	1	1	2	19	6	19	17	4	29	59	6	0	18	2	11	4	29	40	42	0	55	1	44	0	8	13	16
18	Su	15	41	58	1	3	16	53	19	30	5	11	58	14	0N	47	1S	35	5	11	33	27	0	9	2S	0	0	8	51	25
19	Mo	15	45	54	1	4	14	39	19	43	5	24	9	28	1	50	5	22	5	23	38	51	1N	11	5	46	0	9	33	23
20	Tu	15	49	51	1	5	12	23	19	56	6	6	36	15	2	48	8	59	6	6	0	37	2	10	9	23	0	10	19	1
21	We	15	53	48	1	6	10	5	20	8	6	19	20	50	3	40	12	17	6	18	41	19	3	2	12	43	0	11	8	14
22	Th	15	57	44	1	7	7	46	20	20	7	2	24	4	4	22	15	4	7	1	42	10	3	43	15	32	0	12	0	53
23	Fr	16	1	41	1	8	5	26	20	32	7	15	45	17	4	50	17	6	7	15	2	49	4	12	17	38	0	12	56	54
24	Sa	16	5	37	1	9	3	5	20	43	7	29	22	23	5	3	18	14	7	28	41	28	4	25	18	49	0	13	56	9
25	Su	16	9	34	1	10	0	42	20	54	8	13	12	16	4	58	18	18	8	12	35	9	4	21	18	56	0	14	58	33
26	Mo	16	13	30	1	10	58	19	21	5	8	27	11	24	4	35	17	16	8	26	40	11	3	59	17	56	0	16	4	1
27	Tu	16	17	27	1	11	55	54	21	15	9	11	16	15	3	56	15	11	9	10	52	51	3	20	15	51	0	17	12	28
28	We	16	21	24	1	12	53	28	21	25	9	25	23	56	3	2	12	11	9	25	9	49	2	26	12	50	0	18	23	52
29	Th	16	25	20	1	13	51	2	21	35	10	9	32	19	1	57	8	28	10	9	28	25	1	20	9	4	0	19	38	7
30	Fr	16	29	17	1	14	48	35	21	44	10	23	40	3	0N	45	4S	16	10	23	46	40	0	7	4	48	0	20	55	10
31	Sa	16	33	13	1	15	46	7	21	53	11	7	46	4	0S	30	0N	10	11	8	2	54	1S	9	0N	18	0	22	14	60

Dt	VENUS शुक्र Si	d	m	se	MARS मंगल Si	d	m	se	JUPITER Makar गुरु मकर में				SATUR Mina शनि मीन				URANU Makar हर्शल मकर				NEPTU Makar नेप्चू मकर				PLUTO Vrischik प्लूटो वृश्चिक				M RAHU Kanya मध्यम राहु				T RAHU स्पष्ट राहु कन्या			
ति	रा	अं०	क'	वि''	रा	अं०	क'	वि''	रा	अं०	क'	वि''	अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''	
1	0	24	12	20	4	22	58	57	9	25	40	57	20	14	13		14	47	34		6	8	18		11	3	16		2	52	52		4	6	32	
2	0	25	26	18	4	23	1	39	9	25	47	53	20	21	13		14	48	9		6	8	19		11	1	48		2	49	41		4	7	38	
3	0	26	40	15	4	23	5	3	9	25	54	39	20	28	10		14	48	40		6	8	17		11	0	19		2	46	30		4	8	32	
4	0	27	54	12	4	23	9	10	9	26	1	17	20	35	5		14	49	9		6	8	14		10	58	49		2	43	20		4	8	26	
5	0	29	8	8	4	23	13	59	9	26	7	46	20	41	58		14	49	36		6	8	10		10	57	19		2	40	9		4	6	26	
6	1	0	22	2	4	23	19	28	9	26	14	5	20	48	49		14	49	58		6	8	3		10	55	47		2	36	58		4	2	20	
7	1	1	35	56	4	23	25	38	9	26	20	15	20	55	38		14	50	18		6	7	54		10	54	15		2	33	47		3	56	14	
8	1	2	49	48	4	23	32	28	9	26	26	15	21	2	24		14	50	35		6	7	43		10	52	42		2	30	37		3	48	38	
9	1	4	3	40	4	23	39	58	9	26	32	6	21	9	7		14	50	49		6	7	30		10	51	9		2	27	26		3	40	14	
10	1	5	17	30	4	23	48	6	9	26	37	47	21	15	48		14	50	60		6	7	15		10	49	35		2	24	15		3	31	56	
11	1	6	31	19	4	23	56	52	9	26	43	18	21	22	27		14	51	8		6	6	58		10	48	0		2	21	4		3	24	44	
12	1	7	45	8	4	24	6	15	9	26	48	40	21	29	3		14	51	12		6	6	40		10	46	25		2	17	54		3	19	8	
13	1	8	58	55	4	24	16	15	9	26	53	51	21	35	36		14	51	14		6	6	19		10	44	49		2	14	43		3	15	38	
14	1	10	12	40	4	24	26	51	9	26	58	52	21	42	6		14	51	13		6	5	57		10	43	13		2	11	32		3	13	56	
15	1	11	26	25	4	24	38	2	9	27	3	44	21	48	34		14	51	9		6	5	33		10	41	36		2	8	21		3	13	50	
16	1	12	40	9	4	24	49	48	9	27	8	25	21	54	59		14	51	2		6	5	7		10	40	0		2	5	10		3	14	32	
17	1	13	53	51	4	25	2	7	9	27	12	56	22	1	20		14	50	52		6	4	39		10	38	22		2	1	60		3	15	8	
18	1	15	7	32	4	25	14	60	9	27	17	16	22	7	39		14	50	39		6	4	9		10	36	44		1	58	49		3	14	50	
19	1	16	21	12	4	25	28	25	9	27	21	27	22	13	55		14	50	23		6	3	37		10	35	6		1	55	38		3	12	50	
20	1	17	34	51	4	25	42	21	9	27	25	27	22	20	7		14	50	5		6	3	4		10	33	28		1	52	27		3	8	26	
21	1	18	48	29	4	25	56	48	9	27	29	16	22	26	17		14	49	43		6	2	29		10	31	49		1	49	17		3	1	38	
22	1	20	2	6	4	26	11	46	9	27	32	55	22	32	23		14	49	19		6	1	52		10	30	11		1	46	6		2	52	44	
23	1	21	15	41	4	26	27	13	9	27	36	23	22	38	26		14	48	51		6	1	13		10	28	32		1	42	55		2	42	20	
24	1	22	29	16	4	26	43	10	9	27	39	41	22	44	26		14	48	21		6	0	33		10	26	53		1	39	44		2	31	38	
25	1	23	42	50	4	26	59	35	9	27	42	47	22	50	22		14	47	48		5	59	51		10	25	14		1	36	34		2	21	38	
26	1	24	56	23	4	27	16	28	9	27	45	43	22	56	15		14	47	12		5	59	7		10	23	35		1	33	23		2	13	20	
27	1	26	9	55	4	27	33	48	9	27	48	28	23	2	5		14	46	34		5	58	21		10	21	56		1	30	12		2	7	38	
28	1	27	23	26	4	27	51	36	9	27	51	2	23	7	50		14	45	52		5	57	34		10	20	17		1	27	1		2	4	26	
29	1	28	36	56	4	28	9	50	9	27	53	25	23	13	33		14	45	8		5	56	45		10	18	38		1	23	50		2	3	26	
30	1	29	50	25	4	28	28	29	9	27	55	36	23	19	11		14	44	21		5	55	55		10	17	0		1	20	40		2	3	32	
31	2	1	3	54	4	28	47	35	9	27	57	37	23	24	46		14	43	31		5	55	3		10	15	21		1	17	29		2	3	44	

जून 1997, शक 1919, वि. स. 2054, ज्येष्ठ कृष्ण 11 से आषाढ़ कृ. 11 तक, उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

(ज्ये० कृष्ण पक्ष)तिथि आदि समा. काल भा.स्टै.टा.														शक	सौर
जून		तिथि			नक्षत्र			योग			करण				
ता.	वार	ति	घं	मि	नक्ष	घं	मि	यो	घं	मि	कर	घं	मि	ज्ये	ज्ये
१	रवि	एक	१८	१२	रे	१६	३१	आ	७	५०	बव	७	१०	११	१६
''	''	..	..	..	..	..	..	सौ	२६	१५	बा	१८	१२	''	''
२	सो	द्वा	१६	२४	अश्व	१८	३०	शो	२६	४६	तै	१६	२४	१२	२०
३	मग	त्र	१४	४८	भर	१७	४१	अति	२४	३४	व	१४	४८	१३	२१
४	बुध	चतु	१३	२६	कृ	१७	११	सुक	२२	३६	श	१३	२६	१४	२२
५	गुरु	अम	१२	३४	रो	१७	४	धृ	२०	५८	ना	१२	३४	१५	२३
विक्रम सवत् २०५४ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष															
६	शु	प्र	१२	७	मृ	१७	२६	शूल	१६	४५	बव	१२	७	१६	२४
७	श	द्वि	१२	१४	आ	१८	२३	गड	१८	५६	कौ	१२	१४	१७	२५
८	रवि	तृ	१२	५८	पुन	१६	५६	वृ	१८	४३	गर	१२	५८	१८	२६
९	सो	चतु	१४	१६	पु	२२	५	ध्रुव	१८	५६	वि	१४	१६	१६	२७
१०	मग	पच	१६	१४	श्ले	२४	४४	व्या	१६	३४	बा	१६	१४	२०	२८
११	बुध	ष	१८	३४	मघ	२७	४४	हर्ष	२०	३०	तै	१८	३४	२१	२६
१२	गुरु	स	२१	६	पूफ	-	-	वज्र	२१	३४	गर	७	५०	२२	३०
१३	शु	अ	२३	३४	पूफ	६	५०	सि	२२	३५	वि	१०	२१	२३	३१
१४	श	नव	२५	४३	उफ	६	४७	व्य	२३	२२	बा	१२	४२	२४	आ
१५	रवि	दश	२७	१६	ह	१२	२०	वरी	२३	४४	तै	१४	३६	२५	२
१६	सो	एक	२८	१३	चि	१४	१७	परि	२३	३५	व	१५	५२	२६	३
१७	मग	द्वा	२८	२२	स्वा	१५	३१	शि	२२	५१	बव	१६	२३	२७	४
१८	बुध	त्र	२७	४६	वि	१६	१	सि	२१	३०	कौ	१६	१०	२८	५
१९	गुरु	चतु	२६	२६	अनु	१५	४८	सा	१६	३६	गर	१५	१३	२६	६
२०	शु	पू	२४	३६	ज्ये	१४	५८	शुभ	१७	१३	वि	१३	३८	३०	७
विक्रम सवत् २०५५ आषाढ़ (मुख्य ज्येष्ठ) कृष्ण पक्ष															
२१	श	प्र	२२	२३	मूल	१३	४०	शु	१४	२७	बा	११	३४	३१	८
२२	रवि	द्वि	१६	५१	पूष	१२	१	ब्रह्म	११	२४	तै	६	६	आ	९
२३	सो	तृ	१७	११	उष	१०	११	ऐंद्र	८	१२	व	६	३२	२	१०
''	''	..	..	..	..	..	..	वैधृ	२८	५७	वि	१७	११	''	''
२४	मग	चतु	१४	२६	श्रव	८	१८	वि	२५	४३	बा	१४	२६	३	११
२५	बुध	पच	११	५३	ध	६	२८	प्री	२२	३७	तै	११	५३	४	१२
''	''	..	..	..	शत	२८	४७	..	..	..	..	..	..	''	''
२६	गुरु	ष	६	२७	पूभ	२७	१८	आ	१६	३६	व	६	२७	५	१३
२७	शु	स	७	१३	उभा	२६	५	सौ	१६	५४	बव	७	१३	६	१४
''	''	अ	२६	१५	..	..	..	..	..	..	कौ	२६	१५	''	''
२८	श	नव	२७	३३	रेव	२५	७	शो	१४	२१	तै	१६	२२	७	१५
२९	रवि	दश	२६	८	अश्व	२४	२६	अति	१२	२	व	१४	४८	८	१६
३०	सो	एक	२५	१	भर	२४	३	सु	६	५७	बव	१३	३२	६	१७

ति	व्रत-पर्व-त्योहार (भा. स्टै. टा. में)
१	जुलि.अहगर्ण २४५०६०१;कलि अहर्गण १८६२१३५; स्फुट परमा.२३अं २६क १३वि;धूनन संस्कार स्पष्ट -२.३ वि;अयनांश २३-४६-१३;अपरा व भद्रकाली ११
५	वटसावित्री अमावस्या
६	गंगा दशहरा प्रा (१५ जून तक)
८	रम्भा तृतीया;महाराणा प्रताप जयन्ती (राजस्थान)
९	गुरु अर्जुनदेव शहीदी दिवस
१०	महादेव विवाह (उडीसा)
११	अरण्य, स्कन्द व जामातृ षष्ठी
१३	श्री क्षीरभवानी यात्रा (कश्मीर)
१४	२६-२६ सूर्य की शास्त्र विरुद्ध अवैदिक निरयण मिथुन संक्रान्ति; शास्त्रविरुद्ध निरयण रजस सं. (उडीसा);(असली रजस सं २१ मई को थी)
१५	गंगा दशहरा; दशाश्वमेधघाट स्नान (वाराणसी)
१६	निर्जला एकादशी; रुकमिणी विवाह (उडीसा)
१७	रमा द्वादशी; चम्पक द्वादशी
२०	वटसावित्री पूर्णिमा (गुजरात आदि);देवस्नान १५
२१	१३-५० सूर्य की सायन (वास्तविक वैदिक)कर्क सं; वैदिक मास नाभस व वर्षा ऋतु प्रा.; (भगवद्गीता के आठवें अध्याय व अन्य सभी उपनिषदों में इसी दक्षिणायन का वर्णन है, किसी निरयण अवैदिक 'रमण' या 'लाहिरी' आदि का नहीं। इन सब काल्पनिक दक्षिणायन व राशियों आदि का आविष्कार कुछ फलित ज्योतिषियों ने किया हैं जनसाधारण को ठगने के लिए और वह झूठ बोलते हैं कि वह वैदिक ज्योतिष अपना रहे हैं जबकि उन्होने वेदों का नाम सुना है उनका अध्ययन नहीं किया है।); सूर्य की अधिकतम द. क्रा व वर्ष का सबसे बड़ा दिन आज है--यही असली दक्षिणायन का लक्षण है
२९	गुरु हरगोविन्द सिंह ज.;राष्ट्रीय आषाढ़ आरम्भ
३०	योगिनी एकादशी व्रत (सबका)

स्थानीय समय में	दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.									वैदिक सायन राशि चार				निरयण चन्द्र चार				ग्रहो का अवैदिक निरयण चार				
अं.	स्पष्ट मध्यान्ह			में सूर्योदय			व सूर्यास्त			ति	घं	मि	ग्रह राशि	ति	घं	मि	राशि	ति	घं	मि	ग्रह	राशि
ति	घं	मि	से	घं	मि	से	घं	मि	से	४	६	४८	शुक्र कर्क	१	१६	३१	मेष	३	२०	१८	मंगल	कन्या
१	११	५७	४६	५	२७	४५	१९	१०	६	६	४	५५	बुध मिथुन	३	२३	३२	वृषभ	५	११	५३	बुध	वृष
३	११	५८	५	५	२७	२१	१९	११	८	१६	१४	०	मगल तुला	६	५	११	मिथु	१५	२	२५	सूर्य	मिथुन
५	११	५८	२६	५	२७	४	१९	१२	७	२१	१३	५०	सूर्य कर्क	८	१३	२६	कर्क	२०	२	३७	स्प रा	कन्या
७	११	५८	४७	५	२६	५२	१९	१३	४	२४	२	११	बुध कर्क	११	०	४४	सिंह	२१	६	२	बुध	मिथुन
९	११	५९	११	५	२६	४७	१९	१३	५५	२६	०	८	शुक्र सिंह	१३	१३	३५	कन्या	२३	२२	१२	शुक्र	कर्क
११	११	५९	३५	५	२६	४६	१९	१४	४३	वैदिक सायन चन्द्र चार				१६	१	२३	तुला	२४	१४	२१	म रा	सिंह
१३	११	५९	५६	५	२६	५४	१९	१५	२४	२	६	६	वृषभ	१८	६	५८	वृश्चि	अवैदिक नक्षत्र चार				
१५	१२	०	२५	५	२७	०	१९	१६	६	४	१०	२५	मिथुन	२०	१४	५८	धनु	३	७	५७	बुध	कृति
१७	१२	०	५०	५	२७	१२	१९	१६	४२	६	१६	३२	कर्क	२२	१७	३५	मकर	४	१६	२०	शुक्र	आर्द्रा
१९	१२	१	१६	५	२७	३०	१९	१७	१२	६	१	२६	सिंह	२४	१६	२२	कुम्भ	८	३	२	सूर्य	मृग
२१	१२	१	४२	५	२७	५५	१९	१७	४२	११	१३	१३	कन्या	२६	२१	३६	मीन	११	८	४	बुध	रोहि
२३	१२	२	८	५	२८	२५	१९	१८	६	१४	२	५	तुला	२६	१	७	मेष	१५	१७	१५	शुक्र	पुन
२५	१२	२	३३	५	२८	५४	१९	१८	२३	१६	१३	२०	वृश्चिक					१८	२	४३	बुध	मृगशि
२७	१२	२	५८	५	२६	३०	१९	१८	३५	१८	२१	८	धनु	वक्री/मार्गी				२२	२	६	सूर्य	आर्द्रा
२९	१२	३	११	५	३०	६	१९	१८	४७	२१	१	३२	मकर	१०	५	५५	बृ व	२४	७	३०	बुध	आर्द्रा
अवैदिक निरयण चान्द्र स्थितिया; भा. मा. स.										२३	३	५०	कुम्भ					२६	१५	५७	शुक्र	पुष्य
५.१२.३४:अमान्त चन्द्र स्पष्ट: १.२०.५१;										२५	५	३६	मीन	सरकारी अयनाश				२८	०	११	मगल	हस्त
६.७.३६:अधिकतम शर ५द१; ६.१८.५६: अधिक.										२७	८	६	मेष	६:२३.४६.१४;				३०	१०	५५	बुध	पुन
क्रान्ति १८उ२७; १२.१०.३७ चन्द्र अति दूर;										२६	११	५४	वृषभ	१३:२३.४६.१५; २०:२३.४६.१६; २४:२३.४६.१७								

१३.१४.४६ शून्य द शर;१४.४.५८ शू द क्रा.;२०.१४.४८ अधि शर ५उ१;२१.०.४६:पूर्णिमान्त चन्द्र स्पष्ट ८.५.४०;

२१.४.२३:अधिकतम क्रान्ति १८द२८;२४.१०.३७चन्द्र अति निकट; २६.२०.२३: शून्य उ शर; २७.११.६: शून्य द क्रान्ति

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टं. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT म.रा.सा.का Hr घं	m मि	se से	SUN सूर्य - रवि Si रा	d अं	m क	se वि	DEC. क्रान्ति d अं	m क	GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र Si रा	d अं	m क	se वि	LAT. शर d अं	m क	DEC. क्रान्ति d अं	m क	DELHI MOO दिल्ली चन्द्र Si रा	d अं	m क	se वि	LAT. शर d अं	m क'	DEC. क्रान्ति d अं	m क'	MERCURY बुध Si रा	d अं	m क	se वि
ति	वार																														
1	Su	16	37	10	1	16	43	38	22N	1	11	21	49	18	1S	43	4N	35	11	22	15	29	2S	21	4N	9	0	23	37	33
2	Mo	16	41	6	1	17	41	8	22	9	0	5	48	14	2	49	8	42	0	6	22	19	3	27	8	18	0	25	2	48
3	Tu	16	45	3	1	18	38	38	22	17	0	19	40	40	3	44	12	20	0	20	20	47	4	22	11	55	0	26	30	43
4	We	16	48	59	1	19	36	6	22	24	1	3	23	50	4	26	15	14	1	4	7	48	5	2	14	48	0	28	1	17
5	Th	16	52	56	1	20	33	34	22	31	1	16	54	43	4	51	17	15	1	17	40	16	5	27	16	46	0	29	34	28
6	Fr	16	56	52	1	21	31	1	22	37	2	0	10	34	5	1	18	17	2	0	55	30	5	34	17	46	1	1	10	17
7	Sa	17	0	49	1	22	28	27	22	43	2	13	9	26	4	55	18	21	2	13	51	45	5	27	17	47	1	2	48	42
8	Su	17	4	46	1	23	25	52	22	49	2	25	50	36	4	34	17	29	2	26	28	38	5	4	16	53	1	4	29	42
9	Mo	17	8	42	1	24	23	16	22	54	3	8	14	46	3	60	15	48	3	8	47	11	4	30	15	12	1	6	13	17
10	Tu	17	12	39	1	25	20	40	22	59	3	20	24	2	3	16	13	26	3	20	49	51	3	45	12	51	1	7	59	25
11	We	17	16	35	1	26	18	2	23	4	4	2	21	46	2	24	10	32	4	2	40	15	2	53	9	58	1	9	48	5
12	Th	17	20	32	1	27	15	23	23	8	4	14	12	19	1	26	7	14	4	14	22	56	1	55	6	43	1	11	39	15
13	Fr	17	24	28	1	28	12	43	23	11	4	26	0	42	0	24	3	39	4	26	3	5	0	54	3	11	1	13	32	51
14	Sa	17	28	25	1	29	10	2	23	15	5	7	52	20	0N	39	0S	5	5	7	46	15	0	8	0S	31	1	15	28	49
15	Su	17	32	22	2	0	7	20	23	17	5	19	52	40	1	40	3	52	5	19	38	2	1N	9	4	15	1	17	27	4
16	Mo	17	36	18	2	1	4	38	23	20	6	2	6	53	2	39	7	33	6	1	43	47	2	37	7	54	1	19	27	31
17	Tu	17	40	15	2	2	1	54	23	22	6	14	39	25	3	31	10	60	6	14	8	14	2	59	11	20	1	21	30	1
18	We	17	44	11	2	2	59	10	23	23	6	27	33	31	4	14	14	1	6	26	55	1	3	42	14	22	1	23	34	25
19	Th	17	48	8	2	3	56	24	23	25	7	10	50	45	4	44	16	25	7	10	6	13	4	13	16	48	1	25	40	33
20	Fr	17	52	4	2	4	53	39	23	25	7	24	30	40	4	60	17	57	7	23	41	55	4	29	18	24	1	27	48	11
21	Sa	17	56	1	2	5	50	53	23	26	8	8	30	34	4	57	18	28	8	7	40	2	4	27	18	59	1	29	57	6
22	Su	17	59	57	2	6	48	6	23	26	8	22	45	51	4	37	17	50	8	21	56	22	4	8	18	24	2	2	7	4
23	Mo	18	3	54	2	7	45	19	23	25	9	7	10	43	3	59	16	3	9	6	25	16	3	30	16	40	2	4	17	47
24	Tu	18	7	50	2	8	42	32	23	24	9	21	39	4	3	5	13	15	9	21	0	28	2	37	13	53	2	6	28	59
25	We	18	11	47	2	9	39	45	23	23	10	6	5	28	1	60	9	38	10	5	36	5	1	31	10	15	2	8	40	24
26	Th	18	15	44	2	10	36	58	23	21	10	20	25	50	0	47	5	29	10	20	7	23	0	18	6	3	2	10	51	44
27	Fr	18	19	40	2	11	34	11	23	19	11	4	37	36	0S	28	1	3	11	4	31	0	0S	58	1	33	2	13	2	44
28	Sa	18	23	37	2	12	31	23	23	17	11	18	39	30	1	41	3N	23	11	18	44	58	2	11	2N	57	2	15	13	8
29	Su	18	27	33	2	13	28	36	23	14	0	2	31	9	2	47	7	34	0	2	48	8	3	17	7	12	2	17	22	42
30	Mo	18	31	30	2	14	25	49	23	10	0	16	12	26	3	42	11N	19	0	16	39	51	4S	12	10N	59	2	19	31	13
31	Tu	18	35	26	2	15	23	2	23	7	0	29	43	11	4	24	14N	24	1	0	19	24	4s	53	14N	4	2	21	38	31

Dt	VENUS शुक्र Si रा	d अं	m क'	se वि''	MARS मंगल Si रा	d अं	m क'	se वि''	JUPITER Makar गुरु मकर में रा	d अं	m क'	se वि''	SATUR Mina शनि मीन अं	d क'	m वि''	URANU Makar हर्शल मकर अं	d क'	m वि''	NEPTU Makar नेप्चू मकर अं	d क'	m वि''	PLUTO Vrischik प्लूटो वृश्चिक अं	d क'	m वि''	M RAHU Kanya मध्यम राहु अं	d क'	m वि''	T RAHU स्पष्ट राहु कन्या अं	d क'	m वि''
ति																															
1	2	2	17	21	4	29	7	6	9	27	59	26	23	30	17	14	42	39	5	54	9	10	13	42	1	14	18	2	2	31
2	2	3	30	48	4	29	27	1	9	28	1	4	23	35	44	14	41	43	5	53	14	10	12	4	1	11	7	1	59	7
3	2	4	44	14	4	29	47	20	9	28	2	30	23	41	7	14	40	45	5	52	17	10	10	26	1	7	57	1	52	48
4	2	5	57	39	5	0	8	4	9	28	3	45	23	46	26	14	39	45	5	51	18	10	8	48	1	4	46	1	43	48
5	2	7	11	4	5	0	29	11	9	28	4	48	23	51	42	14	38	42	5	50	18	10	7	11	1	1	35	1	32	42
6	2	8	24	27	5	0	50	40	9	28	5	40	23	56	53	14	37	36	5	49	17	10	5	34	0	58	24	1	20	24
7	2	9	37	49	5	1	12	33	9	28	6	21	24	1	59	14	36	27	5	48	14	10	3	58	0	55	13	1	8	12
8	2	10	51	11	5	1	34	47	9	28	6	50	24	7	2	14	35	17	5	47	10	10	2	22	0	52	3	0	57	12
9	2	12	4	31	5	1	57	23	9	28	7	7	24	12	0	14	34	3	5	46	4	10	0	47	0	48	52	0	48	12
10	2	13	17	50	5	2	20	21	9	28	7	13	24	16	54	14	32	47	5	44	57	9	59	12	0	45	41	0	41	48
11	2	14	31	8	5	2	43	39	9	28	7	7	24	21	43	14	31	29	5	43	48	9	57	38	0	42	30	0	37	48
12	2	15	44	25	5	3	7	18	9	28	6	50	24	26	29	14	30	8	5	42	39	9	56	4	0	39	20	0	36	0
13	2	16	57	41	5	3	31	16	9	28	6	22	24	31	9	14	28	45	5	41	28	9	54	31	0	36	9	0	35	27
14	2	18	10	55	5	3	55	34	9	28	5	41	24	35	45	14	27	19	5	40	15	9	53	0	0	32	58	0	35	21
15	2	19	24	8	5	4	20	10	9	28	4	50	24	40	17	14	25	52	5	39	1	9	51	28	0	29	47	0	34	27
16	2	20	37	20	5	4	45	6	9	28	3	47	24	44	43	14	24	22	5	37	47	9	49	57	0	26	37	0	32	0
17	2	21	50	30	5	5	10	19	9	28	2	32	24	49	5	14	22	49	5	36	31	9	48	27	0	23	26	0	27	3
18	2	23	3	40	5	5	35	51	9	28	1	6	24	53	22	14	21	15	5	35	13	9	46	58	0	20	15	0	19	39
19	2	24	16	48	5	6	1	40	9	27	59	29	24	57	35	14	19	38	5	33	55	9	45	30	0	17	4	0	10	0
20	2	25	29	55	5	6	27	45	9	27	57	41	25	1	42	14	17	59	5	32	35	9	44	2	0	13	53	29	58	39
21	2	26	43	0	5	6	54	8	9	27	55	41	25	5	45	14	16	19	5	31	15	9	42	36	0	10	43	29	46	51
22	2	27	56	5	5	7	20	47	9	27	53	31	25	9	43	14	14	36	5	29	53	9	41	11	0	7	32	29	35	45
23	2	29	9	8	5	7	47	43	9	27	51	9	25	13	35	14	12	51	5	28	31	9	39	46	0	4	21	29	26	39
24	3	0	22	10	5	8	14	54	9	27	48	35	25	17	23	14	11	4	5	27	7	9	38	23	0	1	10	29	20	3
25	3	1	35	11	5	8	42	21	9	27	45	51	25	21	6	14	9	15	5	25	43	9	37	0	29	57	60	29	16	15
26	3	2	48	11	5	9	10	4	9	27	42	56	25	24	43	14	7	25	5	24	17	9	35	39	29	54	49	29	14	51
27	3	4	1	10	5	9	38	1	9	27	39	50	25	28	16	14	5	32	5	22	51	9	34	19	29	51	38	29	14	51
28	3	5	14	8	5	10	6	14	9	27	36	33	25	31	43	14	3	38	5	21	23	9	33	0	29	48	27	29	15	3
29	3	6	27	4	5	10	34	42	9	27	33	6	25	35	4	14	1	42	5	19	55	9	31	42	29	45	17	29	14	3
30	3	7	39	60	5	11	3	24	9	27	29	28	25	38	21	13	59	44	5	18	26	9	30	24	29	42	6	29	10	51
31	3	8	52	55	5	11	32	21	9	27	25	39	25	41	32	13	57	45	5	16	57	9	29	8	29	38	55	29	5	0

जुलाई 1997, शक 1919, वि 2054, आषा. कृष्ण 12 से श्रावण कृ.12 तक, दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

(आ० कृष्ण पक्ष)		तिथि आदि			समा.			काल			भा.स्टै.टा.			शक	सौर
तु.	वार	ति	घं	मि	नक्ष	घं	मि	यो	घं	मि	कर	घं	मि	श्रा	श्रा
१	मंग	द्वा	२४	१३	कृ	२३	५६	धृ	८	७	कौ	१२	३४	१०	१८
२	बुध	त्र	२३	४६	रो	२४	१६	शूल	६	३३	गर	११	५७	११	१६
'''		..	..	..	..	..	..	गंड	२६	१६	व	२३	४६	''	''
३	गुरु	चतु	२३	४४	मृ	२४	५७	वृ	२८	२०	वि	११	४२	१२	२०
४	शु	अम	२४	१०	आ	२६	६	ध्रुव	२७	४५	च	११	५४	१३	२१
विक्रम संवत् २०५४ आषाढ़ शुक्ल पक्ष															
५	श	प्र	२५	५	पुन	२७	४३	व्या	२७	३४	कि	१२	३४	१४	२२
६	रवि	द्वि	२६	३१	पु	-	-	हर्ष	२७	४७	बा	१३	४४	१५	२३
७	सो	तृ	२८	२६	पु	५	५०	वज	२८	२२	तै	१५	२५	१६	२४
८	मंग	चतु	-	-	श्ले	८	२५	सि	२६	१६	व	१७	३३	१७	२५
९	बुध	चतु	६	४५	मघ	११	२१	व्य	-	-	वि	६	४५	१८	२६
१०	गुरु	पंच	६	१८	पूफ	१४	२६	व्य	६	२०	बा	६	१८	१९	२७
११	शु	ष	११	५२	उफ	१७	३६	वरी	७	२७	तै	११	५२	२०	२८
१२	श	स	१४	१३	ह	२०	२७	परि	८	२६	व	१४	१३	२१	२६
१३	रवि	अ	१६	६	चि	२२	४८	शिव	६	६	बव	१६	६	२२	३०
१४	सो	नव	१७	१६	स्वा	२४	२८	सि	६	१७	कौ	१७	१६	२३	३१
१५	मंग	दश	१७	४५	वि	२५	२०	सा	८	५३	गर	१७	४५	२४	३२
१६	बुध	एक	१७	२१	अनु	२५	२४	शुभ	७	५०	वि	१७	२१	२५	श्रा
१७	गुरु	द्वा	१६	६	ज्ये	२४	४२	शुक्र	६	७	बा	१६	६	२६	२
'''		..	..	..	..	..	..	ब्रह्म	२७	४८	..	..	..	''	''
१८	शु	त्र	१४	१५	मूल	२३	१६	ऐंद्र	२४	५६	तै	१४	१५	२७	३
१९	श	चतु	११	४५	पूष	२१	२६	वै	२१	४०	व	११	४५	२८	४
२०	रवि	पू	८	५०	उष	१६	११	वि	१८	६	बव	८	५०	२९	५
विक्रम संवत् २०५४ श्रावण (मुख्य आषाढ़) कृष्ण पक्ष															
२१	सो	प्र	५	३६	श्रव	१६	४५	प्री	१४	२२	कौ	५	३६	३०	६
'''		द्वि	२६	२२	..	..	..	..	..	..	..	..	..	''	''
२२	मंग	तृ	२३	६	ध	१४	१७	आ	१०	३६	व	१२	४४	३१	७
२३	बुध	चतु	२०	१	शत	११	५६	सौ	६	५४	बव	६	३३	श्रा	८
'''		..	..	..	..	..	..	शो	२७	२४	बा	२०	१	''	''
२४	गुरु	पंच	१७	१३	पूभ	६	५०	अ	२४	६	कौ	६	३५	२	९
२५	शु	ष	१४	४८	उभा	८	५	सुक	२१	१३	व	१४	४८	३	१०
२६	श	स	१२	४८	रेव	६	४४	धृ	१८	४०	बव	१२	४८	४	११
२७	रवि	अ	११	१६	अश्व	५	५१	शूल	१६	२६	कौ	११	१६	५	१२
'''		..	..	..	भर	२६	२७	..	..	..	..	..	..	''	''
२८	सो	नव	१०	१३	कृ	-	-	गंड	१४	४२	गर	१०	१३	६	१३
२९	मंग	दश	६	३६	कृ	५	३१	वृ	१३	१६	वि	६	३६	७	१४
३०	बुध	एक	६	३४	रो	६	४	ध्रु	१२	१७	बा	६	३४	८	१५
३१	गुरु	द्वा	६	५७	मृ	७	४	व्या	११	३८	तै	६	५७	६	१६

ति	व्रत-पर्व-त्योहार (भा. स्टै. टा. में)
१	जुलियन अहर्गण :२४५०६३१; कलि अहर्गण :
	१८६२१६५;स्फुट परमा.२३अं २६क १३वि; धूनन
	संस्कार स्पष्ट -१.७वि; अयनांश २३-४६-१८
	योगिनी एकादशी व्रत (निम्बार्क)
४	शहादते इमाम-हुसैन (मु)
६	श्रीजगन्नाथ रथयात्रा; मनोरथ द्वितीया
१०	स्कन्द पंचमी;
११	स्कन्द (कुमार) षष्ठी
१२	विवस्वत (सूर्य) सप्तमी
१३	खार्ची पूजा(त्रिपुरा);शहीद शेरवानी दिवस (कश्मीर
१४	मेला श्रीशारिका भगवती (कश्मीर);बडली नवमी
१५	पुनर्यात्रा (उल्टा रथ)
१६	१३-२१ सूर्य की शास्त्रविरुद्ध अवैदिक निरयण
	कर्क संक्रान्ति (वास्तविक वैदिक कर्क संक्रान्ति
	तो २१ जून को थी); मानस पूजा प्रा (बंगाल);
	हरिशायिनी एकादशी; चातुर्मास्य प्रारम्भ
१८	ईदे-मेलाद-उल-नबी
१९	मेला श्रीज्वालामुखी (कश्मीर);शिव शयनोत्सव;
	चौमासी चौदस (जैन)
२०	गुरु व व्यास पूर्णिमा; कोकिला व्रत
२१	अशून्य शयन व्रत
२२	२४-४५ सूर्य की वैदिक सायन सिंह संक्रान्ति;
	वास्तव में आज ही के दिन केरल का कौलम
	संवत्सर - केरल - प्रारम्भ होना चाहिए; वैदिक
	मास नमस प्रा
२३	राष्ट्रीय श्रावण आरम्भ
२४	नागपंचमी (बंगाल आदि)
३०	कामिका एकादशी

स्थानीय समय में				दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.																				
अं.	स्पष्ट मध्यान्ह			में सूर्योदय						व सूर्यास्त														
ति	घं	मि	से	घं	मि	से	घं	मि	से	ति	घं	मि	ग्रह	राशि	ति	घं	मि	राशि	ति	घं	मि	ग्रह	राशि
१	१२	३	४७	५	३०	५४	१६	१८	४८	२३	०	४५	सूर्य	सिंह	१	६	०	वृषभ	५	६	५६	बुध	कर्क
३	१२	४	६	५	३१	३६	१६	१८	४६	२३	१८	४६	शुक्र	कन्या	३	१२	३३	मिथु	१६	१३	२१	सूर्य	कर्क
५	१२	४	३१	५	३२	२४	१६	१८	४३	२७	६	१२	बुध	कन्या	५	२१	१६	कर्क	१८	१५	५०	शुक्र	सिंह
७	१२	४	५१	५	३३	१७	१६	१८	२६						८	८	२५	सिंह	२२	१७	१३	बुध	सिंह
९	१२	५	५०	५	३४	११	१६	१८	८						१०	२१	१६	कन्या					
११	१२	५	२७	५	३५	१०	१६	१७	४६	वैदिक सायन चन्द्र चार					१३	६	४२	तुला	अवैदिक नक्षत्र चार				
१३	१२	५	४२	५	३६	६	१६	१७	१७	४	१७	५	मिथुन		१५	१६	१२	वृश्चि	६	१	३६	सूर्य	पुन
१५	१२	५	५५	५	३७	८	१६	१६	४०	६	०	३	कर्क		१८	०	४२	धनु	६	२३	३१	बुध	पुष्य
१७	१२	६	६	५	३८	८	१६	१६	४	८	६	१६	सिंह		२०	२	५५	मकर	७	१५	२५	शुक्र	श्ले
१९	१२	६	१५	५	३९	७	१६	१५	१७	११	२०	५२	कन्या		२२	३	३१	कुम्भ	१४	६	६	बुध	श्ले
२१	१२	६	२२	५	४०	१३	१६	१४	२३	१३	६	५०	तुला		२४	४	२०	मीन	१८	१५	५०	शुक्र	मघा
२३	१२	६	२६	५	४१	१८	१६	१३	२४	१६	२१	४६	वृश्चिक		२६	६	४४	मेष	२०	१	१२	सूर्य	पुष्य
२५	१२	६	२८	५	४२	२७	१६	१२	२५	१८	६	३२	धनु		२८	११	२५	वृषभ	२२	१७	१३	बुध	मघा
२७	१२	६	२८	५	४३	३४	१६	११	२२	२०	११	१४	मकर		३०	१८	३०	मिथु	२३	१७	३५	मंगल	चित्रा
२९	१२	६	२६	५	४४	४०	१६	१०	५	२२	१३	३०	मीन		वक्री/मार्गी				२६	१७	२६	शुक्र	पूफा
३१	१२	६	२१	५	४५	५१	१६	८	४५	२४	१४	३३	मेष		-	-	-	-	३१	२१	४७	स्प रा	पूफा
										२६	१७	२३	वृषभ										

अवैदिक निरयण चन्द्र स्थितियां आदि; भा.मा.स

३.१०.१३अंधि. शर ५द२; ४.३.४७: अंधि. क्रान्ति	२८ २२ ३४	मिथुन
१८उ२७;५.०.१०:अमान्त चन्द्र स्पष्ट २.१८.५६;	३१ ६ ८	कर्क

सरकारी अयनांश:२:२३.४६.१८; ७:२३.४६.१६;
१६:२३.४६.२०; २०:२३.४६.२१; २६:२३.४६.२२
१०.४.२५: चन्द्र अति दूर;;१०.१६.५५ शून्य द शर
११.१४.१२:;शू. द क्रा.;१७.२०.२५: अंधि. शर ५उ६;१८.१५.१३:अंधि. क्रान्ति १८द२५; २०.८.५०:पूर्णिमान्त चन्द्र स्पष्ट: ६.३.३६;
२२.४.३७चन्द्र अति निकट; २३.२३.२२ शू. उ शर; २४.१८.३२ शू. उ क्रा.;३०.१२.३४:अंधि. शर ५द६; ३१.१०.५८:अंधि.क्रा. १८उ२२

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवेदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः पुर्व ३० मि भा.स्टै. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT म.रा.सा.का Hr m se	SUN सूर्य - रवि Si d m se	DEC.	GEO.MOON क्रान्ति भूकेन्द्रीय चन्द्र				LAT.	DEC.	DELHI MOO क्रान्ति दिल्ली चन्द्र				LAT.	DEC.	MERCURY क्रान्ति बुध			
				d m	Si d m se				d m	d m	Si d m se				d m	d m	Si d m se			
ति	वार	घं मि से	रा अं क वि	अं क	रा अं क वि				अं क	अं क	रा अं क वि				अं०क'	अं०क'	रा अं क वि			
1	Tu	18 35 26	2 15 23 2	23N 7	0 29 43 11				4S24	14N24	1 0 19 24				4S53	14N 4	2 21 38 31			
2	We	18 39 23	2 16 20 16	23ऽ 2	1 13 2 53				4ऽ51	16ऽ41	1 13 45 56				5ऽ19	16ऽ20	2 23 44 26			
3	Th	18 43 20	2 17 17 29	22 58	1 26 10 44				5 2	18 3	1 26 58 23				5 29	17 39	2 25 48 49			
4	Fr	18 47 16	2 18 14 42	22 53	2 9 5 49				4 57	18 27	2 9 55 46				5 23	18 1	2 27 51 34			
5	Sa	18 51 13	2 19 11 56	22 47	2 21 47 22				4 38	17 56	2 22 37 25				5 2	17 26	2 29 52 36			
6	Su	18 55 9	2 20 9 9	22 42	3 4 15 11				4 5	16 32	3 5 3 16				4 28	16 1	3 1 51 50			
7	Mo	18 59 6	2 21 6 22	22 36	3 16 29 51				3 22	14 25	3 17 14 12				3 44	13 52	3 3 49 13			
8	Tu	19 3 2	2 22 3 36	22 29	3 28 32 55				2 30	11 42	3 29 11 60				2 51	11 9	3 5 44 43			
9	We	19 6 59	2 23 0 49	22 22	4 10 26 55				1 32	8 31	4 10 59 30				1 53	7 60	3 7 38 19			
10	Th	19 10 55	2 23 58 2	22 15	4 22 15 21				0 30	5 2	4 22 40 24				0 51	4 33	3 9 29 59			
11	Fr	19 14 52	2 24 55 15	22 7	5 4 2 30				0N33	1 21	5 4 19 11				0 11	0 55	3 11 19 42			
12	Sa	19 18 48	2 25 52 28	21 59	5 15 53 16				1ऽ35	2S23	5 16 0 54				1N13	2S47	3 13 7 29			
13	Su	19 22 45	2 26 49 41	21 50	5 27 52 56				2 34	6ऽ 5	5 27 50 58				2ऽ11	6ऽ26	3 14 53 18			
14	Mo	19 26 42	2 27 46 54	21 42	6 10 6 50				3 27	9 35	6 9 54 54				3 3	9 54	3 16 37 11			
15	Tu	19 30 38	2 28 44 7	21 32	6 22 39 58				4 11	12 45	6 22 17 56				3 47	13 2	3 18 19 6			
16	We	19 34 35	2 29 41 20	21 23	7 5 36 28				4 44	15 24	7 5 4 34				4 20	15 41	3 19 59 4			
17	Th	19 38 31	3 0 38 33	21 13	7 18 58 60				5 3	17 20	7 18 17 59				4 39	17 38	3 21 37 6			
18	Fr	19 42 28	3 1 35 47	21 3	8 2 48 7				5 5	18 19	8 1 59 27				4 42	18 41	3 23 13 11			
19	Sa	19 46 24	3 2 33 0	20 52	8 17 1 50				4 48	18 12	8 16 7 45				4 27	18 38	3 24 47 18			
20	Su	19 50 21	3 3 30 15	20 41	9 1 35 28				4 13	16 54	9 0 38 56				3 53	17 25	3 26 19 28			
21	Mo	19 54 18	3 4 27 29	20 30	9 16 22 12				3 21	14 28	9 15 26 42				3 1	15 2	3 27 49 41			
22	Tu	19 58 14	3 5 24 44	20 18	10 1 14 0				2 14	11 4	10 0 23 8				1 55	11 39	3 29 17 54			
23	We	20 2 11	3 6 22 0	20 6	10 16 3 0				0 59	6 58	10 15 20 4				0 39	7 32	4 0 44 7			
24	Th	20 6 7	3 7 19 17	19 54	11 0 42 35				0S20	2 29	11 0 10 9				0S40	2 60	4 2 8 20			
25	Fr	20 10 4	3 8 16 34	19 41	11 15 8 4				1ऽ37	2N 4	11 14 47 51				1ऽ57	1N37	4 3 30 28			
26	Sa	20 14 0	3 9 13 53	19 28	11 29 16 50				2 46	6ऽ25	11 29 9 34				3 7	6ऽ 2	4 4 50 32			
27	Su	20 17 57	3 10 11 12	19 14	0 13 7 59				3 43	10 19	0 13 13 35				4 5	10 0	4 6 8 28			
28	Mo	20 21 53	3 11 8 32	19 1	0 26 41 50				4 27	13 35	0 26 59 30				4 49	13 19	4 7 24 13			
29	Tu	20 25 50	3 12 5 54	18 47	1 9 59 23				4 56	16 4	1 10 27 48				5 17	15 48	4 8 37 43			
30	We	20 29 46	3 13 3 16	18ऽ32	1 23 1 51				5ऽ 9	17ऽ40	1 23 39 18				5ऽ29	17ऽ24	4 9 48 55			
31	Th	20 33 43	3 14 0 39	18N18	2 5 50 28				5S 5	18N21	2 6 34 56				5S24	18N 2	4 10 57 44			

Dt	VENUS Si d m se	MARS Si d m se	JUPITER Makar	SATUR Mina	URANU Makar	NEPTU Makar	PLUTO Vrischik	M RAHU Simha	T RAHU स्पष्ट राहु
	शुक्र	मगल	गुरु मकर में	शनि मीन	हर्शल मकर	नेप्चू मकर	प्लूटो वृश्चिक	मध्यम राहु	सिंह
ति	रा अं०क' वि''	रा अं० क' वि''	रा अं० क' वि''	अं० क' वि''	अं० क' वि''	अं० क' वि''	अं० क' वि''	अं० क' वि''	अं० क' वि''
1	3 8 52 55	5 11 32 21	9 27 25 39	25 41 32	13 57 45	5 16 57	9 29 8	29 38 55	29 5 0
2	3 10 5 48	5 12 1 32	9 27 21 40	25 44 38	13 55 44	5 15 27	9 27 54	29 35 44	28 55 30
3	3 11 18 40	5 12 30 58	9 27 17 30	25 47 38	13 53 41	5 13 56	9 26 41	29 32 33	28 45 54
4	3 12 31 31	5 13 0 37	9 27 13 11	25 50 32	13 51 37	5 12 24	9 25 30	29 29 23	28 34 6
5	3 13 44 21	5 13 30 29	9 27 8 41	25 53 21	13 49 32	5 10 51	9 24 19	29 26 12	28 22 24
6	3 14 57 9	5 14 0 35	9 27 4 1	25 56 5	13 47 25	5 9 18	9 23 10	29 23 1	28 11 42
7	3 16 9 56	5 14 30 55	9 26 59 12	25 58 42	13 45 17	5 7 45	9 22 3	29 19 50	28 3 6
8	3 17 22 42	5 15 1 27	9 26 54 14	26 1 14	13 43 7	5 6 10	9 20 57	29 16 40	27 56 54
9	3 18 35 26	5 15 32 13	9 26 49 6	26 3 40	13 40 56	5 4 36	9 19 52	29 13 29	27 53 12
10	3 19 48 8	5 16 3 10	9 26 43 49	26 6 0	13 38 44	5 3 1	9 18 49	29 10 18	27 51 42
11	3 21 0 49	5 16 34 20	9 26 38 23	26 8 15	13 36 31	5 1 25	9 17 48	29 7 7	27 51 36
12	3 22 13 29	5 17 5 42	9 26 32 48	26 10 24	13 34 17	4 59 49	9 16 48	29 3 56	27 52 12
13	3 23 26 6	5 17 37 17	9 26 27 5	26 12 26	13 32 1	4 58 13	9 15 49	29 0 46	27 51 30
14	3 24 38 42	5 18 9 2	9 26 21 14	26 14 23	13 29 45	4 56 37	9 14 52	28 57 35	27 51 36
15	3 25 51 16	5 18 40 59	9 26 15 15	26 16 14	13 27 28	4 55 0	9 13 57	28 54 24	27 48 54
16	3 27 3 48	5 19 13 8	9 26 9 8	26 17 60	13 25 10	4 53 23	9 13 3	28 51 13	27 44 0
17	3 28 16 19	5 19 45 27	9 26 2 54	26 19 39	13 22 51	4 51 46	9 12 11	28 48 3	27 37 18
18	3 29 28 47	5 20 17 57	9 25 56 33	26 21 12	13 20 32	4 50 9	9 11 21	28 44 52	27 29 12
19	4 0 41 14	5 20 50 38	9 25 50 4	26 22 39	13 18 12	4 48 31	9 10 32	28 41 41	27 20 36
20	4 1 53 39	5 21 23 30	9 25 43 29	26 24 0	13 15 51	4 46 54	9 9 45	28 38 30	27 12 36
21	4 3 6 2	5 21 56 32	9 25 36 47	26 25 16	13 13 30	4 45 17	9 9 0	28 35 20	27 5 54
22	4 4 18 22	5 22 29 44	9 25 29 59	26 26 25	13 11 8	4 43 39	9 8 16	28 32 9	27 1 18
23	4 5 30 42	5 23 3 7	9 25 23 4	26 27 28	13 8 46	4 42 1	9 7 34	28 28 58	26 59 0
24	4 6 42 59	5 23 36 39	9 25 16 4	26 28 24	13 6 23	4 40 24	9 6 54	28 25 47	26 58 26
25	4 7 55 14	5 24 10 22	9 25 8 59	26 29 15	13 3 60	4 38 46	9 6 16	28 22 36	26 59 18
26	4 9 7 28	5 24 44 14	9 25 1 48	26 29 60	13 1 36	4 37 9	9 5 39	28 19 26	27 0 18
27	4 10 19 40	5 25 18 16	9 24 54 32	26 30 38	12 59 13	4 35 32	9 5 5	28 16 15	27 0 36
28	4 11 31 49	5 25 52 28	9 24 47 12	26 31 10	12 56 49	4 33 55	9 4 32	28 13 4	26 59 30
29	4 12 43 58	5 26 26 50	9 24 39 47	26 31 36	12 54 25	4 32 18	9 4 1	28 9 53	26 56 24
30	4 13 56 4	5 27 1 22	9 24 32 18	26 31 56	12 52 1	4 30 42	9 3 32	28 6 43	26 51 24
31	4 15 8 8	5 27 36 3	9 24 24 46	26 32 10	12 49 37	4 29 5	9 3 4	28 3 32	26 45 0

अगस्त 1997, शक 1919, वि 2054, श्रावण कृष्ण 13 से

(श्रा० कृष्ण पक्ष)		तिथि आदि			समा. काल भा.स्टै.टा.													शक	सौर
ता.	वार	ति	घं	मि	नक्ष	घं	मि	यो	घं	मि	कर	घं	मि	श्रा	श्रा				
१शु	त्रय	१०	४६	आ	८	३०	हर्ष	११	२०	व	१०	४६	१०	१७					
२श	चतु	१२	३	पुन	१०	२३	वज्र	११	२२	शकु	१२	३	११	१८					
३रवि	अम	१३	४४	पु	१२	३६	सि	११	४४	ना	१३	४४	१२	१६					
विक्रम संवत् २०५४ श्रावण शुक्ल पक्ष																			
४सो	प्र	१५	४८	श्ले	१५	१८	व्य	१२	२४	बव	१५	४८	१३	२०					
५मंग	द्वि	१८	११	मघ	१८	१५	वरी	१३	१८	कौ	१८	११	१४	२१					
६बुध	तृ	२०	४६	पूफ	२१	२३	परि	१४	२२	तै	७	२८	१५	२२					
७गुरु	चतु	२३	२४	उफ	२४	३४	शि	१५	३१	व	१०	५	१६	२३					
८शु	पच	२५	५४	ह	२७	३७	सि	१६	३६	बव	१२	४१	१७	२४					
९श	ष	२८	३	चि	-	-	सा	१७	२८	कौ	१५	२	१८	२५					
१०रवि	स	-	-	चि	६	१६	शुभ	१७	५६	गर	१६	५६	१६	२६					
११सो	स	५	४०	स्वा	८	२८	शुक्र	१८	०	व	५	४०	२०	२७					
१२मंग	अ	६	३४	वि	६	५५	ब्रह्म	१७	२६	बव	६	३४	२१	२८					
१३बुध	नव	६	४०	अनु	१०	३५	ऐंद्र	१६	१२	कौ	६	४०	२२	२९					
१४गुरु	दश	५	५५	ज्ये	१०	२६	वैधृ	१४	१६	गर	५	५५	२३	३०					
'''	एक	२८	२३	..	..	..	..	..	..	..	..	..	''	''					
१५शु	द्वा	२६	८	मूल	६	२६	वि	११	४८	बव	१५	२१	२४	३१					
१६श	त्र	२३	१७	पूष	७	५२	प्री	८	४३	कौ	१२	४७	२५	भा					
'''	..	..	..	उष	२६	४१	आ	२६	१२	गर	६	४२	''	''					
१७रवि	चतु	२०	०	श्र	२७	६	सौ	२५	२०	..	..	..	२६	२					
१८सो	पू	१६	२६	ध	२४	१७	शो	२१	१६	वि	६	१५	२७	३					
विक्रम संवत् २०५४ भाद्र (मुख्य श्रावण) कृष्ण पक्ष																			
१६मंग	प्र	१२	४५	शत	२१	२६	अति	१७	६	कौ	१२	४५	२८	४					
२०बुध	द्वि	६	६	पूभ	१८	४१	सुक	१३	५	गर	६	६	२६	५					
२१गुरु	तृ	५	४०	उभा	१६	१२	धृ	६	१३	वि	५	४०	३०	६					
'''	चतु	२६	३४	..	..	..	..	..	..	..	..	..	''	''					
२२शु	पच	२३	५५	रेव	१४	८	शूल	५	३६	कौ	१३	११	३१	७					
'''	..	..	..	..	..	..	गड	२६	२८	..	..	..	''	''					
२३श	ष	२१	५०	अश्व	१२	३४	वृ	२३	४५	गर	१०	४६	भा	८					
२४रवि	स	२०	२३	भर	११	३७	ध्रु	२१	३३	वि	६	२	२	९					
२५सो	अ	१६	३५	कृ	११	१८	व्या	१६	५३	बा	७	५४	३	१०					
२६मंग	नव	१६	२६	रो	११	३८	हर्ष	१८	४४	तै	७	२६	४	११					
२७बुध	दश	१६	५६	मृ	१२	३६	वज्र	१८	५	व	७	३७	५	१२					
२८गुरु	एक	२१	०	आ	१४	६	सि	१७	५३	बव	८	२४	६	१३					
२९शु	द्वा	२२	३४	पुन	१६	१२	व्य	१८	५	कौ	६	४४	७	१४					
३०श	त्रय	२४	३३	पुष्य	१८	४०	वरी	१८	३६	गर	११	३१	८	१५					
३१रवि	चतु	२६	५१	श्ले	२१	२७	परि	१६	२२	वि	१३	४०	६	१६					

भाद्र कृ. 14 तक, दक्षिनायण, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

ति	व्रत-पर्व-त्योहार आदि (भा. स्टै. टा.)
१	जुलियन अहगर्ण :२४५०६६२; कलि अहर्गण : १८६२१६६;स्फुट परमा. २३अं २६क १३वि;धूनन संस्कार -१.२वि; अयनांश : २३-४६-२२;
१	लोकमान्य तिलक स्मृति दिवस
३	हरियाली ३०; चितऊ ३०
६	मधुस्रवा तृतीया (गुजरात); तीज
८	नागपंचमी
९	लुण्ठन षष्ठी; तुलसी जयन्ती
११	मेला श्री नयना देवी; श्रीचिन्तपूर्णी यात्रा
१४	पुत्रदा एकादशी; पवित्रा एकादशी; झूलनयात्रा
१५	स्वतंत्रता दिवस; बुध १२; विष्णु पवित्रारोपण; योगी अरविन्द जयन्ती
१६	२१-४५ सूर्य की अवैदिक निरयण सिंह संक्रान्ति
१७	अवैदिक कौलन नववर्ष प्रा (के);मानस पूजा स.
१७	ऋक उपाकर्म
१८	श्रावणीकर्म;रक्षा बन्धन;सलोनो;अवणि अवित्तम; नारियल १५;यजुरुपाकर्म;श्रीअमरनाथ यात्रा (क)
१९	अशून्य शयन व्रत;नाराण गुरु ज.;गायत्री जपम्
२१	कज्जली व अरण्य तृतीया
२२	पारसी नववर्ष १३८७ प्रा;माधवदेव तिथि (असम)
२३	७-४६ सूर्य की सायन (वास्तविक वैदिक) कन्या संक्रान्ति;वैदिक मास ईश प्रारम्भ;शरदृतु प्रारम्भ; राष्ट्रीय भाद्रपद प्रारम्भ; हल षष्ठी
२४	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्त); श्रीकृष्ण जयन्ती
२५	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी(वै.);गोकुलाष्टमी;श्री जयन्ती
२८	अजा एकादशी
२९	वत्स द्वादशी; पर्यूषनपर्वारम्भ (जैन)
३०	कैलाश यात्रा (जम्मू तवी) दो दिन
३१	अघोरा चतुर्दशी

स्थानीय समय में दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.

अं.	स्पष्ट मध्यान्ह			में सूर्योदय			व सूर्यास्त			वैदिक सायन राशि चार			
ति	घं	मि	से	घं	मि	से	घं	मि	से	ति	घं	मि	ग्रह राशि
२	१२	६	१४	५	४६	५७	१६	७	२४	१७	२०	१	म वृश्चि
४	१२	६	३	५	४८	२	१६	६	०	२३	७	४६	सू कन्या
६	१२	५	५२	५	४६	१०	१६	४	२६				
८	१२	५	३८	५	५०	१२	१६	२	५४				
१०	१२	५	२१	५	५१	२०	१६	१	१३	वैदिक सायन चन्द्र चार			
१२	१२	५	२	५	५२	२८	१८	५६	२६	२	१५	५७	सिंह
१४	१२	४	४०	५	५३	३३	१८	५७	३६	५	३	४५	कन्या
१६	१२	४	१७	५	५४	३८	१८	५५	४६	७	१६	४७	तुला
१८	१२	३	५१	५	५५	४४	१८	५३	५२	१०	५	२०	वृश्चिक
२०	१२	३	२३	५	५६	४६	१८	५१	५३	१२	१५	१४	धनु
२२	१२	२	५३	५	५७	४८	१८	४६	५०	१४	२१	११	मकर
२४	१२	२	२२	५	५८	४८	१८	४७	४५	१६	२३	२७	कुम्भ
२६	१२	१	४६	५	५६	४६	१८	४५	३७	१८	२३	३१	मीन
२८	१२	१	१४	६	०	५२	१८	४३	३०	२०	२३	१५	मेष
३०	१२	०	३८	६	१	५२	१८	४१	१६	२३	०	२८	वृषभ
										२५	४	२६	मिथुन
										२७	११	४१	कर्क
										२९	२१	४६	सिंह

निरयण चन्द्र चार				ग्रहो का अवैदिक निरयण चार				
ति	घं	मि	राशि	ति	घं	मि	ग्रह	राशि
२	३	५२	कर्क	४	८	४	मंगल	तुला
४	१५	१८	सिंह	१२	१५	३०	शुक्र	कन्या
७	४	११	कन्या	१६	२१	४५	सूर्य	सिंह
६	१७	०	तुला					
१२	३	३८	वृश्चि	अवैदिक नक्षत्र चार				
१४	१०	२६	धनु	२	१०	१५	बुध	पूफा
१६	१३	२२	मकर	३	०	५	सूर्य	श्ले
१८	१३	४४	कुम्भ	८	१४	२६	व गुरु	श्रवण
२०	१३	२२	मीन	६	२०	२६	शुक्र	पूफा
२२	१४	८	मेष	१५	६	१५	मंगल	स्वाति
२४	१७	२८	वृषभ	१६	२१	४५	सूर्य	मघा
२७	०	२	मिथुन	२१	१	१८	शुक्र	हस्त
२६	६	३८	कर्क	२६	१२	३	म रा	पूफा
३१	२१	२७	सिंह	३०	१७	४४	सूर्य	पूफा
वक्री/मार्गी								
१	२३	२६	श व	सरकारी अयनांश				
१३	१४	६	प्लू म	४:२३.४६.२३; १४:.४६.२४;				
१८	१	१८	बु व	१४;२५:२३.४६.२५				

अवैदिक निरयण चान्द्र स्थितियां आदि;भा.मा.स.

३.१३.४४अमान्त चन्द्र स्पष्ट:३.१७.१३;

६.१६.१२::चन्द्र अति दूर; ६.२०.३०:शून्य द शर;

७.२२.८: शू. द क्रा.;१४.३.४८:अधि. शर ५उ१४; १५.१.५७अधिकतम क्रान्ति १८द१८; २१.३.३७शून्य उत्तर क्रान्ति;

१८.१६.२५:पूर्णिमान्त चन्द्र स्पष्ट:१०.१४३;१६.१०.३६:चन्द्र अति निकट; २०.६.५७: शून्य उ शर;

२६.१६.३८ अधिकतम शर ५द१६; २७.१७.२: अधिकतम क्रान्ति १८उ१६

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT म.रा.सा.का Hr	m	se	SUN सूर्य - रवि Si	d	m	se	DEC. क्रान्ति d	m	GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र Si	d	m	se	LAT. शर d	m	DEC. क्रान्ति d	m	DELHI MOON दिल्ली चन्द्र Si	d	m	se	LAT. शर d	m	DEC. क्रान्ति d	m	MERCURY बुध Si	d	m	se
ति	वार	घं	मि	से	रा	अं	क	वि	अं	क	रा	अं	क	वि	अं	क	अं	क	अं	क	रा	अं	क	वि	अं	क'	अं०	क'	रा	अं	क	वि
1	Fr	20	37	40	3	14	58	4	18	N 3	2	18	26	17	4S	47	18	N 6	2	19	15	38	5S	5	17	N45	4	12	4	5
2	Sa	20	41	36	3	15	55	29	17	48	3	0	50	16	4	16	16	59	3	1	42	21	4	32	16	35	4	13	7	53
3	Su	20	45	33	3	16	52	56	17	32	3	13	3	26	3	33	15	7	3	13	56	9	3	48	14	39	4	14	9	1
4	Mo	20	49	29	3	17	50	23	17	17	3	25	7	1	2	41	12	35	3	25	58	23	2	55	12	6	4	15	7	23
5	Tu	20	53	26	3	18	47	51	17	0	4	7	2	35	1	43	9	34	4	7	50	47	1	56	9	4	4	16	2	52
6	We	20	57	22	3	19	45	20	16	44	4	18	52	15	0	40	6	11	4	19	35	41	0	53	5	42	4	16	55	19
7	Th	21	1	19	3	20	42	51	16	28	5	0	38	44	0N	24	2	34	5	1	15	59	0N	11	2	7	4	17	44	36
8	Fr	21	5	16	3	21	40	22	16	11	5	12	25	24	1	28	1S	8	5	12	55	13	1	14	1S	33	4	18	30	34
9	Sa	21	9	12	3	22	37	53	15	54	5	24	16	13	2	28	4	49	5	24	37	28	2	13	5	11	4	19	13	1
10	Su	21	13	9	3	23	35	26	15	36	6	6	15	37	3	22	8	21	6	6	27	22	3	7	8	39	4	19	51	47
11	Mo	21	17	5	3	24	32	59	15	19	6	18	28	24	4	8	11	35	6	18	29	50	3	52	11	51	4	20	26	41
12	Tu	21	21	2	3	25	30	34	15	1	7	0	59	22	4	44	14	22	7	0	49	52	4	28	14	36	4	20	57	29
13	We	21	24	58	3	26	28	9	14	43	7	13	52	54	5	7	16	33	7	13	32	10	4	50	16	46	4	21	24	0
14	Th	21	28	55	3	27	25	45	14	24	7	27	12	28	5	14	17	55	7	26	40	38	4	58	18	9	4	21	45	60
15	Fr	21	32	51	3	28	23	22	14	6	8	10	59	52	5	4	18	17	8	10	17	44	4	48	18	34	4	22	3	15
16	Sa	21	36	48	3	29	20	60	13	47	8	25	14	38	4	35	17	33	8	24	23	48	4	21	17	54	4	22	15	34
17	Su	21	40	44	4	0	18	39	13	28	9	9	53	32	3	47	15	38	9	8	56	31	3	34	16	4	4	22	22	42
18	Mo	21	44	41	4	1	16	19	13	9	9	24	50	29	2	43	12	38	9	23	50	41	2	32	13	8	4	22	24	28
19	Tu	21	48	38	4	2	14	1	12	49	10	9	57	18	1	27	8	46	10	8	58	35	1	16	9	18	4	22	20	43
20	We	21	52	34	4	3	11	44	12	30	10	25	4	42	0	5	4	19	10	24	11	0	0	6	4	50	4	22	11	17
21	Th	21	56	31	4	4	9	28	12	10	11	10	3	47	1S	17	0	22	11	9	18	37	1S	29	0	N 7	4	21	56	7
22	Fr	22	0	27	4	5	7	14	11	50	11	24	47	17	2	33	4	56	11	24	13	16	2	46	4	31	4	21	35	9
23	Sa	22	4	24	4	6	5	2	11	30	0	9	10	12	3	37	9	7	0	8	48	54	3	51	8	46	4	21	8	28
24	Su	22	8	20	4	7	2	51	11	9	0	23	10	2	4	26	12	39	0	23	2	1	4	41	12	23	4	20	36	14
25	Mo	22	12	17	4	8	0	42	10	49	1	6	46	22	4	59	15	24	1	6	51	20	5	14	15	11	4	19	58	40
26	Tu	22	16	14	4	8	58	35	10	28	1	20	0	25	5	15	17	15	1	20	17	25	5	29	17	3	4	19	16	12
27	We	22	20	10	4	9	56	30	10	7	2	2	54	24	5	14	18	10	2	3	22	2	5	28	17	57	4	18	29	22
28	Th	22	24	7	4	10	54	27	9	46	2	15	31	1	4	58	18	9	2	16	7	38	5	11	17	54	4	17	38	48
29	Fr	22	28	3	4	11	52	25	9	25	2	27	53	8	4	29	17	16	2	28	36	51	4	40	16	58	4	16	45	21
30	Sa	22	31	60	4	12	50	25	9	3	3	10	3	28	3	48	15	35	3	10	52	24	3	58	15	15	4	15	49	57
31	Su	22	35	56	4	13	48	27	8	N42	3	22	4	35	2	57	13	N15	3	22	56	45	3	6	12	N52	4	14	53	40

Dt	VENUS Si	d	m	se	MARS Si	d	m	se	JUPITER Makar				SATUR Mina				URANU Makar				NEPTU Makar				PLUTO Vrischik				M RAHU Simha				T RAHU स्पष्ट राहु			
	शुक्र				मंगल				गुरु मकर में				शनि मीन				हर्शल मकर				नेप्चू मकर				प्लूटो वृश्चिक				मध्यम राहु सिंह							
ति	रा	अं०	क'	वि''	रा	अं०	क'	वि''	रा	अं०	क'	वि''	अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''	
1	4	16	20	10	5	28	10	53	9	24	17	10	26	32	17		12	47	12		4	27	30		9	2	37		28	0	21		26	37	38	
2	4	17	32	11	5	28	45	53	9	24	9	32	26	32	18		12	44	49		4	25	54		9	2	13		27	57	10		26	30	20	
3	4	18	44	9	5	29	21	2	9	24	1	50	26	32	13		12	42	25		4	24	19		9	1	52		27	53	60		26	23	50	
4	4	19	56	5	5	29	56	20	9	23	54	7	26	32	2		12	40	1		4	22	45		9	1	32		27	50	49		26	18	38	
5	4	21	7	59	6	0	31	48	9	23	46	21	26	31	44		12	37	38		4	21	10		9	1	14		27	47	38		26	15	14	
6	4	22	19	51	6	1	7	24	9	23	38	34	26	31	20		12	35	15		4	19	37		9	0	59		27	44	27		26	13	38	
7	4	23	31	40	6	1	43	9	9	23	30	45	26	30	50		12	32	53		4	18	4		9	0	44		27	41	16		26	13	32	
8	4	24	43	28	6	2	19	3	9	23	22	56	26	30	14		12	30	31		4	16	32		9	0	33		27	38	6		26	14	38	
9	4	25	55	12	6	2	55	6	9	23	15	6	26	29	32		12	28	10		4	15	0		9	0	23		27	34	55		26	16	14	
10	4	27	6	54	6	3	31	17	9	23	7	16	26	28	44		12	25	49		4	13	29		9	0	15		27	31	44		26	17	44	
11	4	28	18	33	6	4	7	36	9	22	59	26	26	27	49		12	23	29		4	11	59		9	0	9		27	28	33		26	18	44	
12	4	29	30	10	6	4	44	3	9	22	51	37	26	26	48		12	21	10		4	10	29		9	0	5		27	25	23		26	18	38	
13	5	0	41	43	6	5	20	38	9	22	43	49	26	25	42		12	18	52		4	9	0		9	0	3		27	22	12		26	17	14	
14	5	1	53	14	6	5	57	22	9	22	36	1	26	24	29		12	16	34		4	7	32		9	0	3		27	19	1		26	14	50	
15	5	3	4	42	6	6	34	13	9	22	28	16	26	23	10		12	14	17		4	6	5		9	0	6		27	15	50		26	10	32	
16	5	4	16	7	6	7	11	12	9	22	20	32	26	21	45		12	12	1		4	4	39		9	0	9		27	12	39		26	7	50	
17	5	5	27	29	6	7	48	18	9	22	12	50	26	20	15		12	9	47		4	3	13		9	0	15		27	9	29		26	4	26	
18	5	6	38	47	6	8	25	32	9	22	5	11	26	18	39		12	7	33		4	1	49		9	0	23		27	6	18		26	1	38	
19	5	7	50	3	6	9	2	54	9	21	57	35	26	16	56		12	5	20		4	0	26		9	0	33		27	3	7		25	59	50	
20	5	9	1	16	6	9	40	23	9	21	50	2	26	15	8		12	3	9		3	59	3		9	0	45		26	59	56		25	59	14	
21	5	10	12	26	6	10	17	60	9	21	42	33	26	13	14		12	0	58		3	57	42		9	1	0		26	56	46		25	59	38	
22	5	11	23	32	6	10	55	44	9	21	35	7	26	11	15		11	58	49		3	56	21		9	1	15		26	53	35		26	0	38	
23	5	12	34	36	6	11	33	35	9	21	27	45	26	9	10		11	56	42		3	55	2		9	1	33		26	50	24		26	1	44	
24	5	13	45	36	6	12	11	34	9	21	20	28	26	6	59		11	54	35		3	53	44		9	1	53		26	47	13		26	2	38	
25	5	14	56	33	6	12	49	40	9	21	13	15	26	4	43		11	52	30		3	52	27		9	2	15		26	44	3		26	3	2	
26	5	16	7	28	6	13	27	53	9	21	6	8	26	2	21		11	50	27		3	51	11		9	2	41		26	40	52		26	1	32	
27	5	17	18	19	6	14	6	14	9	20	59	6	25	59	53		11	48	25		3	49	57		9	3	7		26	37	41		26	1	20	
28	5	18	29	7	6	14	44	42	9	20	52	9	25	57	21		11	46	25		3	48	43		9	3	35		26	34	30		25	59	38	
29	5	19	39	52	6	15	23	17	9	20	45	19	25	54	43		11	44	26		3	47	31		9	4	5		26	31	19		25	57	38	
30	5	20	50	34	6	16	1	60	9	20	38	34	25	51	59		11	42	29		3	46	20		9	4	36		26	28	9		25	55	38	
31	5	22	1	12	6	16	40	49	9	20	31	56	25	49	10		11	40	34		3	45	11		9	5	10		26	24	58		25	54	2	

सितंबर 1997, शक 1919, वि 2054, श्रावण कृष्ण अमा. से आश्विन कृ. 14 तक, दक्षिनायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु

(श्रा० कृष्ण पक्ष) तिथि आदि समा. काल भा.स्टै.टा.

सितंबर		तिथि			नक्षत्र			योग			करण			शक	सौर
ता	वार	ति	घं	मि	नक्ष	घं	मि	यो	घं	मि	कर	घं	मि	पौ	पौ
१	सो	अम	२६	२२	मघ	२४	२८	शिव	२०	२०	चतु	१६	५	१०	१७
		विक्रम सवत् २०५४ भाद्रपद शुक्ल पक्ष													
२	मंग	प्र	-	-	पूफ	२७	३७	सि	२१	२४	कि	१८	४०	११	१८
३	बुध	प्र	७	५६	उफ	-	-	सा	२२	३०	बव	७	५६	१२	१६
४	गुरु	द्वि	१०	३७	उफ	६	४७	शुभ	२३	३३	कौ	१०	३७	१३	२०
५	शु	तृ	१३	७	ह	६	५०	शुक्र	२४	२७	गर	१३	७	१४	२१
६	श	चतु	१५	२०	चि	१२	३८	ब्रह्म	२५	६	वि	१५	२०	१५	२२
७	रवि	पंच	१७	६	स्वा	१५	४	ऐंद्र	२५	२३	बा	१७	६	१६	२३
८	सो	ष	१८	२४	वि	१६	५८	वैधृ	२५	१२	तै	१८	२४	१७	२४
९	मंग	स	१६	०	अनु	१८	१४	वि	२४	३०	गर	६	४७	१८	२५
१०	बुध	अ	१८	५१	ज्ये	१८	४६	प्री	२३	१२	वि	७	१	१६	२६
११	गुरु	नव	१७	५७	मूल	१८	३४	आ	२१	१७	बा	६	३०	२०	२७
१२	शु	दश	१६	१८	पूष	१७	३८	सौ	१८	४७	गर	१६	१८	२१	२८
१३	श	एक	१३	५६	उष	१६	२	शो	१५	४५	वि	१३	५६	२२	२६
१४	रवि	द्वा	११	५	श्रव	१३	५२	अति	१२	१४	बा	११	५	२३	३०
१५	सो	त्र	७	४५	ध	११	१६	सुक	८	२२	तै	७	४५	२४	३१
""	""	चतु	२८	७	..	..	..	धृ	२८	१५	..	..	..	"	"
१६	मंग	पू	२४	२१	शत	८	२४	शूल	२४	९	वि	१४	१६	२५	आ
""	""	"	..	..	पूभ	२६	२६	..	..	..	..	..	..	"	"
		विक्रम सवत् २०५४ आश्विन (मुख्य भाद्रपद) कृष्ण पक्ष													
१७	बुध	प्र	२०	३६	उभा	२६	३१	गड	१६	४८	बा	१०	२६	२६	२
१८	गुरु	द्वि	१७	२	रेव	२३	५१	वृ	१५	४५	तै	६	४७	२७	३
१९	शु	तृ	१३	४६	अश	२१	३५	ध्रु	१९	५८	वि	१३	४६	२८	४
२०	श	चतु	११	६	भर	१६	५१	व्या	८	३५	बा	११	६	२९	५
२१	रवि	पंच	६	१	कृ	१८	४८	हर्ष	५	४२	तै	६	१	३०	६
""	""	..	..	..	..	..	..	वज्र	२७	२३	..	..	..	"	"
२२	सो	ष	७	३६	रो	१८	२६	सि	२५	४२	व	७	३६	३१	७
२३	मंग	स	७	४	मृ	१८	५८	व्य	२४	३६	बव	७	४	आ	८
२४	बुध	अ	७	१८	आ	२०	१२	वरी	२४	१२	कौ	७	१८	२	९
२५	गुरु	नव	८	१६	पुन	२२	६	परि	२४	१६	गर	८	१६	३	१०
२६	शु	दश	६	५३	पु	२४	३४	शिव	२४	४६	वि	६	५३	४	११
२७	श	एक	१२	०	श्ले	२७	२६	सि	२५	३४	बा	१२	०	५	१२
२८	रवि	द्वा	१४	२६	मघ	-	-	सा	२६	३४	तै	१४	२६	६	१३
२९	सो	त्र	१७	७	मघ	६	३१	शुभ	२७	३६	व	१७	७	७	१४
३०	मंग	चतु	१६	४८	पूफ	६	४१	शुक्र	२८	४२	वि	६	२८	८	१५

ति	व्रत-पर्व-त्योहार आदि (भा. स्टै. टा. में)
१	जुलियन अहगर्ण :२४५०६६३; कलि अहगंण
	१८६२२२७;स्फुट परमाक्रान्ति २३अं २६क १४वि;
	घूनन संस्कार -२.०; अयनाशः २३-४६-२६
१	कुशाग्राहिणी (दर्भ) सोमवती अमा; पिठौरी ३०;
३	श्रीशंकरदेव तिथि (असम)
५	हरितालिका गौरी तृतीया
६	श्री गणेश, विनायक व वरद चतुर्थी
७	ऋषि ५;मेलापात३दिन(जम्मू);माधवदेव तिथि(असम
८	सूर्य षष्ठी; लोलार्क षष्ठी; मन्थन षष्ठी
१०	दूर्वाष्टमी; राधाष्टमी; महालक्ष्मी व्रतारम्भ
११	अदुख, नन्द व ताल नवमी
१२	रामदेवजी का मेला
१३	पार्श्व परिवर्तितीं११; जलझूलनी ११; ड़ोलग्यारस;
	हेरका हितोम्बा (मणिपुर)
१४	ओणम व थिरु ओणम;श्रीवामन जयन्ती; हरिवासर
१५	अनन्त चतुर्दशी
१६	२४-१८ खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत मे दृश्य); पितृ-
	(श्राद्ध) पक्ष तर्पण व महालय प्रारम्भ; पूर्णिमा श्राद्ध
१६	२१-४१ सूर्य की अवैदिक निरयण कन्या सक्रान्ति;
	विश्वकर्मा पूजा (बगाल)
२१	श्रीनारायण गुरु समाधि दिवस (केरल); चन्द्र षष्ठी
२३	५-२६ सूर्य की सायन (वास्तविक वैदिक)तुला स.;
	शरत् संपात;वैदिक मास ऊर्जा प्रारम्भ; जलविषुव
	दिवस; सूर्य दक्षिण गोल में; दिन-रात्रि एक समान
	जो वास्तविक वैदिक तुला सक्रान्ति का लक्षण है
	(यह किसी निरयण स. मे नहीं होता है)रा.आश्विन
	प्रा; साहिब सप्तमी(कश्मीर); महालक्ष्मीव्रत समापन
२५	मातृ नवमी;अविधवा नवमी; दुर्गा नवमी (महाराष्ट्र)
२७	इन्दिरा एकादशी
२८	मघाश्राद्ध
३०	शस्त्रादिहतानां श्राद्धः

स्थानीय समय में				दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.								वैदिक सायन राशि चार				निरयण चन्द्र चार				ग्रहो का अवैदिक निरयण चार				
अं.	स्पष्ट मध्यान्ह			में सूर्योदय				व सूर्यास्त				ति	घं	मि	ग्रह राशि	ति	घं	मि	राशि	ति	घं	मि	ग्रह	राशि
ति	घं	मि	से	घं	मि	से		घं	मि	से		१२	७	४७	शुक्र वृश्चि	३	१०	२४	कन्या	७	०	४३	शूक्र	तुला
१	१२	०	१	६	२	५१		१८	३६	०		२३	५	२६	सूर्य तुला	५	२३	१६	तुला	१६	२१	४०	सूर्य	कन्या
३	११	५६	२३	६	३	५१		१८	३६	४५		२६	३	५२	मगल धनु	८	१०	३२	वृश्चि	२०	५	१५	मगल	वृश्चि
५	११	५८	४३	६	४	५०		१८	३४	२६						१०	१८	४६	धनु	२६	०	१३	बुध	कन्या
७	११	५८	३	६	५	५०		१८	३२	१०		वैदिक सायन चन्द्र चार				१२	२३	१८	मकर	अवैदिक नक्षत्र चार				
९	११	५७	२२	६	६	५०		१८	२६	४७		१	६	५७	कन्या	१५	०	३७	कुम्भ	१	८	१७	शुक्र	चित्रा
११	११	५६	४०	६	७	४७		१८	२७	२३		३	२२	५६	तुला	१७	०	११	मीन	१	२२	६	बुध	व मघ
१३	११	५५	५८	६	८	४५		१८	२५	०		६	११	३६	वृश्चिक	१८	२३	५१	मेष	५	७	३०	मगल	विश
१५	११	५५	१५	६	९	४२		१८	२२	३६		८	२२	२३	धनु	२१	१	३२	वृषभ	१२	१७	५४	शुक्र	स्वाति
१७	११	५४	३२	६	१०	४१		१८	२०	१३		११	५	५३	मकर	२३	६	३८	मिथु	१३	११	३२	सूर्य	उफा
१९	११	५३	४६	६	११	३८		१८	१७	४७		१३	६	३६	कुम्भ	२५	१५	३४	कर्क	१८	१	४२	बुध	पूफा
२१	११	५३	६	६	१२	३६		१८	१५	२६		१५	१०	२६	मीन	२८	३	२६	सिंह	२४	७	८	शुक्र	विशा
२३	११	५२	२४	६	१३	३६		१८	१३	२		१७	६	५५	मेष	३०	१६	२८	कन्या	२५	१	३८	मगल	अनु
२५	११	५१	४२	६	१४	३७		१८	१०	३८		१६	६	५२	वृषभ					२७	२	२८	बुध	उफा
२७	११	५१	१	६	१५	४०		१८	८	१४		२१	१२	१०	मिथुन	वक्री/मार्गी				२७	३	६	सूर्य	हस्त
२९	११	५०	२१	६	१६	४१		१८	५	५१		२३	१८	३	कर्क	१०	७	१२	बु मा					
अवैदिक निरयण चन्द्र स्थितियां; भ. मा. स												२६	३	४३	सिंह					सरकारी अयनाश				
२.५.२२खण्डग्रास सूर्य ग्रहण अमान्त चन्द्र स्पष्ट												२८	१५	५७	कन्या					२:२३.४६.२६; १४:२३.४६.२७;				
४.१५.४५; ३.१.५६: शून्य द शर;												३०	२६	२	तुला					२६:२३.४६.२८				

३.३.३:चन्द्र अति निकट; ४.४.३८: शून्य द क्रान्ति; १०.११.१६: अधि. शर ५उ१८; ११.११.०: अधिकतम क्रान्ति १८द१५;
१६.१७.४४:शून्य उ शर;१६.२०.५८: चन्द्र अति निकट;१७.०.२०: पूर्ण चन्द्र ग्रहण चन्द्र स्पष्ट :११.०.७; १७.१४.१६:शू. उ क्रान्ति;
२२.२३.६: अधिकतम शर ५द१८; २३.२३.२६:अधिकतम क्रान्ति १८उ१५; ३०.५.१४: चन्द्र अति दूर; ३०.८.१४: शून्य द शर

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः ५घ ३० मि भा.स्टै. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT			SUN				DEC.		GEO.MOON				LAT.		DEC.		DELHI MOO				LAT.		DEC.		MERCURY			
		म.रा.सा.का			सूर्य - रवि				क्रान्ति		भूकेन्द्रीय चन्द्र				शर		क्रान्ति		दिल्ली चन्द्र				शर		क्रान्ति		बुध			
		Hr	m	se	Si	d	m	se	d	m	Si	d	m	se	d	m	d	m	Si	d	m	se	d	m	d	m	Si	d	m	se
ति	वार	घं	मि	से	रा	अं	क	वि	अं	क	रा	अं	क	वि	अं	क	अं	क	रा	अं	क	वि	अं	क'	अं०	क'	रा	अं	क	वि
1	Mo	22	39	53	4	14	46	30	8N20		4	3	58	50	1S59		10N23		4	4	52	18	2S 7		9N57		4	13	57	40
2	Tu	22	43	49	4	15	44	36	7S58		4	15	48	24	0S56		7S 6		4	16	41	18	1S 3		6S39		4	13	3	7
3	We	22	47	46	4	16	42	43	7 36		4	27	35	29	0N10		3 33		4	28	26	0	0N 2		3 6		4	12	11	17
4	Th	22	51	42	4	17	40	51	7 14		5	9	22	23	1S14		0S 8		5	10	8	49	1S 7		0S34		4	11	23	21
5	Fr	22	55	39	4	18	39	2	6 52		5	21	11	37	2 16		3S49		5	21	52	22	2 8		4S13		4	10	40	26
6	Sa	22	59	36	4	19	37	13	6 30		6	3	6	2	3 13		7 23		6	3	39	37	3 4		7 43		4	10	3	35
7	Su	23	3	32	4	20	35	27	6 7		6	15	8	52	4 1		10 40		6	15	33	56	3 51		10 58		4	9	33	43
8	Mo	23	7	29	4	21	33	42	5 45		6	27	23	42	4 40		13 34		6	27	39	2	4 29		13 48		4	9	11	33
9	Tu	23	11	25	4	22	31	58	5 22		7	9	54	18	5 6		15 53		7	9	58	52	4 55		16 5		4	8	57	43
10	We	23	15	22	4	23	30	16	5 0		7	22	44	28	5 18		17 30		7	22	37	30	5 6		17 40		4	8	52	37
11	Th	23	19	18	4	24	28	35	4 37		8	5	57	36	5 13		18 13		8	5	38	40	5 2		18 24		4	8	56	32
12	Fr	23	23	15	4	25	26	56	4 14		8	19	36	12	4 52		17 56		8	19	5	26	4 41		18 9		4	9	9	34
13	Sa	23	27	12	4	26	25	18	3 51		9	3	41	14	4 12		16 32		9	2	59	26	4 2		16 50		4	9	31	42
14	Su	23	31	8	4	27	23	42	3 28		9	18	11	30	3 15		14 4		9	17	20	24	3 7		14 26		4	10	2	48
15	Mo	23	35	5	4	28	22	8	3 5		10	3	3	10	2 4		10 37		10	2	5	26	1 57		11 3		4	10	42	34
16	Tu	23	39	1	4	29	20	36	2 42		10	18	9	48	0 43		6 24		10	17	8	57	0 37		6 53		4	11	30	40
17	We	23	42	58	5	0	19	5	2 19		11	3	22	48	0S41		1 45		11	2	22	50	0S48		2 14		4	12	26	39
18	Th	23	46	54	5	1	17	36	1 56		11	18	32	33	2S3		3N 0		11	17	37	31	2S10		2N32		4	13	29	60
19	Fr	23	50	51	5	2	16	9	1 32		0	3	29	50	3 14		7 30		0	2	43	14	3 23		7S6		4	14	40	9
20	Sa	23	54	47	5	3	14	44	1 9		0	18	7	8	4 11		11 26		0	17	31	34	4 21		11 6		4	15	56	30
21	Su	23	58	44	5	4	13	22	0 46		1	2	19	28	4 51		14 34		1	1	56	26	5 2		14 19		4	17	18	26
22	Mo	0	2	40	5	5	12	1	0 23		1	16	4	42	5 13		16 46		1	15	54	39	5 24		16 34		4	18	45	18
23	Tu	0	6	37	5	6	10	43	0S 0		1	29	23	6	5 17		17 59		1	29	25	44	5 28		17 49		4	20	16	30
24	We	0	10	34	5	7	9	27	0S23		2	12	16	54	5 5		18 13		2	12	31	17	5 15		18 3		4	21	51	24
25	Th	0	14	30	5	8	8	13	0 46		2	24	49	32	4 38		17 33		2	25	14	24	4 48		17 20		4	23	29	28
26	Fr	0	18	27	5	9	7	2	1 10		3	7	5	2	3 59		16 4		3	7	38	55	4 8		15 48		4	25	10	10
27	Sa	0	22	23	5	10	5	52	1 33		3	19	7	38	3 10		13 53		3	19	48	56	3 18		13 35		4	26	52	58
28	Su	0	26	20	5	11	4	46	1 57		4	1	1	23	2 14		11 8		4	1	48	26	2 20		10 47		4	28	37	28
29	Mo	0	30	16	5	12	3	41	2S20		4	12	49	59	1 12		7 57		4	13	41	2	1 17		7 33		5	0	23	16
30	Tu	0	34	13	5	13	2	38	2S43		4	24	36	41	0S 8		4N28		4	25	29	57	0S12		4N 2		5	2	10	0
31	We	0	38	10	5	14	1	38	3S7		5	6	24	15	0S58		0N47		5	7	17	55	0S53		0N22		5	3	57	24

Dt	VENUS				MARS				JUPITER				SATUR				URANU				NEPTU				PLUTO				M RAHU				T RAHU			
	Si	d	m	se	Si	d	m	se	Makar				Mina				Makar				Makar				Vrischik				Simha				स्पष्ट राहु			
	शुक्र				मंगल				गुरु मकर मे				शनि मीन				हर्शल मकर				नेप्चू मकर				प्लूटो वृश्चिक				मध्यम राहु				सिंह			
ति	रा	अं०	क'	वि''	रा	अं०	क'	वि''	रा	अं०	क'	वि''	अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''	
1	5	23	11	47	6	17	19	46	9	20	25	25	25	46	17		11	38	40		3	44	2		9	5	46		26	21	47		25	52	47	
2	5	24	22	18	6	17	58	49	9	20	19	2	25	43	18		11	36	48		3	42	56		9	6	24		26	18	36		25	52	11	
3	5	25	32	46	6	18	37	60	9	20	12	45	25	40	14		11	34	59		3	41	50		9	7	4		26	15	26		25	52	5	
4	5	26	43	10	6	19	17	17	9	20	6	36	25	37	5		11	33	11		3	40	46		9	7	46		26	12	15		25	52	29	
5	5	27	53	30	6	19	56	41	9	20	0	36	25	33	52		11	31	25		3	39	44		9	8	29		26	9	4		25	53	5	
6	5	29	3	47	6	20	36	12	9	19	54	43	25	30	34		11	29	41		3	38	43		9	9	15		26	5	53		25	53	41	
7	6	0	13	59	6	21	15	50	9	19	48	59	25	27	11		11	27	59		3	37	44		9	10	4		26	2	43		25	54	11	
8	6	1	24	7	6	21	55	34	9	19	43	24	25	23	44		11	26	20		3	36	46		9	10	54		25	59	32		25	54	35	
9	6	2	34	11	6	22	35	24	9	19	37	57	25	20	13		11	24	42		3	35	50		9	11	46		25	56	21		25	54	41	
10	6	3	44	10	6	23	15	21	9	19	32	40	25	16	37		11	23	7		3	34	55		9	12	40		25	53	10		25	54	41	
11	6	4	54	5	6	23	55	24	9	19	27	32	25	12	57		11	21	34		3	34	2		9	13	36		25	49	59		25	54	35	
12	6	6	3	55	6	24	35	34	9	19	22	34	25	9	13		11	20	3		3	33	10		9	14	34		25	46	49		25	54	35	
13	6	7	13	41	6	25	15	49	9	19	17	45	25	5	25		11	18	34		3	32	21		9	15	33		25	43	38		25	54	35	
14	6	8	23	21	6	25	56	11	9	19	13	6	25	1	34		11	17	9		3	31	33		9	16	35		25	40	27		25	54	47	
15	6	9	32	57	6	26	36	39	9	19	8	37	24	57	39		11	15	45		3	30	46		9	17	38		25	37	16		25	55	5	
16	6	10	42	27	6	27	17	12	9	19	4	18	24	53	40		11	14	24		3	30	2		9	18	43		25	34	6		25	55	17	
17	6	11	51	52	6	27	57	52	9	19	0	9	24	49	38		11	13	5		3	29	19		9	19	50		25	30	55		25	55	23	
18	6	13	1	12	6	28	38	37	9	18	56	11	24	45	32		11	11	48		3	28	37		9	20	59		25	27	44		25	55	5	
19	6	14	10	27	6	29	19	28	9	18	52	23	24	41	23		11	10	34		3	27	58		9	22	8		25	24	33		25	54	35	
20	6	15	19	36	7	0	0	26	9	18	48	47	24	37	11		11	9	23		3	27	20		9	23	21		25	21	22		25	53	47	
21	6	16	28	40	7	0	41	29	9	18	45	20	24	32	56		11	8	14		3	26	44		9	24	35		25	18	12		25	52	47	
22	6	17	37	38	7	1	22	38	9	18	42	5	24	28	39		11	7	8		3	26	10		9	25	51		25	15	1		25	52	0	
23	6	18	46	30	7	2	3	52	9	18	39	1	24	24	18		11	6	4		3	25	37		9	27	9		25	11	50		25	51	29	
24	6	19	55	17	7	2	45	13	9	18	36	8	24	19	55		11	5	3		3	25	7		9	28	28		25	8	39		25	51	29	
25	6	21	3	58	7	3	26	39	9	18	33	26	24	15	29		11	4	5		3	24	38		9	29	49		25	5	29		25	52	0	
26	6	22	12	34	7	4	8	12	9	18	30	55	24	11	1		11	3	10		3	24	11		9	31	12		25	2	18		25	53	5	
27	6	23	21	3	7	4	49	50	9	18	28	36	24	6	31		11	2	17		3	23	47		9	32	37		24	59	7		25	54	23	
28	6	24	29	26	7	5	31	34	9	18	26	29	24	1	59		11	1	27		3	23	24		9	34	3		24	55	56		25	55	47	
29	6	25	37	43	7	6	13	23	9	18	24	33	23	57	25		11	0	39		3	23	2		9	35	31		24	52	46		25	57	0	
30	6	26	45	54	7	6	55	19	9	18	22	49	23	52	49		10	59	55		3	22	43		9	37	0		24	49	35		25	57	29	
31	6	27	53	57	7	7	37	20	9	18	21	17	23	48	12		10	59	14		3	22	26		9	38	31		24	46	24		25	56	32	

अक्तूबर 1997,शक 1919,वि. 2054,आश्विन कृ. अमा. से (आ० कृष्ण पक्ष)तिथि आदि समा. काल भा.स्टै.टा. शकसौर

ता.	वार	ति	घं	मि	नक्ष	घं	मि	यो	घं	मि	कर	घं	मि	आ	आ
१	बुध	अम	२२	२२	उफ	१२	४८	ब्रह्म	-	-	चतु	६	६	६	१६
					विक्रम सवत् २०५४ आश्विन शुक्ल पक्ष										
२	गुरु	प्र	२४	४३	ह	१५	४५	ब्रह्म	५	३८	कि	११	३४	१०	१७
३	शु	द्वि	२६	४७	चि	१८	२६	ऐंद्र	६	२४	बा	१३	४८	११	१८
४	श	तृ	२८	२८	स्वा	२०	४७	वैधृ	६	५५	तै	१५	४१	१२	१६
५	रवि	चतु	-	-	वि	२२	४४	वि	७	६	व	१७	६	१३	२०
६	सो	चतु	५	४३	अनु	२४	१४	प्री	७	३	बव	१८	६	१४	२१
७	मग	पच	६	२६	ज्ये	२५	११	आ	६	३३	कौ	१८	३५	१५	२२
८	बुध	ष	६	४१	मूल	२५	३५	सौ	५	३८	गर	१८	३०	१६	२३
		स	३०	१८	..	..	..	शो	२८	१५	..	..	..	"	"
९	गुरु	अ	२६	१७	पूष	२५	२३	अ	२६	२२	वि	१६	२६	१७	२४
१०	शु	नव	२७	४१	उष	२४	३४	सुक	२४	०	बा	१६	३४	१८	२५
११	श	दश	२५	३०	श्रव	२३	११	धृ	२१	१०	तै	१४	४०	१६	२६
१२	रवि	एक	२२	४६	ध	२१	१८	शूल	१७	५५	व	१२	१३	२०	२७
१३	सो	द्वा	१६	४३	शत	१८	५६	गड	१४	१८	बव	६	२०	२१	२८
१४	मग	त्रय	१६	२०	पूभ	१६	२३	वृ	१०	२५	तै	१६	२०	२२	२६
१५	बुध	चतु	१२	४८	उभा	१३	३७	ध्रु	६	२३	व	१२	४८	२३	३०
			..	..	..	..	..	व्या	२६	१८	..	..	..	"	"
१६	गुरु	पू	६	१६	रेव	१०	५२	हर्ष	२२	१८	बव	६	१६	२४	३१
					विक्रम सवत् २०५४ कार्त्तिक (मुख्य आश्विन) कृष्ण पक्ष										
१७	शु	प्र	५	५४	अश	८	१८	वज्र	१८	३२	तै	१६	२३	२५	का
		द्वि	२६	५२	..	..	..	..	..	..	..	..	..	"	"
१८	श	तृ	२४	२१	भर	६	५	सि	१५	८	व	१३	३३	२६	२
			..	..	कृ	२८	२४	..	..	..	..	..	..	"	"
१९	रवि	चतु	२२	२८	रो	२७	२३	व्य	१२	१२	बव	११	१६	२७	३
२०	सो	पच	२१	२२	मृ	२७	६	वरी	६	५१	कौ	६	४६	२८	४
२१	मग	ष	२१	६	आ	२७	४४	परि	८	६	गर	६	८	२९	५
२२	बुध	स	२१	४२	पुन	२६	६	शिव	७	८	वि	६	१८	३०	६
२३	गुरु	अ	२३	६	पु	-	-	सि	६	४५	बा	१०	१८	का	७
२४	शु	नव	२५	८	पु	७	१७	सा	६	५६	तै	१२	३	२	८
२५	श	दश	२७	३७	श्ले	६	५६	शुभ	७	३४	व	१४	२०	३	९
२६	रवि	एक	-	-	मघ	१३	३	शुक्र	८	२६	बव	१६	५८	४	१०
२७	सो	एक	६	२०	पूफ	१६	१४	ब्रह्म	६	३३	कौ	१६	४१	५	११
२८	मग	द्वा	६	२	उफ	१६	२०	ऐंद्र	१०	३५	तै	६	२	६	१२
२९	बुध	त्रय	११	३३	ह	२२	१३	वैधृ	११	२७	व	११	३३	७	१३
३०	गुरु	चतु	१३	४४	चि	२४	४४	वि	१२	५	शकु	१३	४४	८	१४
३१	शु	अम	१५	३१	स्वा	२६	५०	प्री	१२	२५	नाग	१५	३१	६	१५

ति	व्रत-पर्व-त्योहार आदि; (भा. स्टै. टा. मे)
१	जुलि.अहगर्ण २४५०७२३;कलि अहर्गण १८६२२५७; स्फुट परमाक्रान्ति २३अं २६क १४वि; धूनन संस्कार स्पष्ट -३.६ वि; सरकारी अयनांश:२३-४६-२८
१	सर्वपितृ अमा.;महालय अमा.;तपर्ण लयबा(मणिपुर)
२	महात्मा गांधी जन्मदिवस; शारदीय नवरात्रारम्भ; घटस्थापन; मातामह श्राद्ध
६	उपांग ललिता व्रत; ललिता पंचमी;नट पंचमी
८	दुर्गा व महासप्तमी;सरस्वती आह्वान(मूल नक्षत्र में); दुर्गा पूजा प्रारम्भ; ओली प्रारम्भ (जैन)
९	महाष्टमी; दुर्गाष्टमी; ज्वालामुखी व भद्रकाली पूजा (पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में)
१०	महानवमी; सरस्वती बलिदान (उत्तराषाढ़ नक्षत्र में) आयुध पूजा
११	दशहरा; विजया दशमी; अपराजिता पूजा; माधवाचार्य जयन्ती; सरस्वती विसर्जन
१२	भरत मिलाप; पापांकुशा एकादशी व्रत
१५	कोजागरी लक्ष्मी व्रत
१६	महर्षि वाल्मीकि ज.; शरत् पूर्णिमा; कार्तिक स्नान प्रा.; पुष्कर यात्रा; कुमार पूर्णिमा
१९	करुआ चौथ; दशरथ चतुर्थी; कर्कचतुर्थी
१७	६-३७ सूर्य की अवैदिक सरकारी निरयण तुला संक्रान्ति; कावेरी संक्रमण स्नान
२३	१४-४५ सूर्य की सायन (वास्तविक वैदिक) वृश्चिक संक्रान्ति; हेमन्त ऋतु प्रारम्भ; वैदिक मास साहस प्रारम्भ; अहोई अष्टमी; राष्ट्रीय कार्तिक प्रारम्भ
२६	रमा एकादशी (स्मार्त)
२७	गोवत्स द्वादशी
२८	धन तेरस; धन्वन्तरी जयन्ती; यम दीपदान
३०	दीपावली; नरक १४; महालक्ष्मी पूजा; काली पूजा; श्रीहनुमज्जयन्ती;महावीर निर्वाण दिवस
३१	गोवर्धन पूजा;बलि पूजा;महावीर नि. सं. २५२४ प्रा.

स्थानीय समय में दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.

अं.	स्पष्ट मध्यान्ह			में सूर्योदय			व सूर्यास्त		
ति	घ	मि	से	घ	मि	से	घ	मि	से
१	११	४६	४२	६	१७	४२	१८	३	३०
३	११	४६	४	६	१८	४८	१८	१	१०
५	११	४८	२८	६	१६	५४	१७	५८	५६
७	११	४७	५२	६	२१	१	१७	५६	३७
९	११	४७	१६	६	२२	७	१७	५४	२२
११	११	४६	४७	६	२३	१४	१७	५२	६
१३	११	४६	१७	६	२४	२६	१७	५०	०
१५	११	४५	४६	६	२५	३६	१७	४७	५१
१७	११	४५	२३	६	२६	५१	१७	४५	४५
१९	११	४४	५६	६	२८	४	१७	४३	४२
२१	११	४४	३८	६	२९	२२	१७	४१	४८
२३	११	४४	२०	६	३०	४१	१७	३९	५४
२५	११	४४	५	६	३२	०	१७	३८	५
२७	११	४३	५३	६	३३	२४	१७	३६	१६
२९	११	४३	४४	६	३४	४८	१७	३४	३४
३१	११	४३	३८	६	३६	८	१७	३३	०

वैदिक सायन राशि चार

ति	घं	मि	ग्रह राशि
२	११	८	बुध तुला
८	१३	५५	शुक्र धनु
१६	१७	३८	बुध वृश्चि
२३	१४	४५	सूर्य वृश्चि

वैदिक सायन चन्द्र चार

ति	घं	मि	राशि
१	५	२	तुला
३	१७	२७	वृश्चिक
५	४	१२	धनु
८	१२	३३	मकर
१०	१७	५८	कुम्भ
१२	२०	२६	मीन
१५	२०	४६	मेष
१८	२१	५८	मिथुन
२१	२	१६	कर्क
२३	१०	४१	सिंह
२५	२२	३०	कन्या
२८	११	३५	तुला
३०	२३	४५	वृश्चिक

निरयण चन्द्र चार

ति	घं	मि	राशि
३	५	८	तुला
५	१६	१७	वृश्चि
८	१	११	धनु
१०	७	१३	मकर
१२	१०	१८	कुम्भ
१४	११	४	मीन
१६	१०	५२	मेष
१८	११	३७	वृषभ
२०	१५	१०	मिथु
२२	२२	४३	कर्क
२५	६	५६	सिंह
२७	२३	१	कन्या
३०	११	३१	तुला
वक्री/मार्गी			
८	१०	८	गु मा
६	६	५६	नै मा
१४	१६	१६	वू मा

ग्रहो का अवैदिक निरयण चार

ति	घं	मि	ग्रह	राशि
३	२	३	शुक्र	वृश्चि
१६	०	४२	बुध	तुला
१७	६	३७	सूर्य	तुला
३०	१३	४७	शुक्र	धनु

अवैदिक नक्षत्र चार

ति	घं	मि	ग्रह	नक्षत्र
४	१४	१०	बुध	हस्त
६	१	३	शुक्र	अनु
१०	१६	१	सूर्य	चित्रा
१२	३	६	बुध	चित्रा
१३	२३	१	मंगल	ज्ये
१८	१	५३	शुक्र	ज्ये
२०	०	४६	बुध	स्वा
२४	२	३६	सूर्य	स्वा
२८	८	३१	बुध	विश
३०	१३	४७	शुक्र	मूल

सरकारी अयनांश

१०:२३.४६.२६; २१:२३.४६.३०

अवैदिक निरयण चान्द्र स्थितिया आदि;भा. मा.स.

१.१०.३५:शू. द क्रान्ति; १.२२.२२: अमान्त चन्द्र

८.१७.५३: अधिकतम क्रान्ति १८द१८; १४.४.८

१५.७.३६:चन्द्र निकटतम; १६.६.१६: पूर्णिमान्त चन्द्र स्पष्ट: ११.२६.०; २०.६.४६: अधिकतम शर: ५द१२; २१.७.४१अधिकतम क्रान्ति १८उ२२; २७.१३.१६: शू. द शर; २७.१४.४२:चन्द्र अति दूर; २८.१७.२२: शून्य द क्रान्ति; ३१.१५.३१: अमान्त चन्द्र स्पष्ट: ६.१४.१२

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT म.रा.सा.का Hr	m	se	SUN सूर्य - रवि Si	d	m	se	DEC. क्रान्ति d	m	GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र Si	d	m	se	LAT. शर d	m	DEC. क्रान्ति d	m	DELHI MOO दिल्ली चन्द्र Si	d	m	se	LAT. शर d	m	DEC. क्रान्ति d	m	MERCURY बुध Si	d	m	se
ति	वार	घं	मि	से	रा	अं	क	वि	अं	क	रा	अं	क	वि	अं	क	अं	क	रा	अं	क	वि	अं०	क'	अं	क''	रा	अं	क	वि
1	We	0	38	10	5	14	1	38	3S	7	5	6	24	15	0N	58	0N	47	5	7	17	55	0N	53	0N	22	5	3	57	24
2	Th	0	42	6	5	15	0	39	3S	30	5	18	15	4	2S	0	2S	56	5	19	7	16	1S	55	3S	21	5	5	45	11
3	Fr	0	46	3	5	15	59	43	3	53	6	0	11	14	2	58	6S	33	6	1	0	7	2	52	6S	57	5	7	33	8
4	Sa	0	49	59	5	16	58	49	4	16	6	12	14	37	3	49	9	57	6	12	58	22	3	42	10	17	5	9	21	4
5	Su	0	53	56	5	17	57	56	4	39	6	24	27	8	4	29	12	57	6	25	3	60	4	21	13	15	5	11	8	50
6	Mo	0	57	52	5	18	57	6	5	2	7	6	50	43	4	58	15	26	7	7	19	5	4	49	15	40	5	12	56	18
7	Tu	1	1	49	5	19	56	17	5	25	7	19	27	34	5	13	17	13	7	19	45	59	5	3	17	25	5	14	43	22
8	We	1	5	45	5	20	55	30	5	48	8	2	19	58	5	13	18	11	8	2	27	14	5	3	18	21	5	16	29	58
9	Th	1	9	42	5	21	54	44	6	11	8	15	30	18	4	56	18	11	8	15	25	34	4	46	18	22	5	18	16	0
10	Fr	1	13	38	5	22	54	1	6	34	8	29	0	43	4	23	17	11	8	28	43	33	4	14	17	23	5	20	1	27
11	Sa	1	17	35	5	23	53	19	6	57	9	12	52	42	3	34	15	9	9	12	23	18	3	26	15	24	5	21	46	15
12	Su	1	21	32	5	24	52	39	7	19	9	27	6	36	2	31	12	8	9	26	25	52	2	23	12	28	5	23	30	25
13	Mo	1	25	28	5	25	52	0	7	42	10	11	40	58	1	16	8	19	10	10	50	41	1	10	8	43	5	25	13	53
14	Tu	1	29	25	5	26	51	24	8	4	10	26	32	6	0S	5	3	54	10	25	34	57	0S	10	4	21	5	26	56	41
15	We	1	33	21	5	27	50	50	8	26	11	11	33	53	1S	26	0N	50	11	10	33	21	1S	32	0N	20	5	28	38	48
16	Th	1	37	18	5	28	50	17	8	49	11	26	38	14	2	41	5	30	11	25	38	15	2	48	5	3	6	0	20	13
17	Fr	1	41	14	5	29	49	46	9	11	0	11	36	3	3	45	9	47	0	10	40	31	3	53	9	22	6	2	0	58
18	Sa	1	45	11	6	0	49	18	9	32	0	26	18	35	4	33	13	24	0	25	30	54	4	41	13	3	6	3	41	2
19	Su	1	49	8	6	1	48	51	9	54	1	10	38	50	5	1	16	6	1	10	1	30	5	12	15	49	6	5	20	28
20	Mo	1	53	4	6	2	48	27	10	16	1	24	32	25	5	12	17	45	1	24	6	54	5	22	17	33	6	6	59	14
21	Tu	1	57	1	6	3	48	5	10	37	2	7	57	53	5	4	18	22	2	7	44	43	5	15	18	11	6	8	37	23
22	We	2	0	57	6	4	47	45	10	59	2	20	56	20	4	41	17	58	2	20	55	19	4	52	17	48	6	10	14	55
23	Th	2	4	54	6	5	47	28	11	20	3	3	30	53	4	5	16	41	3	3	41	18	4	15	16	30	6	11	51	51
24	Fr	2	8	50	6	6	47	12	11	41	3	15	45	54	3	18	14	40	3	16	6	44	3	27	14	26	6	13	28	12
25	Sa	2	12	47	6	7	46	60	12	2	3	27	46	24	2	24	12	2	3	28	16	28	2	32	11	45	6	15	4	0
26	Su	2	16	43	6	8	46	49	12	22	4	9	37	33	1	24	8	56	4	10	15	30	1	31	8	36	6	16	39	15
27	Mo	2	20	40	6	9	46	40	12	43	4	21	24	15	0	21	5	30	4	22	8	40	0	27	5	7	6	18	13	59
28	Tu	2	24	36	6	10	46	34	13	3	5	3	10	57	0N	43	1	51	5	4	0	18	0N	37	1	26	6	19	48	11
29	We	2	28	33	6	11	46	30	13	23	5	15	1	28	1S	45	1S	54	5	15	54	4	1S	39	2S	20	6	21	21	54
30	Th	2	32	30	6	12	46	27	13S	43	5	26	58	48	2S	43	5S	36	5	27	52	51	2	37	6S	2	6	22	55	8
31	Fr	2	36	26	6	13	46	27	14S	2	6	9	5	14	3N	34	9S	7	6	9	58	45	3N	27	9S	32	6	24	27	53

Dt	VENUS शुक्र Si	d	m	se	MARS मंगल Si	d	m	se	JUPITER Makar गुरु मकर में				SATUR Mina शनि मीन				URANU Makar हर्शल मकर				NEPTU Makar नेप्चू मकर				PLUTO Vrischik प्लूटो वृश्चिक				M RAHU Simha मध्यम राहु सिंह				T RAHU स्पष्ट राहु
ति	रा	अं०	क'	वि''	रा	अं०	क'	वि''	रा	अं०	क'	वि''	अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं० क' वि''
1	6	27	53	57	7	7	37	20	9	18	21	17	23	48	12		10	59	14		3	22	26		9	38	31		24	46	24		25 56 32
2	6	29	1	54	7	8	19	26	9	18	19	56	23	43	33		10	58	35		3	22	11		9	40	3		24	43	13		25 56 26
3	7	0	9	45	7	9	1	39	9	18	18	48	23	38	53		10	57	59		3	21	58		9	41	38		24	40	2		25 53 14
4	7	1	17	27	7	9	43	57	9	18	17	51	23	34	12		10	57	27		3	21	47		9	43	14		24	36	52		25 50 8
5	7	2	25	2	7	10	26	20	9	18	17	7	23	29	29		10	56	57		3	21	37		9	44	51		24	33	41		25 47 8
6	7	3	32	29	7	11	8	48	9	18	16	34	23	24	46		10	56	30		3	21	30		9	46	30		24	30	30		25 43 20
7	7	4	39	48	7	11	51	22	9	18	16	14	23	20	3		10	56	6		3	21	24		9	48	11		24	27	19		25 39 56
8	7	5	46	59	7	12	34	0	9	18	16	5	23	15	19		10	55	45		3	21	21		9	49	53		24	24	9		25 36 38
9	7	6	54	0	7	13	16	44	9	18	16	9	23	10	34		10	55	27		3	21	20		9	51	36		24	20	58		25 35 32
10	7	8	0	53	7	13	59	33	9	18	16	24	23	5	50		10	55	12		3	21	20		9	53	21		24	17	47		25 36 26
11	7	9	7	36	7	14	42	27	9	18	16	52	23	1	5		10	54	60		3	21	23		9	55	7		24	14	36		25 37 2
12	7	10	14	10	7	15	25	26	9	18	17	31	22	56	21		10	54	51		3	21	28		9	56	55		24	11	26		25 39 14
13	7	11	20	33	7	16	8	30	9	18	18	22	22	51	37		10	54	45		3	21	34		9	58	44		24	8	15		25 39 44
14	7	12	26	46	7	16	51	38	9	18	19	26	22	46	53		10	54	42		3	21	43		10	0	34		24	5	4		25 40 38
15	7	13	32	49	7	17	34	51	9	18	20	41	22	42	10		10	54	42		3	21	54		10	2	26		24	1	53		25 39 56
16	7	14	38	41	7	18	18	9	9	18	22	7	22	37	28		10	54	45		3	22	6		10	4	18		23	58	42		25 36 50
17	7	15	44	21	7	19	1	32	9	18	23	46	22	32	46		10	54	51		3	22	21		10	6	12		23	55	32		25 32 44
18	7	16	49	50	7	19	44	59	9	18	25	37	22	28	6		10	55	1		3	22	38		10	8	7		23	52	21		25 27 56
19	7	17	55	7	7	20	28	31	9	18	27	39	22	23	27		10	55	13		3	22	57		10	10	4		23	49	10		25 21 56
20	7	19	0	11	7	21	12	8	9	18	29	52	22	18	49		10	55	28		3	23	17		10	12	2		23	45	59		25 16 44
21	7	20	5	3	7	21	55	49	9	18	32	18	22	14	13		10	55	46		3	23	40		10	14	1		23	42	49		25 13 26
22	7	21	9	43	7	22	39	35	9	18	34	55	22	9	39		10	56	8		3	24	5		10	16	1		23	39	38		25 9 50
23	7	22	14	9	7	23	23	26	9	18	37	44	22	5	6		10	56	33		3	24	32		10	18	2		23	36	27		25 9 14
24	7	23	18	22	7	24	7	21	9	18	40	44	22	0	35		10	57	0		3	25	1		10	20	4		23	33	16		25 9 20
25	7	24	22	20	7	24	51	21	9	18	43	55	21	56	7		10	57	31		3	25	32		10	22	8		23	30	5		25 10 38
26	7	25	26	4	7	25	35	25	9	18	47	18	21	51	40		10	58	5		3	26	4		10	24	12		23	26	55		25 11 38
27	7	26	29	33	7	26	19	34	9	18	50	52	21	47	16		10	58	41		3	26	39		10	26	18		23	23	44		25 13 14
28	7	27	32	47	7	27	3	47	9	18	54	37	21	42	54		10	59	21		3	27	16		10	28	24		23	20	33		25 12 32
29	7	28	35	45	7	27	48	5	9	18	58	34	21	38	36		11	0	4		3	27	55		10	30	31		23	17	22		25 11 2
30	7	29	38	26	7	28	32	28	9	19	2	41	21	34	20		11	0	50		3	28	36		10	32	40		23	14	12		25 6 14
31	8	0	40	51	7	29	16	54	9	19	7	0	21	30	7		11	1	39		3	29	18		10	34	49		23	11	1		24 58 38

नवम्बर 1997,शक 1919, वि.सं.2054, कार्तिक शुक्ल 1 से मार्गशीर्ष कृ.30 तक,दक्षिनायण,दक्षिण गोल,हेमन्त ऋतु

(का.शुक्ल पक्ष)		तिथि			आदि समा.			काल भा. स्टै.टा.						शकसौर	
ता.	वार	ति	घं	मि	नक्ष	घं	मि	यो	घं	मि	कर	घं	मि	का	का
विक्रम संवत् २०५४ कार्तिक शुक्ल पक्ष															
१श	प्र		१६	५१	वि	२८	३२	आ	१२	२४	बव	१६	५१	१०	१६
२रवि	द्वि		१७	४५	अनु	-	-	सौ	१२	३	कौ	१७	४५	११	१७
३सो	तृ		१८	१३	अनु	५	४७	शो	११	२२	गर	१८	१३	१२	१८
४मंग	चतु		१८	१६	ज्ये	६	३८	अति	१०	२२	वि	१८	१६	१३	१६
५बुध	पंच		१७	५४	मूल	७	५	सुक	६	२	बा	१७	५४	१४	२०
६गुरु	ष		१७	८	पूष	७	६	धृ	७	२३	तै	१७	८	१५	२१
'''			..	..	..	..	..	शूल	२६	२५	..	..	..	''	''
७शु	स		१५	५८	उष	६	४८	गड	२७	८	व	१५	५८	१६	२२
८श	अ		१४	२३	श्रव	६	३	वृ	२४	३१	बव	१४	२३	१७	२३
'''			..	..	..	धनि	२८	५५	..	..	..	..	..	''	''
९रवि	नव		१२	२४	शत	२७	२४	ध्रु	२१	३५	कौ	१२	२४	१८	२४
१०सो	दश		१०	३	पूभा	२५	३३	व्या	१८	२२	गर	१०	३	१९	२५
११मंग	एक		७	२४	उभा	२३	२६	हर्ष	१४	५५	वि	७	२४	२०	२६
'''	द्वा		२८	३१	..	..	..	..	..	..	..	..	..	''	''
१२बुध	त्रय		२५	३०	रेव	२१	११	वज्र	११	१६	कौ	१५	२	२१	२७
१३गुरु	चतु		२२	३१	अश	१८	५६	सि	७	४०	गर	१२	१	२२	२८
'''			..	..	..	..	..	व्य	२८	३	..	..	..	''	''
१४शु	पू		१६	४२	भर	१६	४८	वरी	२४	३६	वि	६	६	२३	२९
विक्रम संवत् २०५४ मार्गशीर्ष (मुख्य कार्त्तिक) कृष्ण पक्ष															
१५श	प्र		१७	१२	कृ	१४	५६	परि	२१	२७	कौ	१७	१२	२४	३०
१६रवि	द्वि		१५	१२	रो	१३	३८	शि	१८	४३	गर	१५	१२	२५	मा
१७सो	तृ		१३	५१	मृ	१२	५५	सि	१६	३१	वि	१३	५१	२६	२
१८मंग	चतु		१३	१५	आ	१२	५५	सा	१४	५५	बा	१३	१५	२७	३
१९बुध	पंच		१३	२६	पुन	१३	४४	शुभ	१३	५८	तै	१३	२६	२८	४
२०गुरु	ष		१४	३२	पुष्य	१५	२१	शुक्र	१३	३६	व	१४	३२	२९	५
२१शु	स		१६	२१	श्ले	१७	४०	ब्रह्म	१३	५३	बव	१६	२१	३०	६
२२श	अ		१८	४२	मघा	२०	३०	ऐंद्र	१४	३४	कौ	१८	४२	मा	७
२३रवि	नव		२१	२३	पूफ	२३	३८	वै	१५	३०	तै	८	२	२	८
२४सो	दश		२४	७	उफ	२६	४६	वि	१६	३१	व	१०	४६	३	९
२५मंग	एक		२६	३८	हस्त	-	-	प्री	१७	२६	बव	१३	२४	४	१०
२६बुध	द्वा		२८	४४	हस्त	५	४१	आ	१८	४	कौ	१५	४५	५	११
२७गुरु	त्र		-	-	चि	८	११	सौ	१८	२१	गर	१७	३६	६	१२
२८शु	त्र		६	१८	स्वा	१०	११	शो	१८	१२	वि	१८	४८	७	१३
२९श	चतु		७	१८	वि	११	३७	अति	१७	३७	शकु	७	१८	८	१४
३०रवि	अम		७	४४	अनु	१२	३२	सुक	१६	३७	ना	७	४४	९	१५

तिथि	व्रत-पर्व-त्योहार आदि (भा. स्टै. टा. में)
१	जुलियन अहगर्ण : २४५०७५४; कलि अहर्गण : १८६२२८८; स्फुट परमाक्रान्ति २३अं २६क १३वि; यूनन संस्कार स्पष्ट-५.५वि; अयनांश :२३-४६-३१
१	कार्तिक शुक्लादि (गजरात आदि)
२	भाई दूज; यमद्वितीया; विश्वकर्मा दिवस
३	ख्वाजा मईउद्दीन चिष्ती दिवस - अजमेर
६	छठ (बिहार); सूर्य षष्ठी
८	गोपाष्टमी; गोष्ठाष्टमी
९	जगधात्री पूजा; अक्षय व कूष्माण्ड नवमी
११	देव प्रबोधिनी (उठावनी) एकादशी; चातुर्मास्य समाप्त; भीष्म पंचक प्रारम्भ; तुलसी विवाह
१३	वैकुण्ठ चतुर्दशी; चौमासी चौदस (जैन); काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठान दिवस
१४	बाल दिवस;नेहरू जयन्ती;अन्नाभिषेकम् (द.भा.); कार्तिक पूर्णिमा; पुष्कर यात्रा; कार्तिक स्नान पूर्ति; गुरुनानक जयन्ती;रसयात्रा; भीष्म पंचक समाप्त; त्रिपुरोत्सव; हज़रत अली जन्मदिवस (मु.)
१६	९-२५ सूर्य की अवैदिक निरयण वृश्चिक संक्रान्ति
१७	लाला लाजपतराय पुण्यतिथि
२२	१२-१८ सूर्य की सायन (वास्तविक वैदिक) धनुः संक्रान्ति; वास्तविक वैदिक धनुर्मास प्रारम्भ; वैदिक मास साहस प्रारम्भ; कालभैरव जयन्ती; प्रथमाष्टमी (उड़ीसा); रा. मार्गशीर्ष प्रा.
२५	उत्पन्न एकादशी; लाला लाजपतराय जयन्ती
२६	शबे मिराज (मु)
३०	दीपावली अमावस्या (उडीसा)

स्थानीय समय में दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.

अं.	स्पष्ट मध्यान्ह			में सूर्योदय			व सूर्यास्त		
ति	घं	मि	से	घं	मि	से	घं	मि	से
२	११	४३	३५	६	३७	३८	१७	३१	२७
४	११	४३	३५	६	३६	६	१७	३०	०
६	११	४३	३८	६	४०	४२	१७	२८	३२
८	११	४३	४६	६	४२	१२	१७	२७	१७
१०	११	४३	५६	६	४३	४३	१७	२६	४
१२	११	४४	८	६	४५	१५	१७	२५	०
१४	११	४४	२५	६	४६	५०	१७	२४	०
१६	११	४४	४५	६	४८	२७	१७	२३	३
१८	११	४५	८	६	५०	३	१७	२२	१४
२०	११	४५	३५	६	५१	४३	१७	२१	३१
२२	११	४६	५	६	५३	१६	१७	२०	५५
२४	११	४६	३८	६	५४	५६	१७	२०	२४
२६	११	४७	१५	६	५६	३२	१७	२०	५
२८	११	४७	५४	६	५८	६	१७	१६	५०
३०	११	४८	३७	६	५६	४१	१७	१६	४१

वैदिक सायन राशि चार			
ति	घं	मि	ग्रह राशि
५	१४	२०	शुक्र मक
७	२३	१२	बुध धनु
७	१३	३	मंग मकर
२२	१२	१८	सूर्य धनु
३०	२४	४५	बुध मकर

वैदिक सायन चन्द्र चार			
२	६	५६	धनु
४	१८	१	मकर
७	०	३	कुम्भ
६	४	४	मीन
११	६	१३	मेष
१३	७	१५	वृषभ
१५	८	३५	मिथुन
१७	१२	३	कर्क
१९	१६	८	सिंह
२२	६	३	कन्या
२४	१८	५६	तुला
२७	७	१३	वृश्चिक
२९	१६	५८	धनु

निरयण चन्द्र चार			
ति	घं	मि	राशि
१	२२	६	वृश्चि
४	६	३८	धनु
६	१३	६	मकर
८	१७	३२	कुम्भ
१०	२०	२	मीन
१२	२१	११	मेष
१४	२२	२०	वृषभ
१७	१	११	मिथु
१९	७	२७	कर्क
२१	१७	४०	सिंह
२४	६	२५	कन्या
२६	१८	५६	तुला
२९	५	१६	वृश्चि
वक्री/मार्गी			
-	-	-	--

ग्रहो का अवैदिक निरयण चार				
ति	घं	मि	ग्रह	राशि
१	४	४३	मंगल	धनु
३	२०	२६	बुध	वृश्चि
१६	६	२५	सूर्य	वृश्चि
२५	४	३६	बुध	धनु

अवैदिक नक्षत्र चार				
१	४	४३	मंगल	मूल
६	१	३१	बुध	अनु
६	१०	३६	सूर्य	विश
१२	२१	५	शुक्र	पूषा
१५	४	२४	बुध	ज्ये
१८	२२	१८	मंगल	पूषा
१९	१६	४६	सूर्य	अनु
२५	४	३६	बुध	मूल
२८	०	२२	शुक्र	उषा

सरकारी अयनांश
२:२३.४६.३१; ८:२३.४६.३२
१६:२३.४६.३३; २२:.४६.३४

अवैदिक निरयण चन्द्र स्थितियां आदि;भा.मा. स.
३.२०.१७: अधिकतम शर ५उ६; ४.२३.४८:
अधिकतम क्रा. १८द२८;१०.१०.१८:शून्य उ शर;
११.११.१७: शून्य उ क्रान्ति;१२.१३.३२: चन्द्र अति निकट; १४.१६.४२: पूर्णिमान्त चन्द्र स्पष्टः ०.२८.२५; १६.१३.४५: अधिकतम शर ५द३; १७.१८.२: अधिकतम क्रान्ति १८उ३३; २३.१६.०: शून्य द शर; २४.८.०:चन्द्र निकटतम; २५.१.४७: शून्य द क्रान्ति; ३०.७.४४: अमान्त चन्द्र स्पष्टः ७.१४.४; ३०.२२.१६: अधिकतम शर ५उ०

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT म.रा.सा.का			SUN सूर्य - रवि				DEC. क्रान्ति		GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र				LAT. शर		DEC. क्रान्ति		DELHI MOO दिल्ली चन्द्र				LAT. शर		DEC. क्रान्ति		MERCURY बुध			
		Hr	m	se	Si	d	m	se	d	m	Si	d	m	se	d	m	d	m	Si	d	m	se	d	m	d	m	Si	d	m	se
ति	वार	घं	मि	से	रा	अं	क	वि	अं	क	रा	अं	क	वि	अं	क	अं	क	रा	अं	क	वि	अं०	क'	अं०	क'	रा	अं	क	वि
1	Sa	2	40	23	6	14	46	29	14	22	6	21	22	13	4N	16	12S	18	6	22	13	8	4N	8	12S	41	6	26	0	10
2	Su	2	44	19	6	15	46	32	14	41	7	3	50	37	4	46	14	59	7	4	36	49	4	37	15	19	6	27	32	0
3	Mo	2	48	16	6	16	46	37	15	0	7	16	30	49	5	3	16	60	7	17	10	16	4	53	17	16	6	29	3	24
4	Tu	2	52	12	6	17	46	44	15	18	7	29	23	3	5	5	18	11	7	29	53	50	4	54	18	24	7	0	34	21
5	We	2	56	9	6	18	46	53	15	37	8	12	27	34	4	51	18	27	8	12	48	3	4	39	18	38	7	2	4	52
6	Th	3	0	6	6	19	47	3	15	55	8	25	44	50	4	21	17	42	8	25	53	44	4	9	17	53	7	3	34	56
7	Fr	3	4	2	6	20	47	15	16	13	9	9	15	36	3	37	15	57	9	9	12	6	3	25	16	10	7	5	4	34
8	Sa	3	7	59	6	21	47	28	16	30	9	23	0	41	2	39	13	16	9	22	44	31	2	28	13	31	7	6	33	46
9	Su	3	11	55	6	22	47	43	16	48	10	7	0	45	1	30	9	46	10	6	32	15	1	20	10	6	7	8	2	29
10	Mo	3	15	52	6	23	47	59	17	5	10	21	15	40	0	15	5	38	10	20	35	57	0	6	6	2	7	9	30	45
11	Tu	3	19	48	6	24	48	17	17	22	11	5	44	1	1S	2	1	7	11	4	54	57	1S	11	1	35	7	10	58	30
12	We	3	23	45	6	25	48	36	17	38	11	20	22	34	2	15	3N	31	11	19	26	50	2	25	3N	1	7	12	25	44
13	Th	3	27	41	6	26	48	56	17	54	0	5	6	4	3	20	7	58	0	4	6	59	3	30	7	28	7	13	52	24
14	Fr	3	31	38	6	27	49	18	18	10	0	19	47	40	4	12	11	55	0	18	48	53	4	23	11	27	7	15	18	29
15	Sa	3	35	34	6	28	49	42	18	26	1	4	19	42	4	46	15	6	1	3	24	49	4	59	14	42	7	16	43	54
16	Su	3	39	31	6	29	50	7	18	41	1	18	34	58	5	2	17	17	1	17	47	6	5	16	16	58	7	18	8	38
17	Mo	3	43	28	7	0	50	34	18	56	2	2	27	59	4	59	18	24	2	1	49	26	5	14	18	8	7	19	32	36
18	Tu	3	47	24	7	1	51	3	19	10	2	15	55	37	4	40	18	26	2	15	27	50	4	55	18	13	7	20	55	41
19	We	3	51	21	7	2	51	33	19	24	2	28	57	22	4	6	17	28	2	28	40	59	4	21	17	16	7	22	17	50
20	Th	3	55	17	7	3	52	6	19	38	3	11	35	5	3	21	15	39	3	11	30	6	3	36	15	27	7	23	38	55
21	Fr	3	59	14	7	4	52	39	19	52	3	23	52	25	2	28	13	10	3	23	58	25	2	42	12	56	7	24	58	47
22	Sa	4	3	10	7	5	53	15	20	5	4	5	54	11	1	29	10	10	4	6	10	27	1	42	9	53	7	26	17	18
23	Su	4	7	7	7	6	53	52	20	18	4	17	45	49	0	28	6	48	4	18	11	28	0	40	6	27	7	27	34	16
24	Mo	4	11	3	7	7	54	32	20	30	4	29	32	56	0N	35	3	10	5	0	6	55	0N	24	2	46	7	28	49	29
25	Tu	4	15	0	7	8	55	12	20	42	5	11	20	54	1	36	0S	35	5	12	2	3	1	25	1S	2	8	0	2	42
26	We	4	18	57	7	9	55	55	20	54	5	23	14	37	2	34	4	21	5	24	1	34	2	22	4	49	8	1	13	38
27	Th	4	22	53	7	10	56	39	21	5	6	5	18	10	3	25	7	58	6	6	9	21	3	13	8	27	8	2	21	58
28	Fr	4	26	50	7	11	57	24	21	16	6	17	34	37	4	7	11	20	6	18	28	12	3	55	11	48	8	3	27	18
29	Sa	4	30	46	7	12	58	11	21	26	7	0	5	52	4	38	14	15	7	0	59	44	4	25	14	41	8	4	29	15
30	Su	4	34	43	7	13	58	59	21	36	7	12	52	32	4N	56	16S	33	7	13	44	23	4N	42	16S	57	8	5	27	17
31	Mo	4	38	39	7	14	59	49	21	46	7	25	54	6	4N	60	18S	4	7	26	41	30	4N	43	18S	23	8	6	20	52

Dt	VENUS				MARS				JUPITER				SATUR				URANU				NEPTU				PLUTO				M RAHU				T RAHU			
	Si	d	m	se	Si	d	m	se	Makar				Mina				Makar				Makar				Vrischik				Simha				स्पष्ट राहु			
	शुक्र				मंगल				गुरु मकर में				शनि मीन				हर्शल मकर				नेप्चू मकर				प्लूटो वृश्चिक				मध्यम राहु				सिंह			
ति	रा	अं०	क'	वि''	रा	अं०	क'	वि''	रा	अं०	क'	वि''	अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''		अं०	क'	वि''	
1	8	1	42	57	8	0	1	25	9	19	11	30	21	25	57		11	2	31		3	30	3		10	36	58		23	7	50		24	50	54	
2	8	2	44	45	8	0	46	1	9	19	16	11	21	21	51		11	3	26		3	30	50		10	39	9		23	4	39		24	41	18	
3	8	3	46	13	8	1	30	40	9	19	21	2	21	17	47		11	4	24		3	31	38		10	41	21		23	1	29		24	31	12	
4	8	4	47	22	8	2	15	24	9	19	26	5	21	13	48		11	5	25		3	32	29		10	43	33		22	58	18		24	22	26	
5	8	5	48	10	8	3	0	11	9	19	31	18	21	9	52		11	6	29		3	33	22		10	45	47		22	55	7		24	14	42	
6	8	6	48	36	8	3	45	3	9	19	36	41	21	6	0		11	7	36		3	34	16		10	48	0		22	51	56		24	9	30	
7	8	7	48	39	8	4	29	58	9	19	42	15	21	2	12		11	8	46		3	35	12		10	50	15		22	48	45		24	8	0	
8	8	8	48	18	8	5	14	57	9	19	47	59	20	58	29		11	9	59		3	36	11		10	52	30		22	45	35		24	6	42	
9	8	9	47	33	8	5	59	60	9	19	53	54	20	54	49		11	11	15		3	37	11		10	54	46		22	42	24		24	7	54	
10	8	10	46	23	8	6	45	6	9	19	59	59	20	51	14		11	12	34		3	38	13		10	57	2		22	39	13		24	9	6	
11	8	11	44	46	8	7	30	16	9	20	6	13	20	47	43		11	13	56		3	39	17		10	59	19		22	36	2		24	8	24	
12	8	12	42	41	8	8	15	30	9	20	12	38	20	44	17		11	15	21		3	40	23		11	1	37		22	32	52		24	5	6	
13	8	13	40	8	8	9	0	47	9	20	19	12	20	40	55		11	16	48		3	41	30		11	3	55		22	29	41		23	59	48	
14	8	14	37	4	8	9	46	7	9	20	25	56	20	37	38		11	18	18		3	42	40		11	6	14		22	26	30		23	52	24	
15	8	15	33	30	8	10	31	31	9	20	32	49	20	34	26		11	19	51		3	43	51		11	8	32		22	23	19		23	40	54	
16	8	16	29	24	8	11	16	58	9	20	39	52	20	31	19		11	21	27		3	45	3		11	10	52		22	20	9		23	30	0	
17	8	17	24	44	8	12	2	29	9	20	47	5	20	28	17		11	23	6		3	46	18		11	13	12		22	16	58		23	20	12	
18	8	18	19	30	8	12	48	3	9	20	54	26	20	25	20		11	24	47		3	47	34		11	15	32		22	13	47		23	10	18	
19	8	19	13	40	8	13	33	40	9	21	1	57	20	22	28		11	26	31		3	48	52		11	17	52		22	10	36		23	3	0	
20	8	20	7	12	8	14	19	21	9	21	9	37	20	19	42		11	28	18		3	50	12		11	20	13		22	7	25		22	58	6	
21	8	21	0	6	8	15	5	5	9	21	17	26	20	17	0		11	30	8		3	51	34		11	22	34		22	4	15		22	55	42	
22	8	21	52	20	8	15	50	52	9	21	25	23	20	14	25		11	31	60		3	52	57		11	24	55		22	1	4		22	54	42	
23	8	22	43	53	8	16	36	42	9	21	33	30	20	11	55		11	33	55		3	54	22		11	27	16		21	57	53		22	56	18	
24	8	23	34	42	8	17	22	36	9	21	41	45	20	9	30		11	35	52		3	55	48		11	29	38		21	54	42		22	55	18	
25	8	24	24	46	8	18	8	33	9	21	50	9	20	7	11		11	37	52		3	57	16		11	31	59		21	51	32		22	53	42	
26	8	25	14	3	8	18	54	33	9	21	58	41	20	4	58		11	39	55		3	58	46		11	34	21		21	48	21		22	50	18	
27	8	26	2	32	8	19	40	36	9	22	7	22	20	2	51		11	41	60		4	0	17		11	36	43		21	45	10		22	43	6	
28	8	26	50	10	8	20	26	42	9	22	16	11	20	0	50		11	44	8		4	1	50		11	39	5		21	41	59		22	34	0	
29	8	27	36	55	8	21	12	51	9	22	25	9	19	58	55		11	46	18		4	3	24		11	41	27		21	38	49		22	22	6	
30	8	28	22	45	8	21	59	3	9	22	34	14	19	57	6		11	48	31		4	5	0		11	43	49		21	35	38		22	9	18	
31	8	29	7	38	8	22	45	18	9	22	43	28	19	55	23		11	50	46		4	6	38		11	46	8		21	32	27		21	54	55	

दिसंबर 1997, शक 1919, वि. 2054, मार्गशीर्ष शुक्ल 1 से पौष शु. 2 तक, दक्षिनायण, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु

(मा. शुक्ल पक्ष)तिथि आदि समा. काल भा.स्टै.टा. शक सौर

ता	वार	ति	घं	मि	नक्ष	घं	मि	यो	घं	मि	कर	घं	मि	मा	मा
१सो	प्र		७	४०	ज्ये	१२	५८	धृ	१५	१५	बव	७	४०	१०	१६
२मग	द्वि		७	१०	मूल	१३	०	शूल	१३	३४	कौ	७	१०	११	१७
३बुध	तृ		६	२०	पूष	१२	४३	गंड	११	३७	व	१७	४६	१२	१८
'''		चतु	२६	१२	..	..	..	..	..	..				''	''
४गुरु	पच		२७	५१	उष	१२	१०	वृ	६	२८	बव	१६	३४	१३	१९
५शु	ष		२६	१६	श्रव	११	२५	धु	७	६	कौ	१५	७	१४	२०
'''		..	..	..	..	..	..	व्या	२८	४०	..	..	..	''	''
६श	स		२४	३५	ध	१०	२८	हर्ष	२६	३	गर	१३	२६	१५	२१
७रवि	अ		२२	४१	शत	६	२१	वज्र	२३	१७	वि	११	४०	१६	२२
८सो	नव		२०	३८	पूभ	८	५	सि	२०	२४	बा	६	४१	१७	२३
९मग	दश		१८	२७	उभा	६	३६	व्य	१७	२५	तै	७	३४	१८	२४
'''		..	..	..	रेव	२६	७	..	..	..	..	..	..	''	''
१०बुध	एक		१६	११	अश	२७	३२	वरी	१४	२१	वि	१६	११	१६	२५
११गुरु	द्वा		१३	५५	भर	२५	५६	परि	११	१७	बा	१३	५५	२०	२६
१२शु	त्रय		११	४४	कृ	२४	३६	शिव	८	१६	तै	११	४४	२१	२७
'''		..	..	..	..	..	..	सि	२६	२५	..	..	..	''	''
१३श	चतु		६	४५	रो	२३	२६	सा	२६	४८	व	६	४५	२२	२८
१४रवि	पू		८	७	मृ	२२	४७	शुभ	२४	३३	बव	८	७	२३	२९
विक्रम सवत् २०५४ पौष (मुख्य मार्गशीर्ष) कृष्ण पक्ष															
१५सो	प्र		६	५८	आ	२२	३६	शुक्र	२२	४५	तै	१८	४२	२४	पौ
१६मग	द्वि		६	२५	पुन	२३	६	ब्रह्म	२१	२८	व	१८	३०	२५	२
१७बुध	तृ		६	३४	पु	२४	२२	ऐंद्र	२०	४५	बव	१६	०	२६	३
१८गुरु	चतु		७	२७	श्ले	२६	१७	वैधृ	२०	३५	बा	७	२७	२७	४
१९शु	पच		६	४	मघ	२८	४८	वि	२०	५५	तै	६	४	२८	५
२०श	ष		११	१६	पूफ	-	-	प्री	२१	३८	व	११	१६	२९	६
२१रवि	स		१३	५१	पूफ	७	४५	आ	२२	३४	बव	१३	५१	३०	७
२२सो	अ		१६	३५	उफ	१०	५२	सौ	२३	३२	कौ	१६	३५	पौ	८
२३मग	नव		१६	६	ह	१३	५४	शो	२४	२०	गर	१६	६	२	९
२४बुध	दश		२१	१६	चि	१६	३६	अति	२४	४७	व	८	१८	३	१०
२५गुरु	एक		२२	५३	स्वा	१८	४६	सुक	२४	४८	बव	१०	११	४	११
२६शु	द्वा		२३	४६	वि	२०	१७	धृ	२४	१७	कौ	११	२६	५	१२
२७श	त्रय		२३	५७	अनु	२१	७	शूल	२३	१३	गर	११	५७	६	१३
२८रवि	चतु		२३	२६	ज्ये	२१	१८	गंड	२१	३६	वि	११	४८	७	१४
२९सो	अम		२२	२७	मूल	२०	५६	वृ	१६	३६	चतु	११	२	८	१५
विक्रम सवत् २०५४ पौष शुक्ल पक्ष															
३०मग	प्र		२०	५८	पूष	२०	८	धुव	१७	१७	कि	६	४६	६	१६
३१बुध	द्वि		१६	१०	उष	१६	१	व्या	१४	३८	बा	८	७	१०	१७

ति	व्रत-पर्व-त्योहार आदि (भा. स्टै. टा. में)
१	जुलियन अहगर्ण : २४५०७८४; कलि अहर्गण : १८६२३१८;स्फुट परमाक्रान्ति २३अं २६क १३वि; धूनन संस्कार स्पष्ट -५.५ वि;अयनांश:२३-४६-३५
४	गुरु तेगबहादुर शहीदी दिवस; द्वितीय नाग ५
१०	मोक्षदा ११; वैकुण्ठ ११; गीता जयन्ती
११	मत्स्य द्वाशी; अखण्ड द्वादशी
१३	दत्तातरेय ज.;दत्त ज.;पिशाच मोचन श्राद्ध
१६	०-३सूर्य की अवैदिक धनुः सं.व धनुर्मास;शबेबारात
२२	१-३७ सूर्य की सायन शास्त्रसम्मत वैदिक मकर संक्रान्ति; धार्मिक कार्यो में ग्राह्य वैदिक शिशिर, तिल संक्रान्ति व पोंगल/तई पोंगल आज ही है; उत्तरायण दिवस;वेदव्यासकृत महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय १२६ के अनुसार भीष्मपितामह जिस उत्तरायण की प्रतीक्षा में थे वही उत्तरायण दिवस आज है।कुछ विदेशी चालू"वैदिक ज्योतिषी"अपना उल्लू सीधा करने के लिए यह सिद्ध करना चाहते हैं कि भीष्म ने किसी "रमण"या 'लाहिरी' निरयण संक्रान्ति/उत्तरायण दिवस में प्राण-त्याग किया था परन्तु वह हमें केवल उल्लू बनारहे हैं और भारत के कुछ तथाकथित "वैदिक ज्योतिषी" भी उनकी हाँ में हाँ मिला रहे हैं केवल इसलिए कि उनको विदेशों में घूमने का अवसर मिले; वर्ष का सबसे छोटा दिन आज ही है और यही वास्तविक मकर संक्रान्ति का लक्षण है;सूर्य की अधिकतक दक्षिण क्रान्ति; वैदिक मास तापस व शिशिर ऋतु प्रा.; वास्तविक सायन माघ बिहू; रा. पौष प्रा.
२५	किस्मस दिवस (बड़ा दिन)। २६:जोरमेला ३ दिन
२९	सोमवती वकुल व यक्ष अमावस्या

स्थानीय समय में दिल्ली का भा. स्टै. टाइ.

अं.	स्पष्ट मध्यान्ह			में सूर्योदय			व सूर्यास्त		
ति	घं	मि	से	घं	मि	से	घं	मि	से
२	११	४६	२२	७	१	१५	१७	१६	३४
४	११	५०	१०	७	२	४६	१७	१६	४०
६	११	५१	०	७	४	४५	१७	१६	५१
८	११	५१	५०	७	५	४५	१७	२०	६
१०	११	५२	४४	७	७	१०	१७	२०	३२
१२	११	५३	४०	७	८	३०	१७	२१	२
१४	११	५४	३५	७	६	४६	१७	२१	३७
१६	११	५५	३३	७	११	१	१७	२२	१८
१८	११	५६	३२	७	१२	१२	१७	२३	६
२०	११	५७	३१	७	१३	२०	१७	२३	५४
२२	११	५८	३०	७	१४	२६	१७	२४	५६
२४	११	५६	३०	७	१५	२०	१७	२६	०
२६	१२	०	३०	७	१६	१५	१७	२७	६
२८	१२	१	२६	७	१६	५४	१७	२८	२३
३०	१२	२	३५	७	१७	३६	१७	२९	४०
३२	१२	३	२७	७	१८	१२	१७	३१	१

वैदिक सायन राशि चार			
ति	घं	मि	ग्रह राशि
१२	१०	११	शुक्र कु
१३	२३	३०	व बु धनु
१८	१२	७	मंगल कु
२२	१	३७	सू मकर

वैदिक सायन चन्द्र चार			
२	०	८	मकर
४	५	२८	कुम्भ
६	६	३७	मीन
८	१२	५३	मेष
१०	१५	३०	वृषभ
१२	१८	५	मिथुन
१४	२१	५६	कर्क
१७	४	२८	सिंह
१९	७	३०	कन्या
२२	३	५	तुला
२४	५५	३७	वृश्चिक
२७	१	३६	धनु
२९	८	१८	मकर
३१	१२	२८	कुम्भ

निरयण चन्द्र चार			
ति	घं	मि	राशि
१	१२	५७	धनु
३	१८	३६	मकर
५	२२	५८	कुम
८	२	२४	मीन
१०	५	७	मेष
१२	७	३८	वृष
१४	११	५	मिथु
१६	१६	५७	कर्क
१९	२	१६	सिंह
२१	१४	३०	कन्या
२४	३	१८	तुला
२६	१३	५७	वृश्चि
२८	२१	१८	धनु
३१	१	५३	मकर

प्रहो का अवैदिक निरयण चार				
ति	घं	मि	ग्रह	राशि
२	१०	१५	शुक्र	मकर
१०	१४	२	मंगल	मकर
३	०	३	सूर्य	धनु
१६	०	३	व बुध	ही वृश्चि

अवैदिक नक्षत्र चार					
२	२१	१	सूर्य	ज्ये	
५	१	२६	गुरु	धनि	
६	६	५७	मंगल	उषा	
१६	०	३	सूर्य	मूल	
१८	१७	६	बुध	व ज्ये	
२३	६	३०	मंगल	श्रवण	
२४	२०	७	शुक्र	श्रवण	
२६	२	१६	सूर्य	पूषा	
२६	६	४६	शुक्र	व उषा	

वक्री/मार्गी								
७	२२	२५	बु व	१६	१५	५७	श मा	
२७	२	५०	शु व	२७	१७	६	बु मा	

सरकारी अयनांश
१:२३.४६.३५; ५:२३.४६.३६; १३:२३.४६.३७
१७:२३.४६.३८; २५:२३.४६.३६; ३०:२३.४६.४०

अवैदक निरध्ण चन्द्र स्थितिया; भा. मा. स.

२.६.५०:अधिकतम क्रान्ति १८द३८; ७.११.३२:

शून्य उ शर; ८.१६.१३:शू. द क्रा.; ६.२२.३३चन्द्र निकटतम;१३.१८.४६:अधि. शर ५द०;१४.८.७:पूणिमान्त चन्द्रः१.२८.१८;१५.५.७:अधि.क्रा १८उ४०;२०.१७.४८:शू.द शर;२२.४.५४: चन्द्र अति दूर;२२.११.२७शू. द क्रा.;२८.१.४४अधि. शर ५उ३;२६.१६.११:अधि. द क्रा. १८द४०;२६.२२.२७:अमान्त चन्द्रः८.१४.११

APPAPRENT SIDEREAL (NON-VEDIC) GEOCENTRIC PLANETS & DELHI MOON AT 5-30 AM

भूकेन्द्रीय अवैदिक निरयण ग्रह व चन्द्रस्पष्ट तथा दिल्ली का चन्द्रस्पष्ट आदि प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम में

Dt	Dy	ST-0LMT म.रा.सा.का Hr घं	m मि	se से	SUN सूर्य - रवि Si रा	d अं	m क	se वि	DEC. क्रान्ति d अं	m क	GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र Si रा	d अं	m क	se वि	LAT. शर d अं	m क	DEC. क्रान्ति d अं	m क	DELHI MOO दिल्ली चन्द्र Si रा	d अं	m क	se वि	LAT. शर d अं.०	m क'	DEC. क्रान्ति d अं.०	m क'	MERCURY बुध Si रा	d अं	m क	se वि
1	Mo	4	38	39	7	14	59	49	21S	46	7	25	54	6	4N	60	18S	4	7	26	41	30	4N	43	18S	23	8	6	20	52
2	Tu	4	42	36	7	16	0	39	21	55	8	9	9	6	4	47	18	38	8	9	49	43	4	30	18	54	8	7	9	23
3	We	4	46	32	7	17	1	30	22	4	8	22	35	38	4	18	18	10	8	23	7	19	3	60	18	24	8	7	52	9
4	Th	4	50	29	7	18	2	23	22	12	9	6	11	44	3	34	16	39	9	6	32	44	3	16	16	53	8	8	28	25
5	Fr	4	54	26	7	19	3	16	22	20	9	19	55	52	2	38	14	11	9	20	4	57	2	20	14	25	8	8	57	23
6	Sa	4	58	22	7	20	4	10	22	27	10	3	47	3	1	31	10	53	10	3	43	34	1	14	11	10	8	9	18	14
7	Su	5	2	19	7	21	5	5	22	35	10	17	44	50	0	19	6	56	10	17	28	48	0	2	7	18	8	9	30	5
8	Mo	5	6	15	7	22	6	1	22	41	11	1	49	1	0S	56	2	35	11	1	21	4	1S	11	3	1	8	9	32	8
9	Tu	5	10	12	7	23	6	57	22	47	11	15	59	3	2	2	1N	57	11	15	20	33	2	22	1N	27	8	9	23	40
10	We	5	14	8	7	24	7	54	22	53	0	0	13	37	3	10	6	23	11	29	26	35	3	26	5	51	8	9	4	4
11	Th	5	18	5	7	25	8	52	22	58	0	14	30	9	4	2	10	28	0	13	37	10	4	19	9	55	8	8	33	3
12	Fr	5	22	1	7	26	9	50	23	3	0	28	44	46	4	39	13	55	0	27	48	52	4	56	13	24	8	7	50	37
13	Sa	5	25	58	7	27	10	49	23	7	1	12	52	32	4	58	16	32	1	11	56	55	5	17	16	4	8	6	57	15
14	Su	5	29	55	7	28	11	48	23	11	1	26	48	15	4	59	18	8	1	25	55	58	5	19	17	45	8	5	53	55
15	Mo	5	33	51	7	29	12	49	23	15	2	10	27	15	4	43	18	40	2	9	40	56	5	4	18	20	8	4	42	10
16	Tu	5	37	48	8	0	13	50	23	18	2	23	46	12	4	11	18	8	2	23	7	53	4	33	17	51	8	3	24	5
17	We	5	41	44	8	1	14	52	23	20	3	6	43	40	3	27	16	39	3	6	14	41	3	49	16	24	8	2	2	10
18	Th	5	45	41	8	2	15	55	23	22	3	19	20	10	2	34	14	24	3	19	1	15	2	56	14	9	8	0	39	10
19	Fr	5	49	37	8	3	16	58	23	24	4	1	37	60	1	35	11	33	4	1	29	23	1	56	11	16	7	29	17	53
20	Sa	5	53	34	8	4	18	2	23	25	4	13	40	55	0	32	8	15	4	13	42	29	0	53	7	56	7	28	0	59
21	Su	5	57	30	8	5	19	8	23	26	4	25	33	42	0N	31	4	40	4	25	45	3	0N	11	4	18	7	26	50	45
22	Mo	6	1	27	8	6	20	14	23	26	5	7	21	42	1	32	0	56	5	7	42	16	1	13	0	31	7	25	48	59
23	Tu	6	5	24	8	7	21	20	23	25	5	19	10	32	2	30	2S	50	5	19	39	35	2	11	3S	19	7	24	56	59
24	We	6	9	20	8	8	22	28	23	25	6	1	5	39	3	21	6	32	6	1	42	17	3	3	7	2	7	24	15	29
25	Th	6	13	17	8	9	23	36	23	23	6	13	12	7	4	4	10	0	6	13	55	9	3	45	10	32	7	23	44	47
26	Fr	6	17	13	8	10	24	45	23	22	6	25	34	6	4	37	13	8	6	26	22	6	4	17	13	40	7	23	24	47
27	Sa	6	21	10	8	11	25	54	23	19	7	8	14	39	4	57	15	43	7	9	5	48	4	36	16	14	7	23	15	8
28	Su	6	25	6	8	12	27	3	23	17	7	21	15	12	5	3	17	35	7	22	7	22	4	40	18	4	7	23	15	14
29	Mo	6	29	3	8	13	28	13	23	14	8	4	35	32	4	52	18	34	8	5	26	15	4	28	18	59	7	23	24	25
30	Tu	6	32	59	8	14	29	24	23	10	8	18	13	42	4	24	18	30	8	19	0	19	3N	59	18	52	7	23	41	56
31	We	6	36	56	8	15	30	34	23S	6	9	2	6	19	3N	41	17S	21	9	2	46	17	3N	15	17S	39	7	24	7	2

Dt	Si	VENUS शुक्र d रा	m अं०	se क'	वि''	MARS मंगल Si रा	d अं०	m क'	se वि''	JUPITER Makar गुरु मकर में रा	अं०	क'	वि''	SATUR Mina शनि मीन अं०	क'	वि''	URANU Makar हर्शल मकर अं०	क'	वि''	NEPTU Makar नेप्चू मकर अं०	क'	वि''	PLUTO Vrischik प्लूटो वृश्चिक अं०	क'	वि''	M RAHU Simha मध्यम राहु सिंह अं०	क'	वि''	T RAHU स्पष्ट राहु अं०	क'	वि''
1		8	29	7	38	8	22	45	18	9	22	43	28	19	55	23	11	50	46	4	6	38	11	46	8	21	32	27	21	54	55
2		8	29	51	30	8	23	31	35	9	22	52	49	19	53	46	11	53	4	4	8	17	11	48	30	21	29	16	21	42	5
3		9	0	34	19	8	24	17	55	9	23	2	18	19	52	16	11	55	23	4	9	57	11	50	52	21	26	5	21	31	25
4		9	1	16	4	8	25	4	18	9	23	11	55	19	50	52	11	57	46	4	11	39	11	53	13	21	22	55	21	23	37
5		9	1	56	39	8	25	50	43	9	23	21	39	19	49	34	12	0	10	4	13	22	11	55	34	21	19	44	21	18	55
6		9	2	36	3	8	26	37	11	9	23	31	30	19	48	23	12	2	37	4	15	6	11	57	55	21	16	33	21	16	55
7		9	3	14	13	8	27	23	40	9	23	41	29	19	47	18	12	5	6	4	16	52	12	0	16	21	13	22	21	16	31
8		9	3	51	5	8	28	10	12	9	23	51	35	19	46	19	12	7	37	4	18	39	12	2	36	21	10	12	21	15	30
9		9	4	26	36	8	28	56	47	9	24	1	48	19	45	27	12	10	11	4	20	28	12	4	56	21	7	1	21	15	19
10		9	5	0	42	8	29	43	23	9	24	12	8	19	44	42	12	12	46	4	22	17	12	7	16	21	3	50	21	11	54
11		9	5	33	21	9	0	30	2	9	24	22	35	19	44	2	12	15	24	4	24	8	12	9	35	21	0	39	21	6	26
12		9	6	4	28	9	1	16	42	9	24	33	9	19	43	30	12	18	3	4	26	0	12	11	54	20	57	28	20	56	12
13		9	6	33	60	9	2	3	24	9	24	43	49	19	43	4	12	20	45	4	27	53	12	14	11	20	54	18	20	44	35
14		9	7	1	53	9	2	50	9	9	24	54	35	19	42	44	12	23	28	4	29	48	12	16	29	20	51	7	20	31	42
15		9	7	28	4	9	3	36	55	9	25	5	28	19	42	32	12	26	14	4	31	43	12	18	47	20	47	56	20	18	55
16		9	7	52	28	9	4	23	43	9	25	16	27	19	42	25	12	29	1	4	33	40	12	21	4	20	44	45	20	6	31
17		9	8	15	2	9	5	10	33	9	25	27	33	19	42	25	12	31	50	4	35	38	12	23	20	20	41	35	19	58	18
18		9	8	35	43	9	5	57	25	9	25	38	44	19	42	32	12	34	42	4	37	37	12	25	35	20	38	24	19	51	54
19		9	8	54	27	9	6	44	18	9	25	50	2	19	42	46	12	37	35	4	39	37	12	27	50	20	35	13	19	48	12
20		9	9	11	9	9	7	31	13	9	26	1	25	19	43	6	12	40	29	4	41	38	12	30	4	20	32	2	19	46	49
21		9	9	25	46	9	8	18	10	9	26	12	55	19	43	32	12	43	26	4	43	39	12	32	18	20	28	52	19	46	37
22		9	9	38	14	9	9	5	9	9	26	24	30	19	44	6	12	46	24	4	45	42	12	34	31	20	25	41	19	46	41
23		9	9	48	30	9	9	52	9	9	26	36	10	19	44	45	12	49	23	4	47	46	12	36	43	20	22	30	19	46	0
24		9	9	56	31	9	10	39	11	9	26	47	56	19	45	32	12	52	25	4	49	50	12	38	54	20	19	19	19	43	24
25		9	10	2	14	9	11	26	14	9	26	59	48	19	46	25	12	55	28	4	51	56	12	41	4	20	16	8	19	37	30
26		9	10	5	34	9	12	13	19	9	27	11	45	19	47	24	12	58	32	4	54	2	12	43	14	20	12	58	19	31	0
27		9	10	6	31	9	13	0	25	9	27	23	47	19	48	31	13	1	38	4	56	9	12	45	23	20	9	47	19	21	10
28		9	10	5	1	9	13	47	33	9	27	35	55	19	49	43	13	4	46	4	58	17	12	47	30	20	6	36	19	9	51
29		9	10	1	3	9	14	34	42	9	27	48	7	19	51	3	13	7	54	5	0	25	12	49	37	20	3	25	18	58	0
30		9	9	54	35	9	15	21	52	9	28	0	24	19	52	29	13	11	5	5	2	34	12	51	43	20	0	15	18	46	46
31		9	9	45	37	9	16	9	4	9	28	12	47	19	54	1	13	14	16	5	4	44	12	53	48	19	57	4	18	37	14

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृकसिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टे. टाईम

Dt	Dy	SUN				GEO.MOON				MERCU			VENUS			MARS			JUPI		SAT		URA		NEP.		PLU		RAH	
		सूर्य				भूकेन्द्रीय चन्द्र				बुध			शुक्र			मंगल			गुरु	मक	शनि	मेष	हर्श	कुंभ	नेप	मक	प्लूट	धनु	रा	तुला
		Si	D	M	S	Si	D	M	S	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M		Capr		Aries		Aqua		Capr		Sagg		Libra
ति	वार	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	We	9	10	36	27	5	28	44	17	9	13	6	8	18	27	5	29	14	25	10	1	20	3	16	26	50	4	23	2	26
2	Th	9	11	37	37	6	10	48	40	9	11	46	8	19	42	5	29	34	25	24	1	23	3	20	26	52	4	25	2	26
3	Fr	9	12	38	47	6	23	9	16	9	10	24	8	20	57	5	29	54	25	38	1	26	3	23	26	54	4	27	2	26
4	Sa	9	13	39	57	7	5	51	27	9	9	5	8	22	12	6	0	13	25	52	1	30	3	26	26	56	4	29	2	24
5	Su	9	14	41	7	7	18	59	45	9	7	50	8	23	27	6	0	31	26	6	1	33	3	30	26	59	4	31	2	20
6	Mo	9	15	42	18	8	2	37	1	9	6	41	8	24	42	6	0	49	26	20	1	36	3	33	27	1	4	33	2	13
7	Tu	9	16	43	28	8	16	43	42	9	5	41	8	25	57	6	1	7	26	34	1	40	3	36	27	3	4	35	2	3
8	We	9	17	44	39	9	1	16	58	9	4	49	8	27	13	6	1	25	26	48	1	44	3	40	27	5	4	37	1	52
9	Th	9	18	45	50	9	16	10	40	9	4	7	8	28	28	6	1	42	27	2	1	47	3	43	27	8	4	39	1	41
10	Fr	9	19	46	60	10	1	15	51	9	3	36	8	29	43	6	1	58	27	16	1	51	3	47	27	10	4	40	1	30
11	Sa	9	20	48	10	10	16	22	13	9	3	14	9	0	58	6	2	14	27	30	1	55	3	50	27	12	4	42	1	21
12	Su	9	21	49	19	11	1	20	5	9	3	1	9	2	13	6	2	30	27	44	1	59	3	54	27	14	4	44	1	15
13	Mo	9	22	50	28	11	16	1	49	9	2	58	9	3	28	6	2	45	27	58	2	3	3	57	27	17	4	46	1	12
14	Tu	9	23	51	37	0	0	22	43	9	3	4	9	4	43	6	2	59	28	12	2	7	4	1	27	19	4	48	1	11
15	We	9	24	52	45	0	14	21	2	9	3	17	9	5	58	6	3	13	28	26	2	12	4	4	27	21	4	49	1	11
16	Th	9	25	53	52	0	27	57	14	9	3	37	9	7	14	6	3	27	28	40	2	16	4	8	27	24	4	51	1	12
17	Fr	9	26	54	58	1	11	13	18	9	4	4	9	8	29	6	3	40	28	55	2	20	4	11	27	26	4	53	1	11
18	Sa	9	27	56	3	1	24	11	52	9	4	37	9	9	44	6	3	52	29	9	2	25	4	15	27	28	4	54	1	8
19	Su	9	28	57	8	2	6	55	41	9	5	16	9	10	59	6	4	4	29	23	2	29	4	18	27	30	4	56	1	2
20	Mo	9	29	58	12	2	19	27	9	9	5	59	9	12	14	6	4	16	29	37	2	34	4	22	27	33	4	57	0	54
21	Tu	10	0	59	15	3	1	48	15	9	6	47	9	13	29	6	4	27	29	51	2	39	4	25	27	35	4	59	0	43
22	We	10	2	0	17	3	14	0	30	9	7	38	9	14	44	6	4	37	0	5	2	44	4	29	27	37	5	0	0	32
23	Th	10	3	1	18	3	26	5	5	9	8	33	9	15	60	6	4	47	0	19	2	49	4	32	27	39	5	2	0	20
24	Fr	10	4	2	18	4	8	3	9	9	9	32	9	17	15	6	4	56	0	33	2	54	4	36	27	42	5	3	0	9
25	Sa	10	5	3	18	4	19	55	56	9	10	33	9	18	30	6	5	4	0	48	2	59	4	39	27	44	5	5	29	59
26	Su	10	6	4	17	5	1	45	7	9	11	37	9	19	45	6	5	12	1	2	3	4	4	43	27	46	5	6	29	53
27	Mo	10	7	5	15	5	13	32	57	9	12	44	9	21	0	6	5	19	1	16	3	9	4	46	27	49	5	8	29	49
28	Tu	10	8	6	13	5	25	22	21	9	13	52	9	22	15	6	5	26	1	30	3	14	4	50	27	51	5	9	29	47
29	We	10	9	7	10	6	7	16	57	9	15	3	9	23	30	6	5	32	1	44	3	20	4	53	27	53	5	10	29	47
30	Th	10	10	8	6	6	19	21	6	9	16	16	9	24	46	6	5	37	1	58	3	25	4	57	27	55	5	12	29	49
31	Fr	10	11	9	2	7	1	39	33	9	17	30	9	26	1	6	5	42	2	12	3	30	5	0	27	58	5	13	29	50

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.कं. मध्यम राहु

Dt	MERCU			VENUS			EARTH			MARS			JUPITE			SATUR			URAN			NEPTU			PLUTO			RAHU		
	बुध			शुक्र			पृथिवी			मंगल			गुरु			शनि			हर्शल			नेप्चून			प्लूटो			मध्यम राहु		
ति	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M
	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क
1	3	5	9	7	17	37	3	10	37	4	23	46	9	27	56	0	7	14	10	4	22	9	27	22	8	3	15	6	3	3
6	4	5	10	7	25	36	3	15	42	4	25	58	9	28	22	0	7	24	10	4	26	9	27	24	8	3	17	6	2	47
11	5	1	41	8	3	34	3	20	48	4	28	9	9	28	47	0	7	34	10	4	29	9	27	25	8	3	19	6	2	32
16	5	24	18	8	11	31	3	25	54	5	0	20	9	29	13	0	7	44	10	4	32	9	27	27	8	3	21	6	2	16
21	6	13	40	8	19	28	4	0	59	5	2	31	9	29	39	0	7	55	10	4	36	9	27	29	8	3	23	6	1	60
26	7	0	37	8	27	23	4	6	4	5	4	43	10	0	4	0	8	5	10	4	39	9	27	31	8	3	25	6	1	44
31	7	15	57	9	5	18	4	11	9	5	6	54	10	0	30	0	8	15	10	4	42	9	27	33	8	3	27	6	1	28

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU		बुध		VENU		शुक्र		MARS		मंगल		JUPIT		गुरु		SATUR		शनि		URANU		यूरेनस		NEPT		नेप्चून		PLUTO		प्लूटो	
ति	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	का	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा
	अं	क'	अं०	क'	अं	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं	क'	अं	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'
1	2N	21	20S	27	0N	47	22S	9	2N	39	2N	43	0S	20	21S	25	2S	22	1S	37	0S	34	19S	58	0N	26	20S	22	12N	24	8S	49
4	2S	60	20S	8	0S	39	22S	33	2S	42	2S	23	0S	20	21S	18	2S	21	1S	33	0S	34	19S	56	0S	26	20S	20	12S	24	8S	50
7	3	17	20	2	0	32	22	50	2	46	2	5	0	20	21	10	2	20	1	28	0	34	19	53	0	26	20	19	12	25	8	50
10	3	14	20	9	0	24	23	2	2	50	1	49	0	21	21	2	2	20	1	23	0	34	19	51	0	26	20	18	12	25	8	51
13	2	57	20	27	0	16	23	7	2	54	1	34	0	21	20	54	2	19	1	18	0	34	19	49	0	25	20	17	12	26	8	51
16	2	32	20	51	0	8	23	6	2	58	1	21	0	21	20	46	2	18	1	12	0	34	19	46	0	25	20	15	12	27	8	51
19	2	3	21	16	0	1	22	58	3	2	1	10	0	21	20	37	2	18	1	6	0	34	19	44	0	25	20	14	12	27	8	51
22	1	33	21	40	0	7	22	44	3	6	1	0	0	22	20	28	2	17	1	0	0	34	19	41	0	25	20	13	12	28	8	51
25	1	3	21	58	0	15	22	24	3	10	0	53	0	22	20	20	2	17	0	54	0	34	19	39	0	25	20	11	12	29	8	51
28	0S	34	22S	8	0S	22	21S	57	3S	15	0S	48	0S	22	20S	11	2S	16	0	47	0S	34	19S	36	0S	25	20S	10	12S	30	8S	51
31	0N	7	22S	10	0N	29	21S	25	3N	19	0N	46	0S	23	20S	2	2S	16	0	40	0S	34	19S	33	0N	25	20S	9	12N	31	8S	50

FEBRUARY | फरवरी | 1997 | Shri Krishen Universal Ephemeris & Panchang

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृक्सिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घ ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN				GEO.MOON				MERCU			VENUS			MARS			JUPI		SAT		URA		NEP.		PLU		RAH	
		सूर्य -				भूकेन्द्रीय चन्द्र				बुध			शुक्र			मंगल			गुरु कुंभ		शनि मेष		हर्श कुंभ		नेप् मक		प्लूट धनु		रा कन्या	
		Si	D	M	S	Si	D	M	S	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Aqua		Aries		Aqua		Capr		Sagi		Virg	
ति	वार	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	Sa	10	12	9	57	7	14	17	17	9	18	46	9	27	16	6	5	46	2	26	3	36	5	4	27	60	5	14	29	50
2	Su	10	13	10	51	7	27	18	58	9	20	3	9	28	31	6	5	49	2	40	3	42	5	7	28	2	5	15	29	49
3	Mo	10	14	11	44	8	10	48	18	9	21	22	9	29	46	6	5	52	2	54	3	47	5	11	28	4	5	16	29	46
4	Tu	10	15	12	36	8	24	47	12	9	22	42	10	1	1	6	5	54	3	8	3	53	5	14	28	6	5	18	29	41
5	We	10	16	13	28	9	9	14	51	9	24	3	10	2	16	6	5	55	3	22	3	59	5	18	28	9	5	19	29	35
6	Th	10	17	14	18	9	24	7	8	9	25	25	10	3	32	6	5	55	3	36	4	5	5	21	28	11	5	20	29	28
7	Fr	10	18	15	7	10	9	16	37	9	26	49	10	4	47	6	5	55	3	50	4	11	5	25	28	13	5	21	29	22
8	Sa	10	19	15	55	10	24	33	22	9	28	13	10	6	2	6	5	54	4	4	4	17	5	28	28	15	5	22	29	17
9	Su	10	20	16	42	11	9	46	36	9	29	39	10	7	17	6	5	52	4	18	4	23	5	32	28	17	5	23	29	13
10	Mo	10	21	17	27	11	24	46	28	10	1	5	10	8	32	6	5	49	4	32	4	29	5	35	28	19	5	24	29	12
11	Tu	10	22	18	11	0	9	25	36	10	2	33	10	9	47	6	5	46	4	46	4	35	5	38	28	22	5	25	29	12
12	We	10	23	18	54	0	23	39	40	10	4	2	10	11	2	6	5	42	4	59	4	41	5	42	28	24	5	26	29	13
13	Th	10	24	19	34	1	7	27	17	10	5	31	10	12	17	6	5	37	5	13	4	48	5	45	28	26	5	26	29	15
14	Fr	10	25	20	14	1	20	49	28	10	7	1	10	13	32	6	5	31	5	27	4	54	5	49	28	28	5	27	29	16
15	Sa	10	26	20	51	2	3	48	44	10	8	33	10	14	47	6	5	25	5	41	5	0	5	52	28	30	5	28	29	16
16	Su	10	27	21	26	2	16	28	26	10	10	5	10	16	2	6	5	17	5	54	5	7	5	55	28	32	5	29	29	14
17	Mo	10	28	22	0	2	28	52	14	10	11	38	10	17	18	6	5	9	6	8	5	13	5	59	28	34	5	29	29	11
18	Tu	10	29	22	32	3	11	3	36	10	13	12	10	18	33	6	5	0	6	21	5	20	6	2	28	36	5	30	29	7
19	We	11	0	23	3	3	23	5	42	10	14	47	10	19	48	6	4	51	6	35	5	27	6	5	28	38	5	31	29	2
20	Th	11	1	23	31	4	5	1	19	10	16	22	10	21	3	6	4	40	6	49	5	33	6	8	28	40	5	31	28	56
21	Fr	11	2	23	58	4	16	52	46	10	17	59	10	22	18	6	4	29	7	2	5	40	6	12	28	42	5	32	28	51
22	Sa	11	3	24	23	4	28	42	8	10	19	37	10	23	33	6	4	17	7	15	5	47	6	15	28	44	5	32	28	47
23	Su	11	4	24	46	5	10	31	21	10	21	15	10	24	48	6	4	4	7	29	5	53	6	18	28	46	5	33	28	45
24	Mo	11	5	25	8	5	22	22	21	10	22	55	10	26	3	6	3	51	7	42	6	0	6	21	28	48	5	33	28	43
25	Tu	11	6	25	29	6	4	17	20	10	24	36	10	27	18	6	3	37	7	55	6	7	6	25	28	50	5	34	28	43
26	We	11	7	25	47	6	16	18	46	10	26	17	10	28	33	6	3	22	8	9	6	14	6	28	28	52	5	34	28	44
27	Th	11	8	26	4	6	28	29	34	10	27	60	10	29	48	6	3	6	8	22	6	21	6	31	28	54	5	34	28	45
28	Fr	11	9	26	20	7	10	53	0	10	29	43	11	1	2	6	2	50	8	35	6	28	6	34	28	55	5	35	28	47
29	Sa	11	10	26	34	7	23	32	39	11	1	28	11	2	17	6	2	33	8	48	6	35	6	37	28	57	5	35	28	49
30	Su	11	11	26	47	8	6	32	3	11	3	13	11	3	32	6	2	16	9	1	6	42	6	40	28	59	5	35	28	48
31	Mo	11	12	26	58	8	19	54	21	11	4	60	11	4	47	6	1	57	9	14	6	49	6	43	29	1	5	36	28	49

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.के. मध्यम राहु

Dt	MERCU			VENUS			EARTH			MARS			JUPITE			SATUR			URAN			NEPTU			PLUTO			RAHU		
	बुध			शुक्र			पृथिवी			मंगल			गुरु			शनि			हर्शल			नेप्चून			प्लूटो			मध्यम राहु		
	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M
ति	रा.	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क
1	7	18	53	9	6	53	4	12	10	5	7	20	10	0	35	0	8	17	10	4	43	9	27	33	8	3	28	6	1	25
6	8	3	4	9	14	48	4	17	14	5	9	31	10	1	1	0	8	27	10	4	46	9	27	35	8	3	30	6	1	9
11	8	16	51	9	22	42	4	22	18	5	11	42	10	1	26	0	8	38	10	4	50	9	27	37	8	3	32	6	0	53
16	9	0	39	10	0	36	4	27	21	5	13	53	10	1	52	0	8	48	10	4	53	9	27	38	8	3	34	6	0	37
21	9	14	55	10	8	31	5	2	24	5	16	4	10	2	18	0	8	58	10	4	56	9	27	40	8	3	36	6	0	21
26	10	0	7	10	16	25	5	7	26	5	18	16	10	2	43	0	9	8	10	4	60	9	27	42	8	3	38	6	0	5
3	10	16	48	10	24	20	5	12	27	5	20	28	10	3	9	0	9	19	10	5	3	9	27	44	8	3	40	5	29	50

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU				VENU				MARS				JUPIT				SATUR				URANU				NEPT				PLUTO			
ति	बुध				शुक				मंगल				गुरु				शनि				यूरेनस				नेप्चून				प्लूटो			
	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा
	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'
1	0S	2	22S	9	0S	31	21S	13	3N	20	0N	45	0S	23	19S	58	2S	16	0S	38	0S	34	19S	33	0N	25	20S	8	12N	31	8S	50
4	0	26	21	57	0	38	20	32	3	24	0	46	0	23	19	49	2	15	0	31	0	34	19	30	0	25	20	6	12	32	8	50
7	0	49	21	35	0	45	19	47	3	28	0	49	0	23	19	40	2	15	0	23	0	34	19	28	0	25	20	6	12	33	8	50
10	1	9	21	1	0	51	18	56	3	32	0	55	0	24	19	30	2	14	0	16	0	34	19	25	0	25	20	4	12	34	8	49
13	1	26	20	17	0	56	18	0	3	35	1	3	0	24	19	20	2	14	0	8	0	34	19	23	0	25	20	3	12	35	8	49
16	1	41	19	20	1	2	17	0	3	38	1	14	0	24	19	11	2	13	0	0	0	34	19	20	0	25	20	2	12	36	8	48
19	1	53	18	11	1	7	15	55	3	41	1	27	0	25	19	1	2	13	0	7	0	34	19	18	0	25	20	1	12	37	8	47
22	2	2	16	51	1	11	14	47	3	44	1	42	0	25	18	51	2	13	0	15	0	35	19	15	0	25	20	0	12	38	8	46
25	2	7	15	18	1	15	13	34	3	46	2	0	0	25	18	41	2	13	0	24	0	35	19	13	0	25	19	58	12	39	8	46
28	2	2S9	13	2S34	1	2S18	12	2S19	3	N47	2	N20	0	26	18	2S31	2	12	0	32	0	35	19	11	0	25	19	57	12	40	8	45
3	2	S6	11	S38	1	S21	11	S0	3	N48	2	N42	0	26	18	S21	2	S12	0	S41	0	S35	19	S9	0	N25	19	S56	12	N41	8	S44

MARCH | मार्च | 1997 | Shri Krishen Universal Ephemeris & Panchang

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृकसिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN				GEO.MOON				MERCU			VENUS			MARS			JUPI		SAT		URA		NEP.		PLU		RAH	
		सूर्य				भूकेन्द्रीय चन्द्र				बुध			शुक्र			मंगल			गुरु कुंभ		शनि मेष		हर्श कुंभ		नेप् मक		प्लूट धनु		रा कन्या	
ति	वार	Si	D	M	S	Si	D	M	S	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Aqua		Aries		Aqua		Capr		Sagi		Virg	
		रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	Sa	11	10	26	34	7	23	32	39	11	1	28	11	2	17	6	2	33	8	48	6	35	6	37	28	57	5	35	28	49
2	Su	11	11	26	47	8	6	32	3	11	3	13	11	3	32	6	2	16	9	1	6	42	6	40	28	59	5	35	28	48
3	Mo	11	12	26	58	8	19	54	21	11	4	60	11	4	47	6	1	57	9	14	6	49	6	43	29	1	5	36	28	49
4	Tu	11	13	27	8	9	3	41	42	11	6	48	11	6	2	6	1	38	9	27	6	56	6	46	29	3	5	36	28	49
5	We	11	14	27	16	9	17	54	32	11	8	36	11	7	17	6	1	19	9	40	7	3	6	49	29	4	5	36	28	47
6	Th	11	15	27	23	10	2	30	58	11	10	26	11	8	32	6	0	59	9	53	7	10	6	52	29	6	5	36	28	46
7	Fr	11	16	27	28	10	17	26	24	11	12	17	11	9	47	6	0	39	10	6	7	17	6	55	29	8	5	36	28	44
8	Sa	11	17	27	31	11	2	33	38	11	14	9	11	11	2	6	0	18	10	18	7	25	6	58	29	9	5	36	28	43
9	Su	11	18	27	32	11	17	43	37	11	16	2	11	12	17	5	29	56	10	31	7	32	7	1	29	11	5	36	28	42
10	Mo	11	19	27	31	0	2	46	50	11	17	56	11	13	31	5	29	34	10	44	7	39	7	3	29	13	5	36	28	42
11	Tu	11	20	27	29	0	17	34	36	11	19	51	11	14	46	5	29	12	10	56	7	46	7	6	29	14	5	36	28	42
12	We	11	21	27	24	1	2	0	23	11	21	47	11	16	1	5	28	50	11	9	7	54	7	9	29	16	5	36	28	43
13	Th	11	22	27	17	1	16	0	18	11	23	44	11	17	16	5	28	27	11	21	8	1	7	12	29	17	5	36	28	44
14	Fr	11	23	27	8	1	29	33	9	11	25	42	11	18	31	5	28	4	11	33	8	8	7	15	29	19	5	36	28	44
15	Sa	11	24	26	57	2	12	40	3	11	27	40	11	19	46	5	27	41	11	45	8	16	7	17	29	20	5	35	28	45
16	Su	11	25	26	44	2	25	23	43	11	29	39	11	21	0	5	27	17	11	58	8	23	7	20	29	22	5	35	28	45
17	Mo	11	26	26	28	3	7	47	56	0	1	38	11	22	15	5	26	54	12	10	8	31	7	22	29	23	5	35	28	45
18	Tu	11	27	26	10	3	19	56	56	0	3	38	11	23	30	5	26	30	12	22	8	38	7	25	29	25	5	35	28	45
19	We	11	28	25	50	4	1	55	2	0	5	38	11	24	44	5	26	7	12	34	8	46	7	28	29	26	5	34	28	45
20	Th	11	29	25	27	4	13	46	24	0	7	37	11	25	59	5	25	43	12	45	8	53	7	30	29	28	5	34	28	44
21	Fr	0	0	25	3	4	25	34	45	0	9	36	11	27	14	5	25	20	12	57	9	0	7	32	29	29	5	33	28	44
22	Sa	0	1	24	36	5	7	23	24	0	11	35	11	28	29	5	24	57	13	9	9	8	7	35	29	30	5	33	28	45
23	Su	0	2	24	7	5	19	15	11	0	13	32	11	29	43	5	24	33	13	20	9	15	7	37	29	32	5	33	28	45
24	Mo	0	3	23	36	6	1	12	28	0	15	28	0	0	58	5	24	10	13	32	9	23	7	40	29	33	5	32	28	45
25	Tu	0	4	23	2	6	13	17	16	0	17	21	0	2	12	5	23	48	13	43	9	30	7	42	29	34	5	31	28	45
26	We	0	5	22	27	6	25	31	20	0	19	13	0	3	27	5	23	25	13	55	9	38	7	44	29	35	5	31	28	44
27	Th	0	6	21	50	7	7	56	17	0	21	2	0	4	42	5	23	3	14	6	9	45	7	46	29	36	5	30	28	44
28	Fr	0	7	21	11	7	20	33	42	0	22	48	0	5	56	5	22	41	14	17	9	53	7	49	29	38	5	30	28	42
29	Sa	0	8	20	31	8	3	25	8	0	24	30	0	7	11	5	22	20	14	28	10	0	7	51	29	39	5	29	28	41
30	Su	0	9	19	48	8	16	32	9	0	26	8	0	8	25	5	21	59	14	39	10	8	7	53	29	40	5	28	28	40
31	Mo	0	10	19	4	8	29	56	12	0	27	42	0	9	40	5	21	39	14	50	10	16	7	55	29	41	5	28	28	40

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.के. मध्यम राहु

Dt	MERCU			VENUS			EARTH			MARS			JUPITE			SATUR			URAN			NEPTU			PLUTO			RAHU		
	बुध			शुक्र			पृथिवी			मंगल			गुरु			शनि			हर्शल			नेप्चून			प्लूटो			मध्यम राहु		
ति	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M
	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क
1	10	9	55	10	21	10	5	10	27	5	19	35	10	2	59	0	9	14	10	5	2	9	27	43	8	3	39	5	29	56
6	10	27	47	10	29	5	5	15	27	5	21	47	10	3	25	0	9	25	10	5	5	9	27	45	8	3	41	5	29	40
11	11	18	15	11	7	0	5	20	27	5	23	59	10	3	50	0	9	35	10	5	8	9	27	47	8	3	43	5	29	24
16	0	12	3	11	14	56	5	25	27	5	26	11	10	4	16	0	9	45	10	5	12	9	27	48	8	3	45	5	29	8
21	1	9	34	11	22	52	6	0	25	5	28	24	10	4	42	0	9	55	10	5	15	9	27	50	8	3	47	5	28	52
26	2	10	8	0	0	49	6	5	22	6	0	37	10	5	8	0	10	6	10	5	18	9	27	52	8	3	49	5	28	36
31	3	11	33	0	8	47	6	10	19	6	2	51	10	5	34	0	10	16	10	5	22	9	27	54	8	3	51	5	28	21

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU				बुध				VENU				शुक				MARS				मंगल				JUPIT				गुरु				SATUR				शनि				URANU				यूरेनस				NEPT				नेप्चून				PLUTO				प्लूटो			
ति	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा
	अं	क'	अं०	क'	अं	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं	क'	अं	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'
1	2S	8	12S	57	1S	19	11S	53	3N	48	2N	27	0S	26	18S	28	2S	12	0N	35	0S	35	19S	10	0N	25	19S	57	12N	41	8S	44
4	2	5	10	56	1	22	10	33	3	48	2	49	0	26	18	18	2	12	0	43	0	35	19	8	0	25	19	56	12	42	8	44
7	1	57	8	44	1	24	9	11	3	48	3	13	0	27	18	8	2	12	0	52	0	35	19	6	0	25	19	55	12	43	8	43
10	1	44	6	22	1	25	7	47	3	47	3	38	0	27	17	58	2	12	1	1	0	35	19	4	0	25	19	54	12	44	8	42
13	1	27	3	48	1	26	6	21	3	46	4	3	0	28	17	48	2	12	1	10	0	35	19	2	0	25	19	53	12	45	8	40
16	1	4	1	7	1	26	4	53	3	43	4	28	0	28	17	38	2	11	1	18	0	35	19	0	0	25	19	52	12	46	8	39
19	0	37	1N	40	1	26	3	24	3	40	4	53	0	28	17	29	2	11	1	27	0	35	18	58	0	25	19	51	12	47	8	38
22	0N	5	4	29	1	25	1	54	3	35	5	17	0	29	17	19	2	11	1	36	0	35	18	56	0	25	19	50	12	48	8	37
25	0S	30	7	16	1	24	0	24	3	30	5	40	0	29	17	10	2	11	1	45	0	35	18	54	0	25	19	49	12	49	8	36
28	1	6	9	52	1S	22	1N	6	3S	25	6S	1	0S	30	17S	1	2S	11	1S	54	0S	35	18S	53	0S	25	19S	48	12S	50	8S	35
31	1N	41	12N	13	1S	19	2N	36	3N	19	6N	20	0S	30	16S	51	2S	11	2N	3	0S	35	18S	51	0N	25	19S	48	12N	50	8S	34

APRIL | अप्रैल | 1997 | Shri Krishen Universal Ephemeris & Panchang

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृकसिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN				GEO.MOON				MERCU			VENUS			MARS			JUPI		SAT		URA		NEP.		PLU		RAH	
		सूर्य				भूकेन्द्रीय चन्द्र				बुध			शुक्र			मंगल			गुरु कुंभ		शनि मेष		हर्श कुंभ		नेप मक		प्लूट धनु		रा कन्या	
		Si	D	M	S	Si	D	M	S	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Aqua		Aries		Aqua		Capr		Sagi		Virg	
ति	वार	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	Tu	0	11	18	18	9	13	38	20	0	29	11	0	10	54	5	21	19	15	1	10	23	7	57	29	42	5	27	28	39
2	We	0	12	17	30	9	27	38	55	1	0	35	0	12	9	5	20	59	15	11	10	31	7	59	29	43	5	26	28	40
3	Th	0	13	16	41	10	11	57	8	1	1	54	0	13	23	5	20	41	15	22	10	38	8	1	29	44	5	25	28	41
4	Fr	0	14	15	49	10	26	30	41	1	3	8	0	14	38	5	20	22	15	32	10	46	8	3	29	45	5	24	28	41
5	Sa	0	15	14	56	11	11	15	28	1	4	15	0	15	52	5	20	5	15	43	10	53	8	5	29	46	5	24	28	42
6	Su	0	16	14	1	11	26	5	42	1	5	17	0	17	7	5	19	48	15	53	11	1	8	6	29	46	5	23	28	43
7	Mo	0	17	13	4	0	10	54	20	1	6	12	0	18	21	5	19	31	16	3	11	8	8	8	29	47	5	22	28	42
8	Tu	0	18	12	5	0	25	33	56	1	7	1	0	19	35	5	19	16	16	13	11	16	8	10	29	48	5	21	28	41
9	We	0	19	11	4	1	9	57	40	1	7	43	0	20	50	5	19	1	16	23	11	23	8	12	29	49	5	20	28	39
10	Th	0	20	10	1	1	24	0	12	1	8	19	0	22	4	5	18	47	16	33	11	31	8	13	29	50	5	19	28	36
11	Fr	0	21	8	55	2	7	38	23	1	8	48	0	23	19	5	18	33	16	43	11	38	8	15	29	50	5	18	28	33
12	Sa	0	22	7	48	2	20	51	18	1	9	11	0	24	33	5	18	21	16	52	11	46	8	16	29	51	5	17	28	30
13	Su	0	23	6	38	3	3	40	14	1	9	27	0	25	47	5	18	9	17	2	11	53	8	18	29	52	5	16	28	28
14	Mo	0	24	5	26	3	16	8	2	1	9	36	0	27	1	5	17	58	17	11	12	0	8	19	29	52	5	15	28	27
15	Tu	0	25	4	12	3	28	18	44	1	9	39	0	28	16	5	17	47	17	20	12	8	8	21	29	53	5	13	28	26
16	We	0	26	2	55	4	10	17	1	1	9	36	0	29	30	5	17	38	17	29	12	15	8	22	29	53	5	12	28	27
17	Th	0	27	1	36	4	22	7	48	1	9	27	1	0	44	5	17	29	17	38	12	23	8	23	29	54	5	11	28	28
18	Fr	0	28	0	15	5	3	55	56	1	9	13	1	1	58	5	17	21	17	47	12	30	8	25	29	54	5	10	28	30
19	Sa	0	28	58	52	5	15	45	54	1	8	53	1	3	13	5	17	14	17	56	12	37	8	26	29	55	5	9	28	32
20	Su	0	29	57	27	5	27	41	40	1	8	28	1	4	27	5	17	8	18	4	12	45	8	27	29	55	5	7	28	32
21	Mo	1	0	55	59	6	9	46	35	1	7	59	1	5	41	5	17	2	18	13	12	52	8	28	29	56	5	6	28	32
22	Tu	1	1	54	30	6	22	3	8	1	7	26	1	6	55	5	16	57	18	21	12	59	8	29	29	56	5	5	28	30
23	We	1	2	52	58	7	4	32	60	1	6	51	1	8	9	5	16	53	18	29	13	6	8	30	29	56	5	4	28	26
24	Th	1	3	51	25	7	17	17	2	1	6	13	1	9	23	5	16	50	18	38	13	14	8	31	29	56	5	2	28	21
25	Fr	1	4	49	50	8	0	15	20	1	5	33	1	10	37	5	16	47	18	46	13	21	8	32	29	57	5	1	28	15
26	Sa	1	5	48	14	8	13	27	25	1	4	53	1	11	51	5	16	46	18	53	13	28	8	33	29	57	5	0	28	9
27	Su	1	6	46	35	8	26	52	28	1	4	12	1	13	6	5	16	45	19	1	13	35	8	34	29	57	4	58	28	3
28	Mo	1	7	44	56	9	10	29	30	1	3	32	1	14	20	5	16	44	19	8	13	42	8	35	29	57	4	57	27	59
29	Tu	1	8	43	14	9	24	17	36	1	2	54	1	15	34	5	16	45	19	16	13	49	8	35	29	57	4	55	27	56
30	We	1	9	41	31	10	8	15	53	1	2	17	1	16	48	5	16	46	19	23	13	56	8	36	29	57	4	54	27	55
31	Th	1	10	39	47	10	22	23	24	1	1	43	1	18	2	5	16	48	19	30	14	3	8	37	29	58	4	52	27	56

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.क. मध्यम राहु

Dt	MERCU			VENUS			EARTH			MARS			JUPITE			SATUR			URAN			NEPTU			PLUTO			RAHU		
	बुध			शुक्र			पृथिवी			मंगल			गुरु			शनि			हर्शल			नेप्चून			प्लूटो			मध्यम राहु		
	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M
ति	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क
1	3	17	41	0	10	22	6	11	18	6	3	18	10	5	39	0	10	18	10	5	22	9	27	54	8	3	51	5	28	17
6	4	16	25	0	18	20	6	16	14	6	5	32	10	6	5	0	10	28	10	5	26	9	27	56	8	3	53	5	28	1
11	5	11	19	0	26	19	6	21	9	6	7	47	10	6	31	0	10	38	10	5	29	9	27	58	8	3	55	5	27	46
16	6	2	31	1	4	19	6	26	3	6	10	2	10	6	57	0	10	49	10	5	32	9	27	60	8	3	57	5	27	30
21	6	20	48	1	12	19	7	0	56	6	12	18	10	7	23	0	10	59	10	5	35	9	28	1	8	3	59	5	27	14
26	7	7	1	1	20	19	7	5	48	6	14	34	10	7	48	0	11	9	10	5	39	9	28	3	8	4	1	5	26	58
1	7	21	52	1	28	21	7	10	40	6	16	52	10	8	14	0	11	20	10	5	42	9	28	5	8	4	4	5	26	42

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU बुध				VENU शुक				MARS मंगल				JUPIT गुरु				SATUR शनि				URANU यूरेनस				NEPT नेप्चून				PLUTO प्लूटो			
ति	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	का	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा
	अं	क'	अं०	क'	अं	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं	क'	अं	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'
1	1N	52	12N	55	1S	19	3N	6	3N	16	6N	26	0S	30	16S	48	2S	11	2N	6	0S	36	18S	50	0N	25	19S	48	12N	51	8S	33
4	2	23	14	47	1	15	4	36	3	10	6	42	0	31	16	40	2	11	2	14	0	36	18	49	0	25	19	47	12	52	8	32
7	2	46	16	11	1	12	6	5	3	2	6	56	0	32	16	31	2	11	2	23	0	36	18	48	0	25	19	46	12	52	8	31
10	3	1	17	7	1	7	7	33	2	55	7	6	0	32	16	22	2	12	2	32	0	36	18	47	0	25	19	46	12	53	8	29
13	3	5	17	33	1	3	8	59	2	47	7	14	0	33	16	14	2	12	2	40	0	36	18	45	0	25	19	45	12	54	8	28
16	2	58	17	29	0	58	10	23	2	39	7	19	0	33	16	6	2	12	2	49	0	36	18	44	0	25	19	45	12	54	8	27
19	2	37	16	55	0	52	11	45	2	31	7	21	0	34	15	59	2	12	2	57	0	36	18	44	0	25	19	45	12	55	8	26
22	2	4	15	56	0	46	13	5	2	23	7	20	0	34	15	52	2	12	3	5	0	36	18	43	0	25	19	45	12	56	8	25
25	1	20	14	37	0	40	14	22	2	15	7	17	0	35	15	45	2	13	3	14	0	36	18	42	0	25	19	44	12	56	8	24
28	0N	31	13	10	0	34	15	35	2	8	7	11	0	36	15	38	2	13	3	22	0	36	18	42	0	25	19	44	12	56	8	23
1	0S	21	11N	44	0S	27	16N	45	1N	60	7N	2	0S	36	15S	32	2S	13	3N	29	0S	37	18S	41	0N	25	19S	44	12N	57	8S	22

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृक्सिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN सूर्य				GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र				MERCU बुध			VENUS शुक्र			MARS मंगल			JUPI गुरु कुंभ Aqua		SAT शनि मेष Aries		URA हर्श कुंभ Aqua		NEP. नेप् मक Capr		PLU प्लूट धनु Sagi		RAH रा कन्या Virg	
ति	वार	Si रा	D अं	M क	S वि	Si रा	D अं	M क	S वि	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	Th	1	10	39	47	10	22	23	24	1	1	43	1	18	2	5	16	48	19	30	14	3	8	37	29	58	4	52	27	56
2	Fr	1	11	38	1	11	6	38	52	1	1	12	1	19	16	5	16	51	19	37	14	10	8	37	29	58	4	51	27	57
3	Sa	1	12	36	14	11	21	0	21	1	0	44	1	20	29	5	16	54	19	44	14	17	8	38	29	58	4	50	27	58
4	Su	1	13	34	25	0	5	24	57	1	0	21	1	21	43	5	16	58	19	51	14	24	8	38	29	57	4	48	27	58
5	Mo	1	14	32	34	0	19	48	43	1	0	1	1	22	57	5	17	3	19	57	14	31	8	39	29	57	4	46	27	56
6	Tu	1	15	30	42	1	4	6	48	0	29	46	1	24	11	5	17	9	20	3	14	38	8	39	29	57	4	45	27	52
7	We	1	16	28	49	1	18	14	2	0	29	36	1	25	25	5	17	15	20	9	14	45	8	40	29	57	4	43	27	45
8	Th	1	17	26	53	2	2	5	34	0	29	30	1	26	39	5	17	22	20	15	14	52	8	40	29	57	4	42	27	38
9	Fr	1	18	24	57	2	15	37	42	0	29	29	1	27	53	5	17	29	20	21	14	58	8	40	29	57	4	40	27	29
10	Sa	1	19	22	58	2	28	48	18	0	29	32	1	29	7	5	17	37	20	27	15	5	8	40	29	56	4	39	27	21
11	Su	1	20	20	57	3	11	37	13	0	29	40	2	0	21	5	17	46	20	33	15	12	8	40	29	56	4	37	27	14
12	Mo	1	21	18	55	3	24	6	2	0	29	53	2	1	34	5	17	55	20	38	15	18	8	40	29	56	4	36	27	8
13	Tu	1	22	16	51	4	6	17	51	1	0	10	2	2	48	5	18	5	20	43	15	25	8	40	29	56	4	34	27	5
14	We	1	23	14	45	4	18	16	55	1	0	32	2	4	2	5	18	16	20	48	15	31	8	40	29	55	4	32	27	3
15	Th	1	24	12	38	5	0	8	10	1	0	58	2	5	16	5	18	27	20	53	15	38	8	40	29	55	4	31	27	3
16	Fr	1	25	10	29	5	11	56	52	1	1	28	2	6	29	5	18	39	20	58	15	44	8	40	29	54	4	29	27	4
17	Sa	1	26	8	17	5	23	48	18	1	2	3	2	7	43	5	18	51	21	2	15	51	8	40	29	54	4	28	27	4
18	Su	1	27	6	5	6	5	47	26	1	2	41	2	8	57	5	19	4	21	7	15	57	8	40	29	53	4	26	27	4
19	Mo	1	28	3	50	6	17	58	40	1	3	23	2	10	10	5	19	18	21	11	16	3	8	40	29	53	4	24	27	2
20	Tu	1	29	1	34	7	0	25	27	1	4	8	2	11	24	5	19	32	21	15	16	9	8	39	29	52	4	23	26	58
21	We	1	29	59	17	7	13	10	2	1	4	57	2	12	38	5	19	46	21	19	16	16	8	39	29	52	4	21	26	51
22	Th	2	0	56	58	7	26	13	17	1	5	50	2	13	51	5	20	1	21	22	16	22	8	39	29	51	4	19	26	42
23	Fr	2	1	54	38	8	9	34	29	1	6	46	2	15	5	5	20	16	21	26	16	28	8	38	29	50	4	18	26	32
24	Sa	2	2	52	17	8	23	11	36	1	7	45	2	16	19	5	20	32	21	29	16	34	8	38	29	50	4	16	26	21
25	Su	2	3	49	54	9	7	1	30	1	8	48	2	17	32	5	20	49	21	32	16	40	8	37	29	49	4	14	26	11
26	Mo	2	4	47	31	9	21	0	37	1	9	53	2	18	46	5	21	6	21	35	16	46	8	36	29	48	4	13	26	3
27	Tu	2	5	45	6	10	5	5	28	1	11	2	2	19	59	5	21	23	21	38	16	51	8	36	29	48	4	11	25	59
28	We	2	6	42	41	10	19	13	8	1	12	13	2	21	13	5	21	41	21	40	16	57	8	35	29	47	4	10	25	54
29	Th	2	7	40	15	11	3	21	32	1	13	27	2	22	26	5	21	59	21	43	17	3	8	34	29	46	4	8	25	53
30	Fr	2	8	37	47	11	17	29	16	1	14	44	2	23	40	5	22	18	21	45	17	8	8	34	29	45	4	6	25	53
31	Sa	2	9	35	19	0	1	35	17	1	16	4	2	24	53	5	22	37	21	47	17	14	8	33	29	44	4	5	25	53

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.के. मध्यम राहु

Dt	MERCU बुध			VENUS शुक्र			EARTH पृथिवी			MARS मंगल			JUPITE गुरु			SATUR शनि			URAN हर्शल			NEPTU नेप्चून			PLUTO प्लूटो			RAHU मध्यम राहु		
ति	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क
1	7	21	52	1	28	21	7	10	40	6	16	52	10	8	14	0	11	20	10	5	42	9	28	5	8	4	4	5	26	42
6	8	5	56	2	6	23	7	15	31	6	19	9	10	8	40	0	11	30	10	5	45	9	28	7	8	4	6	5	26	26
11	8	19	41	2	14	26	7	20	21	6	21	28	10	9	6	0	11	40	10	5	49	9	28	9	8	4	8	5	26	10
16	9	3	33	2	22	30	7	25	10	6	23	48	10	9	32	0	11	50	10	5	52	9	28	10	8	4	10	5	25	54
21	9	17	58	3	0	34	7	29	59	6	26	8	10	9	58	0	12	1	10	5	55	9	28	12	8	4	12	5	25	39
26	10	3	25	3	8	40	8	4	48	6	28	29	10	10	24	0	12	11	10	5	59	9	28	14	8	4	14	5	25	23
31	10	20	29	3	16	46	8	9	35	7	0	51	10	10	51	0	12	21	10	6	2	9	28	16	8	4	16	5	25	7

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU बुध				VENU शुक्र				MARS मंगल				JUPIT गुरु				SATUR शनि				URANU यूरेनस				NEPT नेप्चून				PLUTO प्लूटो			
ति	La शर अं	De क'	अं	क'	La शर अं	De क'	अं	क'	La शर अं	De क'	अं	क'	La शर अं	De क'	अं	क'	La शर अं	De क'	अं	क'	La शर अं	De क'	अं	क'	La शर अं	De क'	अं	क'	La शर अं	De क'	अं	क'
1	0S21	11N44			0S27	16N45			1N60	7N 2			0S36	15S32			2S13	3N29			0S37	18S41			0N25	19S44			12N57	8S22		
4	1S10	10S30			0S20	17S52			1S53	6S52			0S37	15S26			2S14	3S37			0S37	18S41			0S25	19S44			12S57	8S20		
7	1 53	9 33			0 13	18 54			1 45	6 39			0 37	15 21			2 14	3 45			0 37	18 41			0 25	19 44			12 57	8 20		
10	2 29	8 59			0 6	19 51			1 38	6 23			0 38	15 16			2 14	3 52			0 37	18 41			0 25	19 44			12 57	8 19		
13	2 56	8 47			0N 2	20 44			1 32	6 6			0 39	15 11			2 15	3 59			0 37	18 41			0 25	19 45			12 58	8 18		
16	3 14	8 56			0S 9	21 32			1 25	5 47			0 39	15 7			2 15	4 6			0 37	18 41			0 25	19 45			12 58	8 17		
19	3 25	9 25			0 16	22 14			1 19	5 26			0 40	15 4			2 16	4 13			0 37	18 41			0 25	19 45			12 57	8 16		
22	3 28	10 11			0 24	22 50			1 13	5 3			0 41	15 1			2 16	4 20			0 37	18 41			0 25	19 45			12 57	8 15		
25	3 24	11 12			0 31	23 21			1 7	4 39			0 42	14 58			2 17	4 26			0 37	18 42			0 25	19 46			12 57	8 15		
28	3S14	12S25			0S38	23 46			1S31	4S13			0S42	14S56			2S17	4S32			0S38	18S43			0S25	19S46			12S57	8S14		
31	2S58	13N48			0N45	24N 4			0N55	3N46			0S43	14S55			2S18	4N38			0S38	18S43			0N25	19S47			12N57	8S14		

JUNE | जून | 1997 | Shri Krishen Universal Ephemeris & Panchang

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृक्सिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN				GEO.MOON				MERCU			VENUS			MARS			JUPI		SAT		URA		NEP.		PLU		RAH	
		सूर्य				भूकेन्द्रीय चन्द्र				बुध			शुक्र			मंगल			गुरु कुंभ		शनि मेष		हर्श कुंभ		नेप् मक		प्लूट धनु		रा कन्या	
		Si	D	M	S	Si	D	M	S	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Aqua		Aries		Aqua		Capr		Sagi		Virg	
ति	वार	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	Su	2	10	32	51	0	15	38	32	1	17	27	2	26	7	5	22	56	21	49	17	20	8	32	29	43	4	3	25	52
2	Mo	2	11	30	21	0	29	37	28	1	18	52	2	27	20	5	23	16	21	50	17	25	8	31	29	42	4	1	25	48
3	Tu	2	12	27	51	1	13	29	54	1	20	20	2	28	34	5	23	37	21	52	17	30	8	30	29	42	4	0	25	42
4	We	2	13	25	20	1	27	13	4	1	21	51	2	29	47	5	23	57	21	53	17	36	8	29	29	41	3	58	25	33
5	Th	2	14	22	48	2	10	43	57	1	23	24	3	1	0	5	24	18	21	54	17	41	8	28	29	40	3	56	25	22
6	Fr	2	15	20	15	2	23	59	48	1	24	60	3	2	14	5	24	40	21	55	17	46	8	27	29	39	3	55	25	10
7	Sa	2	16	17	41	3	6	58	40	1	26	38	3	3	27	5	25	2	21	56	17	51	8	26	29	38	3	53	24	57
8	Su	2	17	15	6	3	19	39	50	1	28	19	3	4	40	5	25	24	21	56	17	56	8	25	29	36	3	52	24	46
9	Mo	2	18	12	30	4	2	4	0	2	0	3	3	5	54	5	25	47	21	56	18	1	8	23	29	35	3	50	24	37
10	Tu	2	19	9	54	4	14	13	16	2	1	49	3	7	7	5	26	10	21	56	18	6	8	22	29	34	3	49	24	31
11	We	2	20	7	16	4	26	11	1	2	3	37	3	8	20	5	26	33	21	56	18	11	8	21	29	33	3	47	24	27
12	Th	2	21	4	37	5	8	1	34	2	5	29	3	9	34	5	26	57	21	56	18	16	8	19	29	32	3	45	24	25
13	Fr	2	22	1	57	5	19	49	57	2	7	22	3	10	47	5	27	21	21	56	18	20	8	18	29	31	3	44	24	25
14	Sa	2	22	59	16	6	1	41	35	2	9	18	3	12	0	5	27	45	21	55	18	25	8	17	29	30	3	42	24	25
15	Su	2	23	56	35	6	13	41	55	2	11	16	3	13	13	5	28	9	21	54	18	30	8	15	29	28	3	41	24	24
16	Mo	2	24	53	52	6	25	56	9	2	13	17	3	14	27	5	28	34	21	53	18	34	8	14	29	27	3	39	24	21
17	Tu	2	25	51	9	7	8	28	40	2	15	19	3	15	40	5	28	60	21	52	18	38	8	12	29	26	3	38	24	16
18	We	2	26	48	24	7	21	22	46	2	17	24	3	16	53	5	29	25	21	50	18	43	8	11	29	25	3	36	24	9
19	Th	2	27	45	39	8	4	40	1	2	19	30	3	18	6	5	29	51	21	49	18	47	8	9	29	23	3	35	23	59
20	Fr	2	28	42	54	8	18	19	55	2	21	37	3	19	19	6	0	17	21	47	18	51	8	7	29	22	3	33	23	48
21	Sa	2	29	40	8	9	2	19	49	2	23	46	3	20	32	6	0	43	21	45	18	55	8	6	29	21	3	32	23	36
22	Su	3	0	37	22	9	16	35	7	2	25	56	3	21	45	6	1	10	21	43	18	59	8	4	29	19	3	31	23	25
23	Mo	3	1	34	35	10	0	59	60	2	28	7	3	22	58	6	1	37	21	40	19	3	8	2	29	18	3	29	23	16
24	Tu	3	2	31	48	10	15	28	20	3	0	18	3	24	11	6	2	4	21	38	19	7	8	0	29	16	3	28	23	9
25	We	3	3	29	1	10	29	54	44	3	2	30	3	25	24	6	2	32	21	35	19	10	7	59	29	15	3	26	23	6
26	Th	3	4	26	14	11	14	15	6	3	4	41	3	26	37	6	2	59	21	32	19	14	7	57	29	14	3	25	23	4
27	Fr	3	5	23	27	11	28	26	52	3	6	52	3	27	50	6	3	27	21	29	19	18	7	55	29	12	3	24	23	4
28	Sa	3	6	20	40	0	12	28	47	3	9	2	3	29	3	6	3	56	21	26	19	21	7	53	29	11	3	22	23	4
29	Su	3	7	17	53	0	26	20	26	3	11	12	4	0	16	6	4	24	21	22	19	24	7	51	29	9	3	21	23	3
30	Mo	3	8	15	6	1	10	1	43	3	13	21	4	1	29	6	4	53	21	19	19	28	7	49	29	8	3	20	23	0
31	Tu	3	9	13	19	1	23	32	29	3	15	29	4	3	42	6	5	22	21	15	19	31	7	47	29	6	3	19	22	54

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.के. मध्यम राहु

Dt	MERCU			VENUS			EARTH			MARS			JUPITE			SATUR			URAN			NEPTU			PLUTO			RAHU		
	बुध			शुक्र			पृथिवी			मंगल			गुरु			शनि			हर्शल			नेप्चून			प्लूटो			मध्यम राहु		
	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M
ति	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क
1	10	24	9	3	18	23	8	10	33	7	1	20	10	10	56	0	12	23	10	6	3	9	28	16	8	4	16	5	25	4
6	11	14	3	3	26	29	8	15	20	7	3	43	10	11	22	0	12	34	10	6	6	9	28	18	8	4	18	5	24	48
11	0	7	9	4	4	36	8	20	7	7	6	7	10	11	48	0	12	44	10	6	9	9	28	20	8	4	20	5	24	32
16	1	3	57	4	12	44	8	24	54	7	8	32	10	12	14	0	12	54	10	6	13	9	28	22	8	4	22	5	24	16
21	2	4	3	4	20	52	8	29	40	7	10	59	10	12	40	0	13	5	10	6	16	9	28	23	8	4	24	5	24	0
26	3	5	32	4	28	59	9	4	26	7	13	26	10	13	6	0	13	15	10	6	19	9	28	25	8	4	26	5	23	44
1	4	5	32	5	7	7	9	9	12	7	15	55	10	13	33	0	13	25	10	6	23	9	28	27	8	4	28	5	23	28

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU				बुध				VENU				शुक				MARS				मंगल				JUPIT				गुरु				SATUR				शनि				URANU				यूरेनस				NEPT				नेप्चून				PLUTO				प्लूटो			
ति	La		शर		De		क्रा		La		शर		De		क्रा		La		शर		De		क्रा		La		शर		De		क्रा		La		शर		De		क्रा		La		शर		De		क्रा		La		शर		De		क्रा		La		शर		De		क्रा	
	अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'		अं		क'	
1	2S	52		14N	17		0N	47		24N	9		0N	54		3N	37		0S	43		14S	54		2S	18		4N	40		0S	38		18S	43		0N	25		19S	47		12N	56		8S	13																					
4	2	30		15	48		0	54		24	19		0	48		3	8		0	44		14	54		2	19		4	46		0	38		18	44		0	25		19	48		12	56		8	13																					
7	2	3		17	24		0	60		24	23		0	43		2	38		0	45		14	54		2	19		4	51		0	38		18	45		0	25		19	48		12	55		8	13																					
10	1	33		19	0		1	6		24	20		0	39		2	6		0	46		14	54		2	20		4	56		0	38		18	46		0	25		19	49		12	55		8	12																					
13	1	1		20	32		1	11		24	10		0	34		1	34		0	46		14	55		2	20		5	1		0	38		18	47		0	25		19	50		12	54		8	12																					
16	0	27		21	56		1	16		23	55		0	29		1	0		0	47		14	57		2	21		5	6		0	38		18	49		0	25		19	50		12	54		8	12																					
19	0N	6		23	7		1	21		23	33		0	25		0	26		0	48		14	59		2	22		5	10		0	38		18	50		0	25		19	51		12	53		8	12																					
22	0	38		23	59		1	25		23	4		0	21		0S	8		0	49		15	1		2	23		5	14		0	38		18	51		0	25		19	52		12	52		8	12																					
25	1	4		24	29		1	29		22	30		0	17		0	45		0	49		15	5		2	23		5	17		0	38		18	53		0	25		19	53		12	51		8	12																					
28	1	26		24	33		1	32		21	50		0	13		1	22		0	50		15	8		2	24		5	21		0	38		18	54		0	25		19	54		12	50		8	13																					
1	1N	41		24N	13		1N	35		21N	5		0N	9		1	59		0S	51		15S	12		2S	25		5N	24		0S	39		18S	56		0N	25		19S	55		12N	49		8S	13																					

JULY जुलाई 1997 Shri Krishen Universal Ephemeris & Panchang

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृक्सिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN सूर्य				GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र				MERCU बुध			VENUS शुक्र			MARS मंगल			JUPI गुरु कुंभ		SAT शनि मेष		URA हर्श कुंभ		NEP. नेप मक		PLU प्लूट धनु		RAH रा कन्या	
		Si	D	M	S	Si	D	M	S	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Aqua		Aries		Aqua		Capr		Sagi		Virg	
ति	वार	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	Tu	3	9	12	19	1	23	32	28	3	15	28	4	2	42	6	5	22	21	15	19	31	7	47	29	6	3	19	22	54
2	We	3	10	9	32	2	6	52	10	3	17	34	4	3	55	6	5	51	21	11	19	34	7	45	29	5	3	17	22	45
3	Th	3	11	6	45	2	20	0	2	3	19	38	4	5	8	6	6	20	21	7	19	37	7	43	29	3	3	16	22	35
4	Fr	3	12	3	59	3	2	55	6	3	21	41	4	6	21	6	6	50	21	3	19	40	7	41	29	2	3	15	22	23
5	Sa	3	13	1	12	3	15	36	39	3	23	42	4	7	34	6	7	20	20	58	19	43	7	39	29	0	3	14	22	12
6	Su	3	13	58	26	3	28	4	28	3	25	41	4	8	46	6	7	50	20	53	19	45	7	37	28	59	3	13	22	1
7	Mo	3	14	55	39	4	10	19	9	3	27	39	4	9	59	6	8	20	20	49	19	48	7	35	28	57	3	11	21	52
8	Tu	3	15	52	53	4	22	22	13	3	29	34	4	11	12	6	8	51	20	44	19	51	7	32	28	56	3	10	21	46
9	We	3	16	50	6	5	4	16	13	4	1	28	4	12	25	6	9	22	20	38	19	53	7	30	28	54	3	9	21	43
10	Th	3	17	47	20	5	16	4	39	4	3	19	4	13	37	6	9	53	20	33	19	55	7	28	28	52	3	8	21	41
11	Fr	3	18	44	33	5	27	51	48	4	5	9	4	14	50	6	10	24	20	28	19	58	7	26	28	51	3	7	21	41
12	Sa	3	19	41	46	6	9	42	34	4	6	57	4	16	3	6	10	55	20	22	19	60	7	24	28	49	3	6	21	42
13	Su	3	20	38	59	6	21	42	15	4	8	43	4	17	15	6	11	27	20	16	20	2	7	21	28	48	3	5	21	42
14	Mo	3	21	36	12	7	3	56	9	4	10	27	4	18	28	6	11	58	20	11	20	4	7	19	28	46	3	4	21	41
15	Tu	3	22	33	25	7	16	29	17	4	12	8	4	19	41	6	12	30	20	5	20	6	7	17	28	44	3	3	21	38
16	We	3	23	30	38	7	29	25	47	4	13	48	4	20	53	6	13	2	19	58	20	7	7	15	28	43	3	2	21	33
17	Th	3	24	27	52	8	12	48	19	4	15	26	4	22	6	6	13	35	19	52	20	9	7	12	28	41	3	2	21	27
18	Fr	3	25	25	5	8	26	37	26	4	17	3	4	23	18	6	14	7	19	46	20	11	7	10	28	40	3	1	21	19
19	Sa	3	26	22	19	9	10	51	9	4	18	37	4	24	31	6	14	40	19	39	20	12	7	8	28	38	3	0	21	10
20	Su	3	27	19	33	9	25	24	48	4	20	9	4	25	43	6	15	13	19	33	20	13	7	5	28	36	2	59	21	2
21	Mo	3	28	16	48	10	10	11	31	4	21	39	4	26	55	6	15	46	19	26	20	15	7	3	28	35	2	58	20	55
22	Tu	3	29	14	4	10	25	3	20	4	23	7	4	28	8	6	16	19	19	19	20	16	7	0	28	33	2	58	20	51
23	We	4	0	11	20	11	9	52	20	4	24	33	4	29	20	6	16	52	19	12	20	17	6	58	28	31	2	57	20	48
24	Th	4	1	8	36	11	24	31	55	4	25	58	5	0	32	6	17	26	19	5	20	18	6	56	28	30	2	56	20	48
25	Fr	4	2	5	54	0	8	57	24	4	27	20	5	1	45	6	17	60	18	58	20	19	6	53	28	28	2	56	20	49
26	Sa	4	3	3	12	0	23	6	10	4	28	40	5	2	57	6	18	34	18	51	20	19	6	51	28	27	2	55	20	50
27	Su	4	4	0	32	1	6	57	19	4	29	58	5	4	9	6	19	8	18	44	20	20	6	49	28	25	2	55	20	50
28	Mo	4	4	57	52	1	20	31	10	5	1	14	5	5	21	6	19	42	18	37	20	21	6	46	28	23	2	54	20	49
29	Tu	4	5	55	14	2	3	48	43	5	2	27	5	6	33	6	20	16	18	29	20	21	6	44	28	22	2	53	20	46
30	We	4	6	52	36	2	16	51	12	5	3	38	5	7	45	6	20	51	18	22	20	21	6	41	28	20	2	53	20	41
31	Th	4	7	49	60	2	29	39	49	5	4	47	5	8	58	6	21	25	18	14	20	22	6	39	28	18	2	53	20	34

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.के. मध्यम राहु

Dt	MERCU बुध			VENUS शुक्र			EARTH पृथिवी			MARS मंगल			JUPITE गुरु			SATUR शनि			URAN हर्शल			NEPTU नेप्चून			PLUTO प्लूटो			RAHU मध्यम राहु		
	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M
ति	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क
1	4	5	32	5	7	7	9	9	12	7	15	55	10	13	33	0	13	25	10	6	23	9	28	27	8	4	28	5	23	28
6	5	1	59	5	15	14	9	13	59	7	18	24	10	13	59	0	13	36	10	6	26	9	28	29	8	4	30	5	23	12
11	5	24	34	5	23	21	9	18	45	7	20	55	10	14	25	0	13	46	10	6	29	9	28	31	8	4	32	5	22	56
16	6	13	53	6	1	27	9	23	31	7	23	27	10	14	51	0	13	56	10	6	33	9	28	32	8	4	34	5	22	41
21	7	0	50	6	9	32	9	28	17	7	26	1	10	15	17	0	14	6	10	6	36	9	28	34	8	4	36	5	22	25
26	7	16	9	6	17	36	10	3	3	7	28	36	10	15	44	0	14	17	10	6	39	9	28	36	8	4	38	5	22	9
31	8	0	27	6	25	40	10	7	50	8	1	12	10	16	10	0	14	27	10	6	42	9	28	38	8	4	40	5	21	53

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU बुध				VENU शुक				MARS मंगल				JUPIT गुरु				SATUR शनि				URANU यूरेनस				NEPT नेप्चून				PLUTO प्लूटो			
	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	का	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा
ति	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'
1	1N	41	24N	13	1N	35	21N	5	0N	9	1S	59	0S	51	15S	12	2S	25	5N	24	0S	39	18S	56	0N	25	19S	55	12N	49	8S	13
4	1	50	23	30	1	37	20	14	0	5	2	38	0	51	15	17	2	26	5	26	0	39	18	58	0	25	19	56	12	48	8	13
7	1	52	22	27	1	38	19	18	0	2	3	17	0	52	15	22	2	26	5	29	0	39	18	59	0	25	19	57	12	47	8	14
10	1	48	21	9	1	39	18	18	0	S2	3	56	0	53	15	28	2	27	5	31	0	39	19	1	0	25	19	58	12	46	8	14
13	1	39	19	39	1	39	17	13	0	2	5	4	36	0	54	15	34	2	28	5	32	0	39	19	3	0	25	19	59	12	45	8	15
16	1	24	18	1	1	38	16	4	0	9	5	16	0	54	15	40	2	29	5	34	0	39	19	5	0	25	20	0	12	43	8	16
19	1	5	16	16	1	36	14	51	0	12	5	57	0	55	15	47	2	30	5	35	0	39	19	6	0	25	20	1	12	42	8	16
22	0	43	14	28	1	34	13	35	0	15	6	38	0	55	15	53	2	31	5	35	0	39	19	8	0	25	20	2	12	41	8	17
25	0	16	12	39	1	32	12	16	0	18	7	19	0	56	16	1	2	31	5	35	0	39	19	10	0	25	20	3	12	40	8	18
28	0S	12	10	50	1	28	10	54	0	21	8	1	0	56	16	8	2	32	5	35	0	39	19	12	0	25	20	4	12	38	8	19
31	0S	44	9N	4	1N	24	9N	30	0S	23	8S	42	0S	57	16S	15	2S	33	5N	35	0S	39	19S	14	0N	25	20S	5	12N	37	8S	20

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृक्सिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घ ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN सूर्य - Si	D	M	S	GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र Si	D	M	S	MERCU बुध Si	D	M	VENUS शुक्र Si	D	M	MARS मंगल Si	D	M	JUPI गुरु कुंभ Aqua		SAT शनि मेष Aries		URA हर्श कुंभ Aqua		NEP. नेप् मक Capr		PLU प्लूट धनु Sagi		RAH रा कन्या Virg	
ति	वार	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	Fr	4	8	47	24	3	12	15	38	5	5	53	5	10	10	6	22	0	18	7	20	22	6	37	28	17	2	52	20	27
2	Sa	4	9	44	50	3	24	39	37	5	6	57	5	11	22	6	22	35	17	59	20	22	6	34	28	15	2	52	20	20
3	Su	4	10	42	17	4	6	52	48	5	7	58	5	12	34	6	23	10	17	51	20	22	6	32	28	14	2	51	20	13
4	Mo	4	11	39	44	4	18	56	22	5	8	57	5	13	45	6	23	46	17	44	20	21	6	29	28	12	2	51	20	8
5	Tu	4	12	37	12	5	0	51	56	5	9	52	5	14	57	6	24	21	17	36	20	21	6	27	28	11	2	51	20	5
6	We	4	13	34	42	5	12	41	36	5	10	45	5	16	9	6	24	57	17	28	20	21	6	25	28	9	2	51	20	3
7	Th	4	14	32	12	5	24	28	6	5	11	34	5	17	21	6	25	33	17	20	20	20	6	22	28	7	2	50	20	3
8	Fr	4	15	29	43	6	6	14	46	5	12	20	5	18	33	6	26	8	17	12	20	20	6	20	28	6	2	50	20	4
9	Sa	4	16	27	15	6	18	5	35	5	13	2	5	19	45	6	26	45	17	5	20	19	6	18	28	4	2	50	20	6
10	Su	4	17	24	48	7	0	4	59	5	13	41	5	20	56	6	27	21	16	57	20	18	6	15	28	3	2	50	20	7
11	Mo	4	18	22	21	7	12	17	47	5	14	16	5	22	8	6	27	57	16	49	20	17	6	13	28	1	2	50	20	8
12	Tu	4	19	19	55	7	24	48	44	5	14	47	5	23	20	6	28	33	16	41	20	16	6	11	27	60	2	50	20	8
13	We	4	20	17	31	8	7	42	16	5	15	13	5	24	31	6	29	10	16	33	20	15	6	8	27	58	2	50	20	7
14	Th	4	21	15	7	8	21	1	50	5	15	35	5	25	43	6	29	47	16	25	20	14	6	6	27	57	2	50	20	4
15	Fr	4	22	12	44	9	4	49	14	5	15	53	5	26	54	7	0	24	16	18	20	13	6	4	27	56	2	50	20	1
16	Sa	4	23	10	22	9	19	4	1	5	16	5	5	28	6	7	1	1	16	10	20	11	6	1	27	54	2	50	19	57
17	Su	4	24	8	1	10	3	42	54	5	16	12	5	29	17	7	1	38	16	2	20	10	5	59	27	53	2	50	19	54
18	Mo	4	25	5	42	10	18	39	52	5	16	14	6	0	28	7	2	15	15	55	20	8	5	57	27	51	2	50	19	51
19	Tu	4	26	3	24	11	3	46	41	5	16	10	6	1	39	7	2	52	15	47	20	6	5	55	27	50	2	50	19	49
20	We	4	27	1	7	11	18	54	5	5	16	1	6	2	51	7	3	30	15	39	20	5	5	53	27	48	2	50	19	49
21	Th	4	27	58	51	0	3	53	11	5	15	46	6	4	2	7	4	7	15	32	20	3	5	50	27	47	2	51	19	49
22	Fr	4	28	56	38	0	18	36	40	5	15	25	6	5	13	7	4	45	15	25	20	1	5	48	27	46	2	51	19	50
23	Sa	4	29	54	25	1	2	59	36	5	14	58	6	6	24	7	5	23	15	17	19	59	5	46	27	44	2	51	19	51
24	Su	5	0	52	15	1	16	59	26	5	14	26	6	7	35	7	6	1	15	10	19	56	5	44	27	43	2	51	19	52
25	Mo	5	1	50	6	2	0	35	46	5	13	48	6	8	46	7	6	39	15	3	19	54	5	42	27	42	2	52	19	52
26	Tu	5	2	47	59	2	13	49	49	5	13	6	6	9	57	7	7	17	14	56	19	52	5	40	27	41	2	52	19	52
27	We	5	3	45	54	2	26	43	48	5	12	19	6	11	8	7	7	56	14	49	19	49	5	38	27	39	2	53	19	51
28	Th	5	4	43	51	3	9	20	25	5	11	28	6	12	19	7	8	34	14	42	19	47	5	36	27	38	2	53	19	49
29	Fr	5	5	41	49	3	21	42	32	5	10	35	6	13	29	7	9	13	14	35	19	44	5	34	27	37	2	54	19	47
30	Sa	5	6	39	49	4	3	52	53	5	9	39	6	14	40	7	9	51	14	28	19	41	5	32	27	36	2	54	19	45
31	Su	5	7	37	51	4	15	54	0	5	8	43	6	15	51	7	10	30	14	21	19	39	5	30	27	35	2	55	19	43

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.क. मध्यम राहु

Dt	MERCU बुध Si	D	M	VENUS शुक्र Si	D	M	EARTH पृथिवी Si	D	M	MARS मंगल Si	D	M	JUPITE गुरु Si	D	M	SATUR शनि Si	D	M	URAN हर्शल Si	D	M	NEPTU नेप्चून Si	D	M	PLUTO प्लूटो Si	D	M	RAHU मध्यम राहु Si	D	M
ति	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क
1	8	3	15	6	27	16	10	8	48	8	1	43	10	16	15	0	14	29	10	6	43	9	28	38	8	4	41	5	21	50
6	8	17	1	7	5	18	10	13	35	8	4	21	10	16	41	0	14	40	10	6	46	9	28	40	8	4	43	5	21	34
11	9	0	50	7	13	19	10	18	22	8	6	60	10	17	8	0	14	50	10	6	50	9	28	42	8	4	45	5	21	18
16	9	15	6	7	21	18	10	23	11	8	9	40	10	17	34	0	15	0	10	6	53	9	28	43	8	4	47	5	21	2
21	10	0	19	7	29	17	10	27	59	8	12	22	10	18	0	0	15	11	10	6	56	9	28	45	8	4	49	5	20	46
26	10	17	1	8	7	14	11	2	48	8	15	5	10	18	27	0	15	21	10	6	60	9	28	47	8	4	51	5	20	30
31	11	5	53	8	15	11	11	7	38	8	17	50	10	18	53	0	15	31	10	7	3	9	28	49	8	4	53	5	20	14

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU बुध La शर		De क्रा		VENU शुक्र La शर		De क्रा		MARS मंगल La शर		De क्रा		JUPIT गुरु La शर		De क्रा		SATUR शनि La शर		De क्रा		URANU यूरेनस La शर		De क्रा		NEPT नेप्चून La शर		De क्रा		PLUTO प्लूटो La शर		De क्रा	
ति	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	0S54		8N30		1N22		9N 1		0S24		8S56		0S57		16S18		2S33		5N35		0S39		19S14		0N25		20 S 5		12N36		8S21	
4	1S28		6S51		1S17		7S34		0S27		9S38		0S58		16S25		2S34		5S34		0S39		19S16		0S25		20S 6		12S35		8S22	
7	2	3	5	20	1	11	6	5	0	30	10	20	0	58	16	33	2	35	5	33	0	39	19	18	0	25	20	7	12	33	8	23
10	2	37	3	59	1	5	4	35	0	32	11	1	0	58	16	40	2	36	5	31	0	39	19	20	0	25	20	8	12	32	8	25
13	3	11	2	52	0	58	3	3	0	35	11	42	0	59	16	48	2	37	5	29	0	39	19	21	0	25	20	9	12	30	8	26
16	3	43	2	3	0	50	1	31	0	37	12	24	0	59	16	55	2	37	5	27	0	39	19	23	0	25	20	10	12	29	8	28
19	4	10	1	37	0	42	0S	1	0	39	13	4	0	59	17	2	2	38	5	25	0	39	19	25	0	25	20	11	12	27	8	29
22	4	29	1	36	0	33	1S	34	0	41	13	45	0	59	17	9	2	39	5	22	0	39	19	26	0	25	20	12	12	26	8	31
25	4	37	2	6	0	24	3	6	0	44	14	25	0	60	17	16	2	40	5	19	0	39	19	28	0	25	20	13	12	24	8	32
28	4S31		3S5		0S14		4S39		0S46		15S4		0S60		17S22		2S40		5S15		0S39		19S29		0S25		20S13		12S23		8S34	
31	4S 7		4N28		0N 3		6S11		0S48		15S43		0S60		17S28		2S41		5N12		0S39		19S31		0N24		20S14		12N21		8S36	

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृकसिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN सूर्य				GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र				MERCU बुध			VENUS शुक्र			MARS मंगल			JUPI गुरु कुंभ Aqua		SAT शनि मेष Aries		URA हर्श कुंभ Aqua		NEP. नेप् मक Capr		PLU प्लूट धनु Sagi		RAH रा कन्या Virg	
ति	वार	Si रा	D अं	M क	S वि	Si रा	D अं	M क	S वि	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	Mo	5	8	35	55	4	27	48	14	5	7	47	6	17	1	7	11	9	14	15	19	36	5	28	27	34	2	55	19	42
2	Tu	5	9	34	1	5	9	37	49	5	6	53	6	18	12	7	11	48	14	8	19	33	5	26	27	32	2	56	19	42
3	We	5	10	32	8	5	21	24	54	5	6	1	6	19	22	7	12	27	14	2	19	30	5	24	27	31	2	57	19	42
4	Th	5	11	30	17	6	3	11	48	5	5	13	6	20	33	7	13	7	13	56	19	27	5	23	27	30	2	57	19	42
5	Fr	5	12	28	27	6	15	1	2	5	4	30	6	21	43	7	13	46	13	50	19	23	5	21	27	29	2	58	19	43
6	Sa	5	13	26	39	6	26	55	27	5	3	53	6	22	53	7	14	26	13	44	19	20	5	19	27	28	2	59	19	43
7	Su	5	14	24	52	7	8	58	18	5	3	23	6	24	3	7	15	5	13	38	19	17	5	17	27	27	3	0	19	44
8	Mo	5	15	23	7	7	21	13	7	5	3	1	6	25	14	7	15	45	13	33	19	13	5	16	27	26	3	1	19	44
9	Tu	5	16	21	24	8	3	43	44	5	2	47	6	26	24	7	16	25	13	27	19	10	5	14	27	25	3	1	19	44
10	We	5	17	19	42	8	16	33	54	5	2	42	6	27	34	7	17	5	13	22	19	6	5	13	27	24	3	2	19	44
11	Th	5	18	18	1	8	29	47	2	5	2	46	6	28	44	7	17	45	13	17	19	2	5	11	27	24	3	3	19	44
12	Fr	5	19	16	22	9	13	25	38	5	2	59	6	29	53	7	18	25	13	12	18	59	5	10	27	23	3	4	19	44
13	Sa	5	20	14	45	9	27	30	40	5	3	21	7	1	3	7	19	5	13	7	18	55	5	8	27	22	3	5	19	44
14	Su	5	21	13	9	10	12	0	56	5	3	52	7	2	13	7	19	46	13	3	18	51	5	7	27	21	3	6	19	44
15	Mo	5	22	11	35	10	26	52	37	5	4	32	7	3	22	7	20	26	12	58	18	47	5	5	27	20	3	7	19	45
16	Tu	5	23	10	2	11	11	59	15	5	5	20	7	4	32	7	21	7	12	54	18	43	5	4	27	20	3	8	19	45
17	We	5	24	8	32	11	27	12	15	5	6	16	7	5	41	7	21	47	12	50	18	39	5	3	27	19	3	9	19	45
18	Th	5	25	7	3	0	12	21	60	5	7	19	7	6	51	7	22	28	12	46	18	35	5	1	27	18	3	11	19	45
19	Fr	5	26	5	36	0	27	19	17	5	8	30	7	7	60	7	23	9	12	42	18	31	5	0	27	17	3	12	19	44
20	Sa	5	27	4	12	1	11	56	34	5	9	46	7	9	9	7	23	50	12	38	18	27	4	59	27	17	3	13	19	43
21	Su	5	28	2	49	1	26	8	56	5	11	8	7	10	18	7	24	31	12	35	18	22	4	58	27	16	3	14	19	42
22	Mo	5	29	1	29	2	9	54	9	5	12	35	7	11	27	7	25	12	12	32	18	18	4	57	27	16	3	16	19	41
23	Tu	6	0	0	11	2	23	12	34	5	14	6	7	12	36	7	25	53	12	29	18	14	4	56	27	15	3	17	19	41
24	We	6	0	58	55	3	6	6	22	5	15	41	7	13	45	7	26	35	12	26	18	9	4	55	27	15	3	18	19	41
25	Th	6	1	57	41	3	18	38	59	5	17	19	7	14	53	7	27	16	12	23	18	5	4	54	27	14	3	20	19	41
26	Fr	6	2	56	30	4	0	54	30	5	18	60	7	16	2	7	27	58	12	20	18	1	4	53	27	14	3	21	19	43
27	Sa	6	3	55	21	4	12	57	6	5	20	42	7	17	11	7	28	39	12	18	17	56	4	52	27	13	3	22	19	44
28	Su	6	4	54	14	4	24	50	51	5	22	27	7	18	19	7	29	21	12	16	17	52	4	51	27	13	3	24	19	45
29	Mo	6	5	53	9	5	6	39	27	5	24	13	7	19	27	8	0	3	12	14	17	47	4	50	27	13	3	25	19	46
30	Tu	6	6	52	7	5	18	26	9	5	25	60	7	20	35	8	0	45	12	12	17	42	4	49	27	12	3	27	19	47
31	We	6	7	51	7	6	0	13	43	5	27	47	7	21	43	8	1	27	12	11	17	38	4	49	27	12	3	28	19	47

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.के. मध्यम राहु

Dt	MERCU बुध			VENUS शुक्र			EARTH पृथिवी			MARS मंगल			JUPITE गुरु			SATUR शनि			URAN हर्शल			NEPTU नेप्चून			PLUTO प्लूटो			RAHU मध्यम राहु		
ति	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क	Si रा	D अं	M क
1	11	9	58	8	16	46	11	8	36	8	18	23	10	18	58	0	15	33	10	7	4	9	28	49	8	4	53	5	20	11
6	0	2	24	8	24	42	11	13	27	8	21	9	10	19	25	0	15	44	10	7	7	9	28	51	8	4	55	5	19	55
11	0	28	28	9	2	37	11	18	18	8	23	57	10	19	51	0	15	54	10	7	10	9	28	53	8	4	57	5	19	39
16	1	28	2	9	10	32	11	23	10	8	26	47	10	20	18	0	16	4	10	7	14	9	28	55	8	4	59	5	19	24
21	2	29	28	9	18	26	11	28	3	8	29	37	10	20	44	0	16	15	10	7	17	9	28	56	8	5	1	5	19	8
26	3	29	57	9	26	21	0	2	57	9	2	29	10	21	11	0	16	25	10	7	20	9	28	58	8	5	3	5	18	52
1	4	27	11	10	4	15	0	7	51	9	5	23	10	21	37	0	16	36	10	7	24	9	29	0	8	5	5	5	18	36

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU बुध				VENU शुक				MARS मंगल				JUPIT गुरु				SATUR शनि				URANU यूरेनस				NEPT नेप्चून				PLUTO प्लूटो			
ति	La शर		De क्रा		La शर		De क्रा		La शर		De क्रा		La शर		De क्रा		La शर		De क्रा		La शर		De क्रा		La शर		De क्रा		La शर		De क्रा	
	अं	क'	अं०	क'	अं	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं	क'	अं	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'	अं०	क'
1	3S	55	5N	0	0S	0	6S	41	0S	48	15S	56	0S	60	17	30	2S	41	5N	10	0S	39	19S	31	0N	24	20S	14	12N	21	8S	36
4	3	11	6	38	0	11	8	11	0	50	16	34	0	60	17	35	2	42	5	6	0	39	19	32	0	24	20	15	12	20	8	38
7	2	16	8	8	0	22	9	40	0	52	17	11	0	60	17	40	2	42	5	2	0	39	19	34	0	24	20	16	12	18	8	40
10	1	19	9	17	0	34	11	7	0	54	17	47	0	60	17	45	2	43	4	58	0	39	19	35	0	24	20	16	12	17	8	42
13	0	24	9	54	0	45	12	32	0	55	18	22	0	60	17	49	2	43	4	53	0	39	19	36	0	24	20	17	12	15	8	44
16	0N	24	9	55	0	57	13	55	0	57	18	57	0	60	17	53	2	44	4	48	0	39	19	37	0	24	20	17	12	14	8	46
19	1	3	9	20	1	9	15	15	0	59	19	30	0	60	17	56	2	44	4	43	0	38	19	38	0	24	20	18	12	12	8	48
22	1	29	8	12	1	21	16	33	1	0	20	2	0	59	17	59	2	45	4	38	0	38	19	38	0	24	20	18	12	11	8	50
25	1	45	6	37	1	33	17	46	1	2	20	32	0	59	18	1	2	45	4	33	0	38	19	39	0	24	20	19	12	10	8	52
28	1	52	4	42	1	45	18	57	1	3	21	1	0	59	18	3	2	45	4	27	0	38	19	40	0	24	20	19	12	8	8	54
1	1N	52	2N	35	1S	56	20S	4	1S	4	21S	29	0S	59	18	4	2S	45	4N	22	0S	38	19S	40	0N	24	20S	19	12N	7	8S	56

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृकसिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN				GEO.MOON				MERCU			VENUS			MARS			JUPI		SAT		URA		NEP.		PLU		RAH	
		सूर्य				भूकेन्द्रीय चन्द्र				बुध			शुक्र			मंगल			गुरु कुंभ		शनि मेष		हर्श कुंभ		नेप् मक		प्लूट धनु		रा कन्या	
		Si	D	M	S	Si	D	M	S	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Aqua		Aries		Aqua		Capr		Sagi		Virg	
ति	वार	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	We	6	7	51	7	6	0	13	43	5	27	47	7	21	43	8	1	27	12	11	17	38	4	49	27	12	3	28	19	47
2	Th	6	8	50	8	6	12	4	33	5	29	35	7	22	51	8	2	9	12	9	17	33	4	48	27	12	3	30	19	45
3	Fr	6	9	49	12	6	24	0	42	6	1	23	7	23	59	8	2	51	12	8	17	28	4	48	27	11	3	31	19	43
4	Sa	6	10	48	18	7	6	4	6	6	3	11	7	25	7	8	3	33	12	7	17	24	4	47	27	11	3	33	19	40
5	Su	6	11	47	26	7	18	16	36	6	4	58	7	26	15	8	4	16	12	7	17	19	4	46	27	11	3	35	19	36
6	Mo	6	12	46	35	8	0	40	12	6	6	46	7	27	22	8	4	58	12	6	17	14	4	46	27	11	3	36	19	32
7	Tu	6	13	45	46	8	13	17	3	6	8	33	7	28	29	8	5	41	12	6	17	10	4	46	27	11	3	38	19	29
8	We	6	14	44	59	8	26	9	27	6	10	20	7	29	37	8	6	24	12	6	17	5	4	45	27	11	3	40	19	27
9	Th	6	15	44	14	9	9	19	48	6	12	6	8	0	44	8	7	6	12	6	17	0	4	45	27	11	3	41	19	25
10	Fr	6	16	43	31	9	22	50	12	6	13	51	8	1	50	8	7	49	12	6	16	55	4	45	27	11	3	43	19	26
11	Sa	6	17	42	49	10	6	42	12	6	15	36	8	2	57	8	8	32	12	6	16	51	4	45	27	11	3	45	19	27
12	Su	6	18	42	9	10	20	56	6	6	17	20	8	4	4	8	9	15	12	7	16	46	4	44	27	11	3	47	19	28
13	Mo	6	19	41	31	11	5	30	28	6	19	3	8	5	10	8	9	58	12	8	16	41	4	44	27	11	3	48	19	30
14	Tu	6	20	40	55	11	20	21	36	6	20	46	8	6	16	8	10	41	12	9	16	36	4	44	27	11	3	50	19	30
15	We	6	21	40	20	0	5	23	23	6	22	28	8	7	22	8	11	24	12	10	16	32	4	44	27	11	3	52	19	29
16	Th	6	22	39	48	0	20	27	45	6	24	10	8	8	28	8	12	8	12	12	16	27	4	44	27	12	3	54	19	27
17	Fr	6	23	39	17	1	5	25	33	6	25	51	8	9	34	8	12	51	12	13	16	22	4	44	27	12	3	56	19	23
18	Sa	6	24	38	49	1	20	8	5	6	27	31	8	10	39	8	13	35	12	15	16	18	4	45	27	12	3	58	19	17
19	Su	6	25	38	23	2	4	28	20	6	29	10	8	11	45	8	14	18	12	17	16	13	4	45	27	13	4	0	19	12
20	Mo	6	26	37	59	2	18	21	56	7	0	49	8	12	50	8	15	2	12	19	16	8	4	45	27	13	4	2	19	6
21	Tu	6	27	37	37	3	1	47	23	7	2	27	8	13	55	8	15	45	12	22	16	4	4	45	27	13	4	4	19	2
22	We	6	28	37	17	3	14	45	51	7	4	4	8	14	59	8	16	29	12	24	15	59	4	46	27	14	4	6	19	0
23	Th	6	29	36	60	3	27	20	24	7	5	41	8	16	4	8	17	13	12	27	15	55	4	46	27	14	4	8	18	59
24	Fr	7	0	36	44	4	9	35	26	7	7	18	8	17	8	8	17	57	12	30	15	50	4	47	27	15	4	10	18	59
25	Sa	7	1	36	32	4	21	35	56	7	8	54	8	18	12	8	18	41	12	33	15	46	4	47	27	15	4	12	19	0
26	Su	7	2	36	21	5	3	27	4	7	10	29	8	19	16	8	19	25	12	37	15	41	4	48	27	16	4	14	19	2
27	Mo	7	3	36	13	5	15	13	46	7	12	4	8	20	19	8	20	9	12	40	15	37	4	48	27	16	4	16	19	3
28	Tu	7	4	36	6	5	27	0	29	7	13	38	8	21	22	8	20	53	12	44	15	32	4	49	27	17	4	18	19	3
29	We	7	5	36	2	6	8	50	59	7	15	11	8	22	25	8	21	38	12	48	15	28	4	50	27	18	4	20	19	0
30	Th	7	6	36	0	6	20	48	20	7	16	45	8	23	28	8	22	22	12	52	15	24	4	50	27	18	4	22	18	56
31	Fr	7	7	35	60	7	2	54	46	7	18	17	8	24	30	8	23	7	12	57	15	20	4	51	27	19	4	25	18	49

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.क. मध्यम राहु

Dt	MERCU			VENUS			EARTH			MARS			JUPITE			SATUR			URAN			NEPTU			PLUTO			RAHU		
	बुध			शुक्र			पृथिवी			मंगल			गुरु			शनि			हर्शल			नेप्चून			प्लूटो			मध्यम राहु		
ति	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M
	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क
1	4	27	11	10	4	15	0	7	51	9	5	23	10	21	37	0	16	36	10	7	24	9	29	0	8	5	5	5	18	36
6	5	20	28	10	12	9	0	12	47	9	8	18	10	22	3	0	16	46	10	7	27	9	29	2	8	5	7	5	18	20
11	6	10	22	10	20	4	0	17	43	9	11	14	10	22	30	0	16	56	10	7	30	9	29	4	8	5	9	5	18	4
16	6	27	42	10	27	59	0	22	40	9	14	12	10	22	56	0	17	7	10	7	33	9	29	5	8	5	11	5	17	48
21	7	13	16	11	5	54	0	27	38	9	17	11	10	23	23	0	17	17	10	7	37	9	29	7	8	5	13	5	17	32
26	7	27	44	11	13	50	1	2	37	9	20	11	10	23	50	0	17	27	10	7	40	9	29	9	8	5	15	5	17	17
31	8	11	37	11	21	46	1	7	36	9	23	12	10	24	16	0	17	38	10	7	43	9	29	11	8	5	17	5	17	1

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU		बुध		VENU		शुक		MARS		मंगल		JUPIT		गुरु		SATUR		शनि		URANU		यूरेनस		NEPT		नेप्चून		PLUTO		प्लूटो	
ति	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	का	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा
	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'
1	1N	52	2N	35	1S	56	20S	4	1S	4	21S	29	0S	59	18S	4	2S	45	4N	22	0S	38	19S	40	0N	24	20S	19	12N	7	8S	56
4	1S	45	0S	20	2S	8	21S	6	1S	5	21S	55	0S	59	18S	5	2S	46	4S	16	0S	38	19S	40	0S	24	20S	19	12S	6	8S	58
7	1	34	1S	56	2	19	22	4	1	7	22	20	0	58	18	5	2	46	4	11	0	38	19	41	0	24	20	20	12	5	9	0
10	1	20	4S	14	2	30	22	58	1	8	22	43	0	58	18	5	2	46	4	5	0	38	19	41	0	24	20	20	12	4	9	2
13	1	3	6	29	2	40	23	46	1	9	23	4	0	58	18	4	2	46	4	0	0	38	19	41	0	23	20	20	12	3	9	4
16	0	45	8	40	2	50	24	30	1	10	23	23	0	58	18	3	2	46	3	55	0	38	19	41	0	23	20	20	12	2	9	6
19	0	25	10	47	2	59	25	8	1	10	23	40	0	57	18	1	2	46	3	49	0	38	19	41	0	23	20	20	12	1	9	8
22	0	5	12	48	3	7	25	41	1	11	23	55	0	57	17	59	2	45	3	44	0	38	19	40	0	23	20	19	11	60	9	10
25	0S	16	14	42	3	14	26	8	1	12	24	9	0	57	17	56	2	45	3	39	0	38	19	40	0	23	20	19	11	59	9	12
28	0S	36	16S	29	3S	21	26S	29	1S	13	24S	19	0S	57	17S	53	2S	45	3N	34	0S	37	19S	39	0S	23	20S	19	11N	58	9S	14
31	0S	55	18S	9	3S	27	26S	45	1S	13	24S	28	0S	56	17S	49	2S	45	3N	30	0S	37	19S	39	0N	23	20S	19	11N	57	9S	16

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृकसिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN सूर्य				GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र				MERCU बुध			VENUS शुक्र			MARS मंगल			JUPI गुरु कुंभ Aqua		SAT शनि मेष Aries		URA हर्श कुंभ Aqua		NEP. नेप् मक Capr		PLU प्लूट धनु Sagi		RAH रा कन्या Virg	
		Si	D	M	S	Si	D	M	S	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M													
ति	वार	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	Sa	7	8	36	2	7	15	11	46	7	19	50	8	25	33	8	23	51	13	1	15	16	4	52	27	20	4	27	18	40
2	Su	7	9	36	5	7	27	40	9	7	21	22	8	26	34	8	24	36	13	6	15	11	4	53	27	20	4	29	18	31
3	Mo	7	10	36	11	8	10	20	22	7	22	53	8	27	36	8	25	20	13	11	15	7	4	54	27	21	4	31	18	21
4	Tu	7	11	36	18	8	23	12	36	7	24	24	8	28	37	8	26	5	13	16	15	3	4	55	27	22	4	33	18	12
5	We	7	12	36	27	9	6	17	7	7	25	54	8	29	38	8	26	50	13	21	14	59	4	56	27	23	4	36	18	5
6	Th	7	13	36	37	9	19	34	23	7	27	25	9	0	38	8	27	35	13	26	14	56	4	57	27	24	4	38	18	0
7	Fr	7	14	36	49	10	3	5	8	7	28	54	9	1	38	8	28	20	13	32	14	52	4	58	27	25	4	40	17	57
8	Sa	7	15	37	2	10	16	50	14	8	0	23	9	2	38	8	29	5	13	38	14	48	4	60	27	26	4	42	17	57
9	Su	7	16	37	17	11	0	50	18	8	1	52	9	3	37	8	29	50	13	44	14	44	5	1	27	27	4	45	17	58
10	Mo	7	17	37	33	11	15	5	13	8	3	20	9	4	36	9	0	35	13	50	14	41	5	2	27	28	4	47	17	58
11	Tu	7	18	37	51	11	29	33	35	8	4	48	9	5	34	9	1	20	13	56	14	37	5	4	27	29	4	49	17	58
12	We	7	19	38	10	0	14	12	7	8	6	15	9	6	32	9	2	5	14	2	14	34	5	5	27	30	4	51	17	55
13	Th	7	20	38	31	0	28	55	38	8	7	42	9	7	30	9	2	50	14	9	14	31	5	6	27	31	4	54	17	49
14	Fr	7	21	38	53	1	13	37	14	8	9	8	9	8	27	9	3	36	14	16	14	27	5	8	27	32	4	56	17	41
15	Sa	7	22	39	17	1	28	9	15	8	10	34	9	9	23	9	4	21	14	22	14	24	5	9	27	33	4	58	17	31
16	Su	7	23	39	42	2	12	24	32	8	11	58	9	10	19	9	5	7	14	30	14	21	5	11	27	35	5	1	17	20
17	Mo	7	24	40	10	2	26	17	33	8	13	22	9	11	14	9	5	52	14	37	14	18	5	13	27	36	5	3	17	9
18	Tu	7	25	40	38	3	9	45	11	8	14	45	9	12	9	9	6	38	14	44	14	15	5	14	27	37	5	5	17	0
19	We	7	26	41	9	3	22	46	56	8	16	7	9	13	3	9	7	23	14	52	14	12	5	16	27	39	5	8	16	53
20	Th	7	27	41	41	4	5	24	40	8	17	29	9	13	57	9	8	9	14	59	14	9	5	18	27	40	5	10	16	48
21	Fr	7	28	42	15	4	17	41	60	8	18	48	9	14	50	9	8	55	15	7	14	7	5	20	27	41	5	12	16	46
22	Sa	7	29	42	51	4	29	43	46	8	20	7	9	15	42	9	9	41	15	15	14	4	5	22	27	43	5	15	16	45
23	Su	8	0	43	29	5	11	35	24	8	21	24	9	16	34	9	10	26	15	23	14	2	5	24	27	44	5	17	16	45
24	Mo	8	1	44	8	5	23	22	31	8	22	39	9	17	24	9	11	12	15	31	13	59	5	26	27	45	5	19	16	45
25	Tu	8	2	44	49	6	5	10	29	8	23	52	9	18	14	9	11	58	15	40	13	57	5	28	27	47	5	22	16	43
26	We	8	3	45	31	6	17	4	12	8	25	3	9	19	4	9	12	44	15	48	13	55	5	30	27	48	5	24	16	40
27	Th	8	4	46	15	6	29	7	45	8	26	12	9	19	52	9	13	30	15	57	13	53	5	32	27	50	5	27	16	33
28	Fr	8	5	47	1	7	11	24	13	8	27	17	9	20	40	9	14	16	16	6	13	50	5	34	27	51	5	29	16	24
29	Sa	8	6	47	48	7	23	55	28	8	28	19	9	21	27	9	15	3	16	15	13	49	5	36	27	53	5	31	16	12
30	Su	8	7	48	36	8	6	42	8	8	29	17	9	22	12	9	15	49	16	24	13	47	5	38	27	55	5	34	15	58
31	Mo	8	8	49	26	8	19	43	42	8	0	11	9	22	57	9	16	35	16	33	13	45	5	40	27	56	5	36	15	45

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.के. मध्यम राहु

Dt	MERCU बुध			VENUS शुक्र			EARTH पृथिवी			MARS मंगल			JUPITE गुरु			SATUR शनि			URAN हर्शल			NEPTU नेप्चून			PLUTO प्लूटो			RAHU मध्यम राहु		
	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M
ति	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क
1	8	14	22	11	23	22	1	8	36	9	23	49	10	24	21	0	17	40	10	7	44	9	29	11	8	5	18	5	16	57
6	8	28	8	0	1	18	1	13	37	9	26	51	10	24	48	0	17	50	10	7	47	9	29	13	8	5	20	5	16	42
11	9	12	17	0	9	16	1	18	38	9	29	55	10	25	15	0	18	1	10	7	51	9	29	15	8	5	22	5	16	26
16	9	27	17	0	17	14	1	23	40	10	3	0	10	25	41	0	18	11	10	7	54	9	29	17	8	5	24	5	16	10
21	10	13	39	0	25	13	1	28	43	10	6	6	10	26	8	0	18	22	10	7	57	9	29	18	8	5	26	5	15	54
26	11	2	1	1	3	12	2	3	46	10	9	12	10	26	34	0	18	32	10	8	1	9	29	20	8	5	28	5	15	38
1	11	23	10	1	11	12	2	8	50	10	12	20	10	27	1	0	18	42	10	8	4	9	29	22	8	5	30	5	15	22

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्राय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU बुध		VENU शुक्र		MARS मंगल		JUPIT गुरु		SATUR शनि		URANU यूरेनस		NEPT नेप्चून		PLUTO प्लूटो	
ति	La शर	De क्रा	La शर	De क्रा	La शर	De क्रा	La शर	De क्रा	La शर	De क्रा	La शर	De क्रा	La शर	De क्रा	La शर	De क्रा
	अं क'	अं० क'	अं क'	अं० क'	अं० क'	अं० क'	अं० क'	अं० क'	अं क'	अं० क'	अं० क'	अं० क'	अं० क'	अं० क'	अं० क'	अं० क'
1	1S2	18S41	3S28	26S49	1S13	24S31	0S56	17S48	2S44	3N28	0S37	19S38	0N23	20S18	11N57	9S16
4	1S20	20S10	3S32	26S57	1S14	24S36	0S56	17S43	2S44	3S24	0S37	19S38	0S23	20S18	11S56	9S18
7	1 38	21 29	3 35	27 0	1 14	24 39	0 56	17 38	2 44	3 20	0 37	19 37	0 23	20 18	11 55	9 20
10	1 53	22 40	3 36	26 57	1 15	24 40	0 55	17 33	2 43	3 16	0 37	19 36	0 23	20 17	11 55	9 21
13	2 7	23 40	3 36	26 49	1 15	24 39	0 55	17 27	2 43	3 13	0 37	19 35	0 23	20 16	11 54	9 23
16	2 18	24 30	3 35	26 36	1 15	24 35	0 55	17 21	2 42	3 10	0 37	19 34	0 23	20 16	11 54	9 25
19	2 26	25 8	3 31	26 18	1 15	24 29	0 55	17 14	2 41	3 7	0 37	19 32	0 23	20 15	11 53	9 26
22	2 31	25 34	3 26	25 55	1 16	24 20	0 54	17 7	2 41	3 4	0 37	19 31	0 23	20 14	11 53	9 28
25	2 30	25 47	3 19	25 28	1 16	24 9	0 54	16 59	2 40	3 2	0 37	19 29	0 23	20 14	11 53	9 29
28	2S24	25S48	3S 9	24S57	1S16	23S55	0S54	16S51	2S39	3S 0	0S37	19S28	0S22	20S13	11S52	9S31
1	2S10	25S36	2S57	24S23	1S15	23S39	0S54	16S43	2S39	2N59	0S37	19S26	0N22	20S12	11N52	9S32

APPAPRENT GEOCENTRIC VEDIC (TROPICAL) PLANETS & TRUE RAHU AT 5-30 AM IST

भूकेन्द्रीय दृकसिद्ध वैदिक सायन ग्रह स्पष्ट व स्पष्ट राहु विश्व समय मध्य रात्रि अर्थात् प्रातः ५घं ३० मि भा.स्टै. टाईम

Dt	Dy	SUN सूर्य				GEO.MOON भूकेन्द्रीय चन्द्र				MERCU बुध			VENUS शुक्र			MARS मंगल			JUPI गुरु कुंभ Aqua		SAT शनि मेष Aries		URA हर्श कुंभ Aqua		NEP. नेप मक Capr		PLU प्लूट धनु Sagi		RAH रा कन्या Virg	
		Si	D	M	S	Si	D	M	S	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M													
ति	वार	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
1	Mo	8	8	49	26	8	19	43	42	9	0	11	9	22	57	9	16	35	16	33	13	45	5	40	27	56	5	36	15	45
2	Tu	8	9	50	16	9	2	58	42	9	0	59	9	23	41	9	17	21	16	42	13	43	5	43	27	58	5	38	15	32
3	We	8	10	51	8	9	16	25	14	9	1	42	9	24	24	9	18	8	16	52	13	42	5	45	27	60	5	41	15	21
4	Th	8	11	52	0	10	0	1	20	9	2	18	9	25	6	9	18	54	17	2	13	41	5	47	28	1	5	43	15	13
5	Fr	8	12	52	54	10	13	45	28	9	2	47	9	25	46	9	19	40	17	11	13	39	5	50	28	3	5	45	15	9
6	Sa	8	13	53	48	10	27	36	39	9	3	8	9	26	26	9	20	27	17	21	13	38	5	52	28	5	5	48	15	7
7	Su	8	14	54	43	11	11	34	27	9	3	20	9	27	4	9	21	13	17	31	13	37	5	55	28	7	5	50	15	6
8	Mo	8	15	55	39	11	25	38	37	9	3	22	9	27	41	9	21	60	17	41	13	36	5	57	28	8	5	52	15	6
9	Tu	8	16	56	35	0	9	48	40	9	3	13	9	28	16	9	22	46	17	51	13	35	5	60	28	10	5	55	15	5
10	We	8	17	57	32	0	24	3	14	9	2	54	9	28	50	9	23	33	18	2	13	34	6	2	28	12	5	57	15	2
11	Th	8	18	58	30	1	8	19	46	9	2	23	9	29	23	9	24	20	18	12	13	34	6	5	28	14	5	59	14	55
12	Fr	8	19	59	28	1	22	34	23	9	1	40	9	29	54	9	25	6	18	23	13	33	6	8	28	16	6	2	14	46
13	Sa	8	21	0	27	2	6	42	9	9	0	47	10	0	24	9	25	53	18	34	13	33	6	10	28	18	6	4	14	34
14	Su	8	22	1	27	2	20	37	52	8	29	44	10	0	52	9	26	40	18	44	13	32	6	13	28	19	6	6	14	21
15	Mo	8	23	2	28	3	4	16	52	8	28	32	10	1	18	9	27	27	18	55	13	32	6	16	28	21	6	9	14	9
16	Tu	8	24	3	29	3	17	35	50	8	27	14	10	1	42	9	28	13	19	6	13	32	6	19	28	23	6	11	13	57
17	We	8	25	4	31	4	0	33	18	8	25	52	10	2	5	9	29	0	19	17	13	32	6	22	28	25	6	13	13	48
18	Th	8	26	5	34	4	13	9	48	8	24	29	10	2	25	9	29	47	19	28	13	32	6	24	28	27	6	15	13	42
19	Fr	8	27	6	37	4	25	27	38	8	23	8	10	2	44	10	0	34	19	40	13	32	6	27	28	29	6	18	13	38
20	Sa	8	28	7	42	5	7	30	33	8	21	51	10	3	1	10	1	21	19	51	13	33	6	30	28	31	6	20	13	36
21	Su	8	29	8	47	5	19	23	20	8	20	40	10	3	15	10	2	8	20	3	13	33	6	33	28	33	6	22	13	36
22	Mo	9	0	9	53	6	1	11	21	8	19	39	10	3	28	10	2	55	20	14	13	34	6	36	28	35	6	24	13	36
23	Tu	9	1	11	0	6	13	0	10	8	18	47	10	3	38	10	3	42	20	26	13	34	6	39	28	37	6	27	13	36
24	We	9	2	12	8	6	24	55	18	8	18	5	10	3	46	10	4	29	20	38	13	35	6	42	28	40	6	29	13	33
25	Th	9	3	13	16	7	7	1	46	8	17	34	10	3	52	10	5	16	20	50	13	36	6	45	28	42	6	31	13	28
26	Fr	9	4	14	25	7	19	23	45	8	17	15	10	3	55	10	6	3	21	1	13	37	6	48	28	44	6	33	13	21
27	Sa	9	5	15	34	8	2	4	18	8	17	5	10	3	56	10	6	50	21	14	13	38	6	51	28	46	6	35	13	11
28	Su	9	6	16	44	8	15	4	51	8	17	5	10	3	55	10	7	37	21	26	13	39	6	54	28	48	6	37	12	59
29	Mo	9	7	17	54	8	28	25	12	8	17	14	10	3	51	10	8	24	21	38	13	41	6	58	28	50	6	40	12	48
30	Tu	9	8	19	4	9	12	3	21	8	17	32	10	3	44	10	9	12	21	50	13	42	7	1	28	52	6	42	12	36
31	We	9	9	20	15	9	25	55	58	8	17	57	10	3	35	10	9	59	22	3	13	44	7	4	28	54	6	44	12	27

HELIOCENTRIC TROPICAL PLANETS & GEO. MEAN RAHU सूर्यकेन्द्रीय सायन ग्रह व भू.के. मध्यम राहु

Dt	MERCU बुध			VENUS शुक्र			EARTH पृथिवी			MARS मंगल			JUPITE गुरु			SATUR शनि			URAN हर्शल			NEPTU नेप्चून			PLUTO प्लूटो			RAHU मध्यम राहु		
	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M	Si	D	M
ति	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क	रा	अं	क
1	11	23	10	1	11	12	2	8	50	10	12	20	10	27	1	0	18	42	10	8	4	9	29	22	8	5	30	5	15	22
6	0	17	45	1	19	13	2	13	54	10	15	28	10	27	28	0	18	53	10	8	7	9	29	24	8	5	32	5	15	6
11	1	16	3	1	27	14	2	18	59	10	18	37	10	27	55	0	19	3	10	8	11	9	29	26	8	5	34	5	14	50
16	2	17	2	2	5	16	2	24	4	10	21	46	10	28	21	0	19	14	10	8	14	9	29	27	8	5	36	5	14	34
21	3	18	15	2	13	19	2	29	9	10	24	56	10	28	48	0	19	24	10	8	17	9	29	29	8	5	38	5	14	19
26	4	16	56	2	21	23	3	4	15	10	28	6	10	29	15	0	19	34	10	8	20	9	29	31	8	5	40	5	14	3
31	5	11	45	2	29	27	3	9	21	11	1	16	10	29	41	0	19	45	10	8	24	9	29	33	8	5	42	5	13	47

GEOCENTRIC LATITUDES AND DECLINATIONS भूकेन्द्रीय शर तथा क्रान्ति

Dt	MERCU बुध				VENU शुक				MARS मंगल				JUPIT गुरु				SATUR शनि				URANU यूरेनस				NEPT नेप्चून				PLUTO प्लूटो			
ति	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	का	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा	La	शर	De	क्रा
	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'	अं	क'
1	2S10	25S36			2S57	24S23			1S15	23S39			0S54	16S43			2S39	2N59			0S37	19S26			0N22	20S12			11N52	9S32		
4	1S47	25S11			2S43	23S46			1S15	23S20			0S54	16S34			2S38	2S58			0S37	19S24			0S22	20S11			11S52	9S33		
7	1	12	24	35	2	26	23	7	1	15	22	59	0	53	16	25	2	37	2	57	0	37	19	22	0	22	20	10	11	52	9	35
10	0	25	23	49	2	6	22	26	1	15	22	36	0	53	16	15	2	36	2	57	0	36	19	20	0	22	20	9	11	52	9	36
13	0N32	22	54		1	43	21	44	1	14	22	10	0	53	16	6	2	36	2	57	0	36	19	18	0	22	20	8	11	52	9	37
16	1S32	21	53		1	16	21	0	1	14	21	43	0	53	15	55	2	35	2	57	0	36	19	16	0	22	20	7	11	52	9	38
19	2	22	20	54	0	46	20	17	1	13	21	13	0	53	15	45	2	34	2	58	0	36	19	14	0	22	20	6	11	52	9	39
22	2	53	20	9	0	13	19	35	1	13	20	40	0	53	15	34	2	33	2	59	0	36	19	12	0	22	20	4	11	53	9	40
25	3	3	19	49	0N24		18	53	1	12	20	6	0	52	15	22	2	32	3	1	0	36	19	10	0	22	20	3	11	53	9	40
28	2S56	19S53			1S5		18S13		1S11		19S30		0S52		15S10		2S32		3S3		0S36		19S7		0S22		20S2		11S53		9S41	
31	2N40	20S14			1N48		17S35		1S10		18S52		0S52		14S58		2S31		3N5		0S36		19S5		0N22		20S1		11N54		9S42	

१९९७ के ग्रहण ;भा. मा. समय में		ECLIPSES IN 1997 (all timings in IST)				
संख्या	1	2	3	4		No.
Eclipse	Total	Partial	Partial	Total		Eclipse
Type	solar	Lunar	Solar	Lunar		Type
ग्रहण प्रकार	पूर्ण सूर्य	खण्ड. चन्द्र	खण्ड. सूर्य	पूर्ण चन्द्र		Eclipse Type
अंग्रेज़ी तिथि	९/३/१९९७	२४/३/९७	२/९/१९९७	१९/९/९७		Date
समय;भा. मा. समयद्ध	घ मि	घ मि	घ मि	घ मि		Time (IST)
ग्रहण स्पर्श	४घ ४७मि	७घ ११मि	३घ १मि	२२घ ३८मि		Eclipse begins
ग्रहण सम्मीलन	६घ १३मि	८घ २८मि		२३घ ४५मि		Tot/An/Par. begins
ग्रहण मध्य	६घ ५४मि	१०घ ६मि	५घ ३३मि	२४घ १६मि		Greatest Eclipse
ग्रहण उन्मीलन	७घ ३४मि	११घ ५१मि		२४घ ४८मि		Total/Anu./Par. ends
ग्रहण मोक्ष	९घ १मि	१३घ ८मि	७घ ५३मि	२५घ ५५मि		Eclipse ends
ग्रहण पर्वमान	४घ १४मि	५घ ५७मि	४घ ३९मि	३घ १७मि		Total Duration
ग्रहण परमग्रास/अवधि	०.७२/ २.८	.६२	०.९/०.२	.१२		Magnitude/max.durati
पूर्णिमान्त/अमान्त समय	९घ ४५मि	१०घ १५मि	५घ २२मि	२४घ २मि		New/Full Moon(IST)
सूर्य विषुव;घ/मि/ सेद्ध	७घ २४मि	९घ ५०मि	९घ १०मि	२४घ ५मि		Sun's RA in (HMS)
विषुव युति/प्रतियुति	२३९१७९४९	०९१३९१०	१०९४३९२९	११९३७९४३		Conj/Opp.in RA (IST
सूर्यका क्षैतिज परमलंबन	८.८९वि	८.८२वि	८.७२वि	८.७५वि		Eq.hor.par.of sun
चान्द्र क्षैतिज परमलंबन	९१क १३वि	५४क ३१वि	५३क ५९वि	९१क २५वि		Eq. hor.par.of Moon
सूर्य-बिम्बार्द्ध;क/वि	१९क ८वि	१९क ४वि	१५क ५३वि	१५क ५९वि		Sun's semi-diamet.
चन्द्र-बिम्बार्द्ध	१९क ४१वि	१४क ५१वि	१४क ४३वि	१९क ४४वि		Moon's semi-diamet
सायन चन्द्र स्पष्ट	३४८अ ३७क	१८अ ३२क	१५९अ ३९क	३५३अ ५३क		Moon's Tropical long
निरयण चन्द्र स्पष्ट	३२४अ ४८क	१५९अ ४३क	१३५अ ५०क	३३०अ ४क		Moon's side. long
निरयण ग्रहण राशि	कुम्भ	कन्या	सिंह	मीन		Eclipse Rasi, side
ग्रहण नक्षत्र	पूभा	उफा	पूफा	पूभा		Eclipse Nakshatra
चन्द्र शर	० उ ५९	० उ २७	० द ५९	० द २३		Moon's latitude
चन्द्र क्रान्ति	३ द ३९	१ द ०	७ उ ९	२ द ४७		Moon's declination
सूर्य क्रान्ति	४ द ३२	१ उ २९	७ द ५९	२ उ २५		Sun's declination
चन्द्र व स्पष्ट राहु अन्तर	१९९अ ५५क	४अ ४७क	३४९अ ५७क	१८४अ ८क		Moon minus True Rahu
सारोस संख्या	१२०	२९	१२५	३२		Saros No.
भारत में दृश्य/अदृश्य	कहीं कहीं	नहीं	नहीं	हाँ		Visibility in India

१)मार्च ९, १९९७ का खग्रास सूर्य ग्रहण : ग्रहण युक्त सूर्योदय भारतवर्ष मे इन स्थानों पर होगा जहा से यह अंशतः दिखा देगा :इलाहाबाद,पटना,वाराणसी, अगरतला, भुवनेश्वर, कलकत्ता, दारजीलिंग, इम्पफाल, कोहिमा, पोर्ट ब्लेर, पुरी, शीलांग आदि। क्योंकि इस ग्रहण का पराकाष्ठा बिन्दु स्वतंत्र भारत के जन्मांग मे किसी ग्रह से कोई कोण नहीं बनाता है अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। २) मार्च २४, १९९७ का खण्डग्रास चन्द्रग्रहण :यह ग्रहण न तो भारत में कहीं दृश्य है और न ही इस ग्रहण का पराका ष्ठा बिन्दु भारत के जन्मांग में किसी ग्रह से कोई योग बनाता है। अतः इस ग्रहण का भी कोई प्रभाव नहीं है। ३) सितम्बर २, १९९७ का खण्डग्रास सूर्य ग्रहण :यह ग्रहण भी भारत में दृश्य नहीं है न उसके जन्मांग से कोई कोण बनाता है। ४) सितम्बर १९, १९९७ का पूर्ण चन्द्रग्रहण : यह ग्रहण लगभग सारे भारतवर्ष से दृश्य है परन्तु क्योंकि इस का पराकाष्ठा बिन्दु भारत के जन्मांग से कोई कोण नहीं बनाता है, अतः इसका भी कोई विशेष महत्व नहीं है

1997 का तिथिपत्रा अर्थात् भिन्न-भिन्न मासों की प्रारम्भ तिथियां

नीचे हम भारत के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में प्रचलित प्रथाओं के अनुसार मासों की प्रारम्भ तिथियाँ दे रहे हैं। यद्यपि मधु, माधव आदि वैदिक मासों को छोड़कर शेष सब मासों की प्रारम्भ तिथियां वेदों तथा धर्मशास्त्रों के विरुद्ध "लाहिरी-सरकारी" निरयण संक्रान्तियों के आधार पर ही निर्धारित की गई हैं ऐसा केवल रूढ़िग्रस्त जनता की परम्पराओं को ध्यान में रखकर ही किया गया है क्योंकि तथाकथित "वैदिक ज्योतिषियों" को अभी वास्तविक वैदिक अर्थात् सायन पद्धति रुढ़ नहीं होरही है कारण कि वह तब लोगों को मूर्ख नहीं बना पाएंगे अतः वह जनसाधारण को यथार्थ से अवगत कराना ही नहीं चाहते हैं कि कहीं उनकी पोल न खुल जाए कि वह इतने दिनों तक लोगों को मूर्ख कैसे बना रहे थे "सही फलित" बता कर! पर वह ऐसा अब ज़्यादा दिनों तक नहीं कर पाएंगे। राष्ट्रीय शक संवत् तथा पंजाब, दिल्ली व उड़ीसा आदि में प्रचलित विक्रमी तिथियां व पूर्णिमान्त (गौणमान)से प्रचलित चान्द्रमास व महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल व द.भारत में प्रचलित अमान्त चान्द्र मास (मुख्यमान) दोनों ही दिए गए हैं।

सं	वैदिक	विक्रमी(पंजा. उप्र.	तामिलनाडु	केरल	बंगाल व आसाम	चान्द्र अमा. मुख्यमान	चान्द्र पूर्णिमान्त गौण
1	तपस्या (21/1)	माघ (13/1)	थाई (14/1)	मकर (14/1)	माघ (14/1)	पौष शुक्ल (10/1	माघ कृष्ण (24/1
2	मधु (19/2)	फाल्गुन (12/2	मसि (12/2)	कुम्भ (13/2)	फाल्गुण (13/2	माघ शक्लु (8/2	फाल्गु कृ (23/2
3	माधव (21/3)	चैत्र (14/3)	पंगुणि (14/3)	मीन (15/3)	चैत्र (15/3)	फाल्गुन शु (10/3	चैत्र कृष्ण (25/3
4	शुक्र (21/4)	वैशाख (13/4)	चितिराइ(14/4)	मेष (14/4)	वैशाख (14/4)	चैत्र शुक्ल (8/4	वैशाख कृ (23/4
5	शुचि (22/5)	ज्येष्ठ (14/5)	वैकाशी (15/5)	वृष (15/5)	ज्येष्ठ (15/5)	वैशाख शु (7/5	ज्येष्ठ कृ (23/5
6	नभस्य (22/6)	आषाढ़ (14/6)	आणी (15/6)	मिथुन (15/6)	आषाढ़ (16/6)	ज्येष्ठ शु (6/6	आषाढ़ कृ (21/6
7	नभस्य(23/7)	श्रावण (16/7)	आडि (16/7)	कर्कट (16/7)	श्रावण (17/7)	आषाढ़ शु (5/7	श्रावण कृ (21/7
8	ईश (24/8)	भाद्रपद (16/8)	आवणि (17/8)	सिंह (17/8)	भाद्रपद (17/8)	श्रावण शु (4/8	भाद्र कृ (19/8
9	ऊर्ज (23/9)	आश्विन (16/9	पुरटासी (17/9)	कन्या (17/9)	आश्विन (17/9	भाद्र शु (2/9	आश्विन कृ (17/9
10	सहस्य (24/10)	कार्तिक (17/10	अरपिशी(17/10)	तुला (17/10)	कार्तिक (18/10	आश्विन शु (2/10	कार्तिक कृ (17/10
11	सहस्य(23/11)	मार्गशीर्ष (16/11	कार्तिगई(16/11	वृश्चिक(16/11)	मार्गशीर्ष (17/11	कार्तिक शु (1/11	मार्गशीर्ष कृ (15/11
12	तपस (22/12)	पौष (15/12)	मरगाली(16/12)	धनु (16/12)	पौष (17/12	मार्गशीर्ष शु (1/12	पौष कृ (15/12
13	तपस्या (22/1)	माघ (14/1/98	थई(14/1/98)	मकर(14-1-98	माघ (15/1/98	पौष शु (30/12)	माघ कृ(13-1-98

Mean places of STARS for July 2,1997(These are unrelated to namesake Nirayana Nakshatras)

२-७-१९९७ को तारकाओं का मध्यम मान; भारतीय अवैदिक निरयण सम नक्षत्र विभागों से कदापि कोई सम्बन्ध नहीं है

Cat सूचीसं	Catalogue Name सूची नाम	Popular nam प्रसिद्ध नाम	Indian name भारतीय नाम	हिन्दी नाम	mag. परिमान	Trop.long सायन स्पष्ट			Latitude शर ;विक्षेप			Right Asc विषुव			Declina. क्रान्ति		
7	Gamma Pegasi	Algenib	U.Bhadr-1	उभा-१	2.87	9	7	17	12	35	59	0	13	6	15	10	11
1	Al. Andromed	Alpharetz	U.Bhad-II	उभा-११	2.15	14	16	26	25	40	49	0	8	16	29	4	36
103	Zeta Piscium		Revati	रेवती	557	19	50	33	-0	12	49	1	13	36	7	33	43
66	Beta Arietis	Sheratan	Ashvini	अश्विनी	2.72	33	56	6	8	29	13	1	54	30	20	47	45
74	Alpha Arietls	Hamal			2.23	37	37	39	9	57	54	2	7	2	23	27	2
100	41 Arietis		Bharani	भरणी	3.68	48	10	7	10	26	58	2	49	50	27	15	1
111	Beta Persei	Algol			2.7v	56	7	58	22	25	41	3	8	0	40	56	46
139	Eta Tauri	Alcoyne	Kritika	कृत्तिका	2.96	59	57	27	4	3	2	3	47	20	24	5	51
168	Alpha Tauri	Aldebara.	Rohini	रोहिणी	1.06	69	45	15	-5	28	4	4	35	47	16	30	16
194	Beta Orionis	Rigel			0.34	76	47	40	-31	7	25	5	14	25	-8	12	16
201	Gam. Orionis	Bellatrix			1.7	80	54	41	-16	49	0	5	25	0	6	20	51
193	Alpha Aurigae	Capella	Brahmahr.	ब्रह्महृद	0.21	81	49	23	22	51	51	5	16	30	45	59	45
202	Beta Tauri	El Nath	Agni	अग्नि	1.78	82	32	24	5	23	5	5	26	8	28	36	20
210	Epsilon Orioni	Alnilam			1.75	83	25	43	-24	30	25	5	36	5	-1	12	12
(GC)	Lambd Orionis		Mrigshira	मृगशिरा	3.66	83	40	19	-13	22	12	5	35	0	9	55	57
907	Alpha Ursae Mi.	Polaris	Dhruva	ध्रुव	2.1v	88	31	57	66	6	3	2	29	3	89	15	11
224	Alpha Orionis	Betelgeus	Ardra	आर्द्रा	0.6v	88	43	11	-16	1	39	5	55	2	7	24	24
257	Al. Canis Maj.	Sirius	Lubdhaka	लुब्धक	-1.5	10	2	49	-39	36	18	6	45	2	-16	42	45
245	Alpha Carinae	Canopus	Agastya	अगस्त्य	-0.8	10	55	35	-75	49	28	6	23	54	-52	41	39
287	Alpha Gemino.	Castor	Punarv-II	पुनर्वसु-१	1.99	11	12	21	10	5	44	7	34	26	31	53	39
295	Beta Geminor.	Pollux	Punarv.-I	पुनर्व.-२	1.21	11	10	52	6	41	1	7	45	10	28	1	57
291	Alpha Canis Mi.	Procyon			0.48	11	45	4	-16	1	10	7	39	10	5	13	54
326	Delta Cancri		Pushya	पुष्य	4.17	12	41	13	0	4	37	8	44	33	18	9	49
329	Epsilon Hydrae		Ashlesha	आश्लेषा	3.48	13	18	37	-11	6	16	8	46	39	6	25	41
337	Alpha Cancri		Ashlesha	आश्लेषा	4.27	13	36	24	-5	4	51	8	58	21	11	52	3
417	Alpha Ursa Ma.	Dubhe	Kratu	क्रतु	1.95	13	9	44	49	40	48	11	3	34	61	45	52
380	Alpha Leonis	Regulus	Magha	मघा	1.34	14	47	40	0	27	53	10	8	51	11	58	46
422	Delta Leonis	Zosma	P.Phalg-I	पूफाल्गु	2.58	16	16	53	14	20	0	11	13	59	20	32	15
444	Beta Leonis	Denebola	U.Phalg-I	उफाल्गु	2.23	17	34	58	12	16	1	11	48	56	14	35	20
465	Delta Corvi		Hasta	हस्त	3.11	19	25	1	-12	11	46	12	29	44	-16	30	6
498	Alpha Virginis	Spica	Chitra	चित्रा	1.21	20	48	23	-2	3	15	13	25	4	-11	8	54
526	Alpha Bootis	Arcturus	Svati	स्वाति	0.24	20	11	55	30	44	17	14	15	33	19	11	43
548	Alpha Librae	Zub. el Ge	Vishakha	विशाखा	2.91	22	2	52	0	20	1	14	50	44	-16	1	54
518	Beta Centauri	Agena			0.86	23	45	27	-44	8	9	14	3	38	-60	21	40
538	Alpha Centauri	Rigel Kent			0.06	23	26	53	-42	35	39	14	39	26	-60	49	31
594	Delta Scorpii		Anuradha	अनुराधा	2.54	24	32	11	-1	59	8	16	0	11	-22	36	53
616	Alpha Scorpii	Antares	Jyeshtha	ज्येष्ठा	1.2v	24	43	38	-4	34	10	16	29	15	-26	25	36
652	Lambda Scorpii	Schaula	Mula	मूल	1.71	26	33	3	-13	47	16	17	33	26	-37	6	8
687	Delta Sagitta.		P.Ashad-I	पूर्वाषाढ़	2.84	27	32	46	-6	28	18	18	20	50	-29	49	45
689	Epsilon Sagitt.	Kaus Aust	P.Ash.-II	पूर्वाषाढ़	1.95	27	2	40	-11	3	4	18	24	0	-34	23	10
706	Sigma Sagittar.	Nunki	U.Ashadh	उत्तराषा.	2.14	28	21	1	-3	26	56	18	55	6	-26	18	0
699	Alpha Lyrae	Vega	Abhijit	अभिजित	0.14	28	16	53	61	44	0	18	36	51	38	46	52
745	Alpha Aquilae	Atair	Shravan	श्रवण	0.89	30	44	28	29	18	14	19	50	40	8	51	41
762	Beta Capricorni				3.25	30	1	6	4	35	24	20	20	51	-14	47	22
771	Beta Delphini	Rotanev	Danish.-I	धनि-१	3.72	31	18	24	31	55	6	20	37	26	14	35	11
774	Alpha Delphini	Svalocin	Danish.-II	धनि-२	3.86	31	20	45	33	1	22	20	39	31	15	54	11
867	Alpha Piscis A.	Fomalha.			1.29	33	49	29	-21	8	3	22	57	31	-29	38	8
777	Alpha Cygni	Deneb			1.33	33	17	43	59	54	23	20	41	21	45	16	17
864	Lamb. Aquarii		Shatabhi.	शतभि.	3.84	34	32	28	-0	23	11	22	52	29	-7	35	35
54	Alpha Eridani	Achermar			0.61	34	16	27	-59	22	42	1	37	38	-57	14	58
871	Alpha Pegassi	Markab	P.Bhadr-I	पूर्वाभा-१	2.57	35	27	3	19	24	22	23	4	38	15	11	30
870	Beta Pegassi	Scheat	P.Bhad-II	पूर्वाभाद	2.6v	35	20	22	31	8	26	23	3	39	28	4	10

Sayana longitudes, Latttds. and Declina. are in degrees, mts. and secs. of arc, R. A. is in HMS of time. - (minus) means south; otherwise north. These fixed stars advance @50.2 arcseconds seconds per year in longitude and ARE NOT TO BE CONFUSED WITH NAKSHATRA DIVISIONS of similar names in Rashichakr सायन स्पष्ट, शर व क्रान्ति अंश, कला, व विकलाओ में है पर विषुव घंटा, मिनट सेकण्ड में इन तारों का राशिचक्र के इन ही से मिलते जुलते नामों के काल्पनिक भागों से कदापि कोई संबन्ध नहीं है। - अर्थात् दक्षिणय अन्यथा उत्तर

Tables of Tropical Midheaven and Ascendants

सायन दशम स्पष्ट तथा भारत के प्रमुख स्थानों की लग्नस्पष्टार्थ सारिणियां

Sid. Time			MC		R.A.		Madras		Bombay		Calcutta		Delhi		Bhuban		Lucknow		Varanasi		Simla		Srinagar	
सं	काल		दशम		विषुव		मद्रास		बम्बई		कलकत्ता		दिल्ली		भुवनेश्वर		लखनऊ		वाराणसी		शिमला		श्रीनगर	
H	Mt	S	S°		°	′	13°N 0′		19°N 0′		22°N35′		28°N39		20°N 0′		26°51′		25°N19′		31°N 4′		34°N 0′	
घं	मि	से	रा	अं	अं	क	13°उ0′		19°उ0′		22°उ35′		28°उ39		20°उ0′		26°उ51′		25°उ19′		31°उ 4′		34°उ0′	
0	0	0	♈ 0		0	00	5 ♒	15	7 ♒	47	9 ♒	21	12 ♒	16	8 ♒	14	11 ♒	23	10 ♒	40	13 ♒	32	15 ♒	02
0	3	40	मे 1		0	55	6 ♑	5	8 ♑	37	10 ♑	10	13 ♑	5	9 ♑	4	12 ♑	12	11 ♑	28	14 ♑	20	15 ♑	49
0	7	20	2		1	50	6	55	9	27	10	59	13	53	9	54	13	1	12	17	15	8	16	36
0	11	0	3		2	45	7	45	10	16	11	48	14	41	10	43	13	49	13	5	15	56	17	23
0	14	41	4		3	40	8	35	11	6	12	37	15	29	11	32	14	37	13	54	16	43	18	09
0	18	21	5		4	35	9	24	11	55	13	26	16	16	12	21	15	25	14	42	17	31	18	56
0	22	2	6		5	30	10	14	12	44	14	15	17	4	13	10	16	13	15	31	18	18	19	43
0	25	42	7		6	25	11	4	13	33	15	4	17	52	13	59	17	1	16	19	19	5	20	30
0	29	23	8		7	20	11	54	14	23	15	53	18	40	14	49	17	50	17	7	19	52	21	16
0	33	4	9		8	16	12	44	15	12	16	42	19	28	15	38	18	38	17	56	20	39	22	02
0	36	45	10		9	11	13	34	16	1	17	31	20	15	16	27	19	25	18	44	21	26	22	48
0	40	26	11		10	06	14	25	16	51	18	20	21	3	17	16	20	13	19	32	22	13	23	34
0	44	8	12		11	02	15	15	17	40	19	8	21	50	18	5	21	1	20	20	23	0	24	20
0	47	50	13		11	58	16	5	18	29	19	57	22	37	18	54	21	49	21	8	23	47	25	7
0	51	32	14		12	53	16	55	19	18	20	46	23	25	19	43	22	37	21	57	24	34	25	53
0	55	14	15		13	49	17	45	20	8	21	35	24	12	20	33	23	25	22	45	25	21	26	39
0	58	57	16		14	44	18	35	20	57	22	24	25	0	21	22	24	13	23	33	26	8	27	25
1	2	40	17		15	40	19	26	21	47	23	13	25	47	22	11	25	1	24	22	26	55	28	11
1	6	23	18		16	35	20	16	22	37	24	2	26	35	23	1	25	49	25	10	27	42	28 ♒	58
1	10	7	19		17	31	21	7	23	26	24	51	27	23	23	50	26	37	25	58	28 ♒	29	29 ♑	44
1	13	51	20		18	27	21	58	24	16	25	40	28	11	24	39	27	25	26	47	29 ♑	16	0 ♌	31
1	17	35	21		19	24	22	48	25	6	26	29	28 ♒	59	25	29	28	13	27	35	0 ♌	3	1 ♏	17
1	21	20	22		20	20	23	39	25	56	27	18	29 ♑	47	26	19	29 ♒	1	28 ♒	24	0 ♏	50	2	04
1	25	6	23		21	17	24	30	26	46	28	8	0 ♌	35	27	9	29 ♑	50	29 ♑	13	1	38	2	50
1	28	52	24		22	13	25	21	27	36	28 ♑	57	1 ♏	23	27	59	0 ♌	38	0 ♌	2	2	25	3	36
1	32	39	25		23	09	26	13	28 ♒	26	29	46	2	11	28 ♒	49	1 ♏	27	0 ♏	51	3	13	4	23
1	36	25	26		24	06	27	4	29 ♑	16	0 ♌	36	2	59	29 ♑	39	2	16	1	40	4	0	5	10
1	40	12	27		25	03	27	56	0 ♌	7	1 ♏	26	3	47	0 ♌	29	3	5	2	29	4	48	6	57
1	44	0	♉ 28		26	00	28 ♒	48	0 ♏	58	2	17	4	35	1 ♏	19	3	53	3	18	5	36	7	44
1	47	48	मे 29		26	57	29 ♑	40	1	48	3	7	5	23	2	10	4	42	4	7	6	23	7	31
1	51	37	४ 0		27	54	0 ♌	32	2	39	3	57	6	12	3	1	5	31	4	57	7	11	8	18
1	55	27	वृ 1		28	51	1 ♏	25	3	30	4	48	7	1	3	52	6	21	5	47	8	0	9	05
1	59	17	2		29	48	2	17	4	21	5	38	7	50	4	43	7	10	6	36	8	48	9	52
2	3	8	3		30	46	3	10	5	13	6	28	8	40	5	34	8	0	7	26	9	36	10	40
2	6	59	4		31	44	4	3	6	5	7	18	9	29	6	25	8	50	8	16	10	24	11	28
2	10	51	5		32	43	4	56	6	57	8	9	10	18	7	17	9	40	9	7	11	13	12	15
2	14	44	6		33	41	5	49	7	49	8	59	11	7	8	9	10	30	9	57	12	1	13	3
2	18	37	7		34	39	6	43	8	41	9	51	11	57	9	1	11	20	10	48	12	50	13	51
2	22	31	8		35	37	7	37	9	34	10	43	12	47	9	53	12	10	11	38	13	39	14	39
2	26	25	9		36	36	8	31	10	26	11	35	13	36	10	45	13	0	12	29	14	28	15	27
2	30	20	10		37	35	9	25	11	19	12	27	14	26	11	38	13	50	13	20	15	18	16	16
2	34	16	11		38	34	10	20	12	12	13	19	15	17	12	31	14	41	14	12	16	7	17	4
2	38	13	12		39	33	11	15	13	5	14	11	16	7	13	24	15	32	15	3	16	57	17	53
2	42	10	13		40	32	12	10	13	59	15	3	16	58	14	18	16	23	15	55	17	46	18	41
2	46	8	14		41	32	13	5	14	53	15	56	17	49	15	11	17	15	16	47	18	36	19	30
2	50	7	15		42	32	14	1	15	47	16	49	18	40	16	4	18	6	17	39	19	27	20	20
2	54	7	16		43	32	14	57	16	41	17	42	19	31	16	58	18	58	18	31	20	17	21	09
2	58	7	17		44	32	15	53	17	35	18	35	20	22	17	52	19	50	19	24	21	8	21	59
3	2	8	18		45	32	16	49	18	30	19	29	21	14	18	47	20	42	20	16	21	58	22	49
3	6	10	19		46	32	17	46	19	25	20	22	22	6	19	41	21	35	21	9	22	49	23	39
3	10	12	20		47	33	18	43	20	20	21	16	22	58	20	36	22	28	22	2	23	40	24	29
3	14	15	21		48	34	19	40	21	15	22	10	23	50	21	31	23	21	22	56	24	32	25	19
3	18	19	22		49	35	20	38	22	11	23	6	24	43	22	26	24	14	23	49	25	23	26	09
3	22	24	23		50	36	21	36	23	7	24	0	25	35	23	22	25	7	24	43	26	15	27	00
3	26	29	24		51	37	22	34	24	3	24	54	26	28	24	18	26	1	25	37	27	7	27	51
3	30	35	25		52	38	23	33	25	0	25	49	27	21	25	14	26	55	26	31	27	59	28 ♌	42
3	34	42	26		53	40	24	31	25	56	26	45	28 ♌	14	26	10	27	48	27	26	28 ♌	51	29 ♏	33
3	38	49	27		54	42	25	30	26	53	27	41	29 ♏	7	27	6	28 ♌	42	28 ♌	20	29 ♏	44	0 ♒	24
3	42	57	28		55	44	26	29	27	50	28 ♌	37	0 ♒	1	28	3	29 ♏	36	29 ♏	15	0 ♒	36	1 ♑	16
3	47	6	४ 29		56	46	27 ♌	29	28 ♌	47	29 ♏	33	0 ♑	55	29 ♌	0	0 ♒	31	0 ♒	10	1 ♑	29	2 ♒	07
3	51	15	वृ 30		57	49	28 ♏	28	29 ♏	45	0 ♒	80	1 ♒	49	29 ♏	58	1 ♑	25	1 ♑	6	2	22	2 ♑	59

Tables of Tropical Midheaven and Ascendants

सायन दशम स्पष्ट तथा भारत के प्रमुख स्थानों की लग्नस्पष्टार्थ सारिणियां

Sid. Time			MC	R.A.	Madras	Bombay	Calcutta	Delhi	Bhuban	Lucknow	Varanasi	Simla	Srinagar
सां	काल		दशम	विषुव	मद्रास	बम्बई	कलकत्ता	दिल्ली	भुवनेश्वर	लखनऊ	वाराणसी	शिमला	श्रीनगर
H	Mt	S	S° ०	० ′	13°N 0′	19°N 0′	22°N35′	28°N39′	20°N 0′	26°51′	25°N19′	31°N 4′	34°N 0′
घं	मि	से	रा अं	अं ल	13° उ0′	19° उ0′	22° उ35′	28° उ39′	20° उ0′	26° उ51′	25° उ19′	31° उ4′	34° उ0′
3	51	15	♊0	57 49	28♈28	29♈45	0♉30	1♉49	29♈58	1♉25	1♉6	2♉22	2♉59
3	55	25	♍1	58 52	29♍28	0 43	1♏27	2♏43	0♉55	2♏20	2♏1	3♏16	3♏51
3	59	36	2	59 54	0♉29	1♏41	2 24	3 38	1♏53	3 15	2 57	4 9	4 43
4	3	48	3	60 57	1♏29	2 39	3 21	4 32	2 51	4 11	3 53	5 2	5 36
4	8	0	4	62 00	2 30	3 37	4 18	5 27	3 49	5 6	4 49	5 56	6 29
4	12	13	5	63 03	3 31	4 36	5 15	6 22	4 47	6 2	5 45	6 50	7 22
4	16	26	6	64 07	4 32	5 35	6 13	7 17	5 46	6 58	6 42	7 44	8 15
4	20	40	7	65 10	5 34	6 35	7 11	8 13	6 45	7 54	7 38	8 38	9 08
4	24	55	8	66 14	6 36	7 35	8 9	9 8	7 44	8 51	8 35	9 33	10 01
4	29	10	9	67 18	7 39	8 34	9 8	10 4	8 43	9 47	9 32	10 27	10 54
4	33	26	10	68 22	8 41	9 34	10 6	10 59	9 43	10 43	10 30	11 22	11 48
4	37	42	11	69 26	9 43	10 34	11 5	11 55	10 42	11 40	11 27	12 17	12 42
4	41	59	12	70 30	10 46	11 34	12 4	12 51	11 42	12 37	12 24	13 12	13 35
4	46	16	13	71 34	11 49	12 34	13 3	13 48	12 42	13 34	13 22	14 7	14 29
4	50	34	14	72 39	12 52	13 35	14 2	14 44	13 42	14 31	14 20	15 2	15 23
4	54	52	15	73 43	13 55	14 36	15 1	15 41	14 42	15 28	15 18	15 57	16 17
4	59	10	16	74 48	14 59	15 37	16 00	16 37	15 43	16 26	16 16	16 53	17 11
5	3	29	17	75 53	16 2	16 38	16 59	17 34	16 43	17 23	17 15	17 49	18 05
5	7	49	18	76 57	17 6	17 39	17 58	18 31	17 44	18 21	18 13	18 45	19 00
5	12	9	19	78 02	18 10	18 40	18 58	19 28	18 45	19 19	19 11	19 41	19 55
5	16	29	20	79 07	19 14	19 41	19 57	20 25	19 46	20 17	20 10	20 37	20 50
5	20	49	21	80 12	20 18	20 43	20 57	21 23	20 47	21 15	21 9	21 33	21 45
5	25	9	22	81 17	21 22	21 45	21 57	22 20	21 48	22 13	22 8	22 29	22 39
5	29	30	23	82 23	22 27	22 47	22 57	23 17	22 50	23 12	23 6	23 26	23 34
5	33	51	24	83 28	23 32	23 48	23 57	24 14	23 51	24 10	24 5	24 22	24 29
5	38	12	25	84 33	24 36	24 50	24 57	25 12	24 52	25 8	25 4	25 18	25 24
5	42	34	26	85 39	25 40	25 52	25 58	26 9	25 53	26 6	26 3	26 14	26 19
5	46	55	27	86 44	26 45	26 54	26 59	27 7	26 55	27 5	27 3	27 10	27 14
5	51	17	♊28	87 49	27♉50	27♉56	27♉59	28♉5	27♉57	28♉3	28♉2	28♉7	28♉10
5	55	38	♍29	88 55	28♏55	28♏58	28♏59	29♏2	28♏59	29♏1	29♏1	29♏3	29♏05
6	0	0	♎0	90 00	0♎0	0♎0	0♎0	0♎0	0♎0	0♎0	0♎0	0♎0	0♎0
6	4	22	♏1	91 05	1♐5	1♐2	1♐1	0♐58	1♐1	0♐59	0♐57	0♐55	0♐55
6	8	43	2	92 11	2 10	2 4	2 1	1 55	2 3	1 57	1 58	1 53	1 50
6	13	5	3	93 16	3 15	3 6	3 1	2 53	3 5	2 55	2 57	2 50	2 46
6	17	26	4	94 21	4 20	4 8	4 2	3 51	4 7	3 54	3 57	3 46	3 41
6	21	48	5	95 27	5 24	5 10	5 2	4 48	5 8	4 52	4 56	4 42	4 36
6	26	9	6	96 32	6 28	6 12	6 2	5 46	6 9	5 50	5 55	5 38	5 31
6	30	30	7	97 37	7 32	7 13	7 2	6 43	7 10	6 48	6 54	6 34	6 26
6	34	51	8	98 43	8 37	8 15	8 2	7 40	8 12	7 47	7 53	7 30	7 21
6	39	11	9	99 48	9 42	9 17	9 3	8 37	9 13	8 45	8 52	8 26	8 15
6	43	31	10	100 53	10 46	10 19	10 4	9 35	10 14	9 43	9 50	9 23	9 10
6	47	51	11	101 58	11 50	11 20	11 4	10 32	11 15	10 41	10 49	10 19	10 05
6	52	11	12	103 03	12 54	12 21	12 3	11 29	12 16	11 39	11 47	11 15	11 00
6	56	31	13	104 08	13 58	13 22	13 2	12 26	13 17	12 37	12 45	12 11	11 54
7	0	50	14	105 12	15 1	14 23	14 2	13 23	14 17	13 34	13 44	13 7	12 49
7	5	8	15	106 17	16 5	15 24	15 1	14 19	15 18	14 32	14 42	14 3	13 43
7	9	26	16	107 22	17 8	16 25	16 00	15 16	16 18	15 29	15 40	14 58	14 37
7	13	44	17	108 26	18 11	17 26	16 59	16 12	17 18	16 26	16 38	15 53	15 31
7	18	1	18	109 30	19 14	18 26	17 57	17 9	18 18	17 23	17 36	16 48	16 25
7	22	18	19	110 34	20 17	19 26	18 56	18 5	19 18	18 20	18 33	17 43	17 19
7	26	34	20	111 38	21 19	20 26	19 55	19 1	20 17	19 17	19 30	18 38	18 12
7	30	50	21	112 42	22 21	21 26	20 53	19 56	21 17	20 13	20 28	19 33	19 06
7	35	5	22	113 46	23 24	22 25	21 52	20 52	22 16	21 9	21 25	20 27	19 59
7	39	20	23	114 50	24 26	23 25	22 50	21 47	23 15	22 6	22 22	21 22	20 52
7	43	34	24	115 53	25 28	24 25	23 48	22 43	24 14	23 2	23 18	22 16	21 45
7	47	47	25	116 56	26 29	25 24	24 45	23 38	25 13	23 58	24 15	23 10	22 38
7	52	0	26	118 0	27 30	26 23	25 43	24 33	26 11	24 54	25 11	24 4	23 31
7	56	12	27	119 03	28♏31	27 21	26 40	25 28	27 9	25 49	26 7	24 58	24 24
8	0	24	28	120 06	29♐31	28♏19	27 36	26 22	28♏7	26 45	27 3	25 51	25 16
8	4	35	♒29	121 09	0♉32	29♐17	28♏33	27♏17	29♐5	27♏40	27♏59	26♏44	26♏09
8	8	45	♑30	122 11	1♊32	0♒15	29♐30	28♐11	0♒2	28♐35	28♐54	27♐38	27♐01

Tables of Tropical Midheaven and Ascendants

सायन दशम स्पष्ट तथा भारत के प्रमुख स्थानों की लग्नस्पष्टार्थ सारिणियां

Sid. Time सां काल H Mt S घं मि से	MC दशम S° रा अं	R.A. विषुव ° ′ अं क	Madras मद्रास 13°N 0′ 13°उ0′	Bombay बम्बई 19°N 0′ 19°उ0′	Calcutta कलकत्ता 22°N35′ 22°उ35′	Delhi दिल्ली 28°N39′ 28°उ39′	Bhuban भुवनेश्वर 20°N 0′ 20°उ0′	Lucknow लखनऊ 26°51′ 26°उ51′	Varanasi वाराणसी 25°N19′ 25°उ19′	Simla शिमला 31°N 4′ 31°उ4′	Srinagar श्रीनगर 34°N 0′ 34°उ0′
8 8 45	♎ 0	122 11	1 ♏32	0 ♏15	29 ♎30	28 ♎11	0 ♏ 2	28 ♎35	28 ♎54	27 ♎38	27 ♎01
8 12 54	♍ 1	123 13	2 ♎32	1 ♎13	0 ♏26	29 ♎ 5	1 ♎ 0	29 ♎29	29 ♎50	28 ♎31	27 ♎53
8 17 3	2	124 16	3 31	2 10	1 ♎22	29 59	1 57	0 ♏24	0 ♏45	29 24	28 ♎44
8 21 11	3	125 18	4 30	3 7	2 18	0 ♏53	2 54	1 ♎18	1 ♎40	0 ♏16	29 ♎36
8 25 19	4	126 20	5 29	4 4	3 13	1 ♎46	3 50	2 12	2 34	1 ♎ 9	0 ♏27
8 29 26	5	127 21	6 27	5 0	4 9	2 39	4 46	3 6	3 29	2 1	1 ♎18
8 33 32	6	128 23	7 26	5 57	5 4	3 32	5 42	3 59	4 23	2 53	2 09
8 37 37	7	129 24	8 24	6 53	5 59	4 25	6 38	4 53	5 17	3 45	3 00
8 41 41	8	130 25	9 22	7 49	6 54	5 17	7 34	5 46	6 11	4 37	3 51
8 45 45	9	131 26	10 20	8 45	7 49	6 10	8 29	6 39	7 4	5 28	4 41
8 49 48	10	132 27	11 17	9 40	8 43	7 2	9 24	7 32	7 58	6 20	5 31
8 53 50	11	133 28	12 14	10 35	9 37	7 54	10 19	8 25	8 51	7 11	6 21
8 57 52	12	134 28	13 11	11 30	10 30	8 46	11 13	9 18	9 44	8 2	7 11
9 1 53	13	135 28	14 7	12 25	11 24	9 38	12 8	10 10	10 36	8 52	8 01
9 5 53	14	136 28	15 3	13 19	12 17	10 29	13 2	11 2	11 29	9 43	8 51
9 9 53	15	137 28	15 59	14 13	13 10	11 20	13 56	11 54	12 21	10 33	9 40
9 13 52	16	138 28	16 55	15 7	14 3	12 11	14 49	12 45	13 13	11 24	10 30
9 17 50	17	139 27	17 50	16 1	14 56	13 2	15 42	13 37	14 5	12 14	11 19
9 21 47	18	140 26	18 45	16 55	15 49	13 53	16 36	14 28	14 57	13 3	12 07
9 25 44	19	141 25	19 40	17 48	16 41	14 43	17 29	15 19	15 48	13 53	12 56
9 29 40	20	142 25	20 35	18 41	17 33	15 34	18 22	16 9	16 40	14 42	13 44
9 33 35	21	143 24	21 29	19 34	18 25	16 24	19 15	17 0	17 31	15 32	14 33
9 37 29	22	144 22	22 23	20 26	19 16	17 13	20 7	17 50	18 22	16 21	15 21
9 41 23	23	145 20	23 17	21 19	20 8	18 3	20 59	18 40	19 12	17 10	16 09
9 45 16	24	146 19	24 11	22 11	20 59	18 53	21 51	19 31	20 3	17 59	16 57
9 49 9	25	147 17	25 4	23 3	21 49	19 42	22 43	20 20	20 53	18 47	17 45
9 53 1	26	148 15	25 57	23 55	22 40	20 31	23 35	21 10	21 44	19 36	18 32
9 56 52	27	149 13	26 50	24 47	23 31	21 20	24 26	22 0	22 34	20 24	19 20
10 0 42	♐ 28	150 10	27 43	25 39	24 22	22 10	25 17	22 50	23 24	21 12	20 08
10 4 32	♏ 29	151 08	28 ♎35	26 30	25 12	22 59	26 8	23 39	24 13	22 0	20 55
10 8 22	♑ 0	152 06	29 ♏28	27 21	26 2	23 48	26 59	24 28	25 3	22 49	21 42
10 12 12	♒ 1	153 03	0 ♐20	28 12	26 52	24 37	27 50	25 18	25 53	23 37	22 29
10 16 0	2	154 0	1 ♑12	29 ♏ 2	27 42	25 25	28 ♏41	26 7	26 42	24 24	23 16
10 19 48	3	154 57	2 4	29 ♎53	28 ♏32	26 13	29 ♎31	26 55	27 31	25 12	24 03
10 23 35	4	155 53	2 56	0 ♐43	29 ♎22	27 1	0 ♐21	27 44	28 20	26 0	24 50
10 27 22	5	156 50	3 47	1 ♑33	0 ♐12	27 49	1 ♑11	28 ♏33	29 ♏ 9	26 47	25 37
10 31 8	6	157 47	4 39	2 24	1 ♑ 1	28 ♏37	2 1	29 ♎22	29 ♎58	27 35	26 23
10 34 54	7	158 43	5 30	3 14	1 50	29 ♎25	2 51	0 ♐10	0 ♐47	28 22	27 10
10 38 40	8	159 40	6 21	4 4	2 40	0 ♐13	3 41	0 ♑59	1 ♑36	29 ♏10	27 56
10 42 25	9	160 36	7 12	4 54	3 30	1 ♑ 1	4 31	1 47	2 25	29 ♎57	28 ♏43
10 46 9	10	161 32	8 2	5 44	4 19	1 49	5 21	2 35	3 13	0 ♐44	29 ♎29
10 49 53	11	162 28	8 53	6 34	5 8	2 37	6 10	3 23	4 2	1 ♑31	0 ♐16
10 53 37	12	163 24	9 44	7 23	5 56	3 25	6 59	4 11	4 50	2 19	1 ♑02
10 57 20	13	164 20	10 34	8 13	6 45	4 13	7 49	4 59	5 38	3 6	1 48
11 1 3	14	165 16	11 25	9 3	7 34	5 0	8 38	5 47	6 27	3 52	2 35
11 4 46	15	166 11	12 15	9 52	8 23	5 48	9 27	6 35	7 15	4 39	3 21
11 8 28	16	167 07	13 5	10 42	9 11	6 35	10 17	7 23	8 3	5 26	4 07
11 12 10	17	168 02	13 55	11 31	10 00	7 23	11 6	8 11	8 52	6 13	4 53
11 15 52	18	168 58	14 45	12 20	10 49	8 10	11 55	8 59	9 40	7 0	5 39
11 19 34	19	169 53	15 35	13 9	11 38	8 57	12 44	9 47	10 28	7 47	6 26
11 23 15	20	170 49	16 26	13 59	12 26	9 45	13 34	10 35	11 16	8 34	7 12
11 26 56	21	171 44	17 16	14 48	13 15	10 32	14 22	11 23	12 4	9 21	7 58
11 30 37	22	172 39	18 6	15 37	14 4	11 20	15 11	12 10	12 53	10 8	8 44
11 34 18	23	173 34	18 56	16 27	14 53	12 8	16 1	12 59	13 41	10 55	9 31
11 37 59	24	174 30	19 46	17 16	15 42	12 56	16 50	13 47	14 29	11 42	10 18
11 41 39	25	175 25	20 36	18 5	16 30	13 44	17 39	14 35	15 18	12 29	11 04
11 45 19	26	176 20	21 25	18 54	17 19	14 31	18 28	15 23	16 6	13 17	11 51
11 49 0	27	177 15	22 15	19 44	18 8	15 19	19 17	16 11	16 55	14 4	12 38
11 52 40	28	178 10	23 5	20 33	18 57	16 7	20 6	16 59	17 43	14 51	13 24
11 56 20	♒ 29	179 05	23 ♐55	21 ♐23	19 ♐46	16 ♐55	20 ♐56	17 ♐48	18 ♐32	15 ♐39	14 ♐11
12 0 0	♑ 30	180 00	24 ♑45	22 ♑13	20 ♑35	17 ♑44	21 ♑46	18 ♑37	19 ♑20	16 ♑28	14 ♑58

Tables of Tropical Midheaven and Ascendants

सायन दशम स्पष्ट तथा भारत के प्रमुख स्थानों की लग्नस्पष्टार्थ सारिणियां

Sid. Time सां काल H Mt S घं मि से	MC दशम S° रा अं	R.A. विषुव ° ′ अं क	Madras मद्रास 13°N 0′ 13°उ0′	Bombay बम्बई 19°N 0′ 19°उ0′	Calcutta कलकत्ता 22°N35′ 22°उ35′	Delhi दिल्ली 28°N39′ 28°उ39′	Bhuban भुवनेश्वर 20°N 0′ 20°उ0′	Lucknow लखनऊ 26°51′ 26°उ51′	Varanasi वाराणसी 25°N19′ 25°उ19′	Simla शिमला 31°N4′ 31°उ34′	Srinagar श्रीनगर 34°N 0′ 34°उ0′
12 0 0	♎ 0	180 00	24 ♐ 45	22 ♐ 13	20 ♐ 35	17 ♐ 44	21 ♐ 46	18 ♐ 37	19 ♐ 20	16 ♐ 28	14 ♐ 58
12 3 40	तु 1	180 55	25 ♏ 35	23 ♏ 1	21 ♏ 25	18 ♏ 32	22 ♏ 35	19 ♏ 25	20 ♏ 9	17 ♏ 15	15 ♏ 45
12 7 20	2	181 50	26 25	23 50	22 15	19 20	23 24	20 13	20 58	18 3	16 33
12 11 0	3	182 45	27 15	24 40	23 4	20 9	24 14	21 2	21 47	18 51	17 20
12 14 41	4	183 40	28 6	25 30	23 54	20 57	25 4	21 51	22 36	19 39	18 08
12 18 21	5	184 35	28 ♐ 56	26 21	24 44	21 46	25 54	22 40	23 26	20 27	18 56
12 22 2	6	185 30	29 ♏ 46	27 11	25 33	22 35	26 44	23 30	24 15	21 16	19 44
12 25 42	7	186 26	0 ♑ 37	28 1	26 23	23 24	27 34	24 19	25 5	22 5	20 32
12 29 23	8	187 21	1 ♒ 28	28 ♐ 52	27 13	24 13	28 ♐ 25	25 8	25 55	22 54	21 20
12 33 4	9	188 16	2 19	29 ♏ 42	28 3	25 3	29 ♏ 15	25 58	26 45	23 43	22 09
12 36 45	10	189 11	3 10	0 ♑ 33	28 ♐ 54	25 52	0 ♑ 5	26 48	27 35	24 32	22 57
12 40 26	11	190 06	4 1	1 ♒ 24	29 ♏ 45	26 42	0 ♒ 56	27 39	28 ♐ 25	25 21	23 46
12 44 8	12	191 02	4 52	2 15	0 ♑ 36	27 33	1 47	28 ♐ 29	29 ♏ 16	26 11	24 35
12 47 50	13	191 57	5 44	3 6	1 ♒ 27	28 ♐ 23	2 38	29 ♏ 20	0 ♑ 7	27 1	25 25
12 51 32	14	192 53	6 36	3 58	2 18	29 ♏ 14	3 30	0 ♑ 10	0 ♒ 58	27 51	26 15
12 55 14	15	193 49	7 28	4 50	3 10	0 ♑ 5	4 22	1 ♒ 1	1 49	28 ♐ 42	27 05
12 58 57	16	194 44	8 20	5 42	4 2	0 ♒ 56	5 14	1 53	2 41	29 ♏ 33	27 55
13 2 40	17	195 40	9 12	6 34	4 54	1 48	6 6	2 45	3 32	0 ♑ 24	28 ♐ 46
13 6 23	18	196 35	10 4	7 26	5 46	2 39	6 58	3 37	4 24	1 ♒ 15	29 ♏ 37
13 10 7	19	197 31	10 57	8 19	6 38	3 31	7 51	4 30	5 17	2 7	0 ♑ 28
13 13 51	20	198 27	11 50	9 12	7 31	4 24	8 44	5 22	6 10	2 59	1 ♒ 20
13 17 35	21	199 24	12 43	10 5	8 24	5 17	9 37	6 15	7 3	3 52	2 12
13 21 20	22	200 20	13 36	10 59	9 17	6 10	10 30	7 8	7 56	4 44	3 04
13 25 6	23	201 17	14 30	11 53	10 11	7 3	11 24	8 2	8 50	5 37	3 57
13 28 52	24	202 13	15 24	12 47	11 5	7 57	12 19	8 56	9 44	6 31	4 50
13 32 38	25	203 10	16 19	13 41	11 59	8 51	13 14	9 50	10 38	7 25	5 44
13 36 25	26	204 06	17 13	14 36	12 54	9 46	14 9	10 45	11 33	8 20	6 38
13 40 12	27	205 03	18 8	15 31	13 49	10 41	15 4	11 40	12 28	9 15	7 33
13 44 0	♎ 28	206 00	19 3	16 26	14 45	11 36	15 59	12 36	13 24	10 10	8 28
13 47 48	तु 29	206 57	19 58	17 22	15 41	12 32	16 55	13 31	14 20	11 6	9 23
13 51 37	♏ 0	207 54	20 54	18 18	16 38	13 28	17 51	14 27	15 16	12 2	10 19
13 55 27	वृ 1	208 51	21 51	19 15	17 35	14 25	18 48	15 24	16 13	12 59	11 16
13 59 17	2	209 49	22 47	20 12	18 32	15 23	19 45	16 22	17 10	13 56	12 13
14 3 8	3	210 47	23 44	21 9	19 30	16 21	20 42	17 20	18 8	14 54	13 11
14 6 59	4	211 44	24 41	22 7	20 29	17 19	21 40	18 18	19 6	15 52	14 09
14 10 51	5	212 42	25 39	23 6	21 28	18 18	22 39	19 17	20 5	16 51	15 08
14 14 44	6	213 41	26 37	24 5	22 27	19 17	23 38	20 16	21 4	17 50	16 07
14 18 37	7	214 39	27 35	25 4	23 26	20 17	24 37	21 16	22 4	18 50	17 07
14 22 31	8	215 37	28 ♑ 34	26 4	24 25	21 18	25 37	22 17	23 5	19 51	18 07
14 26 25	9	216 36	29 ♒ 33	27 4	25 26	22 19	26 37	23 18	24 6	20 52	19 08
14 30 20	10	217 35	0 ♓ 33	28 ♑ 5	26 27	23 21	27 38	24 20	25 7	21 54	20 10
14 34 16	11	218 34	1 ♈ 33	29 ♒ 6	27 29	24 23	28 ♑ 39	25 22	26 9	22 56	21 13
14 38 13	12	219 33	2 33	0 ♓ 7	28 ♑ 31	25 26	29 ♒ 41	26 25	27 11	23 59	22 16
14 42 10	13	220 33	3 34	1 ♈ 9	29 ♒ 34	26 30	0 ♓ 43	27 28	28 ♑ 14	25 3	23 20
14 46 8	14	221 32	4 36	2 12	0 ♓ 37	27 34	1 ♈ 46	28 ♑ 32	29 ♒ 18	26 8	24 25
14 50 7	15	222 32	5 38	3 15	1 ♈ 41	28 ♑ 39	2 49	29 ♒ 37	0 ♓ 23	27 13	25 31
14 54 7	16	223 31	6 41	4 19	2 45	29 ♒ 45	3 53	0 ♓ 42	1 ♈ 28	28 ♑ 19	26 37
14 58 7	17	224 31	7 44	5 23	3 50	0 ♓ 51	4 58	1 ♈ 48	2 34	29 ♒ 26	27 ♑ 44
15 2 8	18	225 32	8 47	6 28	4 55	1 ♈ 58	6 3	2 54	3 40	0 ♓ 34	28 ♒ 52
15 6 10	19	226 33	9 51	7 34	6 1	3 6	7 9	4 1	4 47	1 ♈ 42	0 ♓ 01
15 10 12	20	227 33	10 55	8 40	7 8	4 14	8 15	5 9	5 55	2 51	1 ♈ 11
15 14 15	21	228 34	12 0	9 47	8 15	5 23	9 22	6 18	7 3	4 1	2 22
15 18 19	22	229 35	13 5	10 54	9 23	6 33	10 30	7 28	8 12	5 12	3 34
15 22 24	23	230 36	14 11	12 2	10 32	7 44	11 38	8 38	9 22	6 24	4 46
15 26 29	24	231 37	15 17	13 10	11 42	8 56	12 47	9 49	10 32	7 36	5 59
15 30 35	25	232 39	16 24	14 19	12 53	10 9	13 56	11 1	11 43	8 49	7 13
15 34 42	26	233 40	17 32	15 28	14 4	11 22	15 6	12 14	12 55	10 3	8 28
15 38 49	27	234 42	18 40	16 38	15 16	12 36	16 16	13 27	14 8	11 18	9 44
15 42 57	28	235 44	19 48	17 49	16 29	13 51	17 27	14 41	15 21	12 34	11 01
15 47 6	♏ 29	236 46	20 ♓ 57	19 ♓ 00	17 ♓ 42	15 ♓ 6	18 ♓ 39	15 ♓ 56	16 ♓ 35	13 ♓ 51	12 ♓ 19
15 51 15	वृ 30	237 49	22 ♈ 7	20 ♈ 12	18 ♈ 56	16 ♈ 22	19 ♈ 52	17 ♈ 11	17 ♈ 50	15 ♈ 9	13 ♈ 39

Tables of Tropical Midheaven and Ascendants

सायन दशम स्पष्ट तथा भारत के प्रमुख स्थानों की लग्नस्पष्टार्थ सारिणियां

Sid. Time सं काल H Mt S घं मि से	MC दशम S° रा अं	R.A. विषुव ° ′ अं क	Madras मद्रास 13°N 0′ 13° उ 0′	Bombay बम्बई 19°N 0′ 19° उ 0′	Calcutta कलकत्ता 22°N35′ 22° उ 35′	Delhi दिल्ली 28°N39′ 28° उ 39′	Bhuban भुवनेश्वर 20°N 0′ 20° उ 0′	Lucknow लखनऊ 26°51′ 26° उ 51′	Varanasi वाराणसी 25°N19′ 25° उ 19′	Simla शिमला 31°N 4′ 31° उ 4′	Srinagar श्रीनगर 34°N 0′ 34° उ 0′
15 51 15	♑ 0	237 49	22 ♎ 7	20 ♎ 12	18 ♎ 56	16 ♎ 22	19 ♎ 52	17 ♎ 11	17 ♎ 50	15 ♎ 9	13 ♎ 39
15 55 25	♈ 1	238 52	23 ♏ 17	21 ♏ 25	20 ♏ 10	17 ♏ 40	21 ♏ 5	18 ♏ 28	19 ♏ 6	16 ♏ 28	14 ♐ 59
15 59 36	2	239 54	24 27	22 38	21 25	18 58	22 18	19 45	20 22	17 47	16 20
16 3 48	3	240 57	25 38	23 52	22 41	20 17	23 32	21 3	21 39	19 7	17 42
16 8 0	4	242 00	26 50	25 6	23 57	21 36	24 47	22 21	22 57	20 28	19 05
16 12 13	5	243 03	28 ♎ 2	26 21	25 14	22 56	26 2	23 40	24 16	21 50	20 29
16 16 26	6	244 07	29 ♏ 14	27 ♎ 37	26 32	24 18	27 18	25 0	25 35	23 13	21 54
16 20 40	7	245 10	0 ♐ 27	28 ♏ 53	27 ♎ 51	25 40	28 ♎ 35	26 21	26 55	24 37	23 20
16 24 55	8	246 14	1 ♑ 41	0 ♐ 10	29 ♏ 10	27 3	29 ♏ 53	27 ♎ 43	28 ♎ 15	26 2	24 47
16 29 10	9	247 18	2 ♑ 55	1 ♑ 27	0 ♐ 30	28 ♎ 27	1 ♐ 11	29 ♏ 6	29 ♏ 36	27 ♎ 28	26 15
16 33 26	10	248 22	4 9	2 45	1 ♑ 50	29 ♏ 52	2 ♑ 29	0 ♐ 29	0 ♐ 58	28 ♏ 55	27 ♎ 44
16 37 42	11	249 26	5 24	4 3	3 10	1 ♐ 17	3 48	1 ♑ 53	2 ♑ 21	0 ♐ 23	29 ♏ 14
16 41 59	12	250 30	6 39	5 22	4 30	2 ♑ 43	5 7	3 17	3 44	1 ♑ 51	0 ♐ 45
16 46 16	13	251 34	7 54	6 41	5 51	4 10	6 26	4 42	5 8	3 20	2 ♑ 17
16 50 34	14	252 39	9 10	8 1	7 13	5 37	7 46	6 7	6 32	4 49	3 50
16 54 52	15	253 43	10 26	9 20	8 36	7 5	9 7	7 33	7 57	6 19	5 24
16 59 10	16	254 48	11 42	10 40	9 59	8 33	10 29	9 0	9 23	7 50	6 58
17 3 29	17	255 53	12 59	12 1	11 23	10 2	11 51	10 28	10 49	9 22	8 33
17 7 49	18	256 57	14 16	13 23	12 47	11 32	13 13	11 56	12 16	10 55	10 09
17 12 9	19	258 02	15 34	14 45	14 12	13 2	14 36	13 25	13 43	12 28	11 46
17 16 29	20	259 07	16 52	16 7	15 37	14 33	15 59	14 54	15 10	14 2	13 23
17 20 49	21	260 12	18 10	17 29	17 2	16 5	17 22	16 23	16 38	15 37	15 01
17 25 09	22	261 17	19 28	18 52	18 27	17 37	18 46	17 53	18 6	17 11	16 39
17 29 30	23	262 23	20 47	20 15	19 53	19 9	20 10	19 23	19 35	18 46	18 18
17 33 51	24	263 28	22 6	21 38	21 19	20 41	21 33	20 54	21 3	20 22	19 58
17 38 12	25	264 33	23 24	23 1	22 45	22 14	22 57	22 25	22 32	21 58	21 38
17 42 34	26	265 39	24 43	24 25	24 12	23 47	24 21	23 56	24 2	23 34	23 18
17 46 55	27	266 44	26 2	25 49	25 39	25 20	25 45	25 27	25 31	25 10	24 58
17 51 17	♑ 28	267 49	27 ♐ 21	27 ♐ 13	27 ♐ 6	26 ♐ 53	27 ♐ 10	26 ♐ 58	27 ♐ 1	26 ♐ 46	26 ♐ 38
17 55 38	♒ 29	268 54	28 ♑ 41	28 ♑ 36	28 ♑ 33	28 ♑ 26	28 ♑ 35	28 ♑ 29	28 ♑ 30	28 ♑ 23	28 ♑ 19
18 0 0	♓ 0	270 00	0 ♈ 0	0 ♈ 0	0 ♈ 0	0 ♈ 0	0 ♈ 0	0 ♈ 0	0 ♈ 0	0 ♈ 0	00 ♈ 00
18 4 22	♈ 1	271 05	1 ♉ 20	1 ♉ 24	1 ♉ 27	1 ♉ 34	1 ♉ 25	1 ♉ 32	1 ♉ 30	1 ♉ 37	1 ♉ 41
18 8 43	2	272 10	2 39	2 48	2 54	3 7	2 50	3 3	2 59	3 14	3 22
18 13 5	3	273 16	3 58	4 11	4 20	4 40	4 15	4 34	4 29	4 50	5 03
18 17 26	4	274 21	5 17	5 35	5 47	6 13	5 39	6 5	5 58	6 26	6 43
18 21 48	5	275 27	6 36	6 59	7 14	7 46	7 3	7 35	7 28	8 2	8 22
18 26 9	6	276 32	7 54	8 22	8 40	9 19	8 27	9 6	8 57	9 38	10 02
18 30 30	7	277 37	9 13	9 45	10 7	10 51	9 50	10 37	10 25	11 14	11 42
18 34 51	8	278 43	10 32	11 8	11 33	12 23	11 14	12 7	11 54	12 49	13 21
18 39 11	9	279 48	11 50	12 31	12 59	13 55	12 38	13 37	13 22	14 24	14 59
18 43 31	10	280 53	13 8	13 53	14 24	15 26	14 1	15 6	14 50	15 58	16 37
18 47 51	11	281 58	14 26	15 15	15 49	16 57	15 24	16 35	16 17	17 32	18 14
18 52 11	12	283 03	15 44	16 37	17 14	18 28	16 47	18 4	17 44	19 5	19 51
18 56 31	13	284 08	17 1	17 59	18 38	19 58	18 9	19 32	19 11	20 37	21 27
19 0 50	14	285 12	18 17	19 20	20 2	21 27	19 31	21 00	20 37	22 9	23 02
19 5 8	15	286 17	19 34	20 40	21 25	22 55	20 52	22 27	22 3	23 40	24 36
19 9 26	16	287 22	20 50	21 59	22 48	24 23	22 13	23 53	23 28	25 11	26 10
19 13 44	17	288 26	22 6	23 19	24 10	25 50	23 33	25 18	24 52	26 40	27 ♈ 43
19 18 1	18	289 30	23 21	24 38	25 32	27 ♈ 17	24 53	26 43	26 15	28 ♈ 9	29 ♉ 15
19 22 18	19	290 34	24 36	25 57	26 53	28 ♉ 43	26 12	28 ♈ 7	27 ♈ 39	29 ♉ 37	00 ♊ 46
19 26 34	20	291 38	25 51	27 15	28 ♈ 14	0 ♊ 8	27 ♈ 31	29 ♉ 31	29 ♉ 2	1 ♊ 5	2 ♋ 16
19 30 50	21	292 42	27 5	28 ♈ 33	29 ♉ 35	1 ♋ 33	28 ♉ 49	0 ♊ 54	0 ♊ 24	2 ♋ 32	3 45
19 35 5	22	293 46	28 ♈ 19	29 ♉ 50	0 ♊ 55	2 57	0 ♊ 7	2 ♋ 17	1 ♋ 45	3 57	5 13
19 39 20	23	294 49	29 ♉ 33	1 ♊ 7	2 ♋ 14	4 20	1 ♋ 25	3 39	3 5	5 22	6 40
19 43 34	24	295 53	0 ♊ 46	2 ♋ 23	3 33	5 42	2 42	5 0	4 25	6 46	8 06
19 47 47	25	296 56	1 59	3 39	4 51	7 3	3 58	6 20	5 44	8 9	9 31
19 52 0	26	298 00	3 10	4 54	6 8	8 23	5 13	7 39	7 3	9 32	10 55
19 56 12	27	299 03	4 22	6 8	7 24	9 43	6 28	8 57	8 21	10 53	12 18
20 0 24	28	300 06	5 33	7 22	8 39	11 2	7 42	10 15	9 38	12 13	13 40
20 4 35	♓ 29	301 8	6 ♊ 43	8 ♊ 35	9 ♊ 53	12 ♊ 20	8 ♊ 55	11 ♊ 32	10 ♊ 54	13 ♊ 32	15 ♊ 01
20 8 45	♈ 30	302 11	7 ♋ 53	9 ♋ 48	11 ♋ 7	13 ♋ 38	10 ♋ 8	12 ♋ 49	12 ♋ 10	14 ♋ 51	16 ♋ 21

Tables of Tropical Midheaven and Ascendants

सायन दशम स्पष्ट तथा भारत के प्रमुख स्थानों की लग्नस्पष्टार्थ सारिणियां

Sid. Time सां काल H Mt S घं मि से	MC दशम S ° रा अं	R.A. विषुव ° ′ अं क	Madras मद्रास 13°N 0′ 13°उ0′	Bombay बम्बई 19°N 0′ 19°उ0′	Calcutta कलकत्ता 22°N35′ 22°उ35′	Delhi दिल्ली 28°N39′ 28°उ39′	Bhubaneswar भुवनेश्वर 20°N 0′ 20°उ0′	Lucknow लखनऊ 26°51′ 26°उ51′	Varanasi वाराणसी 25°N19′ 25°उ19′	Simla शिमला 31°N4′ 31°उ4′	Srinagar श्रीनगर 34°N 0′ 34°उ0′
20 8 45	♎ 0	302 11	7 ♉ 53	9 ♉ 48	11 ♉ 7	13 ♉ 38	10 ♉ 8	12 ♉ 49	12 ♉ 10	14 ♉ 51	16 ♉ 21
20 12 54	♏ 1	303 13	9 ♊ 3	11 ♊ 0	12 ♊ 20	14 ♊ 54	11 ♊ 21	14 ♊ 4	13 ♊ 24	16 ♊ 9	17 ♊ 40
20 17 3	2	304 15	10 12	12 11	13 33	16 9	12 33	15 19	14 38	17 26	18 59
20 21 11	3	305 17	11 20	13 22	14 15	17 24	13 44	16 33	15 52	18 42	20 16
20 25 19	4	306 19	12 28	14 32	15 57	18 38	14 54	17 46	17 5	19 57	21 32
20 29 26	5	307 21	13 36	15 41	17 8	19 51	16 4	18 59	18 17	21 11	22 47
20 33 32	6	308 23	14 43	16 50	18 18	21 4	17 13	20 11	19 28	22 24	24 01
20 37 37	7	309 24	15 49	17 58	19 28	22 16	18 22	21 22	20 38	23 36	25 15
20 41 41	8	310 25	16 55	19 6	20 37	23 27	19 30	22 32	21 48	24 48	26 27
20 45 45	9	311 26	18 0	20 14	21 46	24 37	20 38	23 42	22 57	25 59	27 ♉ 38
20 49 48	10	312 27	19 5	21 21	22 54	25 46	21 45	24 51	24 5	27 9	28 ♉ 49
20 53 50	11	313 28	20 9	22 27	24 1	26 54	22 51	25 59	25 13	28 ♉ 18	29 ♊ 59
20 57 52	12	314 28	21 13	23 32	25 7	28 ♉ 2	23 57	27 6	26 20	29 ♊ 26	1♋ 08
21 1 53	13	315 28	22 16	24 37	26 12	29 ♊ 9	25 2	28 ♉ 12	27 26	0♋ 34	2♌ 16
21 5 53	14	316 28	23 19	25 41	27 17	0♋ 15	26 7	29 ♊ 18	28 ♉ 32	1♌ 41	3 23
21 9 53	15	317 28	24 22	26 45	28 ♉ 22	1♌ 21	27 11	0♋ 23	29 ♊ 37	2 47	4 29
21 13 52	16	318 28	25 24	27 48	29 ♊ 26	2 26	28 ♉ 14	1♌ 28	0♋ 42	3 52	5 35
21 17 50	17	319 27	26 26	28 ♉ 50	0♋ 29	3 30	29 ♊ 17	2 32	1♌ 46	4 57	6 40
21 21 47	18	320 27	27 27	29 ♊ 53	1♌ 32	4 34	0♋ 20	3 35	2 49	6 1	7 44
21 25 44	19	321 26	28 ♉ 27	0♋ 55	2 34	5 37	1♌ 22	4 38	3 51	7 4	8 47
21 29 40	20	322 25	29 ♊ 27	1♌ 56	3 35	6 39	2 23	5 40	4 53	8 6	9 50
21 33 35	21	323 24	0♋ 27	2 56	4 36	7 41	3 23	6 42	5 55	9 8	10 52
21 37 29	22	324 22	1♌ 26	3 56	5 37	8 42	4 23	7 43	6 56	10 9	11 53
21 41 23	23	325 21	2 25	4 55	6 37	9 43	5 23	8 44	7 56	11 10	12 53
21 45 16	24	326 19	3 23	5 55	7 36	10 43	6 22	9 44	8 56	12 10	13 53
21 49 9	25	327 17	4 21	6 54	8 35	11 42	7 21	10 43	9 55	13 9	14 52
21 53 1	26	328 15	5 19	7 53	9 33	12 41	8 20	11 42	10 54	14 8	15 51
21 56 52	27	329 13	6 16	8 51	10 32	13 40	9 18	12 40	11 52	15 6	16 49
22 0 43	♐ 28	330 11	7 13	9 48	11 30	14 38	10 15	13 38	12 50	16 5	17 47
22 4 33	29	331 08	8 9	10 45	12 27	15 35	11 12	14 36	13 47	17 2	18 44
22 8 23	♑ 0	332 05	9 6	11 42	13 24	16 32	12 10	15 33	14 44	17 58	19 41
22 12 12	♒ 1	333 03	10 2	12 38	14 20	17 28	13 6	16 29	15 40	18 54	20 37
22 16 0	2	334 0	10 57	13 34	15 15	18 24	14 1	17 24	16 36	19 50	21 32
22 19 48	3	334 58	11 52	14 29	16 10	19 19	14 56	18 20	17 32	20 45	22 27
22 23 35	4	335 54	12 47	15 24	17 5	20 14	15 51	19 15	18 27	21 40	23 22
22 27 22	5	336 50	13 41	16 19	18 0	21 9	16 46	20 10	19 22	22 35	24 16
22 31 8	6	337 47	14 36	17 13	18 54	22 3	17 41	21 4	20 16	23 29	25 10
22 34 54	7	338 43	15 30	18 7	19 47	22 57	18 35	21 58	21 10	24 23	26 03
22 38 40	8	339 39	16 24	19 1	20 41	23 50	19 29	22 52	22 4	25 16	26 56
22 42 25	9	340 36	17 17	19 55	21 34	24 43	20 23	23 45	22 57	26 8	27 48
22 46 9	10	341 32	18 10	20 48	22 28	25 36	21 16	24 38	23 50	27 1	28 ♊ 40
22 49 53	11	342 28	19 3	21 41	23 21	26 28	22 9	25 30	24 43	27 53	29♌ 32
22 53 37	12	343 24	19 56	22 34	24 13	27 20	23 2	26 23	25 36	28 ♊ 45	0♎ 23
22 57 20	13	344 20	20 48	23 26	25 5	28 12	23 54	27 15	26 28	29♌ 36	1♏ 14
23 1 3	14	345 15	21 40	24 18	25 56	29 ♊ 4	24 46	28 7	27 19	0♎ 27	2 05
23 4 46	15	346 11	22 32	25 10	26 48	29♌ 55	25 38	28 ♊ 59	28 11	1♏ 18	2 55
23 8 28	16	347 07	23 24	26 2	27 40	0♎ 46	26 30	29♌ 50	29 ♊ 2	2 9	3 45
23 12 10	17	348 02	24 16	26 54	28 ♊ 31	1♏ 37	27 22	0♎ 40	29♌ 53	2 59	4 35
23 15 52	18	348 58	25 8	27 45	29♌ 22	2 27	28 13	1♏ 31	0♎ 44	3 49	5 25
23 19 34	19	349 53	25 59	28 ♊ 36	0♎ 13	3 18	29 ♊ 4	2 21	1♏ 35	4 39	6 14
23 23 15	20	350 49	26 50	29♌ 27	1♏ 3	4 8	29♌ 54	3 12	2 25	5 28	7 03
23 26 56	21	351 44	27 41	0♎ 18	1 53	4 57	0♎ 45	4 2	3 15	6 17	7 51
23 30 37	22	352 40	28 ♊ 32	1♏ 8	2 43	5 47	1♏ 35	4 52	4 5	7 6	8 40
23 34 18	23	353 35	29♌ 23	1 59	3 33	6 36	2 26	5 41	4 55	7 55	9 28
23 37 58	24	354 30	0♎ 14	2 49	4 24	7 25	3 16	6 30	5 45	8 44	10 16
23 41 39	25	355 25	1♏ 4	3 39	5 14	8 14	4 6	7 20	6 34	9 33	11 04
23 45 19	26	356 20	1 54	4 30	6 4	9 3	4 56	8 9	7 24	10 21	11 52
23 49 0	27	357 15	2 45	5 20	6 53	9 51	5 46	8 58	8 13	11 9	12 40
23 52 40	28	358 10	3 35	6 10	7 42	10 40	6 36	9 47	9 2	11 57	13♎ 27
23 56 20	♑ 29	359 05	4♎ 25	6♎ 59	8♎ 32	11♎ 28	7♎ 25	10♎ 35	9♎ 51	12♎ 45	14♎ 15
24 0 0	♒ 30	360 00	5♏ 15	7♏ 47	9♏ 21	12♏ 16	8♏ 14	11♏ 23	10♏ 40	13♏ 32	15♏ 2

LOCAL MEAN TIME OF PLACES स्थानीय समयादि

Local Mean Time is used for finding the Sidereal Time of a place to determine the Ascendant and other house cusps. On these pages are given the geographical longitudes and latitudes etc. of some important places in India and other countries together with the corrections to be made to Indian Standard Time for finding the LMT (Local Mean Time). The daily Sidereal Time given in this Ephemeris is for MIDNIGHT of Central Station of India (long 82° E 30′ Lat. 23° N11′) and some very minor corrections to be made to the same for finding the accurate Sidereal Time of these places are also given.

किसी स्थान का लग्न तथा भाव-स्पष्ट साधन के लिए जिस सांपातिक काल का प्रयोग किया जाता है, वह स्थानीय समय के अनुसार ही निकाला जाता है । निम्न सारिणी में कुछ प्रमुख स्थानों का भौगोलिक रेखांश, अक्षांश तथा स्थानीय समय निकालने के लिए भारतीय स्टैण्डर्ड समय में आवश्यक संशोधन दिए गए हैं । इस पञ्चांग में दिया गया दैनिक सांपातिक काल केन्द्र-स्थल भारत (रेखांश 82°– 30′ पूर्व : अंक्षाश 23°-11′ उत्तर) की स्थानीय मध्यरात्रि का है । अधिक शुद्ध सांपातिक काल प्राप्त करने के लिए इसमें अन्य स्थानों के लिए किए जाने वाले कुछ सेकण्डों का संस्कार भी दिया गया है ।

TABLE FOR LOCAL TIME ETC. OF PLACES स्थानीय समयादि सारिणी

PLACE	LAT. NORTH		LONG. EAST		LMT ± IST		± to CSI Sid. Time		स्थान
स्थान	अक्षांश उत्तर		रेखांश पूर्व		स्था. समय स्टै० टा० अन्तर		भा. सांपातिक कालान्तर		PLACE
	°	′	°	′	m	s	m	s	
	अं	क	अं	क	मि	से	मि	से	
Adoni (A.P.)	15 N	38	77 E	19	– 20	44	+ 0	03	अदोनी (आंध्र)
Agartala	23 उ	49	91 पू	17	+ 35	08	– 0	06	अगरतला
Agra	27	11	78	02	– 17	52	+ 0	03	आगरा
Ahmedabad	23	02	72	36	– 39	36	+ 0	07	अहमदाबाद
Ajmer	26	27	74	38	– 31	28	+ 0	05	अजमेर
Akola	20	42	77	02	– 21	52	+ 0	04	अकोला
Aligarh	27	54	78	04	– 17	44	+ 0	03	अलीगढ
Allahabad	25	28	81	52	– 02	32	+ 0	00	इलाहाबाद
Alleppey	09	30	76	23	– 24	28	+ 0	04	ऐलेप्पी
Almora	29	36	79	40	– 11	20	+ 0	02	अल्मोड़ा
Alwar	27	34	76	38	– 23	28	+ 0	04	अलवर
Ambala	30	23	76	46	– 22	56	+ 0	04	अम्बाला
Amritsar	31	38	74	53	– 30	28	+ 0	05	अमृत्सर
Ayodhya	26	48	82	14	– 01	04	+ 0	00	अयोध्या
Bangalore	12	58	77	36	– 19	36	+ 0	03	बंगलौर
Bareilly	28	21	79	23	– 12	28	+ 0	02	बरेली
Baroda	22	18	73	13	– 37	08	+ 0	06	बड़ोदा
Bellary	15	10	76	56	– 22	16	+ 0	04	बेलारी
Bharatpur (Raj.)	27	13	77	29	– 20	04	+ 0	03	भरतपुर (राजस्थान)
Bhilainagar	21	11	81	20	– 04	40	+ 0	01	भिलाईनगर
Bhopal	23	16	77	25	– 20	20	+ 0	03	भोपाल
Bhubaneswar	20	15	85	50	+ 13	20	– 0	02	भुवनेश्वर
Bhuj	23	16	69	48	– 50	48	+ 0	08	भुज
Bikaner	28	01	73	19	– 36	44	+ 0	06	बीकानेर
Bilaspur (M.P.)	22	05	82	13	– 01	08	+ 0	00	बिलासपुर (म. प्र.)

Biratnagar (Nepal)	26	N	35	87	E	20	+ 19	20	– 0	03	बिराटनगर (नेपाल)
Bolpur (W.B.)	23	उ	40	87	पू	42	+ 20	48	– 0	03	बोलपुर (प. बं.)
Bombay	18		58	72		50	– 38	40	+ 0	06	बम्बई
Brindaban (Vrind.)	27		33	77		44	– 19	04	+ 0	03	वृन्दावन (उ० प्र०)
Calcutta	22		35	88		23	+ 23	30	– 0	04	कलकत्ता
Calicut (Kozhikode)	11		15	75		49	– 26	44	+ 0	04	कालीकट
Cannanore	11		52	75		25	+ 28	20	+ 0	05	कैनानूर
Cape Comorin	08		04	77		34	– 19	44	+ 0	03	कन्या कुमारी
Cent. Stn. India	23		11	82		30	± 00	00	± 0	00	केन्द्र स्थल भारत
Chandigarh	30		44	76		53	– 22	28	+ 0	03	चण्डीगढ़
Cochin	09		58	76		15	– 25	00	+ 0	04	कोचीन
Coimbatore	11		00	76		56	– 22	16	+ 0	04	कोयम्बतूर
Colombo (Sri Lanka)	06		54	79		52	– 10	31	+ 0	02	कोलम्बो (श्री लंका)
Cuddapah	14		28	78		50	– 14	40	+ 0	02	कुडप्पा
Cuttack	20		29	85		52	+ 13	28	– 0	02	कटक
Darjeeling	27		03	88		16	+ 23	04	– 0	04	दार्जीलिंग
Dehra Dun	30		19	78		03	– 17	48	+ 0	03	देहरादून
Delhi	28		39	77		13	– 21	08	+ 0	03	दिल्ली
Dibrugarh	27		29	94		55	+ 49	40	– 0	08	दिबरूगढ़
Durgapur	23		30	87		20	+ 19	20	– 0	03	दुर्गापुर
Dwarka	22		14	68		58	– 54	08	+ 0	09	द्वारिका
Eluru	16		43	81		09	– 05	24	+ 0	01	ऐलूरू
Ernakulam	09		59	76		18	– 24	48	+ 0	04	अरनाकुलम
Erode	11		20	77		46	– 18	56	+ 0	03	इरोड
Faridabad	28		25	77		22	– 20	32	+ 0	03	फरीदाबाद
Ferozepur	30		55	74		40	– 31	20	+ 0	05	फिरोज़पुर
Gangtok (Sikkim)	27		20	88		37	+ 24	28	– 0	04	गैंगटाक
Gaya	24		48	85		01	+ 10	04	– 0	02	गया
Ghaziabad	28		40	77		28	– 20	08	+ 0	03	गाज़ियाबाद
Gorakhpur	26		45	83		22	+ 03	28	– 0	01	गोरखपुर
Guntur	16		19	80		26	– 08	16	+ 0	01	गन्तूर
Gurgaon	28		37	77		04	– 21	44	+ 0	04	गुड़गांव
Guwahati	26		10	91		45	+ 37	00	– 0	06	गुवाहाटी
Gwalior	26		14	78		10	– 17	20	+ 0	03	ग्वालियर
Haridwar	29		56	78		08	– 17	28	+ 0	03	हरिद्वार
Hoshiarpur	31		32	75		57	– 26	12	+ 0	04	होशियारपुर
Howrah	22		36	88		19	+ 23	16	– 0	04	हावड़ा
Hubli	15		20	75		12	– 29	12	+ 0	05	हुबली
Hyderabad	17		26	78		27	– 16	11	+ 0	03	हैदराबाद
Imphal	24		48	93		57	+ 45	48	– 0	07	इम्फाल
Indore	22		43	75		51	– 26	36	+ 0	04	इन्दौर
Jabalpur	23		09	79		57	– 10	12	+ 0	02	जबलपुर
Jaffna (Sri Lanka)	09		40	80		00	– 10	00	+ 0	02	जाफना (श्री लंका)
Jaipur	26		55	75		49	– 26	44	+ 0	04	जयपुर
Jammu (J.K.)	32		43	74		52	– 30	32	+ 0	05	जम्मू (जे० के०)
Jamshedpur	22		48	86		11	+ 14	44	– 0	02	जमशेदपुर
Jhansi (M.P.)	25		27	78		33	– 15	48	+ 0	03	झांसी (म० प्र०)
Jodhpur	26		18	73		02	– 37	52	+ 0	06	जोधपुर
Jorhat	26		46	94		13	+ 46	52	– 0	08	जोरहट
Jullundur	31		20	75		34	– 27	44	+ 0	05	जालन्धर

Kakinada	16 N 57	82 E 13	– 01	08	+ 0	00	काकीनाडा
Kalimpong	26 उ. 05	88 पू 26	+ 23	44	– 0	04	कालिम्पांग
Kalyan	19 14	73 10	– 37	20	+ 0	06	कल्याण
Kanchipuram	12 50	79 42	– 11	12	+ 0	02	कांचीपुरम
Kandy (Sri Lanka)	07 18	80 38	– 07	28	+ 0	01	कैन्डी (श्री लंका)
Kanpur	26 29	80 21	– 08	36	+ 0	01	कानपुर
Kathmandu (Nepal)	27 42	85 12	+10	48	– 0	02	काठ्मण्डू (नेपाल)
Kodaikanal	10 14	77 28	– 20	08	+ 0	03	कोड़ाइकनाल
Kohima	25 41	94 07	+ 46	28	– 0	08	कोहिमा
Kolhapur (M. S.)	16 42	74 14	– 33	04	+ 0	05	कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
Kota	25 10	75 52	– 26	32	+ 0	04	कोटा
Kottayam	09 36	76 32	– 23	52	+ 0	04	कोटायम
Kurnool	15 50	78 03	– 17	48	+ 0	03	करनूल
Lucknow	26 51	80 56	– 06	16	+ 0	01	लखनऊ
Ludhiana	30 55	75 52	– 26	32	+ 0	04	लुधियाना
Madras	13 04	80 15	– 09	01	+ 0	01	मद्रास
Madurai	09 58	78 10	– 17	20	+ 0	03	मदुरई
Mahabalipuram	12 37	80 14	– 09	04	+ 0	01	महाबलीपुरम
Mangalore	12 52	74 50	– 30	40	+ 0	05	मंगलौर
Mathura	27 28	77 42	– 19	12	+ 0	02	मथुरा
Meerut	29 01	77 45	– 19	00	+ 0	03	मेरठ
Moradabad	28 51	78 47	– 14	52	+ 0	02	मोरादाबाद
Mussorie	30 27	78 06	– 17	36	+ 0	03	मंसूरी
Mysore	12 18	76 39	– 23	24	+ 0	04	मयसूर
Nagercoil	08 11	77 29	– 20	04	+ 0	03	नागरकोयल
Nagpur	21 09	79 05	– 13	40	+ 0	02	नागपुर
Naini Tal	29 22	79 27	– 12	10	+ 0	02	नैनीताल
Nasik	20 02	73 50	– 34	40	+ 0	06	नासिक
Neemuch	24 27	74 52	– 30	32	+ 0	05	नीमच
Nellore	14 27	80 00	– 10	00	+ 0	02	नेलोर
Ootacamund	11 24	76 44	– 23	04	+ 0	04	ऊटाकामंड
Palghat	10 46	76 40	– 23	20	+ 0	04	पालघाट
Panaji	15 29	73 49	– 34	44	+ 0	06	पानाजी
Panipat	29 23	77 01	– 21	56	+ 0	04	पानीपत
Pathankot	32 17	75 40	– 27	20	+ 0	04	पठानकोट
Patiala	30 19	76 24	– 24	24	+ 0	04	पटियाला
Patna	25 36	85 08	+ 10	32	– 0	02	पटना
Pondicherry	11 56	79 50	– 10	40	+ 0	02	पांडिचेरी
Porbandar	21 38	69 37	– 51	32	+ 0	08	पोरबन्दर
Port Blair	11 40	92 46	+ 41	04	– 0	07	पोर्ट ब्लेयर
Pune	18 31	73 53	– 34	28	+ 0	06	पूना
Puri	19 48	85 50	+ 13	20	– 0	02	पुरी
Rajahmundry	17 00	81 46	– 02	56	+ 0	00	राजामुंदरी
Rajkot	22 18	70 48	– 46	48	+ 0	08	राजकोट
Ranchi	23 22	85 21	+ 11	24	– 0	02	रांची
Raurkela	22 25	84 52	+ 09	28	– 0	02	रोरकेला
Sagar (M.P.)	23 50	78 50	– 14	40	+ 0	02	सागर (म. प्र.)
Saharanpur	29 58	77 32	– 19	52	+ 0	03	सहारनपुर
Salem	11 40	78 10	– 17	20	+ 0	03	सेलम
Secunderabad	17 27	78 33	– 15	48	+ 0	03	सिकन्दराबाद

SYMBOLS OF *TITHI* (SOLI-LUNAR DAYS) *NAKSHATRA* (CONSTELLATIONS) *YOGA* (*SPECIAL COMBINATIONS*) & *KARNA*

Sy.	TITHI तिथि	Sy.	NAKSHATRA नक्षत्र	MOON LONG.	DASA PLAN.	Sy.	YOGA योग
	तिथि TITHI		नक्षत्र NAKSHATRA	चन्द्र देशान्तर	दशा ग्रह		योग YOGA
प्र	*Pratipat* प्रतिपत्तिथि		*Ashvini* अश्विनी	00 0 0	*Ketu* केतु		*V.kumbha* विष्कुंभ
द्वि	*Dvitiya* द्वितीया		*Bharani* भरणी	00 13 20	*Venus* शुक्र		*Priti* प्रीति
तृ	*Tritiya* तृतीया		*Kritika* कृत्तिका	00 26 40	*Sun* रवि		*Ayushman* आयुष्मान
च	*Chaturthi* चतुर्थी		*Rohini* रोहिणी	1 10 0	*Moon* चन्द्र	10	*Saubhagya* सौभाग्य
पं	*Panchami* पंचमी		*Mrigashira* मृगशिरा	1 23 20	*Mars* मंगल	7	*Shobhan* शोभन
ष	*Shashthi* षष्ठी		*Ardra* आर्द्रा	2 6 40	*Rahu* राहु	18	*Atiganda* अतिगण्ड
स	*Saptami* सप्तमी		*Punarvasu* पुनर्वसु	2 20 0	*Jupiter* गुरु	16	*Sukarma* सुकर्मा
अ	*Ashtami* अष्टमी		*Pushya* पुष्य	3 3 20	*Saturn* शनि	19	*Dhrti* धृति
न	*Navami* नवमी		*Ashlesha* आश्लेषा	3 16 40	*Mercury* बुध	17	*Shula* शूल
द	*Dashmi* दशमी		*Magha* मघा	4 0 0	*Ketu* केतु	7	*Ganda* गण्ड
ए	*Ekadashi* एकादशी		*R. Phal.* पू.फाल्गुनी	4 13 20	*Venus* शुक्र	20	*Vridhi* वृद्धि
द्वा	*Dwadashi* द्वादशी		*U. Phal.* उ.फाल्गुनी	4 26 40	*Sun* रवि	6	*Dhruva* ध्रुव
त्र	*Trayodashi* त्रयोदशी		*Hasta* हस्त	5 10 0	*Moon* चन्द्र	10	*Vyaghata* व्याघात
चतु	*Chaturdashi* चतुर्दशी		*Chitra* चित्रा	5 23 20	*Mars* मंगल	7	*Harshana* हर्षण
पूर्ण	*Purnima* पूर्णिमा		*Svati* स्वाति	6 6 40	*Rahu* राहु	18	*Vajra* वज्र
	Full Moon						
अम	*Amavasya* अमावस्या		*Vishakha* विशाखा	6 20 0	*Jupiter* गुरु	16	*Siddhi (Asrk)* सिद्धि
	New Moon		*Anuradha* अनुराधा	7 3 20	*Saturn* शनि	19	*Vyatipata* व्यतीपात
क	*KARAN* करण		*Jyeshtha* ज्येष्ठा	7 16 40	*Mercury* बुध	17	*Variyan* वरीयान
ब	*Bava* बाव		*Mula* मूला	8 0 0	*Ketu* केतु	7	*Parigha* परिघ
बा	*Balava* बालव		*Purvash.* पूर्वाषाढ़ा	8 13 20	*Venus* शुक्र	20	*Shiva* शिव
कौ	*Kaulva* कौलव		*Uttarash.* उत्तराषाढ़ा	8 26 40	*Sun* रवि	6	*Siddha* सिद्ध
तै	*Taitila* तैतिल		*Shravana* श्रवण	9 10 0	*Moon* चन्द्र	10	*Sadhya* साध्य
गर	*Gara* गर		*Dhanish.* धनिष्ठा	9 23 20	*Mars* मंगल	7	*Shubha* शुभ
व	*Vanij* वणिज		*Shatabhi.* शतभिषा	10 6 40	*Rahu* राहु	18	*Shukla* शुक्ल
वि	*Vishti* विष्टि		*P.Bhadra* पूर्वाभाद्र	10 20 0	*Jupiter* गुरु	16	*Brahma* ब्रह्म
शकु	*Shakuni* शकुनि		*U.Bhadra* उत्तराभाद्र	11 3 20	*Saturn* शनि	19	*Indra* इन्द्र
चतु	*Chatushpad* चतुष्पाद		*Revati* रेवती	11 16 40	*Mercury* बुध	17	*Vaidhrti* वैधृति
ना	*Naga* नाग						
कि	*Kintughna* किंतुघ्न						

DEFINITION OF SYMBOLS USED IN THIS EPHEMERIS
इस पंचाग में प्रयुक्त प्रतीकों का विवरण

No अंक	Symbol प्रतीक	Sign राशि	Sanskrit Name संस्कृत नाम	Symbol प्रतीक	Planet ग्रह	Sanskrit Name संस्कृत नाम	Symbol प्रतीक	Meaning अर्थ
00	♈	Aries	मेष	☉	Sun	रवि	∥	*Parallel* क्रान्तिसाम्य
1	♉	Taurus	वृषभ	☽	Moon	चन्द्र	⋕	*Contra.* वि. क्रान्तिसाम्य
2	♊	Gemini	मिथुन	☿	Mercury	बुध	D मा	*Direct* मा मार्गी
3	♋	Cancer	कर्क	♀	Venus	शुक्र	R व	*Retrograde* व वक्री
4	♌	Leo	सिंह	♂	Mars	मंगल	d ही	*Demoted* ही हीन
5	♍	Virgo	कन्या	♃	Jupiter	गुरु	°	*Degree* अंश
6	♎	Libra	तुला	♄	Saturn	शनि	′	*Minute* कला
7	♏	Scorpio	वृश्चिक	♅	Uranus	यूरेनस	″	*Second* विकला
8	♐	Sagittarius	धनु	♆	Neptune	नेपच्यून		☌=0° △=120°
9	♑	Capricorn	मकर	♇	Pluto	प्लूटो		⚺=30° ⚻=135°
10	♒	Aquarius	कुम्भ	☊	Node (D.Head)	राहु		∠=45° ⚼=150°
11	♓	Pisces	मीन	☋	D. Tail	केतु		✱=60° ☍=180°
				⊕	Earth	पृथ्वी		□=90°

☌=Conjunction युति; ⚺=30° Semisextile; द्विषडंश; ∠=45° Semi-square अर्द्ध केन्द्र;
✱=Sextile अर्द्ध-त्रिकोण; □=90° Square केन्द्र; △=120° Trine त्रिकोण;
⚻=135° Sesquinquardrate; ⚼=150° Inconjunct षड्-षष्ठक; ☍=180° Opposition प्रतियुति

In Hellocentric aspects ☊ indicates North Node and ☋ indicates South Node of a planet.
सूर्यकेन्द्रीय दृष्टि संकलन में ☊ चिन्ह उस ग्रह का उत्तरी संपात बिन्दु तथा ☋ प्रतीक उसके दक्षिणी संपात बिन्दु का द्योतक है

SE=Solar Eclipse सूर्य ग्रहण; LE=Lunar Eclipse चन्द्र ग्रहण:
T=Total पूर्ण; A=Annular/Appulse कंकणाकृति/बलात; P=Partial खण्ड

A=*Aphelion* सूर्य से अति दूर, P=*Perihelion* सूर्य के निकट, Ap.=*Apogee* पृथ्वी से अति दूर,
Pe.=*Perigee* पृथ्वी के निकट, ●=*New Moon* अमावस्या,)=½ *Moon*, चौथाई शृंग
○=*Full Moon* पूर्णिमा,)=¾ *Moon*, तीन चौथाई चन्द्र शृंग

भारतीय खगोलिकी व फलित ज्योतिष में यह मान्यता है कि उसकी किसी प्रणाली को उतना ही महत्वपूर्ण व सफल माना जा सकता है जितनी अधिक उस प्रणाली द्वारा की गई भविष्यवाणियां सही सिद्ध होती हैं। इस लेखक ने भी पिछले वर्ष के अपने अग्रेजी पंचांग में छः भविष्यवाणियां की थीं और वह छः की छः सही सिद्ध हुईं। इसका कारण केवल यह है कि वह सायन ग्रह-स्पष्ट तथा दिनवर्ष पद्धति (Secondary Progressions) पर आधारित थीं और उन पद्धतियों की सफलता का यह रहस्य है कि केवल वही वास्तविक वैदिक पद्धतियां हैं। भविष्यवाणियों की इस शत-प्रति-शत सफलता के विपरीत अप्रैल १९९१ से अक्टूबर १९९५ तक लगातार ''एस्ट्रोलॉजिकल मैगजीन'' के सम्पादक यह घोषित करते आए कि ''कांग्रेस आई व श्री नरसिंह राव की सरकार कुछ ही दिनों की मेहमान है''। पर जैसा कि आप जानते हैं, वास्तविकता बिल्कुल इसके विपरीत रही। जब किसी विद्वान द्वारा सात बार की गई भविष्यवाणियां लगातार पांच वर्षों तक असफल रहें तो उससे यही सिद्ध होता है कि या तो उस विद्वान में कोई कमी है या फिर उस प्रणाली में ही कोई त्रुटि है। अब यदि किसी ''दिग्गज'' द्वारा की गई भविष्यवाणी ही सात बार असफल रहे तो अन्य साधारण व्यक्ति उसमें सफल रहेंगे, यह असम्भव ही है। अतः विवश होकर इससे यही निष्कर्ष निकालना पड़ता है कि उस पद्धति में ही मूलतः कोई न्यूनता है। इससे साथ में यह भी सिद्ध होता है कि यदि निरयण पद्धति वास्तव में ही वेदों पर आधारित होती तो इन भविष्यवाणियों की ऐसी ''दुर्गति'' नहीं होती।

इसी प्रकार डा. बी. वी. रमण ने अपनी पुस्तक ''नोटेबल हार्स्कोप्स'' में भगवान कृष्ण का जन्मसमय निर्धारित करने के लिए ''श्रीमद्भागवत'', ''श्रीविष्णुपुराण'' व ''हरिवंश'' को प्रामाणिक माना है। अब यदि इन सभी ग्रन्थों में असंख्य बार केवल सायन राशिचक्र का ही वर्णन है तो यह ''वैदिक ज्योतिषी'' कैसे कहते हैं कि श्रीकृष्ण का जन्म किसी ''लाहिरी'' या ''रमण'' अयनांश वाले राशिचक्र में हुआ था? स्पष्ट ही है कि यह जनता को मूर्ख बना रहे हैं।

यदि इन ज्योतिषियों के अनुसार ''सूर्य सिद्धान्त'' भारतीय खगोलिकी का प्राचीनतम ग्रन्थ है तो डा. रमण ने भगवान कृष्ण, गौतम बुद्ध व जद्गुरु शंकराचार्य आदि दिव्य विभूतियों की कुण्डलियां आधुनिक खगोलिकी से क्यों बनवाई, वह भी किसी भारतीय गणितज्ञ से नहीं अपितु एक विदेशी यवन, सिरिल फागन से? और यदि वह पत्रियां विश्व समय के बदले पंचांग समय व भूपृष्ठीय के बदले भूकेन्द्रीय ग्रहों से बनाई गई हैं तो उनका फलित सही कैसे हो सकता है जब इन दोनों समय परिमाणों में बीस घंटे तक का अन्तर था? और हां, यदि ''सूर्य सिद्धान्त'' व धर्मशास्त्रों के अनुसार मकर संक्रान्ति व उत्तरायण एक ही दिन--वर्ष के सबसे छोटे दिन--होते है, तो फिर उन शास्त्रों के अनुयायी यह ज्योतिषी वह त्यौहार भिन्न-भिन्न दिनों में क्यों मनाते हैं?

एक बात और:- यदि महर्षि पाराशर द्वारा रचित ग्रन्थ ''विष्णुपुराण'' में केवल सायन राशिचक्र का ही वर्णन है, किसी भी निरयण राशिचक्र का नहीं-----लाहिरी या रमण राशिचक्र तो दूर रहा-----तो यह तथाकथित ''वैदिक ज्योतिषी'' यह कैसे कहते हैं कि इन्हीं महर्षि पाराशर द्वारा रचित ''बृहत्पाराशर होराशास्त्रम्'' का फल लाहिरी अयनांश से ही सही मिलता है?

यदि एन. सी. लाहिरी, काशी विश्वपंचांगम्, जन्मभूमि व डा. बी.वी. रमण जैसे निरयण पंचांगकारों को ही स्वयं अपने अयनांशों पर विश्वास नहीं है तो वह कैसे यह अपेक्षा रखते हैं कि कोई और उनके अयनांशों पर विश्वास करेगा?

यह सब बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। इनका गहरा संबन्ध हमारे जीवन के हर क्षेत्र से है चाहे वह फलित ज्योतिष हो या व्रत-पर्व या मुहूर्त या धार्मिक संस्कार। इन्हीं प्रश्नों का उत्तर आपको इस पंचांग मे मिलेगा। आप यह देखकर चकित रहेंगे कि किस प्रकार से यह ''विद्वान'' हम सबको ''भृगु, रावण, अगस्त्य व अरुण'' आदि संहिताओं के ''चमत्कारिक फलित'' से मूर्ख बनाते आए हैं क्योंकि यह ''संहिताएं'' तो वास्तव में एक ढकोसला हैं। ''पत्री मेलापक'' व ''अनिष्ट ग्रहों के कारण और निवारण'' उपायों आदि का भी यही हाल है।